THE BOOK WAS DRENCHED

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180709
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 S53T Accession No. H 3561

Author शर्मा, सत्यनारायण

Title टूटती हुई जंजीरें १९५०.

This book should be returned on or before the date last marked below.

टूटती हुई जंजीरें

[मौलिक, क्रान्तिकारी गद्यकाव्यात्मक उपन्यास]

लेखक

प्रोफेसर—श्री सत्यनारायण शर्मा

प्रकाशक

हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय

१६५।१, हरिसन रोड, कलकत्ता ।

मूल्य ३।)

मुद्रक
सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स,
४०२, अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता ।

अर्पण

उस आलोकदाता को, जिसे खोजते-खोजते जीवन-पथ
के समस्त दीपक निर्वापित हो चुके हैं; यह
एक छोटा-सा दीपक बचा है, वह भी
झंझानिल के निष्ठुर झोंकों
से कांपता-सा।

प्राथमिका

'टूटती हुई जंजीरें' का घटना-स्थल फ्रांस है ; भारतवर्ष नहीं। न जाने क्यों तो मेरी कल्पनाको दूर देशोंमें ही विचरण करनेमें अधिक सुख मिलता है।

इस उपन्यासको लिखनेके बाद मुझे ऐसा मालूम होने लगा जैसे अब मैं स्वप्नों और कल्पनाओंके विमोहक पारिजात-काननसे निर्वासित-सा कर दिया जाऊँगा और मेरा ऐसा सोचना उचित भी था, क्योंकि दर्शन और विज्ञानकी मरुस्थलीमें मुझे अपने जीवन-देवताकी पगध्वनियाँ सुनायी पड़ने लगी थीं।

लेकिन मेरा यह भय निर्मूल निकला। दर्शन और विज्ञानके सिकता-पथमें मैंने 'दुनियाँ—मेरी दृष्टिमें' और 'रैन बसेरा' प्रभृति जो पुस्तकें लिखी हैं, वे उस चिरपरिचित पारिजात-काननके सौरभसे स्नात हैं। इसीलिये मुझे इस बातकी पूरी आशा है कि मैं भविष्यमें साहित्यिक जगत्‌को कतिपय औपन्यासिक कृतियाँ और दे सकूँगा।

मानता हूँ, मेरा वर्त्तमान पथ सर्वथा नीरस है किंतु पथिकके प्राण तो नीरस नहीं हो पाये हैं,—हो भी नहीं सकेंगे। दर्शन और विज्ञानकी इस निर्मम रसहीनतामें भी मेरी श्यामाकी काकली कभी भी लुप्त नहीं हो सकेगी।

'टूटती हुई जंजीरें' को हिन्दी जगत्‌के सामने रखते हुए मैं उस आलोचक वर्गको जो अपनेको उपन्यास-कलाका सर्वश्रेष्ठ पारखी समझता है, इसकी कड़ी-से-कड़ी आलोचना करनेके लिये सहर्ष आमन्त्रित करता हूँ।

काशी प्रवास
२४-३-४३ } सत्यनारायण शर्मा

द्वितीय संस्करणकी भूमिका

इस उपन्यासको लिखे दस वर्ष हो गये। आज अचानक जब प्रकाशकके यहाँसे नये संस्करणके छपे हुए फर्मे आये हैं तो मेरे स्मृति-पथमें दस बर्ष पहले की जीवनधारा सजग हो उठी है।

और, विषण्ण मन लिये हुए मैं सोच रहा हूँ, कौन-से दिन अच्छे थे। वे, जब कि मैं इस तरहकी झञ्झामयी, आग्नेय पुस्तकें लिखा करता था या वे जब मेरी लेखनीसे 'दुनिया—मेरी दृष्टिमें' जैसी प्रज्ञा प्रधान किरणमयी पुस्तकें निकला करती थीं, या वे दिन जब मैं दिवस भरके कठोर, अनवरत अध्ययनसे परिश्रात होकर निशीथ-नीरवतामें अन्तरिक्ष की नीहारिकामें किसीके किरण-निर्झर श्रीचरणोंको खोजता रहता था!

दिन बीतते चले जा रहे हैं। न जाने अभी दिवस-निशिके श्वेत श्यामल पाशमें बद्ध इस प्रहपर और कितने दिन व्यतीत करने हैं! न जाने अभी कितना सोचना और कितना लिखना शेष है!

'टूटती हुई जंजीरें' गद्यकाव्यात्मक उपन्यास है। इसी कारण इसके प्रायः समस्त पात्र कवित्वमयी भाषामें ही सम्भाषण करते हैं; दृश्यादिकका चित्रण भी सर्वथा काव्यात्मक है। हो सकता है, कतिपय साहित्य-समीक्षकों को यह अशोभन प्रतीत हो।

जड़वादप्रधान साहित्य-सर्जनाके इस युगमें कला-विहगको उन्मुक्त करनेका मिथ्या अभिमान प्रदर्शित किया गया है। तथाकथित प्रगतिवादिय ने उस व्योम-विहारीके पिंजरको तो नष्ट कर दिया है किन्तु क्षणिक स्वतन्त्रता के सुखसे उसे प्रवंचित करके उसके पंखोंको इस निष्ठुरताके साथ बाँध डाला है कि वह अभागा पिंजड़ेवाली साधारण-सी गतिसे भी हाथ धो बैठा! अल्पधी और अनात्मविश्वासी तथा अनुगामी समीक्षक-दल उनके द्वारा प्रदत्त साहित्यिक मूल्याकन-पद्धतिको और मानदंडोंको श्रेष्ठतामें अनुपमेय समझने लग गया है।

इसी कारण व्योम-पथमें बहुत दूर तक उड़कर विहार करनेवाले कला—विहगकी अदृष्टपूर्व शक्ति और विचरण-सौंदर्यको देखकर ये लोग पहले तो चमत्कृत होते हैं और मुग्ध भी किंतु दृष्टि-संकोचके कारण कह उठते हैं—'यह तो विहग ही नहीं है ! भला विहग भी व्योममें इतनी ऊँची उड़ाने भर सकता है ! अन्य विहगोंको देखो ! किस तरह दोनों बँधे हुए पंख लिये तृण सकुल स्थलपर पड़े-पड़े फल-भक्षण कर रहे हैं ! यही वास्तविकता है जीवन की ! यह फल-भक्षण ही सत्य है ! इसीपर साहित्य समाधारित होना चाहिये। यह व्योम-विचरण कैसा ! देखनेके लिये नेत्रोंको ऊपर करना पड़ता है !'

और जिन बेचारोंने नेत्र निमीलित करके ऐसे-ऐसे महापुरुषोंके सिद्धान्तों को ही कण्ठस्थ करके अपनेको साहित्यका पारखी समझना आरम्भ कर दिया है, वे बोल उठते हैं—'अमुक ने ऐसा कहा है और अमुकने ऐसा ! नीचे घास हो ; घास न हो तो कंकड़-पत्थर ही सही। पंख बँधे हुए हों, रस्सीसे या रेशमकी डोरसे या और किसी चीजसे। बँधे न हों तो एक पिंजड़ा अवश्य हो। बस फिर समझ लो कि वह विहग है, वही विहग जिसकी तुम्हें समीक्षा करनी है ! वह थोड़ा हिले-डुले, पख फड़फड़ाये, कभी-कभी लेकिन बड़े हिसाबके साथ आवाज करे तो समझ लो प्रथम श्रेणी का है।...... अमुक गुरुदेवने ऐसा ही तो लिखा है ! इसी प्रकारके अधिकांश विहगोंको अन्य अग्रजन्मा समीक्षकोंने उत्कृष्ट स्थान भी दिया है ! फिर यह कौन है, जो इस तरह धरणीकी सीमाको चीरता हुआ सितारोंको चूमने चल पड़ा है ! इतना दुस्साहस और वह भी हम लोगोंके रहते हुए ! अवश्य यह विहग ही नहीं है, नहीं तो ऐसा कभी नहीं कर पाता !'

लेकिन यह घोर भ्रांति है इस प्रकारके साहित्य-समीक्षकोंकी ! दुर्भाग्य है यह साहित्य-देवताका कि इस प्रकारका दूषित और दुर्बल दृष्टिकोण रखने वाले समीक्षकोंकी बाढ़-सी आ चली है।

कलात्मक कृतियोंके श्रेणी-विभाजनकी सीमा नहीं। सौंदर्य-सृष्टिके कोटिशः पथ हैं। अपने बौद्धिक दौर्बल्यके कारण यदि तीन-चार पथ ही समझमें आयें तो अन्य अनाविष्कृत पथोंके प्रति आस्थाका परित्याग अशोभन

एवं निंद्य है। यह कोई आवश्यक नहीं कि संसारमें जो कुछ इन्द्रियगोचर है, उसीपर साहित्यको सदैव समाधारित होना चाहिये। मेरे उपन्यासोंमें कल्पना का जो तीव्रगतित्व है और अनुभूतिके पीछे जो विदाहक प्रखरता है उससे हो सकता है, बहुतसे समालोचक अस्वाभाविकताका दोषारोपण करें। किंतु कलाकी महत्ता स्वाभाविकता और अस्वाभाविकतासे नहीं, सौंदर्य-सृष्टिसे सम्बन्धित है। जिस कला-कृतिसे सौंदर्यकी किरणराजि बहिर्गत होती है, अस्तित्व उसीका सार्थक है।

बौद्धिक दौर्बल्यसे ग्रस्त प्रगतिवादी साहित्य-समीक्षकोंके समस्त आक्षेपोंका उत्तर इन पंक्तियोंमें अंतर्निहित है। वे इसे समझनेकी चेष्टा करें।

प्रस्तुत उपन्यास सर्वथा कल्पनाधारित है। इसके कथानकका कहीं कोई ऐतिहासिक आधार नहीं। फ्रांसको घटनास्थल बनाकर भी जानबूझकर मैंने पात्रों के नाम अस्वाभाविक रखे हैं। मैं पहले ही कह चुका हूं कि इस उपन्यासको पढ़नेवाले व्यक्ति स्वाभाविकता और अस्वाभाविकताके विवेचनसे विरत होकर केवल सौंदर्य सृष्टिकी ओर दृग्पात करें। पुस्तकमें कल्पना और अनुभूतिका जो आग्नेय महासागर लहरा रहा है, उसकी ओर देखें।

हिंदोकी सांप्रतिक समालोचना-पद्धतिकी सीमाबद्धता देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा है कि कमसे कम दो सौ पृष्ठोंकी भूमिका मुझे लिखनी चाहिये। लेकिन इसके लिये न तो मेरे प्रकाशक तैयार हैं और न पाठक ही तैयार होंगे।

अपर बाजार, रांची
३-६-५०

सत्यनारायण शर्मा

१

सन्ध्याकी हवा भी इतनी उत्तप्त—इतनी दाहमयी हो सकती है,—सरिताका वह तट, जिसकी हरीतिमापर उसने क्या जाने कितनी ही रसमयी कविताएँ लिखी थीं, इतना रसहीन—इतना उजड़ और प्राणहीन मालूम हो सकता है, इसकी कल्पना भी रैमोनाने नहीं की थी !

वह खड़ा था और खड़ा-खड़ा न जाने कितनी-कितनी काल्पनिक यंत्रणाओंसे,—न जाने कितने-कितने ज्वलन्त वेदनात्मक भाव-समूहोंसे आक्रान्त हो रहा था। उसके हृदयका टुकड़ा-टुकड़ा विकल हो रहा था,—उसके प्राणका कण कण क्रन्दन कर रहा था।

रैमोना,—सदैव बहुमूल्य वस्त्रोंको पहनने वाला रैमोना सन्ध्याकी उस तिमिराह्वान-बेलामें फटे पुराने कपड़े पहन कर अन्तरिक्षमें आलोक-प्रसार करनेवाले तारकोंका उपहासास्पद

प्रयास देख रहा था। उसके केश अत्यन्त अस्त-व्यस्त हो रहे थे मुखपर कलेजेको हिला देनेवाले विषाद की हाहाकार मयी छाया पड़ी हुई थी।

वह अधिक देर तक खड़ा नहीं रह सका। पागल की तरह, शराब पीकर घरकी ओर लौटते वक्त रास्तेमें किसी पत्थरसे टकरा कर गिर जानेवाले शराबी की तरह उस तृण-संकुल स्थलीपर गिर पड़ा। वहाँ पत्थरके दो चार नुकीले टुकड़े पड़े थे जो उसके शरीर में यत्र-तत्र गड़ गये और खून निकलने लगा।

धीरे-धीरे अन्धकार घनीभूत हो चला। अन्तरिक्षके प्राणोंमें बिखरी हुई चिनगारियाँ धीरे-धीरे अपनी संख्या विवर्धित करती जा रही थीं। शैल-शिखरोंकी अरुणिमा नैश कालिमाकी लहरोंमें अपने अस्तित्वको लुप्त कर चली थी।

रैमोनाका हृदय रात्रिकी उन आरम्भिक तृष्णामयी घड़ियोंमें रो-रो कर अपनी हाहाकारभरी भावनाओंकी मनुहार कर रहा था,—उनसे शान्त होनेका अनुरोध कर रहा था। किन्तु वे पीड़ा और दाहकी चिरसंगिनी विषादमयी भावनाएँ क्यों शान्त होने लगीं! उधर रात्रिका अन्धकार—व्योमके हृदयमें नैराश्यकी गम्भीर वेदनाके समान छाया हुआ अन्धकार बढ़ता चला जा रहा था और इधर रैमोनाके हृदयका आकुल क्रन्दन भी धीरे-धीरे अपना स्वरूप उग्रतर करता जा रहा था।

रैमोनाको अतीतकी घटनाएँ एक-एक करके याद आने लगीं। वह सोचने लगा, सचमुच यह जीवन कितना निस्सार, कितना

नगण्य,—कितना अर्थहीन है। अतीतका वह वैभव,—वे आनन्द कल्लोलमयी रंगरेलियाँ,—स्नेह और अनुरागकी सुगन्धित बल्लरियोंका वह कमनीय प्रकम्पन कहाँ तिरोहित हो गया! कहाँ खो गया वह मीठा सपना, जिसकी वारुणी पी कर वह जीवन के कण-कणको प्यार करना सीख रहा था! ......उफ़! रात-रात भरका वह एक साथ घूमना, -वह सायन्तन नौका-विहार,—प्रभातकी आलोक-रश्मियोंसे नहायी हुई घड़ियोंमें वाटिकामें जा कर एक साथ फूलोंको एकत्रित करके एक दूसरेपर फेंकना,—चाँदनीसे धुली हुई रातोंमें हृदयके सारे माधुर्यको शब्दोंमें सन्निविष्ट करके उसका गीत बनाना और उसकी प्रेयसीका मद-भरे स्वरमें गाना,—पर्वत शिलाओंपर बैठ कर एक दूसरेकी ओर घण्टों तक देखते रहना और देख-देख कर प्राणोंके अणु-अणुको रस-विभोर करते रहना!.........रमोना कितना याद करे! और याद कर-करके कितना रोये,—कितने आँसू बहाये! आज दिन भर तो वह रोता रहा है!—दिन भर तो रो-रो कर अपने ज्वलन्त चीत्कारोंको शीतल करनेका प्रयास करता रहा है!

उधर थोड़ी ही दूर पर स्थित वृक्षोंपर दो-चार पंछी रह-रह कर न जाने अपनी अविदित भाषामें क्या तो बोल उठते थे! उनके पंखोंकी फड़फड़ाहट तरु-पत्रोंसे मिल कर विचित्र वेदना-मयी भाव-लहरियाँ समीरणके प्राणोंमें सन्निविष्ट कर देती थीं।

रमोना अपने प्राणोंकी सारी शक्ति लगाकर अपनी हाहाकार-

मयी भावनाओं को शान्त शिथिल करनेका प्रयास कर रहा था। वह चाहता था कि वह सब कुछ भूल जाये,—आज प्रभात की आलोकमयी घड़ियोंमें अपने जीवनके जिस आत्मद्रोहको वह देख चुका है, उसे वह विस्मरणके गर्त्तमें फेंक दे! ..... लेकिन वह अभागा मानव—वह दुर्बल रैमोना अपने इस प्रयासमें कहाँ सफल हो पाता था! ज्यों-ज्यों वह उस क्रन्दनमयी-वेलाको भूलनेका प्रयास करता था, त्यों-त्यों उसकी स्मृति अधिकाधिक उज्ज्वल—अधिकाधिक स्पष्ट होती जाती थी।

और बातें तो वह कुछ देरके लिये किसी तरह विस्मृतिके कृष्णाञ्चलमें छिपा भी लेता था, किन्तु वे शब्द—उफ़, वे जलते हुए शब्द तो किसी तरह भी उसकी स्मृतिसे ओझल नहीं हो पाते थे! कितनी निष्ठुरताके साथ—कितनी निर्ममताके साथ वे शब्द उसकी प्राण-प्रियाके मुखसे निकले थे! रैमोनाको जीवनके किसी भी भाग्यहीन प्रहरमें इस बातका विश्वास नहीं हो पाया था कि उसकी रूप-परी उसके प्रति इतना तीखा व्यव-हार कर सकती है,—उसे इस प्रकार अपमानित, अवहेलित कर सकती है!—उसके ममतामय हृदयको इतनी निर्ममताके साथ कुचलती हुई उसकी भर्त्सना कर सकती है!

लेकिन जिसका विश्वास नहीं था,—जिसकी कल्पना भी नहीं हो पायी थी, वही तो आज प्रातःकाल ज्वलन्त सत्य बन कर आ उपस्थित हुआ था!

रैमोनाके पास उस समय अमीरीका कोई भी चिह्न नहीं

था। केवल एक रिस्टवाच थी। उसे भी उसने उतार कर नदीमें फेंक दिया। छप से आवाज हुई और वह घड़ी क्षण भरमें सरिताकी लहरोंके नीचे बैठ गयी!

रैमोनाने गीत गाकर अपना दिल बहलाना चाहा, लेकिन उसे उस समय कोई गीत याद नहीं आ रहा था! उन हाहाकार जगानेवाले भर्त्सनाभरे शब्दोंके सिवा धीरे-धीरे वह सब कुछ भूल चला। उसके मुँहसे एक हलकी-सी आह निकली और उस नीरव जनशून्य स्थानमें वह एकाकी ही न जाने किससे तो पूछ बैठा—आह! क्या इस संसारमें प्रेम ठुकराये जानेके लिये ही पैदा हुआ है? क्या सुकुमार भवनाओंकी कमनीय व्रतति-बाला किसीके ममताहीन निष्ठुर चरणोंके द्वारा रौंदी जानेके लिये ही जीवन-मालञ्चपर राशि-राशि श्री-सुषमाका प्रसार किया करती है? क्या अचानक सघनश्याम मेघमालाओंके द्वारा आक्रान्त होकर अपने प्राणोंमें नीरव हाहाकार सन्निविष्ट करनेके लिये ही प्रणयका सुधांशु अन्तर्व्योममें मद-विह्वल होकर चन्द्रिका का प्रसार किया करता है? ....

२

रमोनाको क्या पता था कि उसके प्रश्नको सुन कर उसका उत्तर देनेवाला भी वहाँ कोई मौजूद था ! उसने वह प्रश्न किसी मानवसे नहीं किया था, क्योंकि वह जानता था कि इसका उत्तर समीरणके अन्ध आघातसे, सरिताकी लोल लहरोंके क्षण-भंगुर अस्तित्वसे, विटपी-दलोंके पत्तोंके ईषत्प्रकम्पनसे, नीड़हीन विहगोंकी कातर दृष्टिसे जितनी अच्छी तरह मिल सकता है, उतनी अच्छी तरह स्वार्थपरायण मानव नहीं दे सकते !

लेकिन उसके प्रश्नको एक मानवने सुन लिया और वह टार्च जलाकर प्रश्नकर्त्ताको खोजता-खोजता वहाँ तक आ पहुंचा ! उसने ध्यानपूर्वक रैमोनाकी ओर देखा और फिर मन-ही-मन बोल उठा--'अरे, यह तो न्यूकस ईलियानोका लड़का है !'

उसने रैमोनाके केशोंको सुहलाते हुए कहा—'तुम्हें आज हो क्या गया है ! गाँवसे इतनी दूर नदीके तटपर इस जनहीन

स्थानमें इस तरह पड़े हो, मानो दुनियांमें तुम्हारा कोई भी नहीं है ! उठो, घर चलो !'

और यह कहकर वह रैमोनाको उठानेका प्रयास करने लगा। उसे ज्यादा मिहनत नहीं करनी पड़ी। रैमोना स्वयं उठ खड़ा हुआ और बोला—"काका, तुम मुझे अभी अकेला छोड़ दो। मैं कहीं भी जानेमें असमर्थ हूं। घर तो मैं इस समय किसी हालतमें नहीं जा सकता।"

"क्यों नहीं जा सकते ?"

"क्यों का उत्तर मैं दे सकता हूं, लेकिन देना नहीं चाहता।"

"यह तो अच्छी बात नहीं है। तुम बिगड़ते जा रहे हो !"

"अच्छी और बुरी बातकी शिक्षा आप रहने दें। मुझे उपदेशकी जरूरत नहीं है।"

जेली कुछ देर तक मौन सोचता रहा और फिर एक हलकी सी आह छोड़ता हुआ बोला—"हे भगवान् ! यह युवावस्था भी कितनी खतरनाक होती है। उन्मादकी कितनी ही दीवानी लहर मस्तिष्क और हृदयको सर्वथा अशक्त करके जीवनको बरबाद कर डालती हैं। न जाने कहाँ-कहाँ से तो उड़-उड़ कर स्वप्नोंके विहंगम आते हैं और अन्तर्व्योममें मनोरम कोलाहलकी सृष्टि करने लगते हैं, किन्तु वह कोलाहल एक ऐन्द्रजालिक मायाकी भाँति न जाने कहाँ तो तिरोहित हो जाता है और फिर जीवनमें अन्तिम सर्वघातक प्रहरोंके आने तक एक विचित्र शून्यता

प्राणोंके अणु-अणुको पीड़ित करती रहती है,– जीवनकी समस्त रक्तालोड़ित कामनाएँ मौन सिसकती रहती हैं। झूठी रसमयी बातें अनुरागकी सर्वस्व स्वाहा कर डालनेवाली छलनाएँ कितने-कितने युवकोंके जीवनको बरबाद कर रही हैं !”

थोड़ी देर तक वहाँ पूर्ण नीरवता छायी रही। हवाने एक छोटेसे पत्ते तक को नहीं हिलाया।

रैमोनाने नीरवता भंग करते हुए कहा—“काका जेली, तुम जाओ और आराम करो। तुम्हारे आराध्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहें होंगे। तुम क्या आज उनके सामने जाकर करबद्ध प्रार्थना नहीं करोगे ?”

न जाने क्यों तो इस वार जेलीकी आँखोंमें आँसू भर आये। वह धीरेसे बोला—रैमोना, अभी तुम जवानीकी झूठी शराब पीकर मदहोश हो रहे हो ! प्रेमकी साकीबाला अपने हावभावसे तुम्हें लुभा रही है, और तुम सब कुछ भूल कर,—अपने मानव-जीवनकी समस्त महत्वाकांक्षाओं को रौंद कर,—अपने पवित्र कर्त्तव्योंका खून करके इस प्रपञ्च प्रवीण ऐन्द्रजालिक मायाके हाथोंमें पड़ कर अपना सर्वस्व स्वाहा कर रहे हो ! जब यह खुमारी उतरेगी, तब तुम देखोगे कि इस दुनियाँमें तुम्हारा सच्चा साथी,—तुम्हारे हृदयको आश्वस्त करके उसे नूतन शक्ति एवं नूतन बल प्रदान करनेवाला हमदम कोई नहीं है। तुम रो-रो कर अपनी उद्दीपनाओंकी मनुहार करते फिरोगे,—अपनी इन सुनहली प्यारभरी कामनाओंको मानते फिरोगे कि एक बार

फिर जागो; फिर एक बार हृदयके मरुस्थलको हरीतिमा प्रदान करो और इसके सुनसान अन्तरालमें कोइलियाकी काकली बिखेरो ! सच कहता हूं रैमोना ! जवानी का यह नशा उतरते ही तुम रोओगे,—तुम क्या रोओगे, तुम्हारा हृदय रोयेगा,—तुम्हारे जीवनका प्रत्येक बीता हुआ क्षण अपनी व्यर्थता पर आहें भरेगा। अतीत की स्मृतियाँ आ-आकर तुम्हारे मर्मको चीरना आरंभ कर देंगी और नानाविध मानसिक यंत्रणाओंसे पीड़ित हो कर तुम कराहने लगोगे ! जीवन प्रभातका स्निग्ध आलोक,—वायु-विकम्पित व्रतति-बालाओंका विटपालिङ्गन,-रस-लोलुप मधुप-कुमारियोंका गुञ्जन,-सरसीकी चंचल लहरोंमें सौरभकी वर्षा करनेवाले शतदलोंका मनोहर विकाश अपनी याद दिला-दिलाकर हृदयके जीर्ण पात्रमें पश्चात्ताप और आत्म-ग्लानिका कितना हलाहल उँड़ेलना आरंभ कर देगा, यह तुम अभी नहीं समझ सकते हो ? रैमोना ! यह जीवन कुछ नहीं है। एक छलना है,—एक मीठी मीठी प्रवञ्चना है। इसमें अपने आराध्यको भूलनेकी कोशिश मत करो। भविष्यमें आनेवाले सुनसान प्रहरोंमें वे ही तुम्हें आलोक प्रदान कर सकेंगे,—वे ही तुम्हारे चारों ओर फैले हुए हाहाकार को प्रशमित करके नूतन उल्लास जगा सकेंगे।

रैमोनाने कुछ कहा नहीं। चुपचाप जेलीके चेहरेकी ओर देखता रहा। जेलीने फिर बड़ी ही अनुरोधभरी बाणीमें कहा—"रैमोना तुम अपने घर नहीं जाते हो तो न जाओ। किन्तु मेरे घर तो चलो। यहाँ इस तरह पड़े रहोगे तो तबियत खराब हो

जायगी और तबियत खराब होनेसे फिर सब कुछ चौपट हो जायेगा ! दुनियांमें स्वास्थ्य ही सब कुछ है !"

रैमोना,—हृदयकी सारी अनुरागमयी चन्द्रकिरणोंको लुटा कर सरिता-तटपर अपने जीवके दुर्वार रक्तभरे अभिशापोंकी मनुहार करने वाला रैमोना उस समय सबसे दूर, सर्वथा एकाकी रहना चाहता था। घर जानेकी इच्छा तो उस समय उसकी किसी हालतमें भी नहीं हो रही थी। गृहहीन, स्नेहहीन, रसहीन, सुख-हीन होकर,-सर्वस्वहीन होकर उसकी आत्मा न जाने किस निर्जन प्रान्तरकी ओर उड़ जानेके लिये छटपटा रही थी। चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार था। बाहर भी और भीतर भी। हृदयमें एक छोटा-सा दीपक टिमटिमा रहा था। वह भी न जाने किस क्षण,-न जाने अवसानके किस अंचलके ईषत्कम्पनसे बुझ जाता ?

"रैमोना ! लड़कपन न करो और मेरे साथ चले चलो !"

रैमोनाने अपनी डबडबायी हुई आंखोंमें अशेष कातरता भर कर उसकी ओर देखा ; फिर बोला—"चलनेको मैं चल सकता हूं काका ! लेकिन आज कहीं भी जानेकी मेरी इच्छा नहीं है। तुम समझते हो कि तुम्हारे यहां जाकर रात बितानेसे मेरे प्राणोंका आकुल क्रन्दन प्रशमित हो जायगा,—मेरा यह हाहाकार भरी लपटोंवाला अग्नि-पुञ्ज शीतल हो जायगा। किन्तु यह तुम्हारी भ्रांत धारणा है। मुझे एकाकी ही रहने दो। शायद यह एकाकीपन ही, दूर-दूर तक फैली हुई यह तिमिरालस निर्जनता ही मेरे प्राणोंको कुछ आश्वस्त कर सके !"

रात अपने हृदयमें कालिमाके साथ-ही-साथ तारकोंकी संख्या भी बढ़ाती चली जा रही थी। हवा भी धीरे-धीरे जोर पकड़ती जा रही थी। जाड़ा भी बढ़ चला था।

"देखो, रैमोना! नादानी न करो। तुम्हारे शरीरपर कपड़े भी तो ज्यादा नहीं हैं। मेरी ये आँखें दुनियांमें बहुत कुछ देख चुकी है और खास करके नवयुवकोंके सम्बन्धमें तो किसी प्रकार की भ्रान्ति मुझे हो ही नहीं सकती! तुम इस समय सबसे पहले अपने शरीरको गरमाने की ओर ध्यान दो। शरीर ठीक रहेगा तो हृदय भी ठीक हो जायगा और यदि शरीरको ही ..."

"अच्छा, चलो। चलता हूं।" स्वरमें विचित्र उत्तेजना-सी भर कर रैमोना बोल उठा और पागलों की भांति चलनेके लिये तैयार हो गया।

जेलीने टार्च जला ली और उसीके प्रकाशमें रैमोनाका हाथ पकड़ कर वह चलने लगा।

वे थोड़ी ही दूर चल पाये थे कि जेलीकी बड़ी लड़की एलीसा आती हुई दिखायी दी। अपने पिताको देखते ही वह बोल उठी—"ओह! तुमने आज इतनी देर कहाँ कर दी! माँ बहुत चिन्तित हो रही है। तुम प्रतिदिन शामको ही घर वापस आ जाया करते थे। नौ बज रहे हैं और तुमने अभी तक न तो नाश्ता ही किया है और आज न तो प्रार्थना ही करने गये। चलो, जल्दी चलो। ऐसी चालसे कब घर पहुंचोगे। मां बहुत घबड़ा रही है!"

"जैसी पगली तुम हो, वैसी ही तुम्हारी माँ है। भला इसमें घबड़ाने की कौन सी बात है। क्या मैं कोई दूधमुंहा बच्चा हूं, जो खो जाऊँगा।" जेलीने बड़े प्यारके साथ एलीसाके गालोंपर हल्की-सी चपत लगाते हुए कहा।

"और यह कौन है? इसे तो मैंने तुम्हारे साथ कभी नहीं देखा था!" और यह कह कर वह घूर-घूर कर रैमोनाकी ओर देखने लगी।

जेलीने आंखोंमें कृत्रिम क्रोध भर कर उसकी ओर देखा और बोला—"देखो, तुम्हारी यह अच्छी आदत नहीं है। तुम बहुत दुष्ट होती जा रही हो! जरा सभ्यता और शालीनता सीखो। इसे तुम नहीं जानती हो। यह हम लोगोंके गाँवके सबसे बड़े आदमीका लड़का रैमोना है?"

"अरे, यही रैमोना है!" इस बार वह कुछ लज्जित सी हो गयी, अपने दुर्व्यवहारपर उसे कुछ विक्षोभ-सा होने लगा।

राह कटते देर न लगी। थोड़ी ही देरमें वे तीनों घर पहुंच गये। दरवाजे पर जेलीकी पत्नी पहले से ही लालटेन लेकर खड़ी थी। वे दोनों वहाँ तक पहुंचें, इसके पहले ही एलीसा दौड़कर अपनी माँ से जा लिपटी और बोल उठी—"माँ, आज तो पिताजीका कोई पता ही नहीं लगा। चारों ओर ढूँढ़ आयी। कहीं भी नहीं मिले वे!"

माँने एक हलकी सी चपत लगाते हुए कहा—"और देख, वह कौन आ रहा है?"

एलीसाने अपने पिताकी ओर इस भावसे देखा, जैसे उसने उसे अभी-अभी देखा हो और जाकर उससे लिपट गयी। बोली—"पिताजी, तुम कहाँ चले गये थे? नाश्ता बिल्कुल ठंढा हो गया है। मैं तो तुम्हें खोजती-खोजती थक गयी।"

जेली हँसा। उसकी पत्नी भी हँसी। बोली—"एलीसा, तू अपनी बदमाशी रहने दे। मैंने तुम्हें इनके साथ आते हुए देख लिया था।"

इस बार एलीसा भी हँसी। उसका हास्य बहुत ही उन्मुक्त, स्वच्छंद और निर्दोष था।

तीनों हँस रहे थे,—तीनों प्रसन्न थे,—तीनोंकी आँखें जीवन के सुखमय प्रकाशसे चमक रही थी। किन्तु रैमोना?......वह भाग्यहीन नवयुवक अशेष विषादकी बहियामें वृन्तच्युत कुसुमकी तरह बहा चला जा रहा था। उसके अन्तर्देशमें न जाने मरघटका कौन सा चिता-धूम हाहाकार कर रहा था।

जेली ने अपनी पत्नीसे रैमोनाका परिचय कराया। फिर बाहर वाले कमरे में दो कुर्सियाँ मँगा कर नाश्ता लानेके लिये कहा।

"नाश्ता? पागल हुए हो क्या? इतनी रात हो गयी है और तुम नाश्ता मँगा रहे हो। यह खाना खानेका वक्त है कि नाश्ता करनेका? देरी न होगी। मैं फौरन खाना तैयार किये देती हूँ। तब तक तुम एलीसाको भेज कर थोड़ा मक्खन मँगा लो।"

जेली ने एलीसाको मक्खनका दाम दे दिया और फौरन लेकर आनेके लिये कहा।

जेलीकी पत्नी रसोई घरमें चली गयी और उस कमरेमें केवल वे दोनों रह गये। जेली ने कहा—"रैमोना, इस गरीबके घरमें तुम्हारा अतिथ्य क्या हो सकता है! किन्तु बेटा, प्रेमकी साग-सब्जी मिष्ठान्नोंसे ज्यादा अच्छी होती है!"

रैमोनाकी आँखें अभी तक नीची थीं। इस बार उसने उन्हें ऊपर उठाया और उनमें जिज्ञासा भर कर जेली की ओर देखा। बोला—'प्रेम ?'

"हाँ, प्रेम। क्यों, आश्चर्य-चकित क्यों हो रहे हो ?"

"अभी-अभी तो आप प्रेमकी भर्त्सना कर रहे थे। कह रहे थे कि नवयुवकोंके जीवन-शतदलपर यह प्रेम करकापात बन कर आता है और उसके सारे सौरभ-वितरणको,—उसके अस्तित्वकी सारी कमनीयताको नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है! अभी-अभी तो आप प्रेमको अभिशाप बतला रहे थे और इस समय ·····!"

"आह! बेटा रैमोना! तुम मेरा मतलब नहीं समझ सके! पहले मैंने जिस प्रेमके सम्बन्धमें कहा था, वह वास्तवमें प्रेम नहीं है; वह उत्तम हृदयका वासना-जनित उद्वेलन है। नवयुवक वृन्द उसे प्रेमके नामसे पुकारता है। मैं उसे प्रेम नहीं समझता। जो मनुष्यके हृदयको संकुचित कर दे,—उसके मस्तिष्कमें बाह्यजगत्‌की विभूतियोंसे हो-हो कर प्रवेश करनेवाली रश्मियोंका मार्ग अवरुद्ध कर दे, क्या वह प्रेम कहा जा सकता है? प्रेमकी जो परिभाषा तुमलोग करते हो उसमें और प्रेमकी जो परिभाषा मैं करता हूं, उसमें महान् अन्तर है। मैं प्रेमको

अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करनेवाला समझता हूं। जीवनके सारे दुःखदैन्य,—सारा अन्धकार,—सारी कुत्सित पीड़ामयी भावनाएँ उसके स्पर्शसे नष्ट हो जाती हैं! वह मनुष्यको दुःखसे सुखकी ओर ले जाता है! उसके चित्तको सदैव प्रफुल्लित रखता है! और उसकी आँखोंमें आँसूकी बरसात न लाकर ओठोंपर मुसकानकी ज्योत्सना बिखेरता है। और यदि आँसू भी लाता है तो आनन्दके; विषादके नहीं। लेकिन नवयुवकोंका प्रेम! ··· छिः। वासनाकी एक नश्वर हिल्लोलके अतिरिक्त वह और भी नहीं है! जादूभरी आँखोंपर या मदभरी बोलीपर मुग्ध हो कर तुमलोग ···!"

"काका, मुझे इस समय-क्षमा करो। मैं न तो तुम्हारी बातों पर इस समय ध्यान दे सकता हूं और न कुछ कह ही सकता हूं। मेरा हृदय इस समय बहुत अशान्त है! मैं इस समय एकाकी रहना चाहता हूं। धृष्टताके लिये क्षमाप्रार्थी हूं!" रैमोना बीचमें ही बात काटकर बोल उठा।

'नहीं, धृष्टताकी इसमें कौन सी बात है। तुम इस समय मेरे अतिथि हो। मुझे हर तरहसे तुम्हारे मनके अनुकूल काम करना चाहिये। मैं दूसरे कमरेमें जाता हूं। लेकिन इतना तुम्हें एक बार फिर कह देना चाहता हूं कि तुम प्रेमके भ्रममें पड़ कर अपने आपको धोखा दे रहे हो। प्रेम मदिरा नहीं है, वह अमृत है। प्रेम किसी अवस्थामें भी मानव-हृदयको विषादके अन्धकारित गर्त्तमें नहीं फेंक सकता है! वह तो स्वर्गिक आलोकका और पावन-

हर्षका देवदूत है !" यह कह कर वह कुर्सीसे उठा और धीरे-धीरे कमरेसे बाहर हो गया।

रैमोना उस कमरेको अब कुछ-कुछ ध्यानपूर्वक देखने लगा। कमरा साधारण था, किन्तु सजावट प्रशंसनीय थी। सब चीज विधिके साथ रखी हुई थीं। मेजपर फूलोंके दो चार गुच्छे रखे हुए थे, जो अपने सौरभसे वायुमें मादकता भरनेका प्रयास कर रहे थे।

रैमोना धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगा। यह गीत उसे बहुत प्यारा था,—उसे ही नहीं, उसकी प्रेयसी भी इसे बहुत प्यार करती थी चाँदनीका आसव पी कर व्योम-पथमें अभिसार करने वाली रातोंमें वह इसे गा-गाकर रमोनाको मद-विह्वल कर दिया करती थी।

धीरे-धीरे रैमोना अत्यन्त आत्मविस्मृत-सा हो गया और उसके गीत कमरेसे बाहर भी सुनायी पड़ने लगे। गीत बड़े ही विषादपूर्ण और मार्ममधुर थे। एक गीत तो इतने पीरभरे स्वरमें उसने गाया कि जेलीके मुखसे भी एक हल्की-सी आह निकल गयी। जेली दरवाजेके पास आ कर खड़ा हो गया। देखा, रैमोना अत्यन्त विषादग्रस्त अवस्था में कुर्सीपर पड़ा हुआ है। उसकी आँखें अधखुली थीं। वह उसे छेड़ना उचित न समझ कर बाहर चला आया। आकाशकी ओर देखा। करोड़ों नक्षत्र मुसकरा रहे थे। उसका हृदय श्रद्धा, भक्तिसे भर आया। वहीं घुटने टेककर वह बैठ गया और आँखें मूँद कर प्रार्थना करने

लगा—"हे प्रभो! तुम्हारी महिमा अनिर्वचनीय है। इस भोलेभाले बालकको सन्मार्गपर लाओ। इसे सद्बुद्धि प्रदान करो, अन्यथा झूठे प्रेमका यह पिशाच इसके जीवनको बरबाद कर डालेगा!"

३

पूरा एक घंटा बीत गया। घड़ी ने टन-टन करके दस बजा दिये। लेकिन एलीसा अभी तक नहीं आयी।

"बड़ी दुष्ट बालिका है। अभी तक नहीं आयी। तुम भोजनकी सामग्री ले आओ। एलीसा क्या जाने मक्खन कब लायेगी।" जेलीने अपनी पत्नीसे कहा।

उसकी पत्नीने भोजन-सामग्री लाकर दोनोंके सामने रख दी जेलीने रैमोनासे अनुरोधभरी वाणीमें कहा—"बेटा, तुम्हारा नटखट बहन तो अभी तक नहीं आयी। बड़ी दुष्ट है। खैर, मुझे तो जोरोंकी भूख लगी है। आज शामको नाश्ता भी नहीं कर सका था। तुम भी आज दिन भरके भूखे मालूम होते हो।"

इतनेमें ही कमरेमें आंधीकी तरह एलीसाने प्रवेश किया। स्वरमें मीठी भर्त्सना भरके उसके पिताने कहा—"इतनी देर कहां कर दी तूने ? और मक्खन !.........ओह ! बड़ी बदमाश है तू। नहीं ही लायी न।"

"तुम्हें मक्खनकी सूझ रही है। और उधर गाँववालोंके होश हवा हो रहे हैं। तुम मजेके साथ घरके अन्दर बैठे हो। तुम्हें क्या पता कि बाहर क्या हो रहा है!" एलीसाने अपने स्वरमें अपने पिताके स्वरसे भी ज्यादा भर्त्सना भर कर कहा।

इतनेमें ही एलीसाकी माँ भी कमरेमें पहुंच गयी और उसे डाँटते हुए बोली—'मक्खन कहाँ है? और तुमने इतनी देर कहाँ की?"

"बस, जिसे देखो, वही मक्खनकी चिन्ता कर रहा है। उधर गाँवमें क्या हो रहा है, इसकी किसीको खबर भी नहीं है।"

सेल्यूसोकी लड़की लौरेटाको तो तुम जानते ही होगे। वह कल रात भर गायब रही। आज भी दिन भर घर नहीं गयी। उसके चाचा कितने खुनी आदमी हैं, यह तो सारा गाँव जानता है। लड़ाईमें उन्होंने क्या जाने कितनोंका खून किया है। वे पिस्तौल हाथमें लिये हुए गाँवमें चक्कर लगा रहे हैं। मैं उनको देखकर आ रही हूं। क्रोधके मारे उनकी आँखं जल रही हैं। वे दाँत पीसते हुए घरोंमें प्रवेश करते हैं और जब लौरेटाकी कोई खबर नहीं मिलती है तो घरवालोंको डाँटते डपटते हुए वहाँकी चीजोंको रौंदने लगते हैं! लोग थर-थर काँप रहे हैं! ..... हो सकता है, वे थोड़ी देरमें यहाँ भी आ जायें। .....

"आने दो। हर्ज क्या है।" निश्चिंततापूर्वक जेलोने कहा और फिर रैमोनाकी पीठ थपथपाते हुए बोले—"बेटा, आजका दिन ही ऐसा था। क्या करोगे? मक्खनके बिना खानेमें स्वाद तो

क्या आयेगा, लेकिन अब उपाय भी तो कोई नहीं है।...... शुरू करो।"

जेलीके भयभीत न होनेका कारण यह था कि सारे गांवमें लौरेटाका चाचा डेड्रियामा यदि किसीसे प्रेमपूर्वक बातें करता था तो बस दो ही आदमियोंसे। एक तो जेलीसे और दूसरा रमोनाके पितासे।

लेकिन जेली रोटीका कौर मुँहमें डाल भी नहीं पाया था कि उग्ररूपधारी डेड्रियामा वहाँ आ पहुंचा। उसके मुखकी भाव-भंगी क्रोधमयी थी। जेलीके स्थानपर यदि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो अवश्य डर जाता।

जेलीने मुसकराते हुए कहा,—आओ, अच्छे आये। एलीसा अभी तुम्हारा ही नाम ले रही थी!"

रैमोनाने डेड्रियामाकी ओर देखा तक नहीं। चुपचाप वातायन पथसे बाहरकी अनन्त शून्यताको अपने प्राणोंमें भरनेका प्रयास करता रहा।...सचमुच बाहरकी निर्जनता बड़ीही उदास और पीड़ामयी मालूम हो रही थी। ऐसा लग रहा था मानों रैमोनाकी ही तरह उसने भी कुछ खो दिया है,—वह भी किसीके द्वारा ठुकरा दी गयी है।

डेड्रियामाने रैमोनाको देखा और क्रोधयुक्त स्वरमें बोला—रैमोना! मैं तुम्हें ही खोज रहा था। लौरेटा कहाँ है?"

इस बार रैमोनाने अपनी आँखें ऊपर की ओर डेड्रियामाकी ओर देखा। किन्तु बोला कुछ भी नहीं।

"बोलते क्यों नहीं ? तुमने लौरेटाको कहां भेज दिया है ?" वह फिर गरजा।

रैमोना उसकी कठोर आवाजसे कुछ भी प्रभावित नहीं हुआ। धीमे स्वरमें बोला—"मैं नहीं जाता ! मैंने लौरेटाको कहीं भी नहीं भेजा है !"

"रैमोना ! तुम मुझसे झूठ न बोलो !" गरज कर डेड्रियमाने कहा।

"रैमोना कभी झूठ नहीं बोलता !" डेड्रियामाकी आंखोंसे आंख मिला कर रैमोनाने गर्वपूर्वक कहा।

"मैंने लौरेटाको कई बार तुम्हारे साथ देखा है। खेतोंकी पगडंडियोंपर चलकर तुम दोनों न जाने कितनी ही रातें पार कर चुके हो। जितनी घनिष्टता लौरेटाकी इस गांवमें तुम्हारे साथ है, उतनी शायद ही किसीके साथ हो। वह गायब हो जाये और तुम्हें उसका पता तक न हो, यह सर्वथा असंभव है ! सच-सच बतला दो, अन्यथा तुम्हारे प्राणोंपर आ बीतेगी !" डेड्रियामाके स्वरसे क्रोधकी लपटें निकल रही थीं।

उस गांवका कोई भी व्यक्ति डेड्रियामाको उस क्रोधावस्थामें अपने सामने देख कर भयसे कम्पित हो सकता था। उसके शरीरमें दानवी शक्ति थी। सारा गांव उससे डरता था। लेकिन रैमोना तनिक भी भयभीत नहीं हुआ। उसने उसी प्रकार उत्तर दिया—"मैं सच-सच बतला रहा हूं। मुझे झूठ बोलनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। लौरेटा गांवसे गायब हो

जाये और उसका पता मुझे मालूम न हो, यह दो दिन पहले तक असंभव था, लेकिन अब शायद जीवन भरके लिये यह संभव हो गया है।"......और इतना कहते-कहते रैमोनाकी आँखें आँसुओंसे भींग गयी। वह झंझाहत जर्जर-वृक्ष-शाखाकी भाँति कुर्सीपर गिर पड़ा।

"तुम दोनों पागलोंकी सी बातें कर रहे हो। मैं पूछता हूं कि इसमें घनिष्टताका कौन-सा प्रश्न है। यह जिस प्रकार आज असंभव है, उसी प्रकार आजसे दस दिन पहले भी असंभव था। उसे यदि बाहरसे आये हुए बदमाश उड़ा ले गये होंगे, तो उसका पता तुम्हें कैसे लग सकता था।" जेली बोला।

"उसका पता? आप यह क्या कह रहे हैं? दो दिन पहले तक मैं उसके हृदय की एक-एक धड़कन सुना करता था और वह मेरे प्राणोंके एक-एक स्पंदनको प्यार किया करती थी—उसके जीवनका प्रत्येक क्षण अपने दुख-सुखको लेकर मेरे जीवनके प्रत्येक क्षणमें अपने अस्तित्वको विकसित किया करता था। इस छोटी-सी दुनियांकी तो बिसात ही क्या है! यदि आजसे दो दिन पहले वह इस पृथ्वीसे भी दूर—बहुत दूर किसी दूसरे ही लोकमें चली गयी होती, तब भी मैं जान जाता कि वह कहां है। उसका श्वास-सौरभ मेरे अन्तर्देश तक आये बिना कदापि नहीं रहता! उसके विचार—उसकी भावनाएँ—उसकी कामनाएँ समीरणके रथपर आसीन होकर मेरे प्राणों तक अवश्य ही पहूंच जाती। यहांसे सहस्त्रों कोसकी दूरी पर जाकर भी

यदि वह मुसकराती तो मेरे प्राण प्रफुल्लित हो उठते, हृदयका कण-कण एक स्वर्गिक सुषमाके चन्द्र-किरणोज्वल स्पर्शसे धन्य हो उठता ! और यदि उसकी आंखोंसे आँसुकी एक नन्ही सी बूँद भी निकल कर उसके गुलाबकी पंखड़ियोंसे कोमल कपोलोंपर ढुलक जाती तो मेरे रोम-रोम क्रन्दन कर उठते ! लेकिन यह सब आजसे दो दिन पहले तक था। आज...!" कहता-कहता रैमोना मौन हो गया।

"क्यों, आज क्या हुआ ?"

रैमोना मौन ही रहा। जैसे उसने सुना ही नहीं।

"क्यों, उत्तर क्यों नहीं देते ?"

"मैं इसका उत्तर देना नहीं चाहता।" रैमोनाने एक उष्ण उछ्वास छोड़ते हुए कहा !

डेड्रियामा ने रैमोना की ओर इस बार बड़ी क्रूर दृष्टिसे देखा। फिर जेलोकी ओर देखकर बोला—"जेली ! मैं इसे इसके पिताकी सज्जनताके कारण छोड़ देता हूं अन्यथा यह लड़का तो जानसे मार डालनेके योग्य है !"

रैमोना वहां ज्यादा देर खड़ा नहीं रह सका ! उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानों कोई अज्ञात शक्ति उसे बाहरकी ओर खींच रही है।

वह उस तमाकीर्ण यामिनीमें मकानसे बाहर निकलकर न जाने किधर तो चल पड़ा।

जेलीने एक बार डेड्रियामाकी ओर देखा और डेड्रियामाने

जेलीकी ओर। डेड्रियामा बोला—“यह लड़का पागल तो नहीं हो गया है ?”

जेलीने खुले हुए दरवाजेकी ओर देखा; फिर उस दिशाकी ओर, जिधर रैमोना चल पड़ा था। एक हलकी सी आह छोड़ कर बोला—“इसे जवानीकी उस वारुणीने पागल बना दिया है, जिसे नवयुवक प्रेम कहा करते हैं। अभागा है। मुझे इसके भविष्यकी बड़ी चिन्ता है ! यह लौरेटाके पीछे पागल है, इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है, किन्तु तुम इतना विश्वास रखो कि इसे इस समय लौरेटाका कुछ भी पता नहीं है। रैमोना सब कुछ कर सकता है, लेकिन झूठ नहीं बोल सकता।”

डेड्रियामाके चेहरे पर बिखरी हुई क्रोध की भावनाएँ न जाने कहाँसे मुसकराहटकी एक हलकी सी रेखा खींच लायीं। वह बोला—“जेली, तुम भी क्या बच्चोंकी सी बातें करते हो। लड़कियोंके पीछे दीवाने होनेवाले नवयुवक कौन सा पाप नहीं कर सकते ! मिथ्या भाषण तो इनके लिये एक साधारण सी बात है”।

“अच्छा, अभी इन सब बातोंको जाने दो। बहुत थके हुए जान पड़ते हो। आओ, थोड़ा भोजन कर लो। मुझे तो जोरोंकी भूख लगी है।” जेलीने उस कमरेकी ओर चलते हुए कहा, जहाँ रैमोना और उसके लिये भोजन-सामग्री रखी हुई थी।

“भूख तो मुझे भी लगी है। किन्तु तुम्हारे सारे परिवारकी

भोजन-सामग्री तो मैं अकेला ही हड़प जाऊँगा। अतएव अच्छा हो यदि हम तुम दोनों चौराहेवाले होटलमें जाकर आरामके साथ, एक साथ भोजन करें। उस होटलमें भोजन बनता भी अच्छा है।"

जेलीने तनिक भी आनाकानी नहीं की। वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि डेड्रियामाको खिलानेका मतलब अपनी पत्नी और अपनी लड़कीको भूखा रखना होगा।

होटल ज्यादा दूर नहीं था। बातकी बातमें दोनों वहाँ पहुंच गये। लौरेटा गाँवसे गायब हो गयी है और डेड्रियामा पिस्तौल थामे हुए घर-घर फिर रहे हैं, यह खबर सुनकर होटल-वालेने डरके मारे आज समयसे तीन घन्टा पहले ही होटल बन्द कर दिया था!

"होटल तो बन्द है। अब क्या किया जाय!" जेलीने उदास होकर कहा।

"बन्द कैसे है! मैं अभी इसे खोलता हूं!" और यह कह कर उसने होटलके दरवाजेको पाँच-सात मिनटोंमें ही तोड़ डाला।

"डेड्रियामा, यह तो अच्छी बात नहीं है।"

"अच्छी और बुरी बातोंका उपदेश तुम अपने पास रखो। मैं वही करता हूं, जो मैं करना चाहता हूं।" डेड्रियामाने होटल-में प्रवेश करते हुए कहा।

खाना खाते वक्त जेलीको बड़ी ही आत्म-ग्लानि हो रही थी,

किन्तु अपने मित्रके भयमिश्रित प्रेमके कारण वह चुपचाप खाता चला जा रहा था।

होटलवालेको किसी राहगीरने खबर दे दी थी कि उसका होटल डेड्रियामाका कोपभाजन बन गया है और सारी भोजन-सामग्री शेष हुई जा रही है। किन्तु होटलवालेकी इतनी हिम्मत कहा कि वह जा कर गाँवके उस शेरको मना करे!

४

रैमोना,—लौरेटाकी अपरिसीम अनवद्य रूप-राशिकी स्मृतियों को पुचकारता हुआ रैमोना उस तमाकीर्ण निशीथमें न जाने किस अज्ञात, अविजानित आदेशका अनुकरण करता हुआ बढ़ा चला जा रहा था। मार्गमें कई बार ठोकर लगी और वह गिरते-गिरते बचा। लेकिन मुखसे एक आह तक न निकली। पत्थरोंके नुकीले टुकड़े गड़-गड़ कर दोनों पैरोंको लहूलुहान कर रहे थे।

लौरेटा!—लौरेटा!!—उसके हृदयका टुकड़ा-टुकड़ा लौरेटा को पुकार रहा था। उसकी आत्माका अणु-अणु लौरेटाके लिये हाहाकार कर रहा था! उसके अंग-अंग पुकार रहे थे,—उसके रोम-रोमसे आवाज निकल रही थी—"लौरेटा, तुम कहाँ हो?"

लौरेटा गाँवमें नहीं है, यह जान कर रैमोनाका प्रेम धधक उठा था और वह उस हाहाकारमय प्रभात की सारी भर्त्सना—सारी अवहेलाको भूल गया। लोरेटाको देखनेके लिये,—देख

कर अपने तिमिराकुल प्राणोंमें ज्योत्स्ना बरसानेके लिये वह श्रावणकी पर्वतीय सरिताके समान व्याकुल हो रहा था।

उसे न भूख थी, न प्यास थी। विप्रयोग-वेदनाकी सर्वग्रासिनी ज्वालामें उसकी भूख-प्यास नष्ट हो चुकी थी। न जाने कैसे-कैसे अनिष्ट—न जाने कैसे कैसे दुर्दान्त अमंगल उसकी मनोभावनाओंका दामन पकड़ कर उन्हें झकझोर रहे थे। नैश-समीरणके वे शीतल झोंके न जाने कहाँसे तो मरुस्थलीके ग्रीष्म-मध्याह्नका उत्ताप अपनेमें भर रहे थे। प्रिय-दर्शनकी उन्मादमयी आकांक्षासे विह्वल होकर रजनी सारे शरीरको चक्षुमय बनानेका प्रयास करती हुई काजल लगा रही थी। और अन्तरिक्षका हृदय न जाने क्यों तो साँय-साँय कर रहा था।

उन्मादनाकी इसी तूफानी अवस्थामें रैमोना कब और कैसे स्टेशन पहुंच गया, यह उसे स्वयं नहीं मालूम हो सका। ट्रेन छूट चुकी थी अन्यथा वह उससे अवश्य रवाना हो गया होता। उस गाँवमें क्षण भर भी रहना उसे नागवार मालूम हो रहा था। भला, जिस गाँवमें लौरेटा न हो,--रूप और रसकी, श्री और सुषमाकी देवी लौरेटा न हो, वह भी क्या रैमोनाके रहने योग्य हो सकता है! जहाँ लौरेटा है, वहीं रैमोना भी है,—वहीं रैमोनाका सब कुछ है। वहाँके वातावरणमें ही रैमोना साँस लेकर जी सकता है! जहाँ लौरेटा गयी है, वहाँ रमोना भी जायगा।

वह एक बेंच पर बैठ गया और आकाशके तारोंकी ओर

देखने लगा। रमोना उस विषादग्रस्त अवस्थामें इतना सुन्दर मालूम हो रहा था कि कोई भी चित्रकार उसका चित्रण करके धन्य हो जाता। वह धीरे-धीरे एक गीत गुनगुनाने लगा।

स्वर-लहरीमें कोमलतासे अधिक करुणा थी और करुणासे अधिक कोमलता। स्टेशन-मास्टर रैमोनाकी आवाजसे भली-भाँति परिचित था। वह रैमोनाके पास चला आया और बोला—"अरे रैमोना, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हारे नाम की एक चिट्ठी थी। एक तरुणी दे गयी है। वह कल सबेरेकी ट्रेनसे बाजार जा रही थी। अभी-अभी मैंने एक आदमीको घोड़ेपर तुम्हारे घरकी ओर भेजा है!"

"मेरे नामकी चिट्ठी!......एक तरुणी दे गयी है!...... कल सबेरेकी ट्रेनसे जा रही थी।"......रैमोनाका विषादग्रस्त मुखमण्डल एक अविदित आलोक-रश्मिके स्पर्शसे चमक उठा। उसने स्टेशन मास्टरसे कहा—"आप जल्दीसे जल्दी मुझे अपना घोड़ा दे दें। वह चिट्ठी किसी दूसरेके हाथमें नहीं पड़नी चाहिये।"

"मेरा घोड़ा तो आज कई दिनोंसे बीमार है। उसमें दो डेग चलनेकी शक्ति भी नहीं है।"

रैमोना बहुत उद्विग्न हो रहा था। उसकी इच्छा तो हो रही थी कि वह एक क्षणका विलम्ब किये बिना ही उस ओर दौड़ जाये, जिधर वह अश्वारोही उसकी प्रेयसीका,—उसके अन्तर्देशमें राशि-राशि श्री-सुषमाका प्रसार करके अन्तर्हित हो जाने वाली

लौरेटाका पत्र लेकर गया था। उस पत्रको पानेको उसका रोम-रोम मचल रहा था!

एकाएक उसकी दृष्टि एक बूढ़े किसान पर पड़ी। उसने बड़ी निष्ठूरतापूर्वक उसे घोड़ेसे उतार दिया। और उसपर चढ़कर उड़ चला। बेचारा बूढ़ा चिल्लाता ही रह गया,—रैमोना, रैमोना! तुमसे एक बहुत जरूरी काम है। लो लेते आओ ... लौरेटाका पत्र है!

लेकिन अन्तिम वाक्य तो रैमोनाके कानोंमें कहाँ से पड़ता, दूसरा वाक्य भी नहीं पड़ सका। वह उस समय तूफानोंका सहचर बना हुआ था।

स्टेशन-मास्टर भी रैमोनाके उस विचित्र और निर्मम व्यवहारसे बुड़ी तरह चिढ़ गया। चिढ़नेकी सबसे पहली बात तो यह हुई कि उसने रैमोनाको उम्रमें छोटा होते हुए भी पहले अभिवादन किया और रैमोनाने उसका कोई उत्तर नहीं दिया। खीझ कर उसने उस बूढ़े किसान से कहा - "रोबियो, आओ, बहुत थक गये हो। कुछ जलपान कर लो। इतनी दूर चलकर आये हो। मैं समझता हूं कि अभी तुमने चाय तक नहीं पी होगी।"

सचमुच बूढ़ेको चायके एक प्यालेकी उस समय बड़ी प्रबल आवश्यकता हो रही थी। उसने दाँत निपोर कर, चेहरेपर कृतज्ञता-जनित मुसकुराहटका भाव बिखेरते हुए कहा—"जी हाँ, बहुत थक गया हूं। सारा शरीर टूट रहा है!"

"अच्छा, तो बाहर क्यों बैठे हो ? अन्दर चले आओ। जाड़ा लग रहा होगा। तुम्हारे शरीरपर ज्यादा कपड़े भी तो नहीं है।" स्टेशन-मास्टरने स्वरमें करुणा भर कर कहा।

"जी हाँ, बात तो ठीक ही है। ज्यादा कपड़े हम गरीब पहनें भी तो कहाँसे। खानेका तो ठिकाना ही नहीं है। आप कपड़ोंकी बात कर रहे हैं। शरीर किसी तरह ढँका रहता है, यही बहुत है।"

स्टेशन-मास्टर बोला—इसका उपाय भी क्या है! अपना-अपना भाग्य है। अच्छा, आओ। अन्दर चले आओ।

चायके दो प्याले पीकर और कुछ नाश्ता करके उस बूढ़े किसानके चेहरे पर ताजगी आयी और वह एक बार खूब जोरोंसे हँसा।

स्टेशन-मास्टरने आश्चर्यित होकर उसकी ओर देखा। फिर बोला—"पागल तो नहीं हो गये हो ? आखिर इस हँसीका कारण क्या है ?"

बूढ़ा फिर हँसा और बोला—"मैं यहाँ, इतनी दूर, अपने सारे काम-काज छोड़ कर रैमोनाके लिये आया था। और उसी रैमोनाने मुझे मेरे परिश्रमका ऐसा सुन्दर पुरस्कार दिया कि मुझे बलपूर्वक घोड़ेसे उतार कर चलता बना। क्या यदि वह मुझसे अनुरोध करता हो मैं अपना घोड़ा उसे नहीं दे सकता था! लेकिन क्या कीजियेगा! आजकल के नवयुवक अनुरोध करना जानते ही नहीं।......और आप ? आप माँगनेसे भी

किसीको एक प्याला चाय नहीं पिलाते हैं, किन्तु आज न जाने क्यों तो चायके साथ-ही-साथ नाश्ता तक आपने इस गरीबको करा दिया है।"

स्टेशन-मास्टरने बाहरसे लज्जित होनेकी कोशिशकी और अन्दर ही अन्दर हँसा। बोला—"अच्छा तुम्हें रैमोनासे क्या काम है? मुझे कह जाओ। मै कर दूँगा। रैमोनासे मुलकात होना अब कठिन है। वह पागल हो गया है।"

"अवश्य पागल हो गया है। अन्यथा वह मुझसे इतना बुरा व्यवहार कभी नहीं करता। न जाने कितनी बार मैंने अपने बागीचेसे ताजा फल तोड़कर उसे और उसकी लौरेटाको खिलाये हैं। अभी एक सप्ताह पहलेकी ही तो बात है। रातको दो बजे तक वे लोग मेरे बागीचेमें बैठे-बैठे न जाने कहाँ-कहाँकी बातें करते रहे।"

"लेकिन तुम अब यहाँ उसके लिये कब तक रुकोगे? वह तुम्हारा घोड़ा लेकर आज दिन भर वापस नहीं लौटेगा। तुम मेरा घोड़ा लेकर घर चले जाओ और अपना काम करो। यहाँ व्यर्थ क्यों समय बरबाद कर रहे हो। रैमोना कहाँ गया है, यह भी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता; लेकिन वह गाँवकी ओर नहीं गया है, इसका मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ!"

"उससे मुझे एक जरूरी काम था,—बहुत ही जरूरी।"

"तो वह जरूरी काम मुझे कह जाओ। मैं कह दूँगा। क्योंकि रैमोनासे अब तुम्हारी मुलाकात कठिन ही नहीं, असंभव

है वह आज शामकी गाड़ीसे पेरिसके लिये रवाना हो जायगा।" स्टेशन मास्टरको झूठ बोलते हुए शरम भी नहीं आयी।

"तब मैं यहाँ दिन भर बैठूँगा। उससे मिले बिना मैं घर नहीं जा सकता।" बूढ़े किसानने दृढ़तापूर्वक कहा।

"दिन भर यहाँ बैठोगे? पागल हुए हो क्या? मर जाओगे! उधर तुम्हारा खेतका काम चौपट हो जायेगा। स्टेशन पर दिन भर भूतकी तरह अकेले बैठना पड़ेगा। मैं भी तो अब अधिक देर नहीं रुकूँगा। तुम अपना काम मुझे बतला जाओ न। क्या मैं उस कामको करने योग्य नहीं हूं?"

"काम करने योग्य क्यों नहीं हैं? लेकिन माफ कीजिये। बहुत ही गुप्त काम है। आप कष्ट न करें, तभी अच्छा है।"

स्टेशन-मास्टर किसी भी तरह लौरेटाका पत्र उस किसानको बेवकूफ बनाकर हस्तगत कर लेना चाहता था। लेकिन जब उसने देखा कि एक प्याली चाय और नाश्ता खर्च करने पर भी सफलता नहीं मिली तो उसे बहुत बुरा लगा।

"तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते। अच्छी बात है। अब यहाँसे पैदल ही घर जाओ। मेरा घोड़ा तुम्हें नहीं मिलेगा।" झुँझलाकर स्टेशन-मास्टरने कहा।

"दया है आपकी। मैंने घोड़ा कब माँगा था।"

"अच्छा तुम घोड़ा तो वापस कर दोगे, किन्तु मेरा जो नाश्ता तुमने किया है, वह कैसे वापस करोगे?

"वह भी वापस कर दूँगा। आप मेरे घर चले आइयेगा।

में उससे भी अधिक अच्छा भोजन आपको करा दूंगा। इसकी चिन्ता न करें।" किसानने घृणापूर्वक कहा।

"तुम मेरा अपमान करते हो......! स्टेशन-मास्टरका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसने हंटर निकाल कर अन्धाधुन्ध चलाना शुरू कर दिया!...एक...दो...तीन...इसी प्रकार सातवीं मार तक बूढ़ा सहता चला गया। उसने 'उफ' तक न की। आठवाँ हंटर पड़ते ही वह धड़ामसे जमीन पर गिर पड़ा। उसके मुखसे रक्त निकलने लगा।

बड़ी ही निर्दयतापूर्वक उसकी फटी हुई कमीजसे लौरेटाका पत्र निकालते हुए स्टेशन-मास्टरने कहा—"बोल गधेके बच्चे, क्या अब भी तू इस पत्रको मुझसे गुप्त रख सकता है?"

उसने मुसकराकर पत्रको खोला और फिर झूँझलाकर पटक दिया। पत्र रशियन भाषामें लिखा हुआ था और उसे रशियन का साधारण-सा ज्ञान भी नहीं था!

कुछ देर तक वह उस बेहोश किसानकी ओर दया भरी दृष्टिसे देखता रहा। फिर पत्रको उठाकर बड़ी सावधानीके साथ जेबमें रखते हुए मन-ही-मन बोला—"हो-न-हो, कोई महत्त्वपूर्ण बात अवश्य है। अन्यथा यह पत्र रशियनमें क्यों लिखा जाता और वास्तवमें कोई अत्यन्त गुप्त बात न रही होती तो मुझे यह पत्र न देकर वह आठ-दस पंक्तियोंवाला साधारण-सा पत्र क्यों दिया जाता!"

५

रैमोना आँधीसे गलबहियाँ डाले हुए उड़ा चला जा रहा था ! उस बूढ़े किसानके घोड़ेकी भी शामत आ गयी थी ।

गाँव तक पहुंचते-पहुंचते सूरज उग आया । प्राचीके रक्ताक्त प्रांगणमें किसी सलोने सुकुमारने अपने चरण-शतदल रखकर विश्वके तिमिराकुल प्राणोंमें ज्योतिर्धारा प्रवाहित करना आरम्भ कर दिया । प्राभातिक विहगकूजन न जाने किस अज्ञात देवताके विश्व-मन्दिरमें स्तुति गीतकी तरह सुनायी पड़ने लगा । नश नीरवता अन्धकारके साथ-ही-साथ बिदा लेने लगी ।

रैमोना जब घरके दरवाजे पर पहुँचा तो लोगोंने उसे चारों ओरसे घेर लिया और तरह-तरहसे ताने कसने लगे । एक शैतान लड़केने तो यह भी कह दिया कि बाहर क्या खड़े हो, अन्दर जाओ तब पता चलेगा ! प्रेमी बने हो न !

रैमोना विक्षुब्ध हो उठा ! दुष्ट पत्रवाहकने वह पत्र उसके पिताको अवश्य दे दिया है !

उन्मादकी प्राथमिक हिलोरकी भाँति उसने घरके अन्दर प्रवेश किया। वहाँका दृश्य देखते ही वह स्तंभित होकर खड़ा हो गया। जेली और डेड्रियोमा दोनों ही उसके पिताके पास बैठे हुए थे। उसका पिता बोल रहा था—"भाई जेली, तुम्हीं सुधारना चाहो तो रेमोनाको सुधार सकते हो! भटके हुएको रास्ते पर ले आनेकी शक्ति तुममें है।"

डेड्रियोमा बोला—"मैं तो एक ही तरीका जानता हूं। दस-बारह दिनों तक खाना मत दो, बस स्वयं उसके होश ठिकाने आ जायँगे और तेरहवें दिन सारा प्रेम काफूर हो जायगा।"

"तुम अपना उपाय अपने पास रखो। मैं अपने लड़केको जानसे मारना नहीं चाहता।" रेमोनाका पिता बोला

"यदि मेरा लड़का इस प्रकार किसी लड़कीके पीछे दीवाना हो जाता तो मैं उसको इतना मारता—इतना मारता कि वह महीनों तक खाटसे नहीं उठ सकता!"

"तुम्हारी तरह सबके सब दयाहीन नहीं हैं डेड्रियोमा!"

रेमोनाने कमरेमें प्रवेश किया और अपराधीकी भाँति खड़ा हो गया।

उसके पिताको उसके उस विषादग्रस्त भाव पर दया आ गयी। जेलीका हृदय भी विचलित हो उठा। उसने कहा—"इधर आ जाओ बेटा! डरनेकी कोई बात नहीं है। तुम रात-भर कहाँ थे? खाना भी नहीं खाया।"

और तब उसने नौकरानीको बुलाकर रेमोनाके लिये कुछ भोजन ले आनेको कहा।

"मैं कुछ भी नहीं खा सकूँगा। मुझे तनिक भी भूख नहीं है।" रैमोनाने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

उसके पिताने क्रोधायुक्त मुद्रासे उसकी ओर देखा और बोला वाह, भुख क्यों नहीं है ? आखिर तुम्हारी भुख चली कहां गयी ?

नौकरानीने जाकर रैमोनाकी माँ को खबर दी की वह आ गया है। बेटेकी आगमन-सूचना पाकर माँ दौड़ी-दौड़ी आयी और रैमोनाको कलेजेसे लगा कर बोली—बेटा, तू कहाँ चला गया था ? मैं ता तुम्हारे बिना कल रात भर नहीं सो सकी ! मेरा हृदय अभी तक धड़क रहा है।

रैमोनाके मुँहसे कोई उत्तर नहीं निकला।

थोड़ी देर तक सबके सब उसकी ओर देखते रहे। न जाने सबके सब क्या सोच रहे थे। नौकरानी भोजन लेकर आयी और खड़ी रही। किसीने उसकी ओर देखा तक नहीं। जेलीने इस शान्तिको भंग करते हुए कहा --रैमोना, गाँवमें तुम्हारी बड़ी निन्दा हो रही है !

रैमोना चौंका !……गाँवमें उसकी निन्दा हो रही है !………बड़े आश्चर्यकी बात है !……उसने पूछा - "क्यों ?"

"यह भी बतलाना पड़ेगा !" डेड्रियामाने कहा।

"मुझे सब कुछ बतलाना पड़ेगा। मैं कुछ भी नहीं जानता।" रैमोना बोला।

"देखो, रैमोना, यह सब अच्छी बातें नहीं हैं। तुम्हें

दुनियामें एक भले आदमीकी तरह रहना सीखना होगा। हम लोग भी लड़कियोंसे प्रेम किया करते थे। लेकिन वह जमाना दूसरा था। लड़कियोंके उस प्रेमने हम लोगोंके जीवनको ही बरबाद कर डाला। अन्यथा आज तुम मुझे और डेड़ियामाको इस गाँवमें ऐसा नगण्य और तुच्छ जीवन व्यतीत करते हुए नहीं देखते। मैं तो इस प्रकारके जीवनको नगण्य नहीं समझता, क्योंकि मेरे लिये तो इसीमें शान्ति है, किन्तु दुनिया-वालोंके लिये तो यह जीवन सर्वथा उपहासास्पद और आकर्षण-हीन है।"

कुछ देर तक मौन रहनेके बाद जेली फिर बोला—तुम लॅरेटाको प्यार करते हो, इसमें कोई सन्देह नहीं है। अभी तक सन्देह था, लेकिन अब सारा सन्देह जाता रहा। लेकिन तुम जानते हो हो कि वह यहाँकी रहनेवाली नहीं है। जर्मनोंकी है। और जर्मनोंसे हम लोगोंकी कभी पटरी नहीं बैठी है। तुम्हारा सारा खानदान जर्मनोंके विरुद्ध रहता आया है। तुम्हारे पिता किसी भी जर्मनसे बात करते वक्त अपने मुँहको रुमालसे ढँक लेते हैं, और तुम उन्हींकी सन्तान होकर एक जर्मन लड़कीसे विवाह करोगे! तुम्हारे दादाने मरते समय क्या कहा था? याद है?"

थोड़ी देर तक फिर निस्तब्धता छायी रही। इस बार की निस्तब्धताको घड़ीने कई बार टन-टनकी आवाज करके भंग किया। डेड़ियामा बोला—"और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यह चरित्रभ्रष्ट लड़की है! तुम्हारे परिवारके योग्य वह किसी

भी हालतमें नहीं है। मैं रिश्तेमें उसका दूरका चाचा लगता हूं तो क्या हुआ! बात तो वही कहूंगा, जो सच्ची हो। मैं उसे सुधारनेके लिये अपने साथ यहाँ लाया था, किन्तु यहाँ आकर भी वह नहीं सुधरी। भला जो लड़की मेरे जैसे कड़े स्वभावके व्यक्तिके साथ रह कर भी नहीं सुधर सकती है, वह कब सुधरेगी?"

लौरेटा—सौन्दर्य-शतदल के किञ्जल्क-जालसे अपने पार्थिव अस्तित्वके कण-कणको शृङ्गारित करके विश्व-विपिनमें रूप-परीकी भाँति विचरण करने वाली लौरेटा पर यह कुत्सित आक्षेप रैमोनाकी सहनशक्तिके बाहर था। उसका रोम-रोम इस प्रकार भावनाओंसे जल उठा। किसी तरह उसने अपने मस्तिष्कमें होते हुये ज्वालामुखीके भयंकर विस्फोटको रोकते हुये कहा—"आप लोग यह बात कह रहे हैं? लौरेटाके समान लड़कीको चरित्रहीन कहते हुए किसी भी सभ्य व्यक्तिको लज्जा आनी चाहिए!"

डेड़ियोमा अपनी सभ्यतापर आघात पहुंचा देख मन-ही-मन बहुत चिढ़ गया।

"इसमें कोई सन्देह नहीं है कि लौरेटा आधी रातकी नीरव और तन्द्रालस घड़ियोंमें गाँवसे दूर निर्जन स्थानोंमें मेरे साथ घूमा करती थी,—नौका-विहार किया करती थी,—गीत गाया करती थी। लेकिन यह सब-कुछ वह मेरे साथ करती थी। किसी और के साथ नहीं। वह मेरी कविता बनकर मेरे साथ

निशीथके उन तमाकीर्ण प्रहरोंमें आलोक बिखेरा करती थी। वह मेरे स्वप्नोंमें मादकता भरा करती थी और मेरी भावनाओंमें स्वर्गिक पावनता। मेरी कल्पना उसकी पुतलियोंके इशारों पर उड़ा करती थी। उसके हृदयके स्पंदनसे,—उसकी पलकोंके कम्पनसे,—उसकी अलकावलियोंके कम्पनसे निकल-निकल कर शतशत छन्द मेरे प्राणोंमें प्रविष्ट हुआ करते थे और मेरी लेखन-शैलीमें न जाने कहाँसे तो एक अनिर्वचनीय मधुरिमा—एक अनवद्य मंजुलता आ विराजती थी। लौरेटाने इस गांवमें दो तीन वर्ष मेरे साथ बिताये हैं—एक कविके साथ।" रेमोनाकी बोलीमें उसका गर्व बिखरा पड़ा था।

नौकरानी भोजन-सामग्री लिये-लिये थक गयी। उकताकर बोली—"मैं कब तक खड़ी रहूंगी ?"

"रेमोना कुछ खा लो।" उसकी माँने भोजन-सामग्री रखवाते हुए कहा।

"भूख नहीं है माँ!"

मैं जानती हूं कि ऐसी अवस्थाओंमें भूख नहीं लगा करती है, लेकिन नहीं खानेसे शरीरमें दुर्बलता आ जायेगी। अपने लिये नहीं तो कम-से-कम मेरे लिये ही थोड़ा-सा खा लो ?" और यह कह कर उसकी माँने अपने हाथोंसे उसे खिलाना शुरू कर दिया।

अन्दर तो यह हो रहा था और बाहर गांवके नवयुवक रेमोना और रेमोनाकी लौरेटा पर तरह-तरहके छींटे कस रहे

थे। कोई कह रहा था- "आखिर पता चल ही गया न! यह सब शरारत रैमोनाकी है। उसीने लौरेटाको गाँवसे बाहर कर दिया है! यहाँ स्वतन्त्रतापूर्वक प्रेम नहीं किया जा सकता था न!" कोई कह रहा था लेकिन चाहे जो हो। जोड़ी बड़ी अच्छी मिली है। दोनोंके दोनों जादू भरे व्यक्तित्व वाले हैं। रमोना यदि लौरेटाकी पोशाक पहने तो लौरेटासे कम न लगे।

भोजन कर चुकनेके बाद जेलीने रैमोनासे कहा- "अच्छा बेटा, अब तुम मेरे साथ चलो। तुमसे मुझे एक काम है।"

दोनों जने बाहर चले आये। बाहर वालोंने रैमोनाको देखा और मुसकुराये; कुछ धृष्टतापूर्वक हँसे भी। रैमोनाने इनकी ओर ताका तक नहीं। दोनों जने शान्तिपूर्वक सड़क पर चलने लगे।

कुछ दूर निकल जानेके बाद जेली बोला - "बेटा, तुम मानो चाहे न मानो। मैं इतना तो अवश्य कहूंगा कि लौरेटा अत्यन्त दुश्चरित्रा है। मैंने उसकी बहुत शिकायत सुनी है। कहनेवालोंने अपनी आँखोंसे देखा है। वे झूठ क्यों बोलगे!"

रैमोनाके दोनों गाल लाल हो गये। वह जेलीकी ओर क्रोधपूर्वक देख कर बोला—"देखो काका, मैं तुम्हारी इज्जत करता हूं, लेकिन तुम लौरेटा की निन्दा मेरे सामने न करो। तुम सबोंने उसे समझने में भूल की है। वह सब कुछ हो सकती है, लेकिन चरित्रहीना नहीं। वह अभिमाननी हो सकती है,—निर्मम हो सकती है,—किसी की अश्रु आविल मनुहार

पर उपेक्षाभरी हँसी हँसनेवाली दयाहीना हो सकती है, लेकिन दुश्चरित्रा नहीं। वह पवित्र है,—प्रभातिक पाटलके प्रथम सौरभ-उच्छ्वासकी भाँति। वह अत्यन्त महान है! इस गाँवमें तो क्या, सारे यूरोपमें,—और यदि तुम मुझे पागल न कहो तो मैं तो अपने प्राणोंकी सारी शक्तिके साथ यही कहूंगा कि बीसवीं शताब्दीमें उसके समान तरुणी दूसरी नहीं है। मैं उसके गुणों पर हैरान हूं। उसके विचार इतने सुन्दर,—इतने परिमार्जित और इतने प्यारे हैं कि कुछ न पूछो! इस छोटी-सी अवस्थामें ही उसने इतनी-इतनी भाषाओंका ज्ञान प्राप्त कर लिया है कि मैं तो आश्चर्यान्वित हो उठता हूं। यहाँ तक कि उसे सुदूर भारत वर्ष की भाषा संस्कृतका भी ज्ञान है।......वह अत्यन्त महान् है! उसे पाकर मैं धन्य हो जाऊँगा,—मेरे पार्थिव अस्तित्वका अणु-अणु अपनेको धन्य मानेगा। मेरा यह जीवन, आज अत्यन्त हेय और रसहीन-सा बना हुआ है, उसे पाकर खिल उठेगा। उसे अपनी आँखोंके सामने बिठाकर मैं ऐसे-ऐसे काव्यों-की सृष्टि कर सकता हूं, जिन्हें पाकर विश्व-साहित्य गौरवान्वित हो उठेगा!......लेकिन मैं उसके योग्य नहीं। उसे उसीका-सा कोई महान् व्यक्तित्ववाला प्रेमी चाहिये, जिसमें उसके से गुण हों,—उसकी-सी शक्तियाँ हों। मैं तो एक दुर्बल और चीत्कारोंसे भरे हुए व्यक्तित्व वाला प्राणी हूं!"

आकाश स्वच्छ था! नवोदित अंशुमालीकी किरणें चारों ओर प्रकाश फैला रही थीं। विटपी दलोंकी शाखाएँ पत्र-पुष्प-

भारानत होती हुई इस प्रकाशवेलाका स्वागत कर रही थीं। बड़ी ही लुभावनी हवा बह रही थी। रैमोना सोच रहा था—काश? इस समय लौरेटा मेरे साथ रही होती तो मैं उसकी पलकोंके एक-एक कम्पन कविता लिखता?

"लेकिन उसने तुम्हारे प्रेमको कितनी बेदरदीके साथ ठुकराया है? क्या इस पर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता।

"मैं तो कह रहा हूं कि उसने मुझे ठुकरा कर ठीक किया है। मैं इसी योग्य हूं।"

"रैमोना! तुम्हें लौरेटाके प्रेमने अंधा कर दिया है। तुम्हारी सोचने विचारनेकी शक्ति इस समय लुप्त हो गई है। एक डेढ़ वर्ष बीतते न बीतते तुम लौरेटाको भूल जाओगे और किसी दूसरेको अपने हृदयका सारा अनुराग लुटाना आरम्भ कर दोगे। उस समय तुम्हें इस खोये हुए एक वर्षके लिये जो पश्चात्ताप होगा, उसकी तुम इस समय कल्पना भी नहीं कर सकते हो। तुम अपना पागलपन छोड़ो और इस समय अध्ययन करो। यह ज्ञानार्जनका समय है।

"काका तुम मेरे स्वभावको अच्छी तरह जानते हुए भी कैसी-कैसी बातें कर रहे हो! क्या तुम्हें मालूम नहीं है कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलता और मेरा स्वभाव परिवर्त्तनशील नहीं है। मैं मानता हूं कि लौरेटाने मुझे ठुकरा दिया है,—मेरे, प्रेमको अपने निर्मय व्यवहारके द्वारा रौंद डाला है, लेकिन इससे क्या हुआ! मैं तो उसे जीवन भर उतना ही प्यार करता रहूंगा,

जितना आज तक करता आया हूं! यदि गाँववाले मेरी नीरवतामें बाधा पहुंचायेंगे तो मैं सबोंसे दूर निर्जन स्थानोंमें इस ठुकराये हुए प्रेमके गीत गाता फिरूंगा!—इस उपेक्षित और सन्तप्त हृदयसे निकले हुए गीतोंको सुन कर वनके विहग सिहर उठेंगे, तरु-पल्लव एक अविज्ञानित उन्मादनासे विभोर हो उठेंगे, निर्झरिणीकी क्रन्दनध्वनिमें ज्यादा विषाद आ समायेगा और सरिताकी अन्तरात्माका कल्लोल अधिक पीड़ाकुल हो उठेगा! मैं लौरेटाको नहीं पा सका, कोई चिन्ता नहीं! लौरेटाने तो रैमोनाको पा लिया है! अब यदि वह अपनी चीजको अपने ही हाथोंसे अलग फेंक दे तो क्या उपाय है! रैमोना तो अब जहां भी रहेगा, लौरेटाका बन कर रहेगा। इस विश्वके किसी भी कोनेमें—किसी भागमें जाकर वह अपनी हृदयेश्वरीको, अपनी लौरेटाको भूलानेकी कोशिश नहीं कर सकता! लौरेटाने उसे ठुकरा दिया है तो ठुकरा दे, लेकिन उसके हृदयका टुकड़ा-टुकड़ा जीवन भर उसे—निशीथ की हिम-चुंबित राकेश-रश्मिसी प्यारी उस लौरेटाको आशीष देता रहेगा। आजसे लेकर रैमोनाका हृदय अपनी मृत्युके एक क्षण पहले तक लौरेटा-लौरेटा जपता रहेगा।"

जेली बहुत ही ध्यानपूर्वक रैमोनाकी भाव-भंगीको देख रहा था। उसने अच्छी तरह समझ लिया कि उसके सारे प्रयास व्यर्थ होंगे। स्टेशन-मास्टरने अपने नौकरके द्वारा जो पत्र भेजा था, उसे जेबसे निकाल कर विसटनने रैमोनाको देते हुए

कहा—"इसी पत्रने तुम्हें गांवमें बदनाम कर दिया है!"

रेमोनाने पत्र खोलकर पढ़ा—"रेमोना,—मैं जा रही हूं। कहां जा रही हूं, यह जानकर क्या करोगे? तुम मुझे कितना प्यार करते हो, यह मैं अच्छी तरह जानती हूं! लेकिन क्षमा करो, मुझे जीवनमें तुम्हारे प्यारकी आवश्यकता नहीं है। जिस चीजकी आवश्यकता है, उसीकी खोजमें जा रही हूं! तुम्हें अब अकेले ही रात-रात भर सरिता-तटपर और पहाड़ों पर घूमना पड़ेगा—अकेले ही अपनी मदिरामयी कविताओंको गुनगुनाना पड़ेगा! मुझे इसका दुःख है!

तुम्हारी—

लौरेटा!"

रेमोनाने पत्रको अपनी जेबमें रख लिया और धीरेसे बोला—"लौरेटा! तुम गलती कर रही हो। तुम्हारा रेमोना अकेला नहीं घूमेगा, वह उन सौभाग्यशाली प्रहरोंकी मधुमयी स्मृतियोंको सदैव अपने साथ रखेगा, जब तुम उसके साथ रह कर उसके प्राणोंमें अनुपम झंकार उत्पन्न किया करती थी!"

जेलीने इस वाक्यको सुन लिया और अत्यन्त खिन्न और उदास होकर उसने मन ही मन कहा—"अब एकमात्र उपाय यही है कि इसे पढ़नेके लिये पेरिस भेज दिया जाय। अन्यथा यह लड़का अपने जीवनको चौपट कर डालेगा। यहां रहनेसे यह लौरेटाको कभी भूल नहीं सकता!"

६

जंगलों और पहाड़ोंको पार करती हुई ट्रेन चली जा रही थी !

लॉरेटाने खिड़की खोलकर बाहरकी ओर देखा,—रात अँधेरी थी। आकाशमें बादलोंके द्वारा नक्षत्रोंकी दुनियाँ सतायी जा रही थी।

"क्या देख रही हो लॉरेटा !" कंबलसे मुँह निकाल कर एक आदमीने कहा। उसकी लम्बी और घनी दाढ़ी बाहर निकल आयी थी और वह कुछ भयावना भी मालूम हो रहा था।

"कुछ नहीं। यही देख रही हूं कि उस अन्धकारित क्षितिजमें कितना दुर्भाग्य—कितना रोदन-क्रन्दन—कितना अभाव बिलख-बिलख कर रो रहा है। भूखे और नंगे मानवोंका क्रन्दन वहाँसे उठ-उठ कर आता है और यहाँ तक पहुंचते-पहुंचते शून्यमें विलीन हो जाता है।

लौरेटा मौन हो गयी। उसके साथवाला वह आदमी भी उठ कर बैठ गया। उसने कंबलको उतार फेंका और बोला—“लौरेटा, सचमुच तुम बहुत भावुक हो।”

लौरेटाके साथवाला वह आदमी लौरेटाके पासमें आकर बैठ गया और उसकी अलकावलियोंको बहुत ही प्यारके साथ सुहलाने लगा। लौरेटा बोली—“मानवी सभ्यता इस समय इस तमाकीर्ण यामिनीकी ही भाँति आहें भर रही है। चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार छाया हुआ है। हम लोगोंको उसे आलोकित करना पड़ेगा, किसियोपिकस।”

किसियोपिकस कुछ देर मौन चिन्तालीन रहनेके बाद बोला—वह आलोकित होगा,- अवश्य आलोकित होगा! हमलोगोंको पूर्ण सफलता मिलेगी। हमलोग मानवी-सभ्यताके पथको अन्धकारित करनेवाले, पूँजीवाद और साम्राज्यवाद रूपी दो दानवोंको नष्ट करनेमें अवश्य सफल होंगे। हमें अपनी विजयमें तनिक भी सन्देह नहीं है!”

थोड़ी देर तक दोनों फिर मौन रहे। किसियोपिकसने बहुत गंभीर मुद्रा बनाते हुए कहा—लौरेटा, अभी हमलोगोंको क्या जाने कितना त्याग करना पड़ेगा!—क्या जाने कितनी बार अपने जीवनके सारे सुख-वैभवको पैरोंसे ठुकराना पड़ेगा। हम लोग जिस पथके पथिक बने हैं, वह कण्टकोंसे आकीर्ण है। वैभव-विलासका कोई भी चिह्न हमलोगोंके मार्गमें नहीं है। हमलोगोंको चलना है,— किसी प्रकारकी क्लान्तिका अनुभव न

करते हुए,—अपने सिर पर मंड़राती हुई विपत्तिकी सघन श्याम-घनमालाओंकी तनिक भी परवाह नहीं करते हुए चलना है! हमलोगोंका सारा जीवन तपस्वियोंका-सा होना चाहिये! क्षणिक सुखोपभोगकी लालसाओंका स्पर्श भी हमलोगोंके लिये अपावन एवं कुत्सित है। हमलोगोंकी अदम्य कार्यशक्ति ही मानव-जातिके भविष्यको आलोकित कर सकेगी!—वर्त्तमानका अन्धकारित एवं हाहाकारमय स्वरूप हमारी ही तपस्यासे दूर हो सकता है!"

किसियोपिकसने अपनी कवलको ठीक करते हुए कहा—"लौरेटा! मैं तो उस समय फूट-फूट कर रोने लगता हूं, जब दिन भर खेतोंमें पिसते रहनेके उपरान्त,—दिन भर कड़ी धूपमें परिश्रम करनेके उपरान्त सायंकाल अपनी झोंपड़ीमें लौटकर गरीब किसान अपने बच्चोंको भूखसे तिलमिलाते हुए देखता है, किन्तु उन्हें भरपेट रोटी नहीं दे पाता अपनी बूढ़ी माताको जाड़से ठिठुरते हुए देखता है, किन्तु उसे गरम कपड़ोंसे नहीं ढँक पाता! उसके रक्त-सिञ्चन से पैदा किये गये अन्नसे नाना प्रकारके सुस्वादु पक्वान्न तैयार होते हैं और वे उनका दर्शन भी नहीं कर पाते! कितनी विचित्र,—कितनी कारुणिक,—कितनी हाहाकार भरी बात है यह! उत्पादकको तो भरपेट रूखा, सूखा भोजन भी नहीं मिलता और जिनका,—जिन धूर्त्त, प्रपञ्च-प्रवीण व्यक्तियोंका अन्नोत्पादनमें तनिक भी हाथ नहीं रहता, बल्कि जो उसमें बाधास्वरूप ही होते हैं, वे बहुमूल्य सुस्वादु पक्वानोंके ढेर अपने महलोंमें सड़ाते रहते हैं! लौरेटा! मैं

तुम्हारे हृदयको प्रभावित करनेके लिये नहीं कह रहा हूं। मैं अपनी आखोंसे देखी हुई बातें कहता हूं। मैंने अत्यन्त सुन्दर और गुणवती किशोरियोंको केवल इसीलिये कुरूप और गुणहीन व्यभिचारियोंको आत्म-समर्पित करते हुए देखा है कि उनके भूखे, प्यासे भाइयोंको रोटीके दो टुकड़े मिल सकें! मैंने एक फटी हुई कमीज पहन कर जाड़ेकी कड़कड़ाती हुई रातोंमें धनहीन विद्वानोंके गृहोंको जा-जा कर देखा है,—उनसे बातें की हैं और एकान्तमें बैठकर फूट फूटकर रोया हूं······लौरेटा! आज सब कुछ नष्ट हो चुका है। पृथ्वीका समस्त सौन्दर्य आज दानवी शक्तियोंके द्वारा कुत्सित बना दिया गया है। वसन्त की अपरिसीम मधुरिमापर आज पतझड़का खूनी दामन लहराया करता है! अधिकांश मानव आज मानव नहीं हैं! वे पाशविकताके भैमी लौह चक्रमें जिस बेदरदीके साथ पीसे जा रहे हैं, उसे देखकर आंखें अन्धी बन जाती हैं! नाना प्रकारके शारीरिक और मानसिक क्लेश बढ़ते ही जा रहे हैं। आजसे सौ वर्ष पहले जिन क्लेशोंका नाम तक लोग नहीं जानते थे, आज वे ही क्लेश प्रचण्ड रूप ग्रहण करके मानव-जातिके जीवनको चीत्कारों से भर रहे हैं। अधुनातन मानव-जातिके मुखपर उल्लासका क्षीणाभास भी नहीं है! कुछ थोड़ा बहुत उल्लास दिखलायी देता है वह कृत्रिम है। मानव-जाति आज अपने ही द्वारा निर्मित नानाविध भारोंके नीचे दबकर चीख रही है—कराह रही है! कहा जाता है, इस विश्व-ब्रह्माण्डमें कुछ ऐसी भी अस्थान हैं, जहां

केवल दुःख ही दुःख है,—जहाँ अभिशापों और अभावोंकी पिशाचिनें सदैव आर्त्तनाद करती रहती हैं,—जहाँ तरह तरहकी पीड़ाएँ सदैव होती रहती हैं। उसे नरक कहा जाता है। इस पृथ्वीकी वर्त्तमान अवस्थाको देख कर यदि कहा जाय कि यह भी धीरे-धीरे नरकसे समता करनेका प्रयास कर रही है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बल्कि इस पृथ्वीके कुछ भागोंमें पूँजीवाद और साम्राज्यवादके कारण ऐसे हाहाकारमय दृश्य उपस्थित हो गये हैं कि उन्हें नरक कहना भी युक्तिसंगत नहीं जान पड़ता। रोटी और वस्त्रकी चिन्ता सदैव मस्तिष्ककी शिखाओंको कँपाती रहती है। कल क्या होगा, यह प्रश्न अपना विकराल मुख फैलाये हुए मनुष्यको निगल जानेके लिये तैयार खड़ा रहता है। सचमुच पृथ्वीके सर्वोत्कृष्ट अधिवासी मानवकी वर्त्तमान दुरवस्था अत्यन्त शोचनीय है! ··लौरेटा! जैसे भी होगा, जिस तरहसे भी होगा, इस दुरवस्थाको दूर करना ही होगा,—इस अनभिलषित कृष्ण मेघमालाको मानव-जातिके जीवनक्षितिजसे हटाना ही पड़ेगा। इस कारुणिक क्रन्दनको जैसे भी होगा, प्रशमित करना ही पड़ेगा। तुषाराच्छन्न शतदल कब तक तुषाराच्छन्न रह सकेगा? कभी तो प्रभातकी स्निग्ध रश्मियोंका स्पर्श उसे पुनः प्रफुल्लित करेगा ही। कब तक पंखड़ियोंके भीतर मधुकर बन्दी बनकर सिसकता रहेगा? कभी तो प्रभात-विहगोंका गायन सुनकर वह भी मुग्ध हो उठेगा और सरसीके ऊपर गुञ्जन करने लगेगा।"

बोलता-बोलता वह रुक गया। उसकी दोनों आँखें एक पावन ज्योतिसे चमकने लगीं और उसके दोनों ओठ फड़फड़ाने लगे। कुछ देर मौन रहनेके बाद वह फिर बोलने लगा,--"एक ओर तो महलोंके अन्दर आनन्दोत्सव हुआ करता है; धनपतियोंके कोड़में रूप जीवाएँ लेटी रहती हैं और अपने सुमधुर किन्तु घृणापूर्ण वासनोद्दीपक गीतोंके द्वारा उनके कलुषित, खूनी हृदयको विनोदित करती रहती हैं, उनके बहुमूल्य वस्त्रोंसे सेंटकी सुगन्धि निकलती रहती है; दीवारों और मेजोंपर दूरदेशागत, नानाविधि बहुमूल्य शृङ्गार-साधन रखे रहते हैं और दूसरी ओर कुटीरोंके अन्दर, शहरके टूटे-फूटे साधारण मकानोंके अन्दर रोदन-क्रन्दन होता रहता है; अर्धनग्न माताओंकी गोदमें शिशु—भूखे शिशु बिलखते रहते हैं और उनकी क्रन्दन-ध्वनियाँ उन भाग्य-हीना नारियोंके चूसे हुए वक्षस्थलको चीरती रहती हैं,—उनके दुग्धहीन स्तनोंके नीचे स्पन्दित होनेवाले रक्तहीन हृदयको रौंदती रहती हैं; उनके मैले-कुचैले कपड़ोंसे दुर्गन्ध निकलती रहती है; घरकी दीवारोंपर मकड़ोंका जाला फैला रहता है और गरीबी अपना खूनी पंजा फैलाये हुए उनको मार डालनेके लिए तैयार खड़ी रहती है! आह! लौरेटा! इन दृश्योंको देखकर अन्तस्तय काँप उठता है,—मन प्राण जलने लगते हैं।......"

हवाका एक बहुत ही जोरोंका झोंका आया और दोनोंके केशोंको अस्तव्यस्त कर गया। किसियोपिकस चुपचाप लौरेटाकी ओर देखने लगा। उसकी भावपूर्ण आँखें लौरेटाके अन्तर्तमको

पढ़नेका प्रयास कर रही थीं। थोड़ी देर मौन रहनेके उपरान्त वह बोला—'लौरेटा! सचमुच क्या मानव-जातिकी वर्तमान दुरवस्थाको देखकर भी सच्चा जीवन मौन रह सकता है?'

"मानव-जातिकी वर्तमान दुरवस्थाको देखकर हृदयका कण-कण सिसकने लगता है। लाखोंकी संख्यामें निर्दोष किशोर सर्वथा आश्रयहीन होकर भूखों मर रहे हैं! उनके जीवनकी सारी आकांक्षाएँ,—सारी अभिलाषाएं,—उनकी सारी मर्ममधुर कामनाएँ रौंदी जा रही हैं। उनका जीवन एक तमाशा है,—एक अभिशाप है!" कहते-कहते लौरेटा रुक गयी।

किसियोपिकस मन ही मन सोच रहा था, सचमुच यह नवयुवती कितनी भावुक है? इसके हृदयमें सन्तप्त श्रमजीवी-वर्गके प्रति कितना दुःख—कितनी वेदना छिपी हुई है। क्रान्तिकारियोंके दलमें यदि ऐसी-ऐसी दस-पाँच प्राणप्रद नारियाँ भी आ जायें, तो पूँजीवाद और साम्राज्यवादका तख्त उलटनेमें देर नहीं लगेगी।

एकाएक सारा आकाश बादलोंसे ढँक गया। जो थोड़े बहुत बचे-खुचे तारे अपने नगण्य अस्तित्वके द्वारा व्योम-पथको आलोकित करनेका प्रयास कर रहे थे, वे भी तिरोहित हो गये और चारों ओर मरणका अन्धकार घिर आया। कुछ ही लक्षणों के बाद जोरोंकी आँधी चलने लगी। खिड़कीकी राहसे पानीके छींटे आने लगे।

किसियोपिकसने कहा—"खिड़की बन्द कर लो लौरेटा! भींग जाओगी।"

लौरेटा गर्वपूर्वक बोली--"आप भी ठंढी हवाके झोंकोंसे और पानीके छींटोंसे बचनेका उपदेश देने लगे। मुझे अब आँधियों और तूफानोंकी सहचरी बनना है! मैं काँटोंभरी राह पर अन्धड़ोंके साथ रंगरेलियाँ करती हुई चलूँगी। शोले मेरे चरणोंका शृङ्गार करगे। शमशीरोंकी छायामें मैं अपनी थकान मिटाया करूँगी। मेरा भविष्य अब रक्ताक्त होगा,—निष्ठुर होगा! सारी कोमल भावनाओंको एक-एक करके मुझे हृदय-वृन्तसे तोड़ फेंकना होगा! तभी,—हाँ, तभी मैं अपने कर्त्तव्यका समुचित रूपसे पालन कर सकूँगी और आप लोगोंके दलमें मेरा शामिल होना सार्थक हो सकेगा।"

किसियोपिकस लौरेटाके उस वीरोचित सौन्दर्यपर अत्यन्त मुग्ध हो रहा था। उसने अपनी धनी मूँछोंको ठीक करते हुए कहा—"लौरेटा, सचमुच इस समय तुम बहुत ही सुन्दर लग रही हो। हवाके ठंढे-ठंढे धृष्ट झोंके तुम्हारी अलकोंको हिला-हिलाकर और पानीके छींटे तुम्हारे कपोलोंपर पड़-पड़कर तुम्हारे सौन्दर्य-को द्विगुणित कर रहे हैं! इच्छा तो हो रही है कि तुम्हें इतना प्यार करूँ—इतना प्यार करूँ......।"

"कि उस प्यारकी पर्वतीय स्रोतस्विनीकी लहरोंमें पड़कर मेरे जीवनकी सारी दुर्बलता—सारी वासना—सारी सुकुमारता नष्ट हो जाय!"

किसियोपिकसने लौरेटाकी ओर देखा और फिर मुसकरा कर बोला—"बहन लौरेटा!"

लौरेटा भी मुसकरायी और बोले—"भैया किससियोपिकस!"

ट्रेन चली जा रही थी। आकाशमें बादलोंकी गड़गड़ाहट सुनायी दे रही थी। बिजलीकी चमक उस निशीथबेलाको और भी भयंकर बना रही थी। किसियोपिकसका चेहरा घनी और लम्बी दाढ़ीसे घिरा हुआ होनेके कारण न जाने क्यों तो कुछ-कुछ भयंकर-सा मालूम हो रहा था। लेकिन लौरेटाको सर्वस्व त्याग कर क्रान्तिके अग्नि-पथका पथिक बनने वाला वह विद्रोही राजकुमार बहुत ही प्यारा लग रहा था।

ट्रेन स्टेशनपर रुकी। दोनों उतरे किसियोपिकसके दो साथी वहाँ पहले से ही गाड़ी लेकर खड़े थे। उन लोगोंने लौरेटा को आश्चर्यान्वित हो कर देखा, लेकिन कुछ पूछा नहीं। क्योंकि वे लोग यह बात अच्छी तरह जानते थे कि उन लोगोंका नेता किसियोपिकस जो कुछ करता है, अतीव बुद्धिमत्ताके साथ करता है। उसके कार्य अर्थहीन तो कभी होते ही नहीं। उस पर उन लोगोंकी अगाध श्रद्धा थी। उसके किसी काममें हस्तक्षेप करना वे मूर्खता समझते थे। क्योंकि वे लोग यह बात अच्छी तरह जानते थे कि किसियोपिकससे बढ़कर बुद्धिमान् व्यक्ति उस दलमें दूसरा नहीं है। उसकी परख इतनी सुन्दर और उसकी विवेचना शक्ति इतनी सुतीक्ष्ण थी कि दंग रह जाना पड़ता था।

चारों जने कार पर बैठ कर चल पड़े और पन्द्रह मिनटके बाद ही एक साधारणसे मकानके आगे कार रुक गयी। लौरेटा और किसियोपिकसको छोड़ कर वे लोग फिर

स्टेशनकी ओर चल पड़े। कुछ ही देर के बाद दूसरी ट्रेन आने वाली थी और उससे पाँच क्रान्तिकारी आ रहे थे। उन्हें ही ले आने के लिये वे दोनों जा रहे थे।

दोनोंने दोतल्लेपर चढ़कर एक कमरेमें प्रवेश किया। कमरा साफ सुथरा था। दीवारों पर केवल अभिनेताओं और अभिनेत्रियोंके चित टँगे हुए थे। आलमारीमें जो किताबें रखी हुई थीं, वे भी अत्यन्त साधारण कोटिकी थीं। लौरेटाको उस क्रान्तिकारी नेताके कमरेको देख कर तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ; क्योंकि वह यह बात अच्छी तरह जानती थी कि पुलिससे बचनेके लिये क्रान्तिकारियोंको अपने आपको हर तरहसे बचाके रखना पड़ता है।

किसियोपिकसने उसे एक छोटी सी पुस्तक दी और उसे ध्यानपूर्वक पढ़नेको कहा। पुस्तक में क्रान्तिका उद्देश्य, क्रान्तिका तरीका, क्रान्तिके नियम, क्रान्तिकारियोंकी दिनचर्या प्रभृति पर कतिपय अध्याय थे।

किताब छोटी भी थी। किन्तु उसके प्रत्येक अनुच्छेदमें इतनी सारगर्भिता छिपी हुई थी कि उसे जल्दीसे समाप्त करके रख देना कठिन था। लौरेटा प्रत्येक पंक्तिको ध्यानपूर्वक पढ़ती जाती थी और समझनेकी कोशिश करती थी।

कुछ ही देरके बाद वे सातों क्रान्तिकारी भी आ पहुंचे। उन्होंने बड़े ही अदबके साथ किसियोपिकसको सलाम किया।

किसियोपिकस ओंठोंपर हल्की सी मुसकराहट ला कर उनका स्वागत किया और पूछा—सफलता मिली या नहीं ?

"आंशिक सफलता तो मिल गयी है।" उनमेंसे एकने कहा।

"घबड़ानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिस बहादुरीके साथ तुम पाँचोंने यह कार्य आरंभ किया है, उसको देखते हुए सफलतामें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं मालूम होता। आज मैं क्रान्तिपथ पर चलनेके लिये हर तरहसे तैयार होकर आनेवाली एक नवयुवतीसे तुम लोगोंका परिचय कराता हूं।"—और यह कह कर उसने लौरेटाकी पीठ थपथपाते हुए कहा— बहन, तुम थोड़ी देरके लिये उस गोल और ऊंचे स्थान पर जाकर खड़ी हो जाओ ताकि तुम्हें सब अच्छी तरह देख सकें। इस दलमें शामिल होनेके लिये आनेवाले व्यक्तिको सबसे पहले वहीं खड़ा होना पड़ता है।"

लौरेटा वहीं जाकर खड़ी हो गयी।

किसियोपिकस बोला—यह लड़की जातिसे जर्मन है, किन्तु इधर तीन चार वर्षोंसे फ्रांसके एक देहातमें रह रही थी। इसका नाम लौरेटा है। इसकी मैंने हर तरहसे परीक्षा ले ली है। यह हम लोगोंके दलकी शोभा बढ़ायेगी और अपनी जानको हथेलीमें रख कर काम करेगी। आर्थस, तुम अब अपने पाँचों प्रश्न इससे पूछ लो और रक्तसे क्रांतिकारियोंकी सूचीमें इसका भी नाम लिख लो।"

आथस खड़ा हो गया। उसने लौरेटाको बहुत ही ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछा—"क्या तुम अपने प्राणोंकी सारी ममता क्रान्तिके महान् उद्देश्यकी पूर्त्तिके लिये न्यौछावर कर चुकी हो ?"

लौरेटाने वीरोचित गर्वके साथ उत्तर दिया—"हाँ।"

आथसने दूसरा प्रश्न किया—"क्या तुम हमारे नायककी प्रत्येक आज्ञाका अनुसरण करनेके लिये तैयार हो ?"

लौरेटाने इसी प्रकार उत्तर दिया—'हाँ।"

तीसरा प्रश्न हुआ—अपने प्राणोंकी ममता छोड़ चुकी हो, यह तो मान लिया गया, किन्तु यदि ऐसी परिस्थितियाँ आ जायँ कि क्रान्तिकी सफलताके लिये अपने प्रेमपत्रोंकी भी हत्या करनी पड़े तो क्या तुम सब प्रकारसे तैयार हो ?

लौरेटा इस बार कुछ सकपकायी, उसके मुख पर चिन्ताकी रेखाएं खिच गयीं। उसने धीरेसे कहा—मुझे इस प्रश्नका उत्तर सोचना होगा।

किसियोपिकसने स्वरमें कुछ कठोरता भर कर कहा—"सोचना क्या होगा। तुम क्रान्तिके महान उद्देश्यको ज्यादा प्यार करती हो या उन व्यक्तियोंको ? यदि क्रान्तिके महान् उद्देश्यको ज्यादा प्यार करती हो तो फिर उसके लिये—उसकी सिद्धिके लिये तुम्हें हर तरहका त्याग करना पड़ेगा।"

लौरेटाको अधिक देर तक सोचना नहीं पड़ा। उसने उत्तर दिया—"हाँ, मैं तैयार हूं।"

चौथा प्रश्न हुआ—"क्रान्तिकी जो प्रणाली हमलोगोंने अपनायी है, तुम्हें उसीपर तब तक चलना पड़ेगा, जब तक कि हम पूँजीवाद और सम्राज्यवादका नाश करके समाजवादकी स्थापना नहीं कर लेते हैं। तुम्हें दूसरी कार्य-प्रणालीवाले क्रान्तिकारियोंसे किसी प्रकारका भी सहयोग नहीं करना पड़ेगा।"

"मैं तैयार हूं!" लॉरेटा बोली।

उसके बाद सब क्रान्तिकारी एक महान् विप्लवकारीकी मूर्त्तिके सामने गये और सबोंने मिलकर एक बहुत ही भावपूर्ण क्रान्तिकारी गीत गाया।

७

"बहन ! सचमुच तुम कमाल कर रही हो। हमलोगोंका दल तुम्हारे आगमनसे जगमगा उठा है। इतने थोड़े समयके अन्दर इतने-इतने पूँजीपतियोंके यहाँ सफलतापूर्वक डाका डाल कर तुमने अपनी चातुरीका एवं कार्य-कुशलताका अच्छा परिचय दिया है।" एक क्रान्तिकारीने कहा।

"लेकिन पुलिस तुम्हारे पीछे जीजानसे पड़ी हुई है। इसके अलावा यूरोपके करीब-करीब सभी भागोंमें लोग तुम्हें पकड़नेकी युक्तियाँ सोच रहे हैं। पांच लाखका पुरस्कार साधारण बात नहीं है। तुम्हें बहुत बचकर रहना पड़ेगा।" दूसरे क्रान्तिकारीने कहा।

लोरेटा अब तक शिर झुकाये अपनी प्रशंसा सुन रही थी। इसबार बोली—'मुझे अपने प्राणोंका भय नहीं है। मैं तो मरनेके लिये हर घड़ी तैयार बैठी हूं।'

"यह तो ठीक है। किन्तु तुम्हारी मृत्युसे विप्लवी-दलकी कितनी बड़ी क्षति होगी, इसपर भी तुमने विचार किया है ? मृत्युसे यहाँ कौन डरता है ? मृत्युसे ही डरना होता तो दुनियाके सुख-वैभव को लात मारकर हमलोग इस दलका गठन क्यों करते ! अपनी अभिलाषाओंको दीपमालिकाको बुझा कर आज हम मृत्यु-पथके वेदरदी पथिक बने हुए हैं। हमें भय किस बातका !"

'अच्छा, अब इन सब बातोंको बन्द करो। सब के सब उपस्थित हो गये हैं। किसियोपिकसतो इस समय बर्लिनमें हैं। उसके आनेकी संभावना भी नहीं है। हमलोगोंको शीघ्राति शीघ्र अगले सप्ताहकी कार्य-योजना बनानी होगी और साथ ही साथ इस बातका भी निर्णय करना होगा। इन रुपयोंका उपयोग किस तरह किया जाय।'

सबके सब गम्भीरतापूर्वक विचार करने लगे। लौरेटा भी चिबुकपर हाथ रखे अत्यन्त बारीकीके साथ ऊहापोह कर रही थी। मोमबत्तियोंके प्रकाशमें उसके चिन्तनशील मुखमण्डलपर एक अपूर्व तेज और लावण्य दिखलाई दे रहा था।

आधा घन्टा बीत गया। किसीके मुखसे एक शब्द नहीं निकला। लौरेटा उठी और नीरवातको भंग करती हुई बोली—"मैंने सोच लिया। मैं इस सप्ताहके अन्दर-अन्दर पाँच व्यक्तियोंका खून करूँगी।"

'वे पाँच व्यक्ति कौन-कौन से हैं ?'

"पहला व्यक्ति तो लीसोवाना नामक पत्रकार है, जो पूँजी-

पतियोंसे रुपये ले-लेकर समाजवादी दलके विरुद्ध प्रचार करता है और हमलोगोंके महामहिम उद्देश्यको अपावन बतलाया है। दूसरा व्यक्ति गंग्रियरी है, जिसको इसबार साढ़े चार करोड़ रुपयोंकी आमदन हुई है। तीसरा व्यक्ति एक यहूदी है, जो न जाने कितने ही व्यक्तियोंको सता रहा है और चौथा व्यक्ति फ्रांसका अर्थमन्त्री है ?"

अर्थ मंत्रीका नाम सुनकर सब शंकित हो गये और बोल उठे "हां, वह हमलोगोंके मार्गका सबसे बड़ा रोड़ा है। उसने इधर हुत ही बुरा व्यवहार करना आरम्भ किया है। लेकिन लौरेटा, तुम अपने ऊपर बहुत ही बड़ा खतरा मोल ले रही हो। फ्रांसके अर्थ मंत्रीकी हत्या कोई मामूली बात नहीं है।"

लौरेटा उत्तेजित हो उठी और बोली—'हां, यह कार्य कोई मामूली बात नहीं है, यह मैं मानती हूं। लेकिन अब मामूली कामोंपर आश्रित रहनेसे हमारा उद्देश्य सफलीभूत नहीं होगा। पूँजीवाद और साम्राज्यवादके समस्त दुर्गोंको धराशायी करना पड़ेगा। इसके लिये चाहे जितने खतरोंको मोल लेना पड़े—चाहे चीत्कारोंको आमंत्रित करना पड़े। इस नृशंस अर्थमन्त्रीकी हत्या करनेसे हमलोगोंकी भविष्यकी कार्य-पद्धति सुचारु रूपसे चल सकेगी ! आपलोग चिन्ता न करें। मेरा पूर्ण विश्वास है कि मैं इस पाप रायण व्यक्तिको इस दुनियासे उठानेमें पूर्ण सफलता प्राप्त करूँगी और मेरा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकेगा।"

लौरेटाका चेहरा तेजोद्दीप्त हो उठा था। क्रान्तिकारी उसकी वाणीके आजसे अत्यन्त प्रभावित हो रहे थे।

लौरेटा फिर बोली—"मैं नहीं पुरुष हूं, स्त्री हूँ। शायद इसीलिये आप लोग मुझे इन कार्योंका भार उठाने नहीं देते। आप लोग मेरी शक्तियों पर भी अविश्वास करते हैं और मुझे इतनी-इतनी हत्याओंके बाद भी सुकुमार हृदया समझते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मेरे हृदयके अतलमें भी ममता सो रही है,—सुकुमार भावनाएँ शयन कर रही हैं,—कोमल-कान्त विचार-वल्लरियाँ अपने मृदुल अस्तित्वको लिये हुए बेहोश पड़ी हैं। किन्तु मैं उन्हें तब तक नहीं जगा सकती,—जगानेकी धृष्ठता नहीं कर सकती, जब तक कि क्रान्तिकारी-दल अपने उद्देश्यको प्राप्त न कर ले,—जब तक कि हम यहाँसे पूँजीवाद और साम्राज्यवादका मूलोच्छेद न कर डालें। मैं हर तरहसे जानको हथेली पर लिये खड़ी हूँ। जबसे मैं इस दलमें आयी हूँ और अपने ग्राम्य-जीवनका प्रियतम-साहचर्य ठुकरा कर, सारे गीति-गुञ्जनको कब्रिस्तानके निशीथकी अभाहीनता और भयंकर शून्यतामें विलीन करके मैंने इस महान् उद्देश्यसे अपने रोम-रोमको अनुप्राणित किया है, तबसे मेरे सारे भय,—मेरी सारी दुर्बलताएँ नष्ट हो गयी हैं। संसारका बड़ासे बड़ा प्रलोभन भी मुझे विचलित नहीं कर सकता है।

लौरेटाकी वाणीमें उसके हृदयका तेज प्रतिबिम्बित हो रहा था। विप्लवीगण स्नेह और आदरकी दृष्टिसे उसकी ओर देख रहे थे।

"लौरेटा! तुमने जो कार्य-योजना बनायी है, वह ठीक है। मैं भी उससे सहमत हूँ और मेरा पूर्ण विश्वास है कि तुम्हें उसमें सफलता प्राप्त होगी, किन्तु इसके पहले तुम्हें एक दूसरा काम करना पड़ेगा। मिराबो नामक उपन्यास-लेखकको तो तुम जानती ही होगी! उसकी लेखनी में कितनी ताकत है, यह बतलानेकी भी आवश्यकता नहीं है। वर्त्तमान क्रान्तिवादी साहित्यकोंमें उसका स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। लेकिन इस समय वह बड़ी बुरी परिस्थितिमें पड़ा हुआ है। उसके पिताने लाकायेत नामक एक सेठसे कर्ज लिया था, जिसे वह अभी तक नहीं चुका सका है। वह सेठ आज कलमें उस पर नालिश करके उसके मकानको और देहातमें उसकी जो थोड़ी बहुत जमीन है, उसे भी हस्तगत कर देनेकी फिराकमें है। तुम जैसे भी हो, आज रातको ही वह कागज लाकायेतके यहाँसे गायब कर दो, जिसमें मिराबोंके पिताने रुपयोंकी प्राप्ति लिखी है। कार्य बाहरसे देखनेमें उतना महत्त्वपूर्ण नहीं मालूम होता है, किन्तु इससे इस महान् साहित्यिकके साथ ही साथ विप्लवी-दलका भी प्रभूत उपकार-साधन होगा! उसकी लिखी हुई चीजें फ्रांसके नवयुवकोंको सदैव क्रान्तिमयी भावनाओंसे ओतप्रोत करती रहती हैं!"

"अच्छा, मैं आज रातको ही यह काम किये देती हूँ!" लौरेटा बोली।

इसके बाद कुछ देर तक विभिन्न राजनीतिक विषयोंपर

बातें होती रहीं। क्रान्तिके विभिन्न स्वरूपोंकी अत्यन्त जोरदार एवं ओजस्विनी भाषामें आर्थस व्याख्या करता रहा। बीच-बीच में लौरेटा एवं अन्य विप्लवकारियोंके द्वारा उपस्थित की गयी शङ्काओंका वह अत्यन्त सुन्दरतासे निराकरण करता गया।

संसारमें जो इतना अनय—इतना राशि-राशि उत्पीड़न एवं अत्याचार फैला हुआ है, उसे दूर करनेके लिये अपने जीवनको संकटापन्न करनेवाले वे विद्रोही वीर सचमुच उस समय एक अनुपम तेजसे शोभित हो रहे थे। सबोंके मुख क्रान्तिके महदुद्देश्यकी गौरव गरिमामयी रश्मियोंसे समुज्वल हो रहे थे।

घड़ीने टन-टन करके बारह बजा दिये। एक-एक किसीने बाहरसे दरवाजा खटखटाया। सब चौकन्ने हो गये। यह समय तो किसीके आनेका नहीं था। आवाज आयी—"मैं हूं किसियोपिकस दरवाजा खोलो!"

एक विप्लवीने उठकर द्वार खोल दिया। किसियोपिकसने हांफते हुए कमरेके अन्दर प्रवेश किया। थकानसे वह चूर हो रहा था। आते ही एक कुर्सीपर बैठ गया। उसके शरीरमें कई स्थानों पर चोंट लगी हुई थी और खून निकल रहा था। वह हांफते हुए ही बोला,—"काम नहीं हुआ। पुलिसवालोंके हाथमें पड़ते-पड़ते बचा। तुम लोग घबड़ाओ मत। मैं इतना कमजोर कभी नहीं हो पाता, यदि मुझे तीन दिनों तक लगातार भूखा नहीं रहना पड़ता। मुझे बड़ी भूख लगी हुई है। पहले कुछ भोजन लाओ।"

किसियोपिकसने भोजन करनेके उपरान्त सबोंको यह बतलाया कि वह किस प्रकार बर्लिनमें रहा और किन-किन आदमियोंसे मिला तथा किन-किन उपायोंका अवलंबन करके पूँजीवादकी जड़ उखाड़नेके प्रयासमें लगा रहा !

करीब एक घंटेके बाद किसियोपिकसने बहुत ही गंभीरता पूर्वक कुछ सोच कर कहा—आज मैं तुम लोगोंको एक बहुत ही प्रखर प्रतिभावाले वैज्ञानिकका पता बतलाता हूँ । उसके साथ मित्रता करके तुम लोग अपने कार्योंकी कठिनता अत्यन्त कम कर सकते हो ! उससे मैत्रीकी स्थापना करना ही कठिन है । वह विचित्र व्यक्ति है !"

"नहीं-नहीं, आप उसका पता अवश्य बताइये ! यदि वह आपके कथानानुसार इतना उपयोगी व्यक्ति है, तब तो उससे अवश्य परिचय प्राप्त करना चाहिये। किसीसे मैत्री करनेके लिये जिन तरीकोंको काममें लाया जाता है, मैं उनमें दक्ष हूँ । आप इसकी चिन्ता न करें। लौरेटा अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक बोलीं।

किसयोपिकस फिर बहुत गंभीरतापूर्वक सोचने लगा। फिर कुछ मुसकरा कर बोला—"आर्थस ! तुम और लौरेटा दोनों जने मिलकर उस वैज्ञानिकसे घनिष्ठता स्थापित करो और उससे जितना भी लाभ उठा सको, उठाओ। उसका विज्ञान सम्बन्धी अध्ययन अपूर्व है। उसको यदि तुम दोनों किसी प्रकार विप्लवी-दलमें ले आओ तो हमलोगोंका काम अत्यन्त आसान हो जायेगा। किन्तु उसका विप्लवी बनाना मुझे तो

असंभव दीखता है! उसे दुनियामें किसीसे प्रेम नहीं है! वह न तो श्रमजीवियोंको ही अच्छा समझता है और न पूँजीपतियों को ही। समस्त मानव-जातिके प्रति एक विचित्र विरक्ति एवं उदासीनताका भाव उसके हृदयमें छाया रहता है! खैर, तुम दोनों उसको नानाविध उपायोंसे प्रसन्न करके उसके आविष्कारोंको जाननेका पूर्ण प्रयास करोगे। उसने कुछ ऐसे पादार्थोंको खोज निकाला है, जिनके द्वारा हम लोग अत्यन्त सरलतापूर्वक अपने प्रतिपक्षियोंका सर्वनाश कर सकते है!"

आर्थस बोला—"लौरेटा! तुम्हारी सहायतासे मैं असंभवको भी संभव कर सकता हूँ। हम लोग सोमवारको उस वैज्ञानिकके यहाँ चलेंगे!"

× × × ×

अर्धरात्रिकी तिमिराकुल घड़ियाँ साँय-साँय कर रही थीं। कविके हृदयकी ठुकरायी हुई—किसीके शिरीप-सुकुमार चरणोंकी निर्ममताके द्वारा रौंदी हुई भावनाओंके समान व्योम-पथमें तारकाएँ सुलग रही थीं। चारों ओर प्रगाढ़ नीरवता छायी हुई थी। केवल कहीं-कहीं कुछ कुत्ते भूँक उठते थे।

उस समय दो एक श्वेतमेघखण्डोंके द्वारा आलङ्कित तृतीयाके मयंकने वतायन-पथसे देखा—एक व्यक्ति कमरेके कोनेमें आलमारीके पीछे बड़ी सावधानीके साथ छिपा हुआ है। उसके हाथमें एक पिस्तौल है। कमरेमें दो जने आलिङ्गन-पाशमें बद्ध होकर प्रेमालाप कर रहे हैं। एक कहता है—प्रिय, तुम्हारे अंगोंका

स्पर्श मेरे सारे शरीरको रस विभोर कर डालता है। ऐसी इच्छा होने लगती है कि तुम्हें अपने शरीरमें एकाकार कर लूँ। कंटरिका, सचमुच कितनी प्यारी हो,—कितनी सुन्दर हो!"

और यह कहता हुआ वह कामान्ध व्यक्ति उसके केशोंपर हाथ फेरने लगता है।

आलमारीके पीछे छिपा हुआ व्यक्ति घृणासे जल उठता है। वह अपनी पिस्तौलकी ओर देखता है और फिर ठिठक जाता है।

वह कामान्ध व्यक्ति शराबका गिलास खाली करके खड़ा हो जाता है और रमणीसे कहता है—"प्यारी, चलो। आजकी रात बड़ी सुहावनी है। बावलीके तटपर बैठें।"

'मिराबो नामक उपन्यास लेखकपर तुम मुकदमा करनेवाले थे, उसका क्या हुआ? मैं तो तुम्हें कबसे कह रही हूं कि जल्दीसे जल्दी उसपर मुकदमा करके उसकी वह जमीन हस्तगत कर लो, जो उस देहातमें ठीक नदीके तटपर है। मैं तो वहाँके प्राकृतिक सौंदर्यको देखकर मुग्ध हो गयी हूं। वास्तवमें वहाँ हमलोगोंका बँगला अवश्य बनना चाहिये। बड़ा आनन्द आयेगा। जब वसन्तकी चन्द्रिकोज्वल यामिनोमें हम दोनों उस बँगलेमें बैठ कर सरिताकी लहरोंको स्वर्णिम परिधान पहन कर धन्य होते हुए देखेंगे, उस समय कितना आनन्द आयेगा—कितना सीमाहीन उल्लास हम दोनोंके प्राण-प्रदेशमें प्रविष्ट हो जायेगा। वह जमीन भी अत्यन्त उर्वरा है। वहाँ फूलों और फलोंके पौधे बड़ी आसानीसे लग जायेंगे और कुछ ही महीनोंमें बँगलेके

सामनेकी जमीन उनसे परिपूर्ण हो जायगी। तुम मेरी-बात पर विशेष ध्यान नहीं दे रहे हो। मैं तो कह रही हूं कि अब तुम तनिक भी विलंब न करो और कल ही मिराबो पर मुकद्दमा दायर कर दो! उसका सारा उपन्यास लिखना हवा हो जायेगा।

'तुम्हारी बातोंको टालनेकी क्षमता मुझमें कहाँ है प्राणप्रिये। तुम्हारी कौन-सी बात मैंने उठायी है! मिराबोके स्थानपर यदि कोई दूसरा व्यक्ति हुआ होता तो मैं अब तक यह सब काम कर चुका होता। लेकिन वह साहित्यिक है! उसके उपन्यासोंमें बड़ा बल होता है! हमारी भाषा उसके उपन्यासोंसे गौरवान्वित होती जा रही है! उसके प्रति ऐसा आचरण करते हुए मुझे संकोच होता है!"

"अपना संकोच रहने दो। मैं यह सब कुछ नहीं जानती। उपन्यास दुनियाँमें काफी हैं! अब नवीन उपन्यासकारोंकी जरूरत नहीं है। तुम अपने पागलपनको छोड़ो और कल ही मेरे कथनानुसार काम करो।"

"मेरी रानी, उसने कुछ दिनोंकी मोहलत और माँगी है। दो तीन महीनोंके बाद वह रुपये वापस कर देगा। व्यर्थ ही बेचारेको सतानेसे क्या फायदा!"

"तुम मेरी बात नहीं मानोगे न! जाओ; मैं बावलीकी ओर नहीं जाती!"

कामान्ध व्यक्ति उस युवतीको हृदयसे लगाता हुआ कहता है—मेरी रानी, मुझसे रूठो मत। तुम जो चाहोगी, वही होगा।

मैं उस उपन्यास लेखकको तुम्हारे एक इशारे पर जहन्नुममें भेज सकता हूं! चलो!"

दोनों जने गलबँहियां डाले हुए कमरेसे बाहर निकल जाते हैं।

आलमारीके पीछे छिपा हुआ व्यक्ति बाहर निकलता है। पलंग पर पड़े हुए कोटकी जेबसे चाभी निकालता है और तिजोरी खोलकर सारा सामान निकाल लेता है। फिर चुपके-चुपके कमरेसे और फिर मकानसे बाहर हो जाता है।

हवाका एक झोंका आता है और बागीचेमें पेड़ोंसे टकराता हुआ न जाने धीरे-धीरेसे क्या तो कह जाता है और फिर वही शान्ति, वही निस्तब्धता छा जाती है।

———

८

रैमोनाका जीवन सर्वथा निस्सार सर्वथा शून्य हो चला था।

जेलीकी सलाहके अनुसार रैमोनाके पिताने उसका नाम पेरिसके एक अच्छेसे विद्यालयमें लिखा दिया था और उसी विद्यालयके होस्टलमें उसके रहनेकी भी व्यवस्था कर दी गयी।

रैमोनाको पढ़ना लिखना कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। क्लासमें जाकर सिरपर हाथ रखकर बैठा रहता। उसके चेहरे पर मुस्कराहटकी एक हलकी-सी रेखा भी किसीने नहीं देखी। सर्वथा विषादग्रस्त, विपन्न और आश्रयहीनकी भाँति क्लासके एक कोनेमें वह बैठा रहता और छुट्टी होनेपर चुपचाप अकेला ही किसी पार्कमें जाकर बैठ जाता और वहाँ आने-जाने वालोंको ध्यानपूर्वक देखता रहता। मनोरञ्जनके समस्त साधनोंसे उसे घृणा हो गयी थी, किन्तु फिर भी वह सिनेमा देखने जाता,

इस आशासे कि शायद वहाँ उसे लौरेटाकी सौन्दर्य-ज्योत्स्नाका दर्शन हो जाय! होस्टलके लड़के तो उसके आचरणपर चकित थे!

एक दिन रविवारका दिन था और दोपहरका समय। खा-पीकर होस्टलके विद्यार्थियोंमें से कुछ तो सीनेकी तैयारी कर रहे थे, कुछ टहलनेके लिये जानेकी और कुछ कैरम खेलनेकी। रैमोनाके पास कोई तैयारी नहीं थी। वह खा-पीकर आया था और अपनी कुर्सीपर बैठा हुआ सोच रहा था कि किधर जाना चाहिए। इतनेमें ही उसके तीन-चार सहपाठी आ धमके और उसे परेशान करने लगे कि तुम्हें हम लोगोंके साथ पिक-निकमें चलना ही पड़ेगा। रैमोना बहुत कातर स्वरमें बोला—भाई, तुम लोग मुझे माफ करो। मैं कहीं भी जानेमें असमर्थ हूं। मेरा जी ठीक नहीं है!

"अजी, जाने दो, तुम्हारा जी ठीक नहीं है। अभी तो असमर्थताका बहाना कर रहे हैं और जहाँ हम लोग आँखोंसे ओझल हुए कि पेरिसकी सड़कोंपर हजरत चहलकदमी करते हुए नजर आयेंगे। यह सब बहानेबाजियाँ रहने दो और सीधे मनसे चलो।"

रैमोनाको उन लोगोंकी उपस्थिति बहुत ही बुरी लग रही थी। और बुरी लगती भी तो क्यों नहीं! वे लोग जीवन-पथमें हर्षोल्लासकी स्वर्ण-रश्मियोंको वितरित होते हुए देख कर मस्त-मगन चले जा रहे थे और वह—वह अभागा रैमोना अपने जीवनके जीवनसे ही ठुकराया जाकर तमाकीर्ण वर्षा-

निशीथकी भयंकर क्रन्दन-ध्वनियोंको अपनाये हुए चला जा रहा था! रैमोनाने हाथमें कलम लेकर कुछ लिखनेका बहाना करते हुए कहा—आप लोग मुझे क्यों तंग करते हैं? जानते हैं कि मैं कभी भी पिकनिक पार्टियोंमें शामिल नहीं होता। फिर भी······!"

"हाँ, फिर भी आज तो आपको चलना ही पड़ेगा! आप किसी तरह भी नहीं बच सकते!" एकने रैमोनाके हाथसे कलम छीनते हुए कहा।

रैमोनाकी आँखें डबडबा आयीं। किन्तु उसने अपने मुँहको जल्दीसे दूसरी ओर फेर लिया और रुमालसे मुँह पोंछनेका बहाना करते हुए आँसुओंको पोंछ लिया। रैमोनाके अन्तर्जगतके हाहाकार—उसकी निगूढ़ वेदनाके उत्तप्त स्वरूपको इस प्रकार अश्रुमय होकर प्रकटित होते हुए एक लड़केने देख लिया। उसे रैमोनापर बहुत ही दया आयी। उसने उसे कलेजेसे लगाकर बड़ी ही प्यारभरी भाषामें कहा—"भैया, तुम बड़ी गलती कर रहे हो। तुम्हें हम लोगोंके साथ भी मिलजुल कर रहना चाहिए! तुम्हारे लिए और कुछ तो हम लोग नहीं कर सकेंगे, लेकिन कम से कम तुम्हारा मन तो बदला सकेंगे। इस प्रकार सबोंसे दूर—सबोंसे परे सर्वथा एकाकी रह कर तुम अपने जीवनको खराब कर लोगे। थोड़ा मिलनसार बनो। थोड़ा हँसो भी; थोड़ा बोलो भी। यों चुप्पी साधे सारा जीवन बिता दोगे क्या!"

जब चारों ओरसे अवहेलना मिलती रहती है, व्यंगकी बौछार होती रहती है, उस समय मृदुल शब्दोंमें सहानुभूति प्रकट करनेवाला व्यक्ति बहुत ही प्यारा लगता है और उसकी बातको टाल देना कुछ कठिन और अप्रिय-सा हो जाता है। रैमोना बोला—"अच्छा, तो चलो।"

पाँचों जने होस्टलसे बाहर निकले। उनमें एक काफी पैसे वाला था। उसने टैक्सीकी ओर शहरसे दूर सरिताके तटपर चलनेको कहा। रास्तेमें खाने-पीनेकी आवश्यक सामग्री ले ली गयी।

कुछ ही देरके बाद कार नदीके तटपर पहुंच गयी। टैक्सी वालेको आठ घन्टोंके बाद आनेके लिये कह कर उन लोगोंने मल्लाहसे कह कर नौकाका प्रबन्ध किया और पाँचों जने उस पर जा बैठे।

नदीकी चंचल लहरोंको चूम-चूम कर ठंढी-ठंढी लुभावनी हवा बह रही थी। चारों ओर शान्ति थी। हृदय और मस्तिष्क दोनोंको ही प्रफुल्लित करनेवाली आवाज में कुछ पक्षी समीपस्थ वृक्षोंपर बोल रहे थे। सचमुच, बड़ा ही प्यारा स्थान था!

रैमोनाको पेरिसमें आनेके बाद आज पहली बार इतना अच्छा मालूम हो रहा था। उसकी हृत्तंत्रीके तार झनझनाने लगे। किसीके अनुरोध करनेपर भी न गानेवाला रैमोना उस समय स्वयमेव गाने लगा। गीतकी मधुरिमा अत्यन्त आकर्षक थी। सबके सब मौन हो गये और एकटक रैमोनाकी ओर

देखने लगे। रैमोना उस समय बहुत ही सुन्दर लग रहा था। उसके केशोंको हवा रह-रह कर हिलाने लगती थी और उस समय उसका सौन्दर्य द्विगुणित हो उठता था।

चार घंटे बीत गये। सूरज पश्चिमी क्षितिजके उस पार चला गया। कतिपय अस्तव्यस्त बादलोंपर अलक्तक बिखेर कर रजनी अपने व्योम-पथको कुसुमाकीर्ण करनेका प्रयास करने लगी। पाँचोंका हृदय उस दिनान्त-सौन्दर्यसे रसमय हो रहा था,—किसीका ज्ञात रूपसे, किसीका अज्ञात रूपसे। रैमोनाके अन्तर्देशमें मदिराकुल भावनाएँ पीड़ाके श्यामाञ्चलको छू-छूकर नृत्य करने लगीं। रैमोनाके अन्तर्देशमें राशि-राशि कोमल कान्त पदावलियोंका सृजन होने लगा। पारिजात-काननकी अनवद्य परिमल-राशि अपने पंखोंपर बिखेर-बिखेर कर कल्पनाओंके स्वर्ण-वर्ण विहंगम आने लगे और रैमोनाके अन्तव्योममें नव-नव छवि-श्री—सुषमाकी सृष्टि करते हुए कलरव करनेका प्रयास करने लगे। रैमोनाका विषाद-भार,—उसके प्राणोंमें निशिवासर होनेवाला अग्नेय विस्फोट कुछ कम हो गया, ऐसी बात नहीं है! किन्तु विषादके उस दुर्वह भारका,—हृदयके टुकड़े-टुकड़ेको कँपाते रहनेवाले उन आग्नेय विस्फोटोंका स्वरूप कुछ क्षणोंके लिये परिवर्त्तित हो गया। रजनीके उन आरंभिक प्रहरोंकी अनवद्य रूप-राशिसे रैमोनाका भावुक हृदय एक अविज्ञानित मदिमासे भर गया! वह सोचने लगा,—काश इस समय लौरेटा यहाँ रही होती! काश! मैं इस समय इस

अपरिसीम नैश सौन्दर्यका वर्णन उसे सुना पाता ! सुदूरागत वंशी-ध्वनि प्राणोंमें जिस व्याकुलताका सन्निवेश कर रही है, उसकी अभिव्यक्ति मैं अपनी कविताके द्वारा करता और लौरेटा अपने कोमल स्वरोंमें उसे गाकर सुनाती ; कितना अपरिसीम उल्लास बिखर जाता हम दोनोंके प्राणोंमें ! जीवनका कण-कण अपने अस्तित्वको सराहने लगता ! सरिताको यह निर्मल सलिल-राशि धन्य हो जाती ! तटवर्त्ती वृक्ष पुलकाकुल हो उठते और कुछ क्षणोंके लिये आनन्दातिरेकसे सुदूरागत वंशी-ध्वनि मौन हो जाती ! लहरोंके नीलाभ शयनपर सोयी हुई नक्षत्र-कुमारियाँ चकित होकर जल जाती और लौरेटाको भी अपने देशमें ले चलनेके लिये मचलने लगतीं ! और किसी अज्ञात देवताके द्वारा भेजे हुए स्वप्न-कुमार मार्ग भूल जाते और यह भी भूल जाते कि उन्हें अपने स्वामीकी आज्ञाके अनुसार निद्रित मानवोंके हृदय-मञ्चपर नाना प्रकारकी रँगरेलियाँ करनी हैं,—उन्हें नाना प्रकारके दुःखद, सुखद दृश्य दिखलाकर जग-जीवनका पाठ पढ़ाना है !······रैमोना इसी प्रकारकी सजल कल्पनाओंमें तल्लीन था।

एकाएक ओरोंकी आँधी चल पड़ी। सरिताकी लहरें उग्र रूप ग्रहण करने लगीं। आकाशमें न जाने कहाँसे तो उच्छृङ्खल जलधर-दल हाहाकार करते हुए आ पहुंचे । सारी सुषमा—सारी मदभरी सुन्दरता नष्ट हो गयी और सबके सब डरने लगे। केवल रैमोना ही एक ऐसा था, जिसके हृदयपर उस आँधीके

आगमनका तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ा। वह अविचलित रहा। और उसके हृदयकी मरुस्थलीपर ,आँधीका प्रभाव पड़ता भी तो क्या पड़ता ! न जाने वहाँ कितनी ही प्रचण्ड आँधियाँ अपना अगेय रूप दिखला चुकी थीं,—न जाने कितने-कितने दुर्धर्ष तूफानोंका प्रलय-नृत्य हो चुका था और अरमानोंकी चिताभस्म उसके अन्तरिक्षमें उड़ चुकी थी। उसके सब साथी व्याकुल हो रहे थे। सबोंके अन्तर्व्योमसे अनिष्टकी आशंकाएँ बादलोंकी तरह मँड़रा रही थीं।

"मोशियो, पूरी सावधानीके साथ पतवार चलाना, अन्था जानपर आ बीतेगी। यदि तुम थक गये हो तो लाओ मुझे दे दो।"

चारों तरफ अन्धेरा छा गया। आकाशके समस्त तारक तिरोहित हो गये। ज्योत्स्नाको लुटाते फिरनेवाला सुधांशु भी न जाने क्यों तो किसीकी प्रेममयी मनुहारको ठुकराता हुआ चल पड़ा। आकाशमें अनिष्टके संगी जलधर गर्जन कर रहे थे और सरिताकी तरंगमालाओं पर आँधी हाहाकार कर रही थी। रैमोनाको वह दिन याद हो आया,—चीत्कारोंसे लदी हुई वे प्राभातिक घड़ियाँ याद हो आयीं, जब लौरेटाने उसके प्रेमको ठुकराते हुए उसकी कोमलकान्त भावनाओंको मसल डाला था,—उसकी कल्पनाओंके आलवालमें आग लगा दी थी !...... उफ़! कैसा घातक था वह दिन—कैसी निर्मम थीं वे घड़ियाँ ! उस समय रैमोनाके हृदयमें जो आँधी चल पड़ी थी,

क्या उसके साथ इस आँधीकी समता हो सकती है! उस आँधीने रैमोनाके जीवन-उपवनकी समस्त सौरभमयी कलिकाओं को विनष्ट कर डाला था,—आशा-लतिकाके मालञ्चोंको जला डाला था,—किसलय-दलको निर्मतापूर्वक यत्र-तत्र फेंक डाला था! जीवन ही पलट डाला उस आँधीने! रैमोनाकी कविताकी गति ही बदल डाली उस निर्मोह आँधीने! रैमोनाको ओठोंकी मुस-कराहट छीन कर उसे सर्वस्वहीन आवारा बना डाला!"...... रैमोना सोचने लगा, उस दिन प्रभात था! सूरजकी किरणें धीरे-धीरे संसारको आलोकित करती हुई अग्रसर हो रही थीं! कनककलश लिये हुए कोई अप्सरी कुसुमोंके प्राणोंमें सौरभ और मधुकरियोंके हृदयमें गुञ्जनकी प्रेरणा सन्निविष्ट कर रही थीं,—विहगावलियोंके अस्तित्वको मुखरित कर रही थी। कितनी राशि-राशि कर्मोन्मादना बिखर चली थी! लेकिन उसी आलोकमयी बेलामें-- नैश तन्द्राको दूर करके पृथ्वीके कण-कणमें कर्म-प्रेरणाके उस प्रवेश-मुहूर्त्तमें रैमोनाको, रैमोनाके नवपल्लवसे सुकुमार, सलोने हृदयको अवहेलनाकी आँधीका कितना प्रचण्ड आघात सहना पड़ा था!—कितनी निर्ममतापूर्वक उस आंधीने उसके प्राणप्रदेशमें खिलनेवाली—खिलखिलकर सौरभ वितरण करनेवाली रसमयी कलिकाओंके कमनीय अस्तित्वको रौंद डाला था। वह सिहर उठा था। उसके रोम-रोममें चीत्कार छा गया था।...और आज? आज भी आँधी आयी है। रैमोना सोच रहा था—उस दिनकी आँधीने मेरे

हृदयको खाकमें मिला डाला था,—मेरे प्राणोंकी सारी सुषमा नष्ट कर डाली थी,—मेरे अन्तर्देशके सारे सौन्दर्यको अपहृत कर लिया था और यह आजकी आँधी मेरे शरीरको सरिताकी हाहाकारमयी लहरोंके नीचे ले जाकर पीस डालेगी!—मेरी इन्सानी हस्तीको अन्धकारमें लुप्त कर देगी!...अच्छा ही है! हृदयकी अनुरागमयी सुषमासे हीन होकर शरीरका बोझ लिये हुए इस दुनियाँमें जीनेसे तो इसी प्रकार नष्ट हो जाना ही श्रेयस्कर है। जिसके प्राणोंमें सदैव पतझड़का नृत्य होता रहता हो,—निशिवासर ज्वालागिरियोंका भयंकर विस्फोट होता रहता हो,—दो क्षणोंके लिये भी अन्धकार दूर नहीं होता हो, उसका इस दुनियाँसे अलग हो जाना ही अच्छा है!...रैमोना उस आँधीके प्रति कृतज्ञ-सा हो रहा था!

आँधी बहुत ही जोर पकड़ती जा रही थी। रैमोनाके सब साथी अत्यन्त घबड़ा रहे थे और सहायता के लिये जोर-जोरसे चिल्ला भी रहे थे। लेकिन रैमोना सर्वथा मौन,—सर्वथा अविचलित था। उसके चेहरेको भय और विषादकी छाया स्पर्शित भी नहीं कर सकी थी। वह सोच रहा था,—अच्छा ही हुआ! मेरा आजका आना सार्थक हो गया! अपने अस्तित्व को अपने ही हाथोंसे उन्मूलित नहीं करना पड़ा।

आँधीने एक बार जोरोंसे आघात किया और नौका उलट गयी। सबके सब लहरोंसे आलिङ्गित, चुंबित होने लगे।

जिस मल्लाहने इन लोगोंको अपनी तरणी दी थी, वह

पहलेसे ही आशंकित हो रहा था। उसने अपने सात आठ साथियोंको बुलाया और सबके सब उनको बचानेके लिये बढ़े। सबके सब हृष्ट-पुष्ट थे और ऐसी-ऐसी न जाने कितनी आँधियाँ देख चुके थे और उनसे जी भर कर संघर्ष कर चुके थे।

आधा घंटा बीत गया। तीन आदमी तो मिल गये और सरिताके तट पर ले जाकर उनका उपचार भी होने लगा, लेकिन रैमोना और लेतिग्रो का पता नहीं चला। बेचारे मल्लाह बड़ी बहादुरी के साथ उन दोनोंको खोज रहे थे। उनका शरीर अत्यन्त थक गया था और जवाब दे रहा था, किन्तु फिर भी वे लहरोंके साथ दूने बलसे लड़ रहे थे। डुबकी लगाते और सरिता के अन्दर जाकर उन्हें खोजते; फिर साँस लेनेके लिये बाहर निकलते और अन्दर चले जाते। इसी तरह चार घन्टे बीत गये, उनके शरीरमें अब तनिक भी शक्ति नहीं रही। थक कर, हार मान कर वे तटकी ओर लौट पड़े।

तब तक आँधी अपने हाहाकार भरे अस्तित्वको लेकर विदा हो चुकी थी। अन्तरिक्षके उन्मादी जलधर-दल भी तिरोहि होगये थे और तारकोंके साथ चाँद आ पहुंचा था,—अपनी मुसकानमें कुछ उदासी और लज्जाकी भावना लिये हुए।

तट पर ठंढ पड़ रही थी। एक मल्लाहने अपने साथीसे कहा—"इन्हें घर ले चलो। वहीं इनका उपचार अच्छी तर हो सकेगा।"

"इनका उपचार तो हो जायगा। और इन्हें होशमें आते

ज्यादा देर भी नहीं लगेगी। किन्तु इनके उन दो साथियोंका क्या हुआ ? मुझे उनकी बड़ी चिन्ता हो रही है।"

"अब उनके रक्षक परमात्मा हैं। हम लोगोंसे तो जितना बन पड़ा, खोजा। अब यदि उनके भाग्यमें ही मौत लिखी होगी तो क्या उपाय है!"

उन तीनोंको वे अपनी झोपड़ीमें ले आये और उन्हें होशमें लानेका प्रयत्न करने लगे।

रात आधी बीत चुकी। काफी सेवा-शुश्रूषा करनेके बाद वे तीनों होशमें आ सके। उठनेके साथ एकने अपने दोनों साथियोंको देखा और बोला—'हम लोग पाँच थे न ? शेष दो कहाँ गये ?'

'उन दोनोंकी भी खोज खबर ली जा रही है। आप चिन्ता न करें। घबड़ानेकी कोई बात नहीं है।'

यह कह कर बूढ़ा मल्लाह झोपड़ीके बाहर निकल आया और सोचने लगा—घबड़ानेकी बात कैसे नहीं है! क्या अभी तक वे दोनों जीवित बचे होंगे। हे भगवान्! तेरी महिमा भी अकथनीय है। बेचारे अभी कुछ देर पहले तक तो गाना गा रहे थे; रँगरेलियाँ कर रहे थे; आनन्दोल्लसित हो-हो कर हँस बोल रहे थे और अब......"

बूढ़ा ज्यादा सोच नहीं सकता। वहीं एक शिलापर बैठ गया और वे दिन याद करने लगा, जब वह भी लड़का था और इसी तरह अपने साथियोंके साथ सरिता-विहार किया करता था।

६

जेलो और डेड़ियामा हाथसे हाथ मिलाये हुए अपने गाँव के स्टेशनपर चहलकदमी कर रहे थे।

सूर्यास्त हो चुका था। अन्धकारकी वारुणी विश्व-पात्रमें छलक उठी थी।

जेलो बहुत ही गम्भीर स्वरमें बोला–भाई डेड़ियामा, मुझे तो अब न जाने क्यों दुनियांसे बड़ा वैराग्य हो रहा है! एकान्तप्रियता भी बढ़ती चली जा रही है। सदैव गीता पढ़ते रहनेकी इच्छा होती है।

डेड़ियामा बहुत ही उपेक्षा भरी हँसो हँस कर बोला—'तुम भारतवर्षसे यह क्या बला मोल ले आये? मैं भी वहाँ पाँच वर्ष रहा, किन्तु मुझे तो वहाँकी कोई भी चीज प्रभावित नहीं कर सकी।'

इस बार जेलीकी गंभीरता थोड़ी दूर हुई। ओठोंपर मुसकान बिखेर कर वह बोला—'क्या वहाँ का वह राजपूत युवक भी नहीं ?'

इस बार डेड्रियामा थोड़ा लज्जित सा हो गया। अपने मित्र के द्वारा इस प्रकार अपना अपमान होते देख वह अन्दर ही अन्दर कुछ क्रोधित सा भी हुआ। लेकिन एक हलकी सी मुसकानके द्वारा अपने क्रोधको छिपाता हुआ बोला—'जेली! तो तुम क्या समझते हो कि मैं उस राजपूत युवक को उचित दण्ड नहीं दे सकता था ?"

जेली बोला—'मैं तो यही समझता हूं कि तुम नहीं दे सकते थे। यदि उस वीरप्रवरको दण्ड देनेकी ही क्षमता तुम में रही होती तो क्या तुम उसी समय बाज आते ? लेकिन उस समय तो अपनी हक्की बक्की भूल गये थे।'

डेड्रियामा मौन रहा। उसे चुप देख कर जेलीको सन्देह हुआ कि कहीं वह बुरा तो नहीं मान गया। वह यह बात अच्छी तरह जानता था कि उस गांवमें डेड्रियामा यदि किसीको थोड़ा बहुत प्यार करता था तो उसीको और उसीके सामने वह इतनी नम्रता भी दिखलाता था, अन्यथा सारा गांव उससे थर-थर कांपता था। उसका क्रोध आसपास के गाँवों में भी प्रसिद्ध था। अतएव वह बोला—'डेड्रियामा। बुरा तो नहीं मान गये ? क्या सोचने लगे ?'

डेड्रियामाने एक उष्ण उच्छ्वास छोड़ते हुए कहा—'नहीं'

बुरा क्यों मानूँगा। मैं यही सोच रहा था कि इतनी-इतनी शताब्दियों तक पददलित रहने पर भी,—इतने-इतने समय तक पराधीनताकी श्रृंखलाओंमें जकड़े रहने पर भी कोई जाति इतनी बहादुर और शेरदिल हो सकती है, मुझे इसीका आश्चर्य हो रहा है ?'

जेली सुन कर हँसा, लेकिन डेड्रियामा मुसकरा भी नहीं सका, 'डेड्रियामा, तुम आज बहुत चिन्तनशील से दिखलायी दे रहे हो। बात क्या है ?

'आज मुझे बहुत-सी बातें याद आ रही हैं जेली! अतीत की न जाने कितनी-कितनी घटनायें आज इन नीरस, निर्दय आँखों के सामने नाच रही हैं। मुझे वे दिन याद आ रहे हैं, जब मैं और तुम दोनों नवयुवक थे,—दोनों की आँखोंमें नशा छाया हुआ था, दोनों का ही हृदय मदिराकुल रहा करता था। हम दोनोंने एक हीं किशोरीको प्यार किया, उसके प्रति अपने हृदयका सारा अनुराग निवेदित किया! उसके प्रेमने हम लोगोंमें वैमनस्यका वीजरोपण किया और अन्त में वह वैमनस्य बढ़ता-बढ़ता शत्रुताके रूपमें परिणत हो गया। तुम्हें वह शैल-शिला तो याद ही होगी, जहाँ मैंने तुम्हें जान से मार डालनेकी धमकी दी थी। उफ़! कितना पागलपन—कितनी वहशत भर गयी थी मेरे प्राणोंमें! उन दिनों मैं दीवाना हो गया था। और तुम ? तुम्हारी भी तो वही हालत थी। तुम रात-रात भर उसके कारण सो नहीं सकते थे और मुझसे बहाना

किया करते थे कि मुझे नींद नहीं आती है । दोनों के दोनों हम लोग एक ही स्थान पर आकर उसकी प्रतीक्षा किया करते थे और दोनों ही तरह-तरह के बहाने एक दूसरे से बना दिया करते थे । लेकित वह नशा—वह खुमारी ज्यादा दिनों तक नहीं रह सकी। एक ही आघातने हम दोनोंके प्रणयको नष्ट कर डाला,—एक ही आंधीने हम लोगोंके अनुरागकी लतिकाको उन्मूलित कर दिया।······'

'उन दिवसों की बातें क्यों याद दिला रहे हो ? उन्हें भूल जाना ही अच्छा है। देखता हूं, तुम आज कवि भी हो गये हो। तुम्हारे वाक्योंको सुन कर शायद ही कोई अपरिचित आदमी तुम्हें कविके अतिरिक्त और कुछ कह सकें । जेली ने बात काटते हुए कहा।

डेड्रियामाने मुसकरा कर अपने मित्रकी बातका जवाब देनेकी कोशिश की, किन्तु वह नहीं मुसकरा सका । बोलता ही गया—जेली, उसके बादकी बातें याद करो क्या हुआ था, उस आघातके बादमें हम दोनोंको ही प्रेमसे घृणा हो गयी थी। उस रूपसीसे प्रवञ्चित होनेके उपरान्त हम दोनोंकी विचारधराने दो दिशाएँ अपनायीं । तुम विश्वजनीन प्रेमके हिमायती बने, मैं विश्वजनीन घृणाका । तुम्हें प्रभुकी भक्तिने अपनी ओर आकर्षित किया ; मुझे ईश्वरद्रोहिताकी ज्वलन्त भावनाओंसे अभिभूत हो ना पड़ा तुम शान्त बने, मैं उग्र बना। उग्र तो मैं पहलेसे ही था, लेकिन अब और अधिक उग्र हो गया

हूं। मेरी लाल-लाल आंखोंको देखकर कौन नहीं डर जाता! मेरी एक डांट इस गाँवके आदमियोंको कँपा देनेके लिये काफी है। इस ममताहीन औरतसे ठुकराये जानेपर तुम अपने आपको दोषी बताने लगे और सारे संसारको प्रेम करने लगे; ईश्वरको प्रेम करने लगे लेकिन मैं सारे संसारको और उसके साथ ही साथ ईश्वरको भी दोषी बताने लगा और अपने आपको प्रेम करनेकी कोशिश करने लगा। मैंने देखा, मुझे जब कोई प्रेम नहीं करता,—जब मेरे प्रेमको इस तरह निर्दयतापूर्वक रौंदा जा सकता है तो फिर मैं क्यों दूसरोंके प्रेमके पीछे दीवाना बनूं! क्यों नहीं मैं अपने आपको ही प्रेम करूँ! लेकिन उसमें भी तो सफल नहीं हो पाया। अपने आपसे भी न जाने क्यों कभी कभी बड़ी घृणा होने लगती है। एक प्रचंड असंतोष हृदयके अन्तरालमें आस्फालन करने लगता है और मैं सुलगने लगता हूं।…"

वे दोनों जने इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि एकाएक कराहनेकी आवाज सुनायी दी। दोनों चौकन्ने हो गये और ध्यानपूर्वक उस आवाजको सुनने लगे। आवाज स्टेशन मास्टरके कमरेसे आती हुई मालूम दी।

दोनों जने शीघ्रतापूर्वक स्टेशन मास्टरके कमरेमें जा पहुंचे। वहांका दृश्य देखते ही जेलीके मुखसे एक हलकी-सी चीख निकल पड़ी। डेड्रियामाकी आंखें क्रोधसे जलने लगीं।

स्टेशन मास्टरके दोनों हाथ रोबियों नामक बूढे किसानके गलेको जोरोंसे दबा रहे थे। उसकी जीभ बाहर निकली जा रही

थी। यह वही व्यक्ति था, जिसे हंटरकी मारसे बेहोश करके स्टेशन मास्टरने कुछ समय पहले लौरेटाका पत्र छीन लिया था।

डेड्रियामाको देखते ही स्टेशन मास्टरके देवता कूच कर गये। वह भयसे कम्पित हो उठा। उसके दोनों हाथ स्वयमेव बूढ़ेकी गर्दनसे अलग हो गये।

डेड्रियामाने अपने स्वरमें ज्वालामुखीका भयंकर विस्फोट भरके कहा—"बदमाश!"

स्टेशन मास्टरको कोई युक्ति नहीं सूझी। वह डेड्रियामाके चरणोंसे लिपट गया।

बूढ़ा किसान अधमरा हो रहा था। जेली उसपर हवा करने लगा। बाहर कहीं कोई नहीं था। चारों ओर नीरवता छायी हुई थी। जेली बोला—'यहां पानी किससे मँगाया जाय?'

'पानी वानी रहने दो। यह बूढ़ा अब बच चुका! इसके चेहरेकी रंगत नहीं देखते हो! लेकिन अब यह पापी भी नहीं बच सकेगा। मैं बूढ़ेके साथ-ही-साथ इसे भी दूसरी दुनियांकी सैर कराये देता हूं।" और इतना कहते हुए डेड्रियामाने स्टेशन-मास्टरके सिरपर इतने जोरोंसे लात मारी कि उसकी हालत उस बूढ़ेसे भी ज्यादा कारुणिक हो गयी।

"मुझे जानसे न मारिये। मैं माफी चाहता हूं।" स्वरमें सारी करुणा सन्निविष्ट करके स्टेशन मास्टरने कहा।

जेली बाहर पानीकी खोजमें चला गया था। जब तक वह

पानी लेकर वापस लौटा तब तक तो स्टेशन मास्टर मार खाते-खाते बेहोश हो चुका था।

'उफ़! डेड्रियामा! तुम यह क्या कर रहे हो? इतने निर्दय न बनो। पापीके पापको पापसे दूर नहीं किया जा सकता।' जेलीने डेड्रियामाका हाथ पकड़ते हुए कहा।

'तुम अपनी धार्मिकता अपने पास रखो। मुझे तुम्हारे उपदेशोंकी इस समय आवश्यकता नहीं है। भला इस बूढ़े और निर्दोष किसानको यह क्यों मार रहा था?'

पानीकी दो चार घूँट कंठमें जानेसे बूढ़ेको कुछ शक्ति मिली। वह कराहते हुए बोला—'इस दुष्टने कुछ मास पहले मुझसे लौरेटाका पत्र जबर्दस्ती छीन लिया था। मैं प्रति सप्ताह अवकाश पाकर इसके पास आता हूं और हाथ जोड़ता हूं, विनती करता हूं; लेकिन यह उसे वापस नहीं करता। तरह-तरहके बहाने बना दिया करता था। आज मैं चौबीस घन्टोंसे यहाँ छिपकर चक्कर लगा रहा था। मैंने अभी एक घन्टा पहले लौरेटाका वही पत्र खोलते देखा। मैं दौड़कर चला आया और उसे वापस लेनेका प्रयास करने लगा।"

बूढ़ेसे बोला नहीं जा रहा था। उसकी आवाज धीमी पड़ती जा रही थी।

डेड्रियामा बोला—"लौरेटाका पत्र इस दुष्टने तुमसे छीन लिया? नारकीय कुत्ता! ...अच्छा, तुम्हें मालूम है वह पत्र इसने कहाँ रखा है?"

बूढ़ा कराहते हुए बोला--'मेजकी दराजमें रखा है।'

डेड़्रियामाने मेजकी दराज खोलकर पत्र निकाला।........

सचमुच, लौरेटाका ही पत्र था। उसने जेलीको कहा--'जेली देखो, इस दुष्ट स्टेशन मास्टरके कारण ही अभी तक लौरेटाका कोई पता नहीं मिल सका।'

'लेकिन आप लोग कृपया उस पत्रको न पढ़े। वह रमोनाके नामसे लिखा गया है और रमोनाके अतिरिक्त और किसीको भी यह पत्र देनेकी सख्त मनाही कर दी गयी है। इसीलिये तो मैंने अबतक आप लोगोंको स्टेशन मास्टर के इस राक्षसी आचरणके बारेमें कुछ भी नहीं कहा। ' और यह कहते-कहते- बूढ़ा अन्तिम साँसें लेने लगा।

'बूढ़ा मरनेकी तैयारी कर रहा है, डेड़्रियामा ! मैं इसे गीता सुनता हूं।' यह कहकर जेली उसके समीप बैठ गया और गीताका द्वितीय अध्याय पढ़ने लगा। गीता उसकी जेबमें सर्वदा रहा करती थी।

डेड़्रियामाको जेलीका गीता-पाठ अच्छा नहीं लगा। वह बोला--'अच्छा तुम गीता-पढ़ो; मैं बाहर जाकर यह पत्र पढ़ता हूं।'

रात हो आयी थी। चारों ओर एक पीड़ामयी शून्यता छा गयी थी और दूर-दूर तक फैले हुए खेतों की वह तमाकीर्ण हरीतिमा किसी कविको आमन्त्रित कर रही थीं।

डेड़्रियामा रोशनीके नीचे आकर लौरेटाका पत्र पढ़ने लगा।

वह रशियन अच्छी तरह जानता था। फलतः उसे किसी प्रकारकी कठिनाई नहीं हुई। पत्र यों था—

रैमोना,

मैं जानती हूं—मेरे हृदयका अणु-अणु जानता है कि तुम मुझे कितना प्यार करते हो,—मेरे लिये अपने अन्तर्देशमें कितनी-कितनी सुकुमार सलोनी कामनाएँ लिये फिरते हो। लेकिन तरुण, अब आजसे तुम अपनी इस तरुणीको भूल जानेका प्रयास करो! इसके सौन्दर्यकी चन्द्र-रश्मियोंके स्पर्शसे तुम्हारा हृदय अब मदिराकुल नहीं हो सकेगा। यह बात मैं एक या दो वर्षके लिये नहीं कह रही हूं। न जाने कितने ही वर्षों तक अब तुम अपनी लौरेटाको नहीं देख सकोगे। मैं मानती हूं कि तुम मेरे विप्रयोग का आघात नहीं सह सकोगे! तुम्हारा कवि हृदय चीत्कार कर उठेगा और तुम्हारी कोमल कमनीय कविताएँ खून उगलने लगेंगी, लेकिन तुम्हें सब कुछ सहना पड़ेगा,—सब कुछ भूलना पड़ेगा।

मैं कहाँ जा रही हूं और क्यों जा रही हूं, यह मैं किसीको भी नहीं बताना चाहती थी। लेकिन न जाने क्यों तो तुम्हें बताये बिना जी नहीं मानता। मैं जानती हूं कि तुम मेरी खोजमें जमीन आस्मान एक कर डालोगे!—सारी पृथ्वी छान डालोगे। गाँवमें तुम्हारा रहना असंभव हो जायगा। वहाँका एक-एक स्मृति स्थल तुम्हारे हृदयको चीरता हुआ नित्य नवीन हाहाकारकी सृष्टि किया करेगा। अतएव तुमसे विनम्र भावसे कह देती हूं

कि तुम मुझे खोजनेकी चेष्टा मत करो। मैं बहुत ही गुप्त बात तुम्हें बतला रही हूं। क्योंकि मैं यह बात अच्छी तरह जानती हूं कि तुम्हारे अतिरिक्त इसे और कोई भी नहीं जान पायेगा। मैं सशस्त्र क्रान्तिकारियोंके दलमें सम्मिलित हो रही हूं। क्यों हो रही हूँ, इस प्रश्नका उत्तर मैं नहीं देना चाहती। रस प्रश्नका उत्तर श्रमजीवियोंके प्राणोंमें निशिवासर जलनेवाली भूखकी ज्वालासे पूछो,—खेतोंकी पीतिमापर बिखरी हुई क्रन्दन-ध्वनियोंसे पूछो,—पूँजीपतियोंके प्रासादोंकी रक्त-लिप्त दीवारोंसे पूछो,—अर्धनग्न शिशुओंकी ठिठुरनेवाली हड्डियोंसे पूछो। तुम्हें इसका समुचित उत्तर वहीं मिलेगा। मैं प्रेमहीना हूँ, यदि तुम यह समझोगे तो मेरे प्रति भारी अन्याय होगा और मेरा पूर्ण विश्वास है कि तुम ऐसा समझ भी नहीं सकते हो। वे पुरानी बातें,—तुम्हारा और मेरा वह रात-रात भरका नैश भ्रमण,—तुम्हारी वह कविताएँ लिखना और फिर निशीथ—निरवतामें सरिताके सौभाग्यशाली तटपर मेरा उन्हें गाना क्या तुम्हें ऐसा समझने देगा?… लेकिन रैमोना, न जाने क्यों तो मुझे ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे कोई अज्ञातशक्ति मुझे तुम्हारे संसर्गसे अलग रहनेका आदेश देती हुई मुझे क्रान्ति-पथमें चलनेके लिये विवश कर रही है।

मानव-जातिकी वर्तमान दुरवस्थाका हाहाकार मुझे इस प्रेम-लीलासे मना कर रहा है। मुझे क्षमा करो रैमोना!…हाँ, आज तुम केवल रैमोना हो। न प्यारे रैमोना हो और न मेरे रैमोना हो।

मैं अपना पता बताये देती हूँ। बताना तो नहीं चाहिये था। लेकिन तुम यह न समझ लेना कि मैं तुम्हें प्रेमके कारण बतला रही हूँ। मुझे तुमपर दया आ रही है। मैं अपनी कल्पनाके द्वारा देख रही हूं।—तुम्हारे केश बिखरे पड़े हैं। नंगे पैरोंसे खून निकल रहा है। चेहरेपर विषादकी गम्भीर छाया पड़ी हुई है। तुम अपने प्राणोंके आकुल क्रन्दनको समीरणकी लहरोंपर छिटकाते हुए खेतोंकी पगडंडियोंपर, सरिता-तटोंपर, गिरि-शिखरोंपर मेरी खोजमें भटक रहे हो! तुम्हारे ओठ सुख गये हैं और उनसे निकल निकलकर आहें वातावरणको विकम्पित कर रही हैं। ·· सचमुच कितना कारुणिक दृश्य होगा वह, जब तुम यह जान पाओगे कि तुम्हारी लौरेटा तुम्हारे शब्दोंमें तुम्हारी कविताओं-को माधुरीको अपनी उपस्थितिसे मदिरामयी बना देनेवाली लौरेटा एक अनिश्चित अवधिके लिये न जाने कहां तो चली गयी है। मैं तुम्हें अपना पता बताये देती हूं। किन्तु तुम मुझसे मिलनेकी चेष्टा न करना। हां, यदि कभी विप्रयोगकी दारुण ज्वालासे तुम्हारे मन-प्राण अत्यन्त आकुल हो उठें और तुम्हारे लिये जीवन-का कण-कण भार स्वरूप हो जाय, तब तुम अर्ध-रात्रिकी सुनसान और तन्द्रालस घड़ियोंमें मुझे वेष बदल कर देखनेके लिये आ सकते हो! लेकिन मुझसे कुछ बोलना मत। मुझे यह भी मालूम न होने देना कि तुम मुझे देखनेके लिये आये हुए हो। मैं जिस क्रान्तकारी-दलकी सदस्य होने जा रही हूं, उसकी स्थायी बैठक प्रतिमास नियमित रूपसे ·········· के·········· मुहल्ले के

४५ नम्बरवाले मकानमें दोतल्लेमें हुआ करती है अर्ध-रात्रिकी नीरवतामें। तुम बैठक होते समय वहां नहीं पहुंच सकोगे। तुम्हारे सारे प्रयास व्यर्थ होंगे। और यदि जबर्दस्ती वहां प्रवेश करनेका प्रयास करेंगे तो तुम्हें अपनी जानसे भी हाथ धोना पड़ेगा। बैठककी परिसमाप्तिके उपरान्त मैं नियमित रूपसे मकानके बाहर निकला करूँगी। वहीं तुम मुझे देखनेके लिये आ सकते हो।

अब समय नहीं है। क्रान्तिकारी दलके पथ-प्रदर्शक किसियोपिकस अभी तुरन्त आने वाले हैं और उनके साथ मैं शीघ्राति-शीघ्र रवाना हो जाऊँगी। यह पत्र अपने पास न रखना। पत्र पढ़कर फाड़ देना। यह मत सोचना कि तुम्हारी प्रेयसीकी यह आखिरी निशानी है अतएव इसे नष्ट करना अपने अनुरागी हृदयके प्रति अन्याय करना होगा! यदि इस पत्रको तुम्हारे अतिरिक्त किसी और ने देख लिया तो मेरे प्राणोंपर आ बीतेगी!

तुम्हारी—

लौरेटा।

डेड्रियामा पढ़ते-पढ़ते न जाने किस तेजोमयी भावनाके स्पर्शसे विह्वल हो उठा। उसने पत्रको चूमा; सिरसे लगाया और फिर बड़े सम्मानके साथ जेबमें रख लिया।

कमरेमें जाकर देखा—जेली आँखें बन्द किये गीताके श्लोक पढ़ रहा है और वह बूढ़ा मरा पड़ा है। स्टेशन मास्टर होशमें आ रहा था। उसे देखते ही डेड्रियामाका खून जल गया। सबसे

ज्यादा क्रोध तो उसे इस बातका हो रहा था कि उस पापीने लौरेटाके गुप्त पत्रको अपने पास इतने दिनों तक रखा। उसने जाकर उसकी छातीमें एक लात मारी। वह मूँहसे खून फेंकने लगा। आँखें बाहर निकल आयीं।

उसका कराहना सुनकर जेलीने आँखें खोली। देखा, बूढ़ा मरा पड़ा है और स्टेशन मास्टर मरनेकी तैयारी कर रहा है। उसने डेडियामाको देख कर कहा 'तुम यह क्या कर रहे हो? इसकी हत्या करनेसे क्या होगा?'

'क्या होगा और क्या नहीं होगा, यह सोचना तुम्हारा काम है। मुझे तो इस दुष्टपर इतना क्रोध हो रहा है कि इसके चार टुकड़े करके बाहर फेंक देनेकी इच्छा होती है।' डेड़ियामा क्रोधसे जलता हुआ बोला।

थोड़ी देर तक दोनों मौन एक दूसरेको देखते रहे! फिर डेड़ियामा बोला—'चलो, तुम्हें लौरेटाका पत्र पढ़कर सुनाऊँ। लौरेटाके सम्बन्धमें मेरी जितनी बुरी धारणाएँ थीं, सब नष्ट हो गयी हैं। वह महान है। मैं उसके सामने सर्वथा तुच्छ और नगण्य हूं। सारे यूरोपमें,—नहीं, सारी दुनियांमें आज ऐसी ही तरुणियोंकी आवश्यकता है।"

"तो क्या यह बूढ़ा यहीं पड़ा रहेगा। पहले इसकी मृतक देहका अन्तिम संस्कार करवा देना चाहिए न।"

"अन्तिम संस्कार होता रहेगा। चलो घर चलें। बहुत जरूरी बातें करनी है। तुम पहले लौरेटाका यह पत्र ध्यानपूर्वक आद्यो-

पान्त पढ़ डालो।" यह कहते हुए डेड्रियामाने लौरेटाका पत्र जेलीको दे दिया।

यामिनीके पथमें दीपकोंकी संख्या बहुत बढ़ चुकी थी। फिर भी अन्धकार उसी प्रकार साँय-साँय करता रहा।

डेड्रियामा टार्च जलाये हुए था और उसके प्रकाशमें जेली लौरेटाका पत्र पढ़ता जा रहा था।

———

१०

प्राभातिक सुषमासे विह्वल होकर खग-कुल कलरव करने लगा था और रात्रिके तिमिरका उपहास करती हुई नूतन किरणं धरतीपर नृत्य कर रही थीं। चतुर्दिक नूतन उल्लास—नूतन कर्मण्यता एवं नूतन आलोक प्रसारित हो चला था। आज का दिन अन्य दिवसोंकी अपेक्षा न जाने क्यों तो अधिक सलोना प्रतीत हो रहा था। आकाश पूर्ण स्वच्छ था। उसकी नीलिमाको आज एक भी मेघखंड आक्रान्त नहीं किये हुए था!

किन्तु फ्रांसका एक प्रसिद्ध उपन्यासकार अत्यन्त विषाद-ग्रस्त अवस्था में एक टूटी हुई अराम कुर्सीपर बैठा हुआ इस जागृति-बेलाके उल्लासको अपने व्याकुल प्राणोंमें भर लेनेकी असफल चेष्टा कर रहा था। उसकी आँखे,—विश्व के कण-कण को अत्यन्त बारीकी के साथ देखने वाली भावपूर्ण आँखें

अवसाद-भार से झुकी जा रही थीं और वह सोच रहा था,— अब क्या होगा? कर्ज अदा करना मेरे लिये असंभव है! भविष्य अत्यन्त अन्धकारित दिखलायी दे रहा है!

उसने अपनी लेखनी उठायी और एक कागज के टुकड़े पर लिखा,— मैं अपने उपन्यासोंके द्वारा मानव-जातिको सदैव नूतन सन्देश सुनाता आया हूं। उसकी सुप्त, शिथिल शिराओं में प्राणोंका नवोन्मेष करता रहा हूं। मेरे लिखे हुए उपन्यासों के द्वारा क्या जाने कितने ही प्राणहीन, अकर्मण्य युवकोंने अपने जीवनमें नूतन आलोक प्राप्त किया है, अपने भीरु एव विपत्ति-पराजित हृदयमें नूतन बल पाया है। लेकिन अब मैं स्वयं सवथा विषादग्रस्त होकर आत्महत्या करने जा रहा हूँ। मेरी साहित्यिक कृतियोंने न जाने कितने ही हतभाग्या युवकोंको आत्मघातसे बचा लिया है। मेरे पास सैकड़ोंकी चिट्ठियाँ भी हैं! आज मैं इन समस्त चिट्ठियोंको अपने सामने रख कर संध्याकी बेसुध घड़ियोंमें जहर खा लूँगा। मुझे आज-विचित्र अवसाद अभिभूत कर रहा है!"

उसने कागजके टुकड़ेको जेबमें रख लिया। इतनेमें ही डाक्टर साहब आये। आते ही उससे हाथ मिला कर हंसते हुए कहा—'आज तो तुम बड़े उदास मालूम हो रहे हो। मालूम होता है, किसी पात्र का अत्यन्त कारुणिक जीवन अपने किसी नवीन उपन्यासमें चित्रित कर रहे हो! सचमुच तुम उपन्यास-लेखकोंका जीवन भी बड़ा विचित्र होता है।'

डाक्टर से उपन्यासकारकी बड़ी घनिष्ठता थी ! किसी तरह अपने सूखे ओठोंपर मुसकान बिखेरते हुए उपन्यासकार मिराबो कहा,—'विचित्र होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं ! काश ! वह विचित्रता पीड़ाओं और अभावोंके दामनको न पकड़ कर अपना कोई दूसरा ही आधार ढूँढ़ती !'

डाक्टरने देखा, उपन्यास-लेखकके हृदयपर वास्तवमें आज कोई भीषण वेदना अपना आधिपत्य स्थापित करनेका प्रयास कर रही है। उसने विषय परिवर्त्तित करते हुए कहा,—'वह तरुण कैसा है ?'

'चलिये। चल कर देख लीजिये। पहले से उसकी हालत अब बहुत अच्छी है। दुर्बलता भी दूर हो चली है। इस समय वह, सो रहा है !'

दोनों जने एक कमरेमें आये। एक साधारणसे पलंगपर एक नवयुवक सोया हुआ था !

'यह कब तक पूर्णरूपसे स्वस्थ होकर अपने घर जाने योग्य हो जायेगा डाक्टर !' उपन्यासलेखकने पूछा।

'अब अधिक दिन नहीं लगेंगे। चलने फिरनेकी क्षमता तो इसमें अभी भी आ गयी होगी, किन्तु एक सप्ताहके अन्दर-अन्दर यह अपने पुरानी शक्तिको पुनः प्राप्त कर लेगा।'

'एक सप्ताह ?' उपन्यासकारने मन-ही-मन कहा—'तबतक तो मैं न जाने इस कोलाहलपूरित संसारसे परे किस अविजानित दृश्य लोकमें विचरण करता रहूंगा !

तरुणने आँख खोली और थोड़ा पानी माँगा। उपन्यास-कारने नौकरानीसे पानी लानेको कहा। नौकरानी काँचके गिलासमें पानी ले आयी और तरुणको पिलाने लगी।

दो घूँट पीकर तरुणने कहा—'आखिर मैं यहाँ आ कैसे गया? मुझे तो सरिताकी लहरें अपने आलिङ्गन-पाशमें बद्ध कर सुदूरके किसी तिमिराकीर्ण देशकी ओर ले गयी थीं। वहाँसे मैं पुनः इस संसारमें कैसे आ गया?'

'तुम अधिक बोलो मत। अभी दुर्बलता है। आराम करो। मेरे घरको अपना घर समझो। तुम्हें सरिताकी लहरें अपने आलिंगन-पाशमें बद्ध करके तिमिराकीर्ण लोककी ओर ले नहीं गयी थीं, ले जानेका प्रयास कर रही थीं। भाग्यवश मैं अपने इस डाक्टर मित्रके साथ उस दिन सरिताकी ओर घूमने चला गया था, अन्यथा आज तुम इस दुनियाँमें नहीं दिखलायी देते! ...अच्छा, यह तो बताओ। तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम रैमोना है। मेरे अन्य साथी कहाँ हैं?'

'कैसे साथी?'

"हमलोग पाँच जने पेरिससे नौका-विहारके लिये यहाँ आये थे। एकाएक जोरोंकी आँधी चलने लगी और हमारी नाव उलट गयी। उसके बाद क्या हुआ यह मैं नहीं जानता।

उपन्यासकार कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला—तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे साथी सुरक्षित हैं।'

डाक्टरने उपन्यासकारसे विदा माँगी और एक रोगीके यहाँ

चलता बना। उपन्यासकार दरवाजेके पास आकर सुनील अन्तरिक्षकी ओर देखने लगा। दिवाकरकी किरणें सारे व्योम प्रान्तरको एक अभिनव आलोक प्रदान कर रही थीं। लेकिन उसके अन्तर्व्योमका सघन तिमिर-जाल आंशिक रूपमें भी दूर नहीं हो रहा था!

उसने सोचा—अब इस जीवनके भारको व्यर्थ ही लादे रहनेसे लाभ क्या? मेरे जीवनमें रसकी एक नन्हीं-सी बूंद भी तो नहीं है। हृदय चारों ओरसे आहत होकर कराह रहा है। इतने दिनोंतक तो किसी प्रकार ये अनन्त अभिशाप सहता भी रहा, किन्तु अब नहीं सहा जाता! अपनी लिखी हुई तीन नवीन किन्तु अपूर्ण पुस्तकोंको पूर्ण करना अभी बाकी ही है। किन्तु उन्हें पूर्ण करनेके पहले ही मुझे जेलकी हवा खानी पड़ेगी और मेरी वह सरिता-तटपर स्थित प्रिय भूमि, जहां बैठ कर मैंने अपने सर्वश्रेष्ठ उपन्यासका कथानक सोचा था, उस पापपरायण सेठके हाथोंमें चली जायगी!……जहर खाकर इन समस्त मानसिक क्लेशोंसे मुक्त हो जाना ही अच्छा है।"

अपनी मानसिक शक्तियोंके द्वारा साहित्यकी श्री वृद्धि करने वाला वह महान् उपन्यासकार एक हाथमें जहरका प्याला ले कर खड़ा हो गया और सोचने लगा, -लोग आत्महत्याको पाप समझते हैं, यह उनकी मूर्खता है। हमारे जाने बिना ही किसी दूसरी शक्तिके द्वारा हमारी मृत्यु हो जाती है, उसे तो हम ठीक समझते हैं और जानबूझ कर अपने ही द्वारा अपनेको

इस विश्व-कारागारसे मुक्त करनेका प्रयास हमारे लिये पाप बन जाता है। विचित्र पागलपन है! ......

और कुछ ही क्षणोंके बाद वह जहरका प्याला उसके ओठोंसे लग गया!

एक सेकंड बीता; दूसरा सेकंड बीता; तीसरा बीतते न बीतते मिराबो बेहोश होकर धड़ाम से गिर पड़ा और कराहने लगा!

नौकरानी दौड़ी-दौड़ी आयी और भयसे अत्यन्त संत्रस्त हो कर कातर स्वरमें चिल्लाने लगी। देखते ही देखते दोचार राहगीर भी इकट्ठे हो गये। फौरन डाक्टर बुलाया गया। उसके पहुंचते न पहुंचते वह उपन्यासकार इस संसारसे विदा ग्रहण कर चुका था।

रेमोना भी उस पीड़ाकुल कोलाहलकी उपेक्षा नहीं कर सका। वह उस अवस्थामें ही बिछौसेने उठ खड़ा हुआ और करूणामयी एवं जिज्ञासामयी दृष्टिसे सबको देखने लगा।

परिस्थितिको समझनेमें उसे देर नहीं लगी। आँखोंमें आँसू भर आये और वह पछाड़ खाकर उपन्यासकारकी मृत देहपर गिर पड़ा। अत्यन्त पीड़ामयी वाणीमें बोला---'हाय, मुझे जीवनदान देकर,—मृत्युके श्यामांचलकी छायासे मुझे बचाकर स्वयं आप कहाँ चल पड़े? क्या अपने आपको इस प्रकार अवसानके अन्धकारित प्रांगणमें फेंक देनेके लिये ही मेरे जीवनमें आपने पुनर्वार जीवन-ज्योति प्रसारित की थी? ...उफ्!'

'खैर, अब जो हुआ, वह तो हो ही गया। मिराबोको जीवित करना असंभव है। रोनेधोनेसे क्या लाभ? इसकी पत्नी और इसके अन्य सम्बन्धी इस समय पेरिस में नहीं हैं।

उन्हें तार दे देना चाहिए, ताकि मृतक-क्रियाके समय वे सबके सब मौजूद हो जायँ! और रैमोना! तुम रो-रोकर अपने हृदयको आहत न करो! तुम नवयुवक हो तुम्हारे हृदयको तो काफी दृढ़ होना चाहिए! अभी तो सारा जीवन तुम्हारे सामने पड़ा है। ऐसी-ऐसी न जाने कितनी विपत्तियाँ तुम्हें झेलनी पड़ेंगी! उठो और शान्ति धारण करो"—डाक्टर बोला।

इस प्रकार उस उपन्यासकारके गृहमें मातमका आलम छाया हुआ था और उधर सड़कपर डुगडुगी पीटी जा रही थी,—आजकल सारे देशमें एक क्रान्तिकारिणी महिला उत्पात मचा रही है! लोगोंकी धनसम्पत्तिको लूट लेना और निरपराध व्यक्तियोंको मौतके घाट उतार देना ही उसने अपना कर्त्तव्य बना लिया है! जो उसे जीवित या मृतावस्थामें पकड़ कर ला सकेगा, उसे सरकारकी ओरसे एक लाख और पेरिसके चार बड़े-बड़े रईसोंकी ओरसे एक-एक लाख रुपये पुरस्कारस्वरूप दिये जायँगे। इस प्रकार उस हत्याकारिणी महिलाको पकड़ने वाले व्यक्तिको पाँच लाख रुपयोंका पुरस्कार मिलेगा!'

रैमोना ध्यानपूर्वक सुन रहा था!

एक सप्ताह बीत गया। उपन्यासकार! दफना दिया गया। उसकी पत्नी और दो छोटे भाई चार-पाँच दिनों तक हृदय फाड़-फाड़ कर रोते रहे। लेकिन रोनेसे क्या होता है। रो-रो कर ही यदि जीवनके क्लेशोंका निराकरण किया जा सकता, तो फिर बात ही क्या थी! रो धो कर सबके सब शान्त हो गये!

लौरेटाने अपने दलके आदेशानुसार उस सेठके यहाँसे कागज गायब कर दिया था, फलतः किसी प्रकार का मुकदमा नहीं चला सका !

अपने पिताके लिखे हुए तीन अधूरे उपन्यासोंको लेकर उसका छोटा भाई एक पत्र-सम्पादकके यहाँ गया और उन्हें क्रमशः प्रकाशित करनेके लिये देकर कुछ रकम ले आया, जिससे कुछ महीनोंके लिये वे निश्चिन्त हो गये।

रैमोना उन लोगोंसे विदा ग्रहण करके अतनी धुँधली किस्मतको आलोकित करनेके लिये—अपने अन्तर्देशमें अमावसके निशीथके समान सायँ-सायँ करनेवाली हत्यारिणी निराशाको आशाकी वारुणी पिलानेके लिये—मरुस्थलीकी तप्त सिकता-राशिमें खून उगलती हुई अपनी अभिलाषाओंको कुञ्जकी शीतल छायामें जीवन प्रदान करनेके लिये अज्ञात दिशाकी ओर चल पड़ा।

× × × ×

करीब दो बज गये थे।

रैमोना सुनील अन्तरिक्षकी श्वेतश्यामल मेघमालाओंकी ओर देखता हुआ फुटपाथ पर चला जा रहा था। उसने निश्चय कर लिया था कि अब वह न तो अपने होस्टलमें लौटेगा और न अपने घरको ही ! अब तो जीवनकी समस्त शून्यताको लेकर वह उस क्रान्तिकारिणी महिलाको खोजता फिरेगा ! एकमात्र आशा अब यही रह गयी है। यदि भाग्यवश उसने उसे पकड़ा दिया तो जो रकम उसे पुरस्कार स्वरूप मिलेगी, उससे वह अपनी लौरेटाको अवश्य पा लेगा ! वह एक स्टूडियोंकी स्थापना

करेगा और उसकी लौरेटाको चाहिये ही क्या ? अभिनेत्री बन कर संसारके सामने अपनी प्रतिभाका प्रदर्शन करनेके लिये ही तो वह उसे ठुकरा कर चली गयी है। ..

रेमोना चला जा रहा था और उसकी कल्पना देख रही थी,—उसकी लौरेटा उसके स्टूडियोंमें काम करनेके बाद सायं-काल वापस आयी है और कह रही है—'चलो ! प्रियतम ! आज वायुयानके द्वारा स्विट्जरलैण्डकी सैर की जाय ! वहाँके प्राकृतिक सौन्दर्यके द्वारा मैं अपने थके हुए चित्तको नूतन शक्ति एवं कार्य-क्षमता प्रदान करनेकी कोशिश करूँगी और तुम कोमल कान्त भावनाओंसे भरी हुई कविताओंकी सृष्टि करना।'

रेमोना, अपनी प्रेयसीके द्वारा ठुकराया हुआ रेमोना इसी प्रकारके सुखद स्वप्नोंसे अपने अन्ततमको मदिराकुल बनाता हुआ फुटपाथ पर चला जा रहा था।

कैसा दुस्साहस है ! अब तक तो सदैव प्रेमकी मादक भावनाओंको शब्दोंके यानपर बिठा कर अन्तर्व्योममें उड़ाता रहा,—शरच्चन्द्रिकोज्वल रातोंकी अनुपम सुषमाको अपनी कवि-ताओंमें सन्निविष्ट करके समीरणको पुलक विह्वल करता रहा,—विरहकी उत्तप्त घड़ियोंके कारुणिक क्रन्दनकी अभिव्यक्ति कर-करके अपने हृदयके अणु-अणुको रूलाता रहा और अब चला है उस क्रान्तिकारिणी महिलाको पकड़नेके लिये, जिसके भयानक कार्योंसे फ्रांसके समस्त बड़े-बड़े पूँजीपति थर्रा उठे हैं !...

———

११

चन्द्रिकोज्वल यामिनी व्योम-पथमें अभिसार कर रही थी। चारों ओर एक सुमधुर नीरवता छायी हुई थी। दूर-दूर तक फैले हुए खेतोंकी हरीतिमा चन्द्रिकाके रजत-स्पर्शसे पुलकाकुल हो रही थीं। क्षितिजको चूमते हुए गिरि-श्रृंगों पर न जाने सौभाग्य की कौन सी स्वर्ण रेखाएँ चित्रित हो रही थीं!

कार धीरे-धीरे चली जा रही थी। उस पर लौरेटा थी और उसके साथ था उसका क्रान्तिकारी बन्धु आर्थस! लौरेटाको वह चन्द्रिकास्नात नीरव प्रदेश अपनी ओर तनिक भी आकर्षित नहीं कर रहा था। वह गंभीर चिन्तामें निमग्न थी। लेकिन आर्थसके प्राण उस नैश सौन्दर्यको निहार कर अविचलित नहीं रह सके। उसका रोम-रोम एक अज्ञात मधुर स्पर्शसे पुलकित हो उठा! हृदयका अणु-अणु उस चन्द्र ज्योत्स्नासे स्नात होकर मचल उठा,-- न जाने किसके लिये!...न जाने किसमें मिल

कर खो जानेके लिये! वह क्रान्तिकारी था और वह भी लौरेटाकी तरह कोई नवीन क्रान्तिकारी नहीं। उसे इस दलमें काम करते हुए पाँच वर्ष हो गये थे। अब तक वह न जाने कितने ही पापपरायण पूंजीपतियोंको खाकमें मिला चुका था!—न जाने कितनी ही स्त्रियाँ उसके कारण अपने जीवनका सारा सुख-वैभव नष्ट होता हुआ देख कर आत्महत्या कर चुकी थी!—न जाने कितने ही प्रसादोंमें उसके हाथोंसे आग लगायी गयी थी और उस आगकी लपटों में न जाने कितनी ही रक्तलिप्त बहुमूल्य सामग्रियाँ, हां श्रमजीवियोंके शोणितसे अनुरञ्जित मूल्यवान सामग्रियाँ जल कर खाक हो चुकी थीं!—न जाने कितने राज्यपदाधिकारियोंकी उसने निर्ममतापूर्वक हत्या कर डाली थी! क्रान्तिकारीदलके पथप्रदर्शकको आर्थस पर नाज था! वह आर्थसको विप्लवी-दलका गौरव समझता था।......लेकिन वही आर्थस,—क्रान्तिके द्वारा संसारके पीड़ित और शोषित मानवोंको क्लेशमुक्त करनेके महान् उद्देश्यसे अनुप्रेरित होकर सुख-वैभव पर लात मार कर इस प्रकार रात-रात भर परिश्रम करनेवाला आर्थस न जाने क्यों तो,—न जाने मरीचिकाकी किस उद्भ्रान्त हिलोरसे उस चन्द्रिकोज्वल यामिनीमें पागल होकर लौरेटासे कह उठा—'लौरेटा, आज हृदयमें न जाने क्यों तो एक मीठा-मीठा दर्द-सा हो रहा है।'

लौरेटा अपने विचारोंमें तल्लीन थी। वह सुन न सकी। आर्थस उससे और अधिक सट गया। लौरेटाके शरीरसे स्पर्शित

होते ही उसकी शिरा-शिरा मदिराकुल हो उठी। वह अपलक लौरेटाकी ओर देखने लगा। राकेशकी किरणें उसकी मुखछविको अत्यन्त विवर्धित कर रहीं थीं! उसकी आँखोंसे उस समय वास्तवमें मधुमदिरा की अजस्र धारा सी प्रवाहित हो रही थीं। आर्थस मदिराके उस अन्ध आवेगमें पड़ कर अपनेको सम्हाल न सका। उसने लौरेटाको भुजपाशमें बाँध लिया और उसके ओठोंपर अपने दोनों ओठोंको रख कर बोला—'लौरेटा, आज तुम प्राणोंको इतनी प्यारी मालूम हो रहो हो कि तुम्हें अपनेमें मिलानेके लिये या तुममें अपनेको खो देनेके लिये मेरा पार्थिव अस्तित्व मचल उठा है!

लौरेटा उससे आलिङ्गित होते ही,—उसके गरम, जलते हुए ओठोंसे चुम्बित होते ही चौंकी। घृणासे उसका सारा शरीर जल उठा। उसने धक्का देकर आर्थसको दूर किया! क्रोधपूर्वक बोली—'आर्थस पागल हो गये हो क्या? यह क्या कर रहे हो? तुम्हें शरम नहीं मालूम होती?"

आर्थस उस समय वासनासे अन्धा हो रहा था। सोचने और समझनेकी शक्ति उसमें थी कहाँ! उसके हृदयमञ्चपर तो मन्मथके केशर-शर बिखर रहे थे। वह दीवाना होकर बोला -'लौरेटा, मैं मानता हूं कि इस समय हम तुम दोनों ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्यको सम्पादित करनेके लिये जा रहे हैं, और वहाँ हम लोगोंकी जानपर भी खतरा है, किन्तु यह सब होते हुए भी जाने क्यों तो इस चन्द्रिकोज्वल निशामें मेरा

अन्तर्देश राशि-राशि सुमनावलियोंके सौरभ-भारसे अवनत हो कर किसीका सहारा प्राप्त करनेके लिये तड़प रहा है।”

लौरेटा सब कुछ समझकर भी कुछ न समझनेका प्रयास करती हुई बोली—‘आर्थस, कवित्वमयी भाषामें बातें न करो। मैं कुछ नहीं सुनना चाहती। तुम अपने नामको कलङ्कित कर रहे हो। जरा सोचो तो सही। यदि तुम्हें इस अवस्थामें हमारे क्रान्तिकारी बन्धु देखेंगे तो उनके मनमें तुम्हारे प्रति कितनी घृणा जागृत हो उठेगी! क्या तब भी वे तुम्हें इतना प्यार कर सकेंगे? क्या तब भी वे तुम्हें इतने आदरकी दृष्टिसे देख सकेंगे और तुम पर नाज कर सकेंगे? छिः, आर्थस, पागल मत बनो। मैं जानती हूं कि चाँदनी रातें अत्यन्त मदिरामयी होती हैं। इनके द्वारा मरा हुआ प्रेम भी जीवित होकर किसीके लिये,--किसी निर्मोही पियाके लिये चीत्कार कर उठता है! चाँदकी ये लुभावनी रजत-रश्मियाँ हृदयके टुकड़े-टुकड़े को मद-विभोर कर दिया करती हैं और न जाने कैसे तो राशि-राशि अनुराग-रञ्जित भावनाएँ तितलियोंको-सी श्री-सुषमा लिये हुए मानसमें छा जाती हैं! किन्तु आर्थस, तुम क्रान्तिकारी हो। क्रान्तिके कण्टकाकीर्ण बन्धुर मार्गके महाव्रती पथिक हो! तुम्हें चन्द्रिकोज्वल यामिनीमें इस प्रकार मद-विह्वल होनेका अधिकार नहीं है! तुम इस प्रकार प्रेमाकुल बनकर अपनी मंजिलका उपहास कर रहे हो! तुम्हारे मार्गमें कोकिल-बालाओंकी काकलीके लिये कोई स्थान नहीं है,—कुसुमोंका सौरभ—वितरण

और मधुपकुमारियोंकी उन्मद गुञ्जार तुम्हारे मार्गमें सर्वथा महत्वहीन है,—मंजरियोंकी महक वहाँ कोई विशेषता नहीं रखती तुम शोलोंसे भरी हुई राहके विद्रोही पथिक हो आर्थस ! पागल क्यों बन रहे हो ? याद करो उन दिवसोंको, जब तुम मुझे उपदेश दिया करते थे और बताया करते थे कि क्रान्तिकारियोंको इस प्रकार त्याग करना पड़ता है,—तपस्या करनी पड़ती है—जीवनकी समस्त सुखाभिलाषाओंको चिताकी लपटोंमें भस्म करके विद्रोहात्मक विचारोंसे सारे अन्तर्देशको ज्योति करना पड़ता है ! और आज ? शरम आनी चाहिये तुम्हें !'

आर्थस कुछ लज्जित सा हुआ और हट कर बैठ गया। लेकिन उसके हृदयमें जो सौन्दर्य-पियासा जागृत हो उठी थी, वह शान्त नहीं हो सकी ! उसकी तृष्णानुकूल आँखें लौरेटाकी ओर देखनेके लिये पागल हो रही थीं, लेकिन लज्जाके कारण वह उन्हें रोक रहा था। हृदय लौरेटाके वक्षस्थलसे मिलकर एकाएक हो जानेके लिये तड़प रहा था। उसकी दोनों बलिष्ठ भुजाएँ लौरेटाको बाँध लेनेके लिये आतुर हो रही थीं और उसके वे ओठ,—वासनाकी आँचमें तपते हुए ओठ लौरेटाके ओठोंकी मदिराको पी जानेके लिये विकल हो रहे थे ! किन्तु—!

लौरेटाने कारकी गति बढ़ा दी ! करीब पन्द्रह मिनट तक कार बहुत तेज चलती रही। खेत दूर-दूर तक फैले हुए थे और गाँवके आनेमें अभी बहुत देरी थी। न जाने क्या सोचकर लौरेटाने इस बार कारकी गति अत्यन्त धीमी कर दी। आर्थस-

की ओर अत्यन्त तीक्ष्ण दृष्टिसे देखकर बोली—युवक! यदि सचमुच आज वासनाने तुम्हें अन्धा बना दिया है तो तुम यहीं उतर जाओ, तुमसे आज काम नहीं हो सकेगा! तुम सारी योजना मिट्टीमें मिला दोगे। इन महान् कार्यांको सम्पादित करनेके लिये वीरोचित हृदय और ज्वलन्त मस्तिष्ककी आवश्यकता होती है। वासनाके शराघातोंसे घायल किये गये हृदयको लेकर कोई भी ऐसे कामोंमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता!'

आर्थस कुछ देर मौन रहा। फिर बोला—"अच्छा, मैं यहीं उतर जाता हूं। तुम जाओ। तुम्हारे लौटने तक मैं प्रतीक्षा करूंगा।"

और यह कह कर आर्थस कारसे उतर कर खेतोंकी पगडंडियोंमें टहलने लगा। लौरेटाने एकबार बड़ी ही तीक्ष्ण और घृणाभरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा। फिर एक क्रान्तिकारी गीत गुनगुनाती हुई चल पड़ी!

करीब आधे घण्टेके बाद वह एक गांवमें पहुंची। उसने अपने वेश-विन्यासको ठीक किया। बिखरे हुए केशोंको सँवारा और अपनी शरत्कालीन अपराजिताकी नव प्रस्फुटित कलिकाओं की सी आंखोंमें जाने कैसी उन्मादक हाला भर ली। उस समय उसे देखकर यही मालूम होता था कि यह रमणी रूप और रसकी, अनुराग और आकर्षण, प्रणय और केलिकी उपासिका है! उस समय उसके मुख पर बिखरे हुए सौन्दर्यको देख कर उसे विप्लव-पथ-गामिनी कहना असंभव सा प्रतीत होता था।

एक अच्छेसे बँगलेके सामने उसने अपनी कार रोकी। एक वूढ़ा आ उपस्थित हुआ। बोला—'आप कहाँसे आ रही हैं ?'

लौरेटाने स्वरमें न जाने मिठासका कौन सा महासागर लहरा कर कहा—'तुम इस प्रश्नका उत्तर जानकर क्या करोगे ? वैज्ञानिकसे जाकर कह दो कि आपको एक नवयुवती बुला रही है।'

वूढ़ा कुछ बोला नहीं। यदि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो वह प्रश्नोंके द्वारा उसके नाकों दम कर डालता। लेकिन उस रूप-माधुरीके समक्ष अनौचित्यपूर्ण व्यवहार करनेकी क्षमता कोई साधारण वात नहीं है। वह अन्दर गया और थोड़ी ही देरमें एक अधेड़ व्यक्तिके साथ चला आया। वह व्यक्ति पागल सा मालूम हो रहा था। केश विखरे पड़े थे। उसके वस्त्र अत्यन्त साधारण थे और स्थान-स्थानपर फटे हुए भी थे। लौरेटाने बड़े अदबके साथ कहा—'मैं आ गयी हूं।'

उसने लौरेटाकी ओर देखा और उसकी सौन्दर्य-हालाके नशेसे प्रमत्त होकर बोला—'ओह! तुम,—हाँ, तुम्हींने तो उस दिन अपने एक गीतसे मुझे पागल बना डाला था! बड़ी सुन्दरी हो तुम! गजबका आकर्षण है तुममें!......तुम आ गयी! अच्छा!'

लौरेटाने अपने अधरोंपर प्राणोंको पागल कर डालने वाली मुसकान विखेर कर कहा—'मैं उस दिनसे दीवानी हो गयी हूं।

आज इस चाँदनी रातमें मैं अपनेको रोक नहीं सकी। मैं नौ बजे तक छटपटाती रही। कभी सोनेका प्रयास करती थी, कभी गीत गानेका, कभी बाहर आकर टहलने लगती थी और कभी किसी उपन्यासको ही पढ़ कर जी बहलानेकी कोशिश करती थी। लेकिन न जाने क्यों तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे मैं कहीं कुछ खो आयी हूं और उस खोयी हुई चीजके लिए मेरा रोम-रोम तड़प रहा है! इस चन्द्रिका-स्नात यामिनी में मेरा हृदय प्रेमकी हालाके आस्वादनके लिये तड़प रहा है! मैं साकीके सम्मुख······!" बोलते-बोलते लौरेटाने प्रेमका ऐसा सुन्दर अभिनय किया कि वह वैज्ञानिक अपनेको रोक नहीं सका। उसके मन-प्राण प्रमत्त हो उठे।

वह बात काट कर बोला—'सारी, मैं सब कुछ समझ गया। अब कुछ भी समझना, कुछ भी पहचानना शेष नहीं रह गया है! तुम मेरे हृदयकी राजेश्वरी बन चुकी हो। किन्तु वहां क्या कर रही हो। चलो, अन्दर चलें। वहाँ आरामके साथ गद्देदार कुर्सियोंपर बैठकर अपनी थकान मिटाओ। इतनी दूरसे आ रही हो। थकावटके कारण तुम्हारा यह कोमल शरीर अत्यन्त पीड़ित हो रहा होगा।'

लौरेटा बोली—'मुझे तनिक भी थकावट नहीं मालूम हो रही है। थकावट तो मुझे घरमें बैठे-बैठे मालूम हो रही थी। आज तो सारी रात कार पर घूमनेकी इच्छा हो रही है। सचमुच आजकी रजनी कितनी प्यारी है! इसका यह अनवरत ज्योत्स्ना

वर्पण कितना विमोहक और कितना आह्लादकारी है! ऐसी उन्मादमयी रजनीको सो कर गँवा देना कितना घातक पागलपन होगा। मेरा तो अनुरोध है कि आप भी मेरे साथ घूमने चलें!'

वैज्ञानिक सौन्दर्य-हाला पी कर दूसरी दुनियामें भ्रमण कर रहा था। मद-विह्वलमा बोला—'चलो, मैं तैयार हूं। जहाँ चलने को कहोगी, वहीं चलूँगा। इस दुनियासे दूर किसी दूसरे ग्रहमें भी यदि तुम्हारी यह कार ले जा सके तो मैं वहाँ भी चलनेको तैयार हूं। मुझे कोई आपत्ति नहीं है! मैं तुम्हारा हूं,—केवल तुम्हारा! मैंने जीवनमें आजतक किसीको प्यार नहीं किया! प्यार शब्दसे ही मुझे घृणा थी। मैंने अपने शब्दकोषसे उस पृष्ठको ही फाड़ कर अलग कर दिया था, जिसमें प्यारका बड़ा ही प्रशंसात्मक और सुन्दर लिखा अर्थ लिखा था। प्यारको मैं एक मूर्खता—एक घातक पागलपन, एक भयंकर दुष्टताके रूपमें देखता आ रहा था और सौन्दर्य? वह तो मेरे लिये अब तक एक विडम्बना थी! किसी भी रूपवती स्त्रीको देखकर आकर्षित होना मेरे लिये असंभव था उसके शरत्-सरसिजसे कोमल और मदिमामय कपोलोंकी अरुणिमा और उफनाते हुए वक्षस्थलकी सुन्दरता पर ध्यान जानेके पहले मेरी तीक्ष्ण दृष्टि उसके अन्दर छिपे हुए कंकालको देख लिया करती थी! प्यार करना तो दूर रहा, मैं बात तक नहीं करता था। कविताओंको पढ़-पढ़ कर मैं हँसा करता था,—प्रसन्नतासे नहीं, बल्कि कवियोंके मानसिक उन्मादकी विचित्र हिल्लोलोंका

आभास पाकर! लेकिन इधर कई दिनोंसे मैं अपनेमें बड़ा परिवर्त्तन पा रहा हूं! मुझे ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे मेरे अन्तर्व्योममें सौन्दर्य और प्रणयकी रजत रश्मियां अपनी स्वर्णिम मुसकान बिखेर-बिखेर कर मुझे पागल बना रही है। मेरी सारी वितृष्णा नष्ट हो चली है और मैं अपने प्राणोंकी सारी शक्तिके साथ किसीके-प्रणय बन्धनमें बँध गया हूँ। प्रिये, मैं तुम्हारे साथ चलनेके लिये तैयार हूं!"

लॉरेटा और वैज्ञानिक दोनों कार पर बैठ गये और कार चल पड़ी। लौरेटा वैज्ञानिकके हृदयको और भी मदिराकुल कर डालनेके लिये एक गीत गाने लगा। गीत इतना मधुमय था कि वैज्ञानिककी अन्तर्चेतना विमूर्छित-सी होने लगी। वह पागल हो उठा! वैज्ञानिक साधनाके नीरस मरु-मार्गकी उत्तप्त सिकता-राशि न जाने कहांसे तो मधु और सौरभके अजस्र वर्षणसे ढंक गयी और वह बोल उठा—'प्रिये!'

लौरेटाने गीत बन्द नहीं किया। वह गाती गई। दृश्य वास्तवमें बड़ा सुन्दर था! चाँदनी रातमें पार्श्ववर्त्ती द्रुमदल उस गीतके मादक मर्ममधुर आघातसे सिहर-सिहर उठते थे।

"लौरेटा, मैं तुम्हें अभी तुरन्त बतला चुका हूँ कि मैं प्रेमको एक विडम्बना समझा करता था और सौन्दर्य मेरे लिये सर्वथा आकर्षणहीन था, लेकिन न जाने क्यों तो आज मेरा हृदय,—सदैव वैज्ञानिक साधना तल्लीन रहनेवाला मेरा अभावुक हृदय

तुम्हारे हृदयसे लग जानेके लिये मचल उठा है! मैं तुम्हें प्यार करने लगा हूं रूपसि!"

लौरेटाने देख लिया कि अब इससे अच्छा अवसर फिर शायद ही मिले। उसने वैज्ञानिकके शरीरसे सटते हुए,—उसे और भी अधिक प्रमत्त, मन्मथ-व्याकुल बनाते हुए कहा,—'अच्छा, मुझे अपनी प्रयोगशाला तो दिखलाओ। देखूँ, तुम वैज्ञानिकोंकी कार्यस्थली कैसी होती है।"

वैज्ञानिक पहले तो कुछ सहमा। कुछ झिझका भी। वह अपनी प्रयोगशालामें किसीको भी नहीं आने देता था। उसकी प्रयोगशाला कहाँ है, इसका भी पता लोगोंको नहीं था। लेकिन कुछ ही क्षणोंके बाद मुसकराकर बोला—चलो, तुम्हे आज अपनी प्रयोगशाला दिखा देता हूं। किन्तु किसी से भी यह रहस्य मत खोलना। दुनियांमें दो व्यक्तियोंके अतिरिक्त आज तक और कोई भी मेरी प्रयोगशालाका पता नहीं जान पाया है।"

"नहीं, मैं किसीसे क्यों कहूंगी। मैं तो स्वयं नहीं देखती, लेकिन—"

"लेकिनकी कोई बात नहीं है। जब तुम्हारी इच्छा है तो चलो, देख लो!" वैज्ञानिकने बात काट कर कहा।

सचमुच सौन्दर्यकी शक्ति असाधारण है। हृदय-मरुस्थलीके सुनसान निशीथमें भी यह अनिर्वचनीय सुषमाकी सृष्टि करता है और उसके नीरस, श्रीहीन अहतर्न्देशमें अभिनव, अनुपम गीत-ध्वनियोंकी सृष्टि करता है। तृष्णाके इस हाहाकार भरे

संसारमें सौन्दर्यका मधुघट कितने ही अधरोंसे लग कर नव-नव स्वप्नों, नव नव कल्पनाओं और नव नव भावनाओंकी अवतारणा करता है! संसारके समस्त कवि इसका गुणानुवाद करते करते थक गये, किन्तु यह वास्तवमें किस निर्मोही साकीकी शीराजी है,—किस नीलगपनके राकेशकी मादक ज्योत्स्ना है. इसका पता किसीको भी नहीं लग सका। सौन्दर्य मानव-जीवनके पथमें एक ही साथ कण्टकों और कोमल कमनीय पुष्पोंको लेकर आता है और इन्हें बिखेरता हुआ मुसकराता है। यह एक ही साथ विष और अमृत दोनों लेकर आता है। कितने ही इसकी आगमनी गा-गाकर अमर हो जाते हैं और कितने ही अन्धकारके न जाने किस अतलमें अपने मानवी अस्तित्वके हाहाकार छिपाते हुए सदाके लिये खो जाते हैं।

वैज्ञानिक लौरेटाके उस भुवनमोहन सौंदर्यकी स्वर्ण-किरणोंसे स्पर्शित होकर प्रमत्त हो उठा और उसे अपनी उस अत्यन्त गुप्त, रहस्यमयी प्रयोगशालामें ले गया, जहां वह आज तक अपने सहायकके अतिरिक्त अन्य किसीको भी नहीं ले गया था। कितने ही वैज्ञानिक सिर पटक कर रह गये, किन्तु उसकी प्रयोग-शालाका पता किसीको भी नहीं लग सका। लेकिन आज ?—आज एक रसवती रमणी अपने प्रेम-प्रदर्शनके द्वारा उस वैज्ञा-निककी प्रयोगशालामें मुसकराती हुई प्रवेश कर रही है। आकाशका सुधांशु उस विप्लवकारिणी रमणीकी चातुरीपर और उस सौन्दर्यान्ध वैज्ञानिककी मद-विह्वलता पर मुसकरा रहा है।

लौरेटा उस प्रयोगशालाके स्थानको देख कर दंग रह गयी। वास्तवमें बड़ा सुन्दर और अविजानित स्थान चुना गया था। चारो ओर पर्वतमालाएँ थीं। एक ओर सरिता अपनी चंचल लहरियोंमें न जाने कितने ही निर्मम पाषाणोंके आघातोंकी कारुणिक स्मृतियाँ अन्तर्निहित किये हुए वह रही थी और दूसरी ओर निविड़ वन्य प्रदेश उस नैशसौन्दर्यको पी जानेका प्रयास कर रहा था।

लौरेटाने मन ही मन सोचा—'काश! यह महान् वैज्ञानिक हम लोगोंके दलमें शामिल हो जाता! लेकिन इसकी विचारधारा ही विचित्र है। यह दुनियांके किसी भी दलमें शामिल नहीं हो सकता!'

उसने धीरे-धीरे हर अदाके साथ प्रयोगशालाकी समस्त चीजें देख ली। और बातों ही बातोंमें उस प्रयोगको भी जान गयी, जिसके लिये उसे अपने आपको इस प्रकार प्रेममयी बना कर आना पड़ा था! उस प्रयोगके समस्त आवश्यक रासायनिक तत्त्वोंके सम्बन्धमें जान लेनेके उपरान्त वह बोली—'अच्छा, यह तो बताईये कि आखिर आप उनसे कौन सा काम लीजियेगा?'

वैज्ञानिक हँसा। बोला- "काम? मुझे कोई काम नहीं लेना है। यों ही अपने आपको काममें लगाये रहनेके लिये मैं अपनी प्रयोगशालामें नानाविध प्रयोग करता रहता हूं। वैज्ञानिक प्रयोगोंके अतिरिक्त अन्य किसी भी काममें मेरा जी नहीं लग सकता है। मुझे आदमीयोंसे बातें करना तो बिलकुल नापसन्द

है। इस आविष्कारसे मैं क्षण भरमें सारे पेरिसको सुला सकता हूं। किसी दिन जी में आयेगा तो हफ्तोंके लिये पेरिसके या दुनियांके किसी भी शहरके रहनेवालोंको निद्राभिभूत कर दूँगा।"

लॉरेटाने आश्चर्यान्वित होकर उस महान् वैज्ञानिकको देखा और फिर मन ही मन मुसकराकर बोली आप मुझे बहुत ही प्यारे लगते हैं!'

वैज्ञानिक दीवाना हो गया यह सुन कर! उसने गर्वसे छाती ऊपर करते हुए कहा—प्रिये, मैंने एक और आविष्कार किया है। चलो, वह भी देख लो। तुम उसे देख कर मुग्ध हो जाओगी।"

लॉरेटाने देखा कि यह वैज्ञानिक अब पूर्ण रूपसे सौन्दर्योन्मत्त हो गया है। उसने बहुत ही स्नेह-प्लुत स्वरमें कहा—"सचमुच बीसवीं शताब्दी तुम्हें पाकर गौरवान्वित हो उठी है। इतनी विशाल प्रतिभावाला,—इतनी अनिर्वचनीय बौद्धिक शक्तिवाला वैज्ञानिक दुनियां में और भी कोई हो सकता है, मुझे तो विश्वास नहीं होता। आप अनुपम हैं,—अद्वितीय हैं।

इस बार वैज्ञानिक कुछ सहमा; कुछ उदास सा हुआ। फिर बोला—'प्रिये, क्षमा करो। मैं तुम्हारी प्रशंसाके लिये तुम्हें हृदयसे धन्यवाद देता हूं। लेकिन इस दुनियां में मैं अद्वितीय नहीं हूं। मुझसे भी बढ़कर मार्त्तण्डमुखी प्रतिभावाला एक वैज्ञानिक है, जिसका नाम मैं तुम्हें बतानेमें असमर्थ हूं। उसे मैं बहुत प्यार करता हूँ। लेकिन उसका सबसे बड़ा दोष यही है कि वह अपनी

वैज्ञानिक साधनाके द्वारा संसारकी भलाई करना चाहता है,— मानव-जातिके दुःखदैन्यको विदूरित करके उसकी सभ्यताके पथको प्रशस्त एवं आलोकित करना चाहता है। बस, यही मेरा और उसका महान् मतभेद है। इसी मतभेदके कारण मैं उससे दूर इस एकान्त जनशून्य वनस्थलीमें रहने लगा हूं। मानव-जातिका मैं हितैषी नहीं बनना चाहता। यह एक कृतघ्न और निर्लज्ज जाति है। इसका सारा इतिहास बेहयाईसे भरा पड़ा है। जिस महापुरुषने,—जिस प्रतिभाशाली महामनीषीने इसके हित-साधनके लिये अपने सुख-वैभवको तिलाञ्जलि दी, उसे ही इसके द्वारा नाना प्रकारकी यातनाएँ, नाना प्रकारकी यन्त्रणाएँ मिलीं। वर्षों तक एकान्त स्थानोंमें साधारण आहार करके रहनेवाले त्याग-वीर जब अपने गर्वोज्ज्वल स्वरूपको लेकर मानव-समाजके सामने उसका उद्धार,— कष्टों एवं दुःखोंसे उसका परित्राण करने आये, तो उन्हें इसके द्वारा अवहेलित, उपहसित होना पड़ा। वैज्ञानिकों, कवियों, लेखकों दार्शनिकों, कहनेका तात्पर्य समस्त विश्व-हितैषियोंके साथ ऐसा ही दयाहीन अन्याय किया गया है। और यह सब जानते हुए भी यदि हम विश्व-हितैषणाकी गर्वोज्ज्वल भावनासे अनुप्राणित होकर कष्ट सहनेके लिये तैयार हों तो इससे बढ़कर पागलपन और क्या हो सकता है! कमसे कम मैं तो इसके लिये तैयार नहीं। अभिमानकी बात नहीं है। लेकिन इतना मैं तुमसे दावेके साथ कह सकता हूं कि यदि मैं चाहूं तो मानव-जातिके अनेकानेक संकटोंको दूर कर सकता हूं। लेकिन—"

बोलते-बोलते वैज्ञानिकका मुख देदीप्यमान हो उठा था। वह लौरेटाको अपने साथ एक दूसरे स्थानमें ले गया और वहाँ जाकर अपने उस आविष्कारको दिखलाया, जिसके द्वारा कुछ ही समयमें व्योम-पथसे सहस्रों मीलकी यात्रा की जा सकती थी। वह वायुयानोंसे सर्वथा भिन्न आकारका था और उसे चलानेके लिये किसी प्रकारके बाह्य साधनकी आवश्यकता न थी। केवल परिचालक यंत्र घुमा देनेसे ही वह चलने लगता था। पृथ्वीसे कोसों ऊपर चले जानेपर भी किसी प्रकारकी कठिनाईका सामना करनेकी संभावना नहीं थी। क्योंकि उस व्योमयानमें वायुका सदैव स्वतः सृजन होता रहता था। कठिनाई केवल यह थी कि उसमें केवल दो आदमी बैठ सकते थे।

लौरेटाने उस व्योमयानके सम्बन्धमें सब कुछ जान लिया। वैज्ञानिक सौन्दर्यकी वारुणीसे अन्धा हो कर सब कुछ उगलता जा रहा था। सब कुछ बतला देनेके उपरान्त वह स्वयं बोला—रानी, एक दिन हम-तुम दोनों इसपर बैठ कर इस पृथ्वीके अतिरिक्त अन्य ग्रहोंकी सैर करेंगे। लेकिन थोड़ा सा बिलम्ब और होगा। मैंने जिस प्रकार हवाकी कठिनाईको दूर कर दिया है, उसी प्रकार मैं चाहता हूं कि भोजन और जलकी समस्या भी हल हो जाय, क्योंकि अन्य ग्रहोंका जल या भोजन हम लोगोंके उपयुक्त होगा या नहीं, यह कहना अत्यन्त कठिन है।

लौरेटाने घड़ीकी ओर देखा। रातके तीन बज गये थे। उसने वैज्ञानिकसे कहा—'अच्छा अब आज तो आज्ञा दीजिये।

रात काफी हो चुकी है! मेरा जाना जरूरी है। शीघ्र ही फिर दर्शन करनेके लिये आऊँगी।"

वह चली जायगी, यह सुन कर वैज्ञानिकके हृदयपर बड़ा कठिन आघात हुआ। उसके चेहरेका सारा उल्लास तिरोहित हो गया। पीड़ित स्वरमें उसने कहा—'तो फिर कब आओगी? तुम यहीं क्यों नहीं रह जाती?'

'यहां नहीं रहनेके कई कारण हैं, जिनपर मैं अभी प्रकाश नहीं डालना चाहती। कब आऊँगी, यह भी अभी बतलानेमें मैं असमर्थ हूं। लेकिन शीघ्र ही आनेकी कोशिश करूंगी। लौरेटाने अपने स्वरमें वासन्ती श्यामाकी सी म्रदिमा सन्निविष्ट करते हुए कहा।

प्रयोगशालासे बाहर निकल दोनों जने चांदनीसे नहाते हुए आये। बंगलेके पास पहुंच कर उसने वैज्ञानिकको उतार दिया और अभिवादन करके चल पड़ी।

जब तक लौरेटा आंखोंसे ओझल नहीं हो गयी, तब तक वह बुद्धिवादी वैज्ञानिक उसे अपलक देखता रहा। दृष्टिपथसे उस लावण्यमयीके दूर होते ही एक उष्ण उच्छ्वास छोड़ते हुए उसने न जाने नैश समीरणके द्वारा आहत निर्झरकी किस चंचल लहरसे कहा,—'मेरे सुनसान अन्ततममें यह मीठा-मीठा दर्द कैसे होने लगा!'

———

१२

आथस मार्गके वाम पार्श्वमें स्थित एक घने वृक्षके नीचे खड़ा खड़ा लौरेटाकी प्रतीक्षा कर रहा था। उसका रोम-रोम न जाने कितनी निदारुण वासनासे जल रहा था। जीवनमें आज पहली बार वह अपने आपको इतना असहाय, इतना विवश पा रहा था। लौरेटाको हृदयसे लगा कर उसके चमकते हुए ओठोंका सारा रस अपने जीवन-मरुमें बिखेर लेनेके लिये उसके हृदयका टुकड़ा-टुकड़ा रो रहा।

वह स्वयं आश्चर्य-चकित हो रहा था कि उसके क्रान्तिकारी हृदयमें, जो सर्वथा निर्मम, सर्वथा निर्मोही था, यह वासनाकी लपट कहांसे आ पहुंची। उसकी भुजाओंमें, जहां सदैव खून खौला करता था और जो एक अज्ञात कर्मोन्मादनासे सदैव फड़कती रहती थीं, आज एक रमणीको और वह भी एक क्रान्तिकारिणोक

आबद्ध करनेकी पापमयी लालसा कहांसे प्रविष्ट हो गयी। उसकी अन्तर्चेतना रो-रो कर उसे समझा रही थी कि पागल युवक! तुम यह क्या कर रहे हो? तुमने जीवनकी समस्त भोग लालसाओंको,—समस्त काम-तृष्णाओंको महाविप्लवकी आग्नेय परिधिमें जला कर खाक कर डाला है। तुम्हारे जीवनमें केवल तपस्या ही तपस्या है, साधना ही साधना है, कर्म ही कर्म है! अपने इस वासना-जनित सर्वग्रासी उन्मादको छोड़ो अन्यथा बरबाद हो जाओगे। क्रान्तिकारी दलके अन्य बन्धु क्या सोचेंगे। स्वयं-लौरेटा क्या सोचेगी! कितनी पवित्र-कितनी महान् है वह! इस भरी जवानीमें सब-कुछ ठुकरा कर वह इस पथमें चलनेके लिये,—शोलोंको और कण्टकोंको चुगनेके लिये आयी है! उसे किस बातकी कमी थी! उसके सौन्दर्यका एक लघुतम हिस्सा भी बड़ेसे बड़े धनपतिको पागल कर सकता है! किन्तु—! और तुम? छिः! धिक्कार है तुम्हें!

भीषण अन्तर्संघर्ष हो ही रहा था कि लौरेटाकी कार आ पहुंची! आर्थर उठा और कारके सामने जा कर खड़ा हो गया। उसने अपनी आंखोंमें उद्दाम लालसा भर कर लौरेटाके उन अरविन्द-मुखको देखा। नैश जागरणने उसकी श्रीको कम करनेके बदले उसे और भी विवर्धित कर दिया था। उसकी अस्तव्यस्त अलकावलियां कपोल-प्रदेश पर बिखर-बिखर कर न जाने नन्दन-काननके पुष्पोंकी किस सुरभि-हिलोरका इतिहास समीरणको बताने लगती थीं। शरत् कालीन अपराजिता सी उसकी दोनों

आँखें इतनी उन्मादक हो गयी थीं कि आर्थसके हृदयका कण-कण मद-विह्वल हो उठा ! उसकी तृष्णा अनियन्त्रित हो उठी ! लौरेटाके अंगोंमें अपनेको लुप्त कर देनेके लिये, अपने अंगोंमें लौरेटाको सामहित कर लेनेके लिये उसकी उद्दाम उदधि-लहरों सी आकांक्षाएँ मचल उठीं ! रक्तमें न जाने कैसा मधुर किन्तु आग्नेय अनुभव होने लगा। उस नवयौवन सौन्दर्यकी अनुपम माधुरीको,— उस तारुण्य-लावण्यकी अनिर्वचनीय प्रखरताको वह क्रान्तिकारी युवक सह नहीं सका। उसके ओठ पिपासासे जलने लगे। जिस हृदयमें सदैव विप्लवकी रणभेरी बजती रहती थी, निशिवासर महाक्रान्तिका शंखनाद होता रहता था,— वहाँ न जाने किस दिशासे तो उड़ता-उड़ता एक पपीहरा चला आया और अपनी पीरभरी आवाजमें 'पिया पिया' चिल्लाने लगा। उसकी वे दुर्दान्त भावनाएँ, जो एक समय सर्वनाशके अन्धकारको आमन्त्रित करके नवयुगके अरूणोदयका जीवनमय ज्योतिमय स्वप्न देखा करती थीं, अब लौरेटाकी सौन्दर्य-शिखामें शलभोंकी तरह एक-एक करके जल रही थीं। सचमुच उस समय आर्थसकी भावभंगीको देख कर यह कहना कठिन था कि यह वही आर्थस है, जो एक दिन पहले तक प्राणोंमें तूफानोंको लिये हुए, मस्तिष्कमें शत-शत ज्वालागिरियोंका भयंकर विस्फोट सम्हाले हुए पुँजीपतियोंके महलोंमें उनका सत्यानाश करनेके लिये जाया करता था। एक से एक सुन्दरी, सुकुमारी रसवती रमणियाँ सोयी रहती थीं,— मन्मथ-निवेदिता असंति

बालाओंकी तरह। किन्तु वह उनकी ओर देखता तक नहीं था। आज वही आर्थस अपनी क्रान्तिकारिणी संगिनीके हृदयसे आलिङ्गित होनेके लिये सुलग रहा था। लौरेटाके वस्त्रोंमें वैज्ञानिकको विमोहित करके अपना कार्य सिद्ध करनेके लिये लगाया गया सेंट आर्थसको मधुपकी तरह तड़पाने लगा, प्राभातिक शतदलके अन्तर्तमसे विनिःसृत होनेवाले सौरभकी तरह। उसने लौरेटाका हाथ पकड़ लिया। लौरेटा चौंकी। घृणासे और क्रोधसे उसकी मदभरी आँखोंमें विष छलक आया। उसने भर्त्सनाभरे स्वरमें आर्थसको कहा,—'तुम्हें धिक्कार है आर्थस ! क्या तुम इतनी जल्दी अपनी पावन प्रतिज्ञाओंको भूल गये ? क्या तुम अपने उस महान् उद्देश्यको, जिससे अनुप्राणित होकर तुमने विप्लवी-दलमें नाम लिखाया था, विस्मृतिके गर्त्तमें फेंक दिया ? क्या तुम अपनी लौरेटाको, भी भूल गये ? उसी लौरेटाको, जिसे तुमने एक समय सबोंके सामने अपने अन्य क्रान्तिकारी साथियोंकी ही भाँति बहनके रूपमें स्वीकार किया था। आर्थस ! क्रान्तिकारी आर्थस ! अन्धे मत बनो। क्षणिक सौन्दर्योत्तेजनाके वशीभूत होकर अपने महान् उत्तरदायित्वको विस्मृत न करो। याद करो, हम लोग क्या सोच कर रात्रिकी आरंभिक घड़ियोंमें उस वैज्ञानिकके यहाँ जा रहे थे। मैं पूर्ण सफल होकर तो नहीं लौटी हूं, किन्तु मुझे आंशिक सफलता मिल गयी है। मैंने तो सोचा था कि तुम्हारे प्राणोंमें एकाएक जल उठनेवाली कुत्सित वासना नैश-समीरणके द्वारा शीतल हो जायगी और मैं लौटते समय

तुम्हें अपने उसी क्रान्तिकारी भाई के रूपमें देख सकूँगी, किन्तु मेरी धारणा गलत निकली। मुझे यदि ऐसा मालूम होता तो मैं इस राहसे न लौट कर किसी दूसरी ओरसे लौटती। आर्थस! पागल मत बनो!... "

आर्थस निर्निमेष लौरेटाको देख रहा था। उसके कान बहरे हो गये थे। लौरेटाका एक भी शब्द उसके मस्तिष्क तक पहुंचा था नहीं, यह कहना कठिन है। उसके ओठ लौरेटाके ओठोंको पी जानेके लिये लिये मचल रहे थे। वह सब कुछ भूल गया था। काम-वासनाकी सर्वनाशिनी ज्वालामें उसके हृदयकी समस्त पावन-वृत्तियाँ जल रही थीं। उसने लोलुप स्वरमें कहा,—'लौरेटा, तुम मुझे बहुत प्यारी लगती हो। तुम्हारे इन सुकुमार पुष्पोंकी पँखड़ियोंसे भी अधिक कोमल हाथोंमें पिस्तौल शोभा नहीं देती। तुम मेरे साथ चला चलो। हम दोनों यहाँसे दूर चल कर रहेंगे। तुम मेरे साथ रहोगी,—मेरी रानी बन कर। दुनियाँका सारा वैभव मैं तुम्हारे चरणों तले ला कर रख दूँगा। लौरेटा, तुम्हारा यह कोमलकान्त जीवन इस प्रकार मरुस्थलीकी सिकताराशिमें हाहाकार करनेके लिये नहीं है। तुम तो......!"

लौरेटा अब नहीं सह सकी। क्रोधके मारे उसके गाल रक्ताक्त हो उठे। उसने अपने दाहिने हाथसे अपनी पिस्तौल निकाल ली और बोली,—'आर्थस! बस, बन्द करो। मैं समझ गई कि तुम कैसे नीच हो। क्रान्तिकारी-दलमें तुम्हारे जैसे

कमीने पुरुष भी आ सकते हैं; इसका मुझे पहले विश्वास नहीं था। छिः! तुम्हें अपने आपको इतने पतित—इतने घृणित, कुत्सित रूपमें मेरे सामने रखते हुए तनिक भी लज्जा नहीं मालूम होती!! तुम्हारे जैसे कमीने, अस्थिर और नैतिकताहीन व्यक्तियोंके ही कारण क्रान्तिकारी-दल असमयमें ही कालकवलित हो जाते हैं। इतना अदम्य साहस और अनिर्वचनीय उत्साह होते हुए क्रान्तिकारियोंको बार-बार क्यों असफलता मिलती आ रही है, यह मेरे लिए एक पहेली सी हो गयी थी। लेकिन आज मैं इसका कारण समझ गयी तुम सरीखे चंचल हृदयवाले पुरुषोंके कारण ही विप्लव सफल नहीं हो पाते। आर्थस! अन्धे और बेवकूफ आर्थस! मेरी इन आँखोंकी ओर देख कर उन कोटि-कोटि भूखी नंगी नारियोंकी धँसी हुई आँखोंकी ओर देखो, जिनमें आँसू तक नहीं आ पाते हैं। मेरी इन प्राण-दहन-कारी अलकावलीको क्या देखते हो और क्या पागल बनते हो! देखो उस रज-धूसर कच-जालको जो मिलों और खेतोंमें अहर्निश परिश्रमके उपरान्त भी नहीं सँवारा जाता है। अभागे, बदतमीज युवक! मेरे इन उभरे हुए कुचोंको देख कर क्या मद-विह्वल हो रहे हो? उन विवश, अकुलाती हुई नारियों-की उजड़ी हुई जीवन-वाटिकाको देखो, जो वासना-लोलुप पिशाचोंके द्वारा चाँदीके टुकड़े फेंक कर रौंदी गई हैं। तुम मुझे देख कर—मेरी रूप राशिको देख कर विमुग्ध हो रहे हो,—मेरे प्रति प्रेम प्रदर्शित कर रहे हो। मुझे अपनी रानी बना

कर दूर देशमें उड़ जाना चाहते हो, जहाँ मेरे और तुम्हारे अतिरिक्त और कोई भी न हो ! किन्तु मूर्ख ! यह सब कहते हुए क्या तुम यह भूल गये थे कि तुम एक ऐसी रमणीसे ये बातें कह रहे हो, जिसके जीवनका एकमात्र उद्देश्य क्रान्तिके कण्टकाकीर्ण मार्ग पर चल कर समाजवादकी मञ्जिल तक पहुंचना है ! — जो अपने जीवनसे भोग-विभवको सदाके लिये निर्वासित कर चुकी है ! —जिसने अपने सच्चे प्रेमीकी प्यार भरी, कारुणिक मनुहारोंको ठुकरा दिया है !—केवल इसीलिये कि वह सन्तप्त मानव-जातिके आर्त्तनादको सुननेमें असमर्थ है ; भूखसे बिललाते हुए शिशुओंको देख कर उसका रोम-रोम जलने लगता है !··· आर्थस ! मेरी इस पिस्तौलमें अभी एक गोली बाकी है। मैं तुम्हारी इन्सानी हस्तीको खाकमें मिला दूँगी। मेरी आंखोंके सामनेसे हट जाओ !"

आर्थस लौरेटाकी उस तेजोद्दीप्त मुद्राको नहीं देख सका। उसकी आँखें नीचे झुक गयीं और वह दो कदम पीछे हट गया।

आकाश-सरोवरके कुसुम एक-एक करके किसीने तोड़ लिये। प्राचीका कपाट खोल कर उषाने मुसकराते हुए प्रवेश किया। उसकी मुखद्युतिने विश्वके प्राणीमें छाये हुए नैराश्य-तिमिरमें न जाने कैसे तो नव-नव किरणोंका सञ्चार कर दिया। दो-चार चपल विहंगम अपनी कर्ण-मधुर भाषामें कुछ बोल उठे।

लौरेटा का ध्यान भंग हुआ। उसने अपनी रिस्टवाचकी ओर देखा। काफी समय हो चुका था। उसने घृणा भरी नजर

उस वासनान्ध युवक पर डालते हुए मोटर स्टार्ट कर दी। आर्थसने लौरेटाकी ओर देखा। फिर बोला—"तुम अच्छा नहीं कर रही हो। इसका परिणाम बुरा होगा। मुझे इस निर्जन वन-प्रदेशमें छोड़ कर जाना क्या तुम्हें शोभा देता है?"

"मैं तुम्हारे जैसे कमीनोंको अपने साथ बैठानेमें असमर्थ हूं। क्रान्तिकारी-दलकी यह कार तुम्हारे अपावन स्पर्शको नहीं सह सकती।"

"पहले कैसे सहती थी?" क्रोध और व्यंग दोनोंका सन्निवेश था उसकी वाणीमें।

"पहले तुम क्रान्तिकारी थे; वीर थे; विद्रोही युवक थे। इस समय तुम वासना-लोलुप, पतित और कामान्ध हो?" यह कह कर लौरेटाने अन्तिम बार घृणासे जलती हुई नजर आर्थस पर डाली और कार तेजीसे चल पड़ी।

आर्थस भीषण अपमानको नहीं सह सका। क्रोधसे तिलमिलाता हुआ। वह वहीं—उसी घने वृक्षके नीचे बैठ गया और शराबियोंकी भाँति आप ही आप बड़बड़ाने लगा,—'लौरेटा, तुम समझती हो कि तुम आर्थसको अपमानित करके सुरक्षित रहोगी! यह असंभव है। मैं तुम्हारे जीवनको खाकमें मिला दूंगा। यदि तुम सीधे शब्दों, मधुर और स्नेहभरी भाषामें मुझे समझा कर चली जाती तो क्या मैं तुम्हें खा जाता। लेकिन तुमने अपने तीखे विषभरे शब्दों द्वारा जान बूझ कर मेरे हृदयको आहत करनेका प्रयास किया है। अच्छा, कोई हर्ज नहीं

मैं इसका प्रतिशोध अवश्य लूंगा। क्रान्तिकारी–दलका मैं कुछ भी नहीं बिगाड़ूंगा। मैं क्रान्तिकारी था, क्रान्तिकारी हूँ और तब तक क्रान्तिकारी ही रहूँगा, जब तक कि पूँजीवाद और साम्राज्यवाद-का पूर्ण विनाश नहीं हो जाता है। किन्तु मैं अपने आपको क्रान्तिकारी-दलसे तब तक दूर रखूँगा, जब तक कि लौरेटा अपने सौन्दर्यको लिये हुए,—अपने रूप-लावण्यको समेटे हुए खाकमें नहीं मिल जायेगी! उसके पार्थिव अस्तित्वके अणु-अणुको रूलाये बिना मैं शान्त नहीं हो सकता! उसने मुझे वासनालोलुप और कामान्ध कहा है! मैं उसे दिखला दूंगा कि यह वासनालोलुप और कामान्ध व्यक्ति दुनियाँ में क्या कर सकता है........!

वह जोशमें आकर उठ खड़ा हुआ और चलने लगा। कड़ाके-की सर्दी पड़ रही थी, लेकिन उसे तनिक भी अनुभव नहीं हो रहा था। उसके हृदयमें कुछ देर पहले वासनाकी आग जल रहीं थी, अब प्रतिशोधका बड़वानल हाहाकार कर रहा था।

वह थोड़ी दूर आगे गया ही था कि किसी की गीत ध्वनि उसे सुनायीं दी। वह ठीठक कर खड़ा हो गया और सुनने लगा।

गीत ध्वनि का अनुसरण करता हुआ गायकके पास पहुंचा। गायक एक शिला-खण्ड पर बैठा हुआ भाव मुग्ध उषा-नीराजनको देख रहा था। आर्थसने उसके कंधेपर हाथ रखते हुए कहा—"गायक, तुम इस निर्जन प्रान्तमें एकाकी बैठे बैठे क्या कर रहे हो? कड़ाकेकी सर्दी पड़ रही है और तुम केवल एक सुती कमीज पहने हुए हो। क्या तुम्हें जाड़ा नहीं लगता?"

गायक मुसकराया। बोला—'जिसके अन्तर्देशमें शोले बिखरे पड़े हों, अरमानोंकी चिताएँ जलती रहती हों, भावनाओंकी कल्लोलिनी अपने स्वरूपको परिवर्तित करके आगका दरिया बन गयी हो, उसे जाड़ा कैसे लगेगा ? मेरे हृदयको छू कर देखिये। यह कितना गरम है—कितना उत्तप्त है! आपने मेरे एकाकीपन पर आश्चर्य प्रकट किया है, लेकिन आप भी तो एकाकी ही हैं।"

"मैं कुछ समय पहले तक एकाकी नहीं था, लेकिन अब एकाकी हूं और शायद—!"

"शायद यह एकाकीपन जीवनकी सारी परिधिको व्याप्त कर लेगा, यही न कहना चाहते हैं आप!" उसने आर्थसकी बात काटकर कह तो दिया, लेकिन पीछे उसे अपनी चपलतापर आत्मग्लानि होने लगी।

"नहीं, यह एकाकीपन सारे जीवनको पराभूत नहीं कर सकेगा। लेकिन—"और उसके बाद न जाने क्या सोचकर तो आर्थस चुप हो गया। उसका सारा शरीर एक अविज्ञानित उत्तेजनासे आकुल हो उठा!

थोड़ी देर तक नीरवता छायी रही। गायक ने नीरवता भंग करते हुए कहा—"भाई, तब तो तुम बड़े भाग्यशाली हो। मुझे तो बड़ी निराशा हो रही है। इस जीवनमें अपनी प्रेयसीको अपनी आराध्याको प्राप्त कर सकूँगा, इस पर विश्वास नहीं होता। वह मुझे छोड़कर,—मुझे ठुकराकर,—मेरे सिसकते हुए, चीत्कार करते हुए अरमानोंको कुचल कर,—मेरे भविष्यके

स्वर्णाभ स्वप्नोंकी मोहक मायामें आग लगाकर वह सदाके लिये कहीं चली गयी। वह कहाँ गयी है, यह मैं निश्चयपूर्वक नहीं जानता, किन्तु मेरा विश्वास है कि वह अमेरिका गयी है और हालीउडमें अपने भाग्यकी परीक्षा ले रही है। वह विश्व विख्यात अभिनेत्री होना चाहती है। उसे अभिनय-कलासे इतना प्रेम है कि मैं तुम्हें क्या बतलाऊँ। वह सदैव इसीके सम्बन्धमें बातें किया करती थी। लेकिन मैं अभिनेता नहीं। मैं लाख कोशिश करके भी अभिनेता नहीं हो सकता। एक सीधा सादा कवि हूं। रात्रिकी नीरव और अन्धकारित घड़ियोंमें अपने प्राणोंके आकुल आर्त्तनादको,—अपने मानव-जीवनकी अपरिसीम विवशताको, अपने नियति-शासित स्वप्नोंकी क्रन्दन-ध्वनियोंको लिखा करता हूं। इसके अतिरिक्त मैं और कुछ भी नहीं हूं। मेरी प्रेयसी इसीलिये—शायद इसीलिये मुझे ठुकरा कर चली गयी। वह जानती थी कि वह मेरे साथ सुखी नहीं हो सकेगी। विश्व-विख्यात अभिनेत्री बनना तो दूर रहा,—वह एक साधारण सी अभिनेत्री भी नहीं बन सकेगी। वह चली गयी,—सदाके लिये चली गयी और ठीक ही हुआ। कविके जीवनको सृष्टिके आरम्भसे ही वियोगकी हाहाकारमयी वेदनाका पुरस्कार मिलता आ रहा है,—उसकी कविता अपने प्रियतमके पावन स्पर्शसे कभी भी पुलक-विह्वल नहीं हो पायी है,—कभी उसके जीवन-धनने उसके अस्तव्यस्त शृङ्गारको, उसकी सूनी वेदनामयी आँखोंको करुणाभरी दृष्टिसे नहीं देखा है! उसके स्वप्न-विहग

चिरविरही होकर विपिन-विपिनमें चीखते, चिल्लाते फिरे हैं, लेकिन उसके प्रियतमके कानों तक उनकी क्रन्दन-ध्वनियाँ कभी नहीं पहुंची हैं। फिर इस क्षुद्र, अकिंचन प्राणीको ही इसका अपवाद क्यों बनाया जाता। यह भी जीवन भर उसकी स्मृतिकी चिनगारियोंसे अपने पथको सजाता रहेगा!—यह भी मृत्यु पर्यन्त उसकी निर्ममताको अपनी मर्ममधुर भावनाओं के अंचल-में स्वच्छन्द खेलने देगा।"

आर्थसने गायककी ओर उस दृष्टिसे देखा, जिस दृष्टिसे पिपासाकुल व्यक्ति दूसरे पिपासाकुल व्यक्तिको देखता है। उसने कहा—'तो क्या अब अपनी प्रेयसीको प्राप्त करनेका, उसको अपनी जीवन-संगिनी बनानेका कोई भी उपाय अवशिष्ट नहीं रह गया है? क्या आशाकी लघुतम रश्मि भी तुम्हारे नैराश्य-तिमिरको आलोकित नहीं कर पाती?

गायकके नेत्रोंमें आँसू छलक आये। वह अपने अस्तव्यस्त कोमल केशोंको सँवारते हुए बोला,—'नहीं ऐसी बात नहीं है। निराशाके इस महाघातक अन्धकारमें भी आशाकी एक स्वर्णाभ किरण सदैव मेरे लहकते हुए अन्तर्तमको आश्वासित करती रहती है। अन्यथा मैं आज इस प्रकार इस शिला-खण्डपर बैठ कर तुम्हें गीत गाता हुआ नहीं मिलता। मेरा यह दुःखमय जीवन, जो दुर्भाग्यके एक ही किन्तु अतीव घातक कशाघातसे आवारा हो गया है, अभी तक इस पृथ्वीको छोड़ कर न जाने किस लोकको चला गया होता।"

'वह आशाकी किरण-रेखा कौन-सी है, गायक! क्या मैं भी इसे सुननेका दुस्साहस कर सकता हूं?" आर्थसने,—क्रान्तिकारी आर्थसने अत्यन्त विनयपूर्वक पूछा।

'सुन सकते हो। कोई ऐसी गुप्त बात नहीं है। यह तो तुम जानते ही होंगे कि यूरोप भरमें हड़कम्प मचानेवाली बहादुर रमणीको पकड़नेवालेके लिये पांच लाख रुपयोंके पुरस्कारकी घोषणा हुई है। मैं भी उसे ही पकड़नेके लिये पढ़ना लिखना छोड़ कर निकल पड़ा हूं। उसे पकड़नेकी आशा तो नहीं है, क्योंकि न जाने कितने-कितने आदमी, जो बहादुरीमें लासानी हैं, उसे खोजनेमें लगे हुए हैं। मेरे जैसे हतभाग्य, दीन, दुर्बल प्राणीकी, क्या शक्ति है, जो उस विद्युत्भरी रमणीको पकड़ ले। यों ही प्राणोंके सिसकते हुए अरमानोंको,—सुलगती हुई अर्धदग्ध अभिलाषाओंको आश्वस्त करता हुआ इधर-उधर भटकता फिरता हूँ। शायद—शायद उसे पकड़ लूँ। यही 'शायद' ही इस समय मेरा संबल है, पाथेय है।"

"यदि तुम्हें पुरस्कारके रुपये मिल जायँगे तो क्या तुम अपनी प्रेयसीको पा जाओगे? क्या वह केवल रुपयोंकी भूखी है। छिः!" आर्थसने घृणापूर्वक कहा।

"नहीं-नहीं, ऐसा न कहो। वह केवल रुपयोंकी भूखी नहीं है। मैंने तुम्हें पहले ही कह दिया है कि वह अभिनेत्री होना चाहती है और इसीलिये—"

"अच्छा, मैं समझ गया। तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें

उस बहादुर औरतको पकड़नेमें पूरी सहायता दूँगा। मैं उसका पता भी जानता हूँ। लेकिन—!"

"लेकिन क्या?"

"कुछ नहीं। चले चलो।"

धूप उग आयी थी। तृण-तरु-शाद्वल अच्छी तरह चमक रहे थे। विहग-वृन्दके कूजनमें उषा-कालीन म्रदिमा और पावनता तो अवशिष्ट नहीं रह गयी थी किन्तु एक अभिनव कर्मोन्मादना अवश्य परिव्याप्त हो गयी थी।

कुछ दूर चलनेके उपरान्त आर्थसने गायककी ओर ध्यान पूर्वक देखा और पूछा—"तुम्हारा नाम क्या है?

"मेरा नाम रैमोना है।" गायकने नम्रतापूर्वक कहा।

———————

१३

लौरेटा—रूप और रसकी रानी लौरेटा किसियोपिकसके पास पहुंची तो उसका चेहरा कुछ मुरझाया हुआ था।

किसियोपिकसने सोचा, हो सकता है, काम में सफलता न मिली हो। उसने लौरेटाको देखते ही कहा—'क्यों क्या हुआ ?'

"होगा क्या ? बहुत कुछ सफलता तो मिल गयी है। एक दो बार और जाऊँगी और फिर तो पौबारह है। वह वैज्ञानिक है तो बड़ा प्रतिभाशाली, लेकिन उसकी प्रतिभाका भीषण दुरुपयोग हो रहा है। उसकी प्रयोगशालाको देखकर मैं तो दंग रह गयी। उसका वैज्ञानिक अध्ययन भी बड़ा विशाल है! वैज्ञानिकों के साथ रहनेका मुझे अवसर तो नहीं मिला है, लेकिन उससे बातें करनेसे तो मुझे ऐसा ही मालूम हुआ कि वह यूरोपके इनेगिने वैज्ञानिकोंमें गिना जा सकता है।"

"तुम ठीक कहती हो। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। वह एक समय मेरा घनिष्ठ मित्र था। हम दोनों एक ही साथ वैज्ञानिक विषयोंका अध्ययन किया करते थे! न जाने कितनी-कितनी रातें हम दोनोंने एक ही साथ पर्वतोंपर वैज्ञानिक ग्रन्थोंको पढ़ते हुए बितायी हैं। लेकिन तुम उससे मेरा नाम न लेना। वह क्रान्तिकारी-दलसे बहुत चिढ़ता है। क्रान्तिकारी-दलसे ही क्या, वह दुनियामें सब कुछसे चिढ़ता है। मैं क्रान्तिका सूत्रपात करके संसारमें समाजवादकी स्थापना करना चाहता हूँ,—मानव-जातिके जीवनमें बिखरे हुए कारुणिक हाहारवको प्रशमित करके उषापरीकी मुसकानको और प्राभातिक खगबाला-ओंकी मनोरम गीत-ध्वनियोंको उनके जीवनमें बिखेरना चाहता हूँ, यह जानकर ही तो वह मुझसे अत्यन्त रुष्ट होकर सदाके लिये बिछुड़ गया है। हम लोग एक जमानेमें एक दूसरेको बहुत प्यार करते थे, लेकिन यदि आज मिलें और मैं यह न कहूँ कि मैंने अपने विचारोंको परिवर्त्तित कर दिया है तो वह मेरी इतनी भर्त्सना करेगा कि क्या बतलाऊँ! खैर, जाने दो। तुम्हें सफलता मिल रही है, यह देखकर बड़ी खुशी हुई है। मुझे तो बड़ा सन्देह है। उसकी प्रकृति बड़ी विचित्र है। सौन्दय और प्रेम नामकी चीजें उसके जीवनको स्पर्शित भी नहीं कर पायी हैं! स्त्रियोंसे तो आरम्भसे ही वह विरक्त रहता आया है। कोमल-कान्त भावनाएँ सदैव उसके द्वारा अवहेलित होती रही हैं। उसका मस्तिष्क विचित्र विचारोंका अग्निपुञ्ज है।"

लौरेटा बोली—"अच्छा, यह बात है। उसने मुझसे तब आपहीके बारेमें कहा था।"

"क्या कहा था ?" किसियोपिकस चौंक कर बोला।

"अपनी बातें कहते हुए उसने कहा था कि मेरा एक बहुत ही प्यारा वैज्ञानिक मित्र था, जिससे सैद्धान्तिक भिन्नताके कारण मुझे अलग होना पड़ा। उसने आपका नाम मुझे नहीं बतलाया। उसे शायद मालूम हो गया है कि आप क्रान्तिकारी-दलमें हैं, इसीलिये तो वह आपका नाम नहीं बोला।"

थोड़ी देर किसियोपिकस चुप रहा। फिर बोला—"काश! मुझे अपने उस पागल मित्रकी सहायता इस समय मिल जाती तो मैं निश्चयपूर्वक थोड़ेसे समयमें ही सारे यूरोपको दहला देता,—पूँजीवाद और साम्राज्यवाद को महामरणका भैरव-आह्वान सुनाता और समाजवादकी पावन स्थापना करके अपनेको धन्य समझता! लेकिन उसका सहयोग पाना असंभव है!........
अच्छा आर्थस कहाँ है? वह तुम्हारे ही साथ गया था न?"

लौरेटाके चेहरे पर फिर उदासी छा गयी। कुछ क्रोध और लज्जाकी भावनाएं भी कपोलोंको रँगने लगीं। बोली "उसके सम्बन्धमें मुझसे कुछ न पूछिये! मैं कुछ न बोलूँगी।"

"क्यों?"

"एक कारण है! इस समय जाने दीजिये। पीछे स्वयं मालूम हो जायगा। मैं चाहती हूं कि आर्थसको सुधरनेका अवसर मिले।"

दोनों जनें इस प्रकार बातें कर ही रहे थे कि चार क्रान्तिकारियोंने कमरेमें प्रवेश किया। एकने कहा, मैं लन्दनमें दस ऐसे तेजस्वी युवकोंको ठीक करके आया हूं, जो एक इशारेपर ही जान दे देनेके लिये तैयार हो जायँगे। सबके सब क्रान्तिकारी विचारोंसे उफनाते हुए जीवनमय मनुष्य हैं। उनका शोणित सदैव एक भयानक कर्मोन्मादनासे जलता रहता है।"

दूसरेने कहा,—"मैं बर्लिनमें पांच ऐसे युवकोंको ठीक करके आया हूं, जो यहांसे आज्ञा जाते ही वहांके पूँजीपतियोंको खाकमें मिला देंगे उनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियां प्रशंसनीय हैं। वे सच्चे युवक हैं। साम्राज्यवादके प्रति प्रचण्ड घृणा और आक्रोशकी भावनाएँ सदैव उनके मानसमें आस्फालन करती रहती हैं।"

तीसरा बोला—'मैं··मैं जाकर दो सप्ताहके भीतर एक सौ राज्यपदाधिकारियोंकी पत्नियोंको विधवा कर चुका हूं। चार सौ, पांच सौ बालक पितृहीन कर दिये गये हैं। देश भरमें तहलका मच गया है। पुलिस हत्याकारीको पकड़नेके लिये जी जानसे कोशिश कर रही है।"

उसकी बात सुन कर सब हँसे। वह था भी बहुत विनोदी स्वभावका।

चौथेके सिरपर पट्टी बँधी हुई थी। उसने मुसकराते हुए कहा—"भाई, मैं तो इस बार असफल रहा कुछ भी नहीं कर सका। माथेमें भी चोट खा आया।"

"कोई हर्ज नहीं ! सफलता और असफलता तो लगी ही रहती हैं। दोनों एक दूसरे की संगिनें हैं। अगली बार जरा सावधानीसे और सतर्कतासे काम लेना। सफलता अवश्य मिलेगी तुममें दया मात्रासे अधिक है। इसीलिये तुम फिसल जाते हो। क्रान्तिकारियोंके पास दया नामकी कोई चीज नहीं होनी चाहिये। वे तो दयाका गला उसी दिन घोट देते हैं, जब वे कोटि-कोटि नंगे भूखे मानवोंके आकुल निरोदनको सुन-सुन कर अट्टहास करने वाले नर-पिशाचोंको प्रासादोंमें रंगरेलियां करते देखते हैं,—जब वे सुन्दर, सुकुमार तरुणों-तरुणियोंको पैसोंके अभावमें भूखसे बिललाते हुए और कुरूप, घृणित, कुत्सित कमीनोंको वैभवके मदसे इतराते हुए देखते हैं,—साहित्यसंगीत कलाविहीन, प्रपंचप्रवीण मानवोंको सब प्रकारकी सुविधाएँ प्राप्त होते हुए और कवियों, गायकों, वज्ञानिकों, चित्रकारों एवं अन्य प्रतिभाशाली व्यक्तियोंको धनहीनताके कारण व्याकुल होते हुए देखते हैं ! दयाका नाम तो वे उसी समय लेंगे जब क्रान्तिके कण्टकाकीर्ण मार्गको पार करके समाजवादकी मंजिल तक पहुंच जायँगे। इस बीच उनके पास दया, माया, ममता, मोह प्रभृतिका कोई स्थान नहीं है। उन्हें सर्वदा निर्मोह और पाषाणहृदय बनना पड़ेगा अन्यथा वे अपनी लक्ष्यपूर्तिमें सफलता नहीं प्राप्त कर सकेंगे।"

किसियोपिकसके स्वरमें काफी ओज था।

थोड़ी देर तक शान्ति छायी रही। घड़ीने टन-टन करके बारह बजा दिये।

"आज आर्थस नहीं आया। क्या बात है? वह लौरेटाके साथ गया था न?" एक क्रान्तिकारीने कहा।

सब लौरेटाके मुँहकी ओर देखने लगे। लौरेटा कुछ नहीं बोली। किसियोपिकस समझ गया कि लौरेटा आर्थसके सम्बन्धमें कुछ भी नहीं बोलना चाहती है। वास्तविक बातको जाननेके लिये उसकी उत्सुकता तो बढ़ी लेकिन कुछ सोचकर बोला—'वह कहीं गया होगा। बड़ा बहादुर है।'

"सचमुच हम लोगोंके विप्लवीदलको आर्थसपर नाज है। एक बार वह मेरे साथ गया था। कमाल कर दिखलाया था उसने। मैं तो सर्वथा निराश होकर वापस लौटनेका विचार कर रहा था, लेकिन उसने एक ऐसी युक्ति ढूँढ़ निकाली कि काम आसानीसे बन गया। बड़ा बुद्धिमान है वह। उस वैज्ञानिकसे वह सब कुछ सीख लेगा।"

लौरेटाने अपनेको बहुत रोका। लेकिन न जाने क्यों तो उसके मुँहसे निकल ही गया—वह बुद्धिमान है, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु विप्लवी-दलको उसपर नाज नहीं होना चाहिये। नाज करनेके लिये और आदमी भी पड़े हैं।"

सब लौरेटाकी ओर आश्चर्यित होकर देखने लगे। लेकिन उसके चेहरेकी भावभंगीको देखकर किसीने कुछ पूछनेका साहस नहीं किया।

थोड़ी देरके बाद भोजन आया और सबोंने एक क्रान्ति-गीत गाकर खाना प्रारंभ कर दिया। भोजन समाप्त हो जानेके उपरान्त

एक क्रान्तिकारी बोला—लौरेटाके पीछे आजकल बहुतसे गुप्तचर पड़े हुए हैं। जबसे पुरस्कारकी घोषणा हुई है, तबसे तो बहुतसे बेकार नवयुवक भी इस वीरबालाको ढूँढ़नेके लिये घरोंसे निकल पड़े हैं। मैं परसों बहुत हँसा। पार्कमें शामको टहल रहा था। वहाँ मैंने एक युवकको एक स्त्रीके साथ बातें करते सुना। युवक स्त्रीसे कह रहा था कि तुम किसी क्रान्तिकारी-दलमें अपना नाम लिखा लो और क्रान्तिकारियोंको यह दिखलानेकी कोशिश करो कि तुम्हारे प्राणोंमें क्रान्तिकी रणभेरी सदैव बजती रहती है। इस प्रकार तुम्हे उस विप्लवी दलका पता चल जायगा, जहाँ वह रमणी है, जिसने आज बड़े-बड़े राज्य-पदाधिकारियोंको भी दहला दिया है। फिर तुम उससे मैत्री करके उसे पकड़ा दोगी। बातकी बातमें हमलोगोंके हाथमें अटूट सम्पत्ति आ जायगी। फिर क्या है? सारा जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा! हम लोगोंके सारे दुःख क्लेश दूर हो जायँगे। वह रमणी क्रान्तिकारी-दलमें नाम लिखानेकी बात सुनकर ही भयके मारे काँप रही थी। मैंने अपनी हँसीको रोकनेकी बड़ी कोशिश की, लेकिन नहीं रोक सका। जोरोंसे हँस पड़ा। वे दोनों भी आश्चर्यान्वित होकर मुझे देखने लगे। सचमुच हमलोगोंकी बहन वीरबाला लौरेटाको पकड़ना क्या इतनी आसान बात है!

सब हँस पड़े। लौरेटा भी हँसी। लेकिन किसियोपिकस गंभीर रहा। बोला—'लेकिन चाहे जो हो, लौरेटा! तुम्हें अब काफी सतर्क रहना पड़ेगा। पुलिस तुम्हारे पीछे बेतरह पड़ी है।

बड़े-बड़े गुप्तचर तुम्हें पकड़नेके लिये रात-रात भर दिमाग खटाया करते हैं।'

"तो मुझे क्या आज्ञा होती है? छिपकर तो मैं कहीं बैठ नहीं सकती! काम तो मैं करती ही रहूंगी। चाहे जो हो।" लौरेटा उत्तेजित होकर बोली।

किसियोपिकस कुछ देकर गंभीर मुद्रा बनाकर सोचता रहा फिर बोला—'तुम उसी वैज्ञानिकके साथ रहो और उससे उसके आविष्कारोंके सम्बन्धमें जितना ज्ञान प्राप्त कर सको, करो। उसका निवासस्थान एवं उसकी प्रयोगशाला भी बड़े विचित्र स्थानमें है। वहां रहनेसे किसी प्रकारकी आशंका नहीं रहेगी।"

सबोंको यह बात जँच गयी। स्वयं लौरेटा भी उस वैज्ञानिकसे कुछ सीखनेके लिये अत्यन्त उत्सुक थी। फलतः उसे भी यही उचित प्रतीत हुआ।

कुछ देर तक सबोंने इधर उधरकी बातोंसे अपना मनोविनोद किया। सबके सब खूब हँसे!—सरल, निर्दोष शिशुओंकी तरह। उस समय उन्हें देखकर कौन कह सकता था कि ये लोग क्रान्तिकी लपटोंमें अपने जीवनको निवेदित करके पूँजीपतियोंमें हड़कम्प मचानेवाले वीरपुंगव हैं।

काफी हास्यालापसे जब सबोंके हृदय और मस्तिष्क सुस्थ हो गये और सारी परिश्रान्ति मिट गयी, तब लौरेटा बोली—"मैं तो अब······की गलियोंमें घूमनेके लिये जाऊँगी। वहांके भूखे

नंगे मनुष्योंकी कारुणिक क्रन्दन-ध्वनियाँ मेरे हृदयमें सदैव विप्लवके नव-नव विस्फोटका सृजन करती रहती हैं।"

यह कहकर लौरेटाने कोषाध्यक्षसे काफी रुपये ले लिये और वेश बदलकर चल पड़ी।

उसके चले जानेके बाद किसियोपिकस मन ही मन बोल उठा—'सचमुच कितनी महान् अन्तरचेतना है इसकी !'

\+ \+ \+ \+

लौरेटा कुछ ही देरके बाद गरीबोंके एक मुहल्लेमें घुसी। वह मुहल्ला क्या था, बरबादी और बदकिस्मतीका आवासस्थल था। चारों ओर गरीबी चीत्कार कर रही थी। मैले कुचैले कपड़ोंको लपेटे हुए लड़के आपस में लड़ रहे थे। एक कमजोर लड़केके हाथमें सूखी हुई रोटियाँ थीं। वह उन्हें चबानेकी कोशिश कर रहा था। उसके साथके सब लड़के उससे छीना-झपटी कर रहे थे। कोई भी मकान आदमीके रहने लायक नहीं था। सफाईका तो कहीं नाम भी नहीं था। चारो ओर गन्दगी ही गन्दगी थी। मकान रसोईके धुएँसे काले पड़ गये थे। मकड़ोंने तो जाला ताननेमें कमाल कर दिखलाया था। छिपकलियाँ इधरसे उधर शिकारकी खोजमें दौड़ती फिरती थीं।

लौरेटाके लिये यह मुहल्ला नया नहीं था। वह अक्सर इधर आया करती थी और वहाँके धनहीन मानवोंकी कारुणिक अवस्थाका देख-देखकर हृदयके टुकड़े-टुकड़ेको रुलाया करती थी।

शाम हो गयी थी और घरोंमें दुर्भाग्यका सा अन्धकार

घिरने लगा था। लौरेटाने एक अँधेरे मकानमें प्रवेश किया। दुर्गन्धसे उसकी नाक फटी जा रही थी। उसे आते हुए देखकर एक किशोरीने, जो अपनी धँसी हुई आँखों और पिचके हुए गालोंके द्वारा किशोरावस्था उपहास कर रही थी, कहा—"बहन, तुम आ गयीं? लेकिन इस बार तुमने बहुत दिन लगा दिये न? भैया रोज तुम्हारे बारेमें पूछा करता है। ससुराल तो नहीं चली गयी थी?"

लौरेटा हँसकर बोली—नहीं ससुराल क्या करने जाती? तुम भी बड़ी पगली हो। तुमसे तो मैंने हजारों बार कह दिया कि मुझसे मेरे पतिदेवकी नहीं पटती है; फिर भी तुम ससुरालका नाम लेती हो। बड़ी दिवानी हो तुम। अच्छा, यह तो बतलाओ कि आखिर तुम्हारे भैया कैसे हैं? बुखार उतरा या नहीं?"

"अब तो तुम आ ही गयी हो। स्वयं चलकर देख सकती हो! पूछनेकी क्या आवश्यकता है?"

लौरेटाने उस किशोरीके साथ एक गन्दे कमरेमें प्रवेश किया। एक साधारणसे टूटे हुए पलंगपर एक कृशकाय युवक पड़ा हुआ था। उसने लौरेटाको देखते ही उसका अभिवादन किया और दुर्बलता भरे स्वरमें कहा—'आप आ गयीं। बड़ा अच्छा हुआ।'

'तुम अब कैसे हो!'

'पहलेसे कुछ अच्छा हूं। लेकिन अब जीनेकी इच्छा नहीं होती। कल मेरी बहिन मालिकके यहाँ गयी थी—मेरी बीमारीका

हाल सुनाकर छुट्टीकी अवधि बढ़ानेके लिये। लेकिन उसने साफ इन्कार कर दिया। मेरी दुलारी बहिनको भी दो चार खरी खोटी बातें सुनायीं। अब आप ही बताइये मैं क्या करूँगा। घरसे माँकी चिट्ठी आयी है कि कुछ रुपये भेजो, अन्यथा घर बिक जायगा, महाजनके तकाजे हो रहे हैं और इधर यह हाल है! क्या करूँ, कुछ समझमें नहीं आता।"

उस दुर्बल युवकके चेहरेपर दुर्भाग्यके आघातोंकी कारुणिक छाया स्पष्ट थी। गढ़ेमें धँसी हुई उसकी आँखें विश्वसे पूछ रही थीं—'यदि मेरे जीवनमें इतना हाहाकार, इतनी यन्त्रणा, इतनी विवशता और पीड़ा ही सन्निविष्ट करनी थी, तो मुझे ..... !'

लौरेटा बोली,—'तुम चोरी कर सकते हो या नहीं?'

'चोरी?' वह रोगाक्रान्त युवक चौंका—'मैंने आज तक कभी चोरी नहीं की। केवल एक बार लड़कपनमें मैंने अपने पिताजीकी गाढ़ी कमाईसे एक रुपया चुराया था, जिसके लिये मुझे इतनी मार खानी पड़ी थी कि सात-आठ दिनों तक मैं बिछौनेसे नहीं उठ सका था। उसके बाद मैंने चोरीका नाम नहीं लिया।

"मैं जो पूछती हूं, उसका उत्तर दो। तुमने चोरी की है या नहीं?" लौरेटाके स्वरमें आवेग था।

"नहीं, मैं चोरी कदापि नहीं कर सकता। यह महापाप है।" युवकने कहा।

लौरेटाने एक बार ध्यानपूर्वक युवककी ओर देखा और फिर

बोली—"युवक तुम गलती कर रहे हो। चोरी करना पाप है, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु समाजकी वर्त्तमान अवस्थामें चोरीको पाप कहना एक पागलपन है। मैं कहती हूं कि इस समय तुम्हारे जैसे गरीबोंको, धनहीन श्रमजीवियोंको छोड़कर शेष सब चोर हैं। ये ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ—ये रात्रि-दिवस गुलजार रहनेवाले प्रासाद चोरीकी सम्पत्तिसे बनाये गये हैं! समाजकी वर्त्तमान परिस्थितिमें छल-कपट और चोरीके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है, जिससे धनार्जन किया जा सके। तुम ईमानदार हो, इसलिये भूखों मर रहे हो। तुम्हारे पूर्वज ईमानदार थे, इसलिये जीवन भरके अपरिसीम परिश्रमके उपरान्त भी वे अपने वंशजोंके लिये केवल हाहाकार छोड़ गये। तुम्हें मैं चोरीके द्वारा धन एकत्रित करनेके लिये नहीं कहती हूं, लेकिन इतना अवश्य कहूंगी कि रोगसे मुक्त होते ही तुम नौकरी खोजनेके बदले डाका डालना आरंभ करो। मरोगे तब भी कोई चिन्ता नहीं है, जेल जाओगे, तब भी कोई अफसोस नहीं है। इस प्रकारके जीवनसे तो वे दोनों अवस्थाएँ कहीं अच्छी होंगी!

लौरेटाके हृदयमें आँधी चल रही थी। उसका सारा शरीर एक महान् कामोन्मादनाकी उत्तुङ्ग लहरोंसे आहात हो रहा था। उसने मनीबेगसे कुछ रुपये निकालकर दिये और बोली—"इनसे तुम दोनों अपना खर्च चलाओ। दोनों जने दूध पी-पीकर अपने शरीरको दृढ़ बनाओ और उसके बाद जो मार्ग मैंने दिखलाया है, उस पर चलो। लेकिन खबरदार' किसी भी श्रमजीवीको कष्ट

न देना। डाका डालना, खून करना, आग लगाना, आवश्यकता पड़नेपर सब कुछ करना, किन्तु सब कुछ पूँजीपतियोंके यहाँ।"

यह कहकर लौरेटा आँधीकी तरह उस मकानसे बाहर निकल गयी और आगेको चलने लगी। थोड़ी दूर आगे गयी थी कि एक मकानमें किसी स्त्री की क्रन्दन-ध्वनि सुनायी दी। वह ठिठक गयी और सुनने लगी। एक पुरुष किसी स्त्रीसे अपनी पाशविक वासनाकी तृप्ति करना चाहता था। वह कह रहा था—"यदि तुम मुझे ज्यादा परेशान करोगी तो मैं तुम्हारे बच्चेको उठाकर पटक दूँगा कि वह मर जायेगा। बड़ी साध्वी बनी है। अमीरोंके यहाँ तो बिना बुलाये चली जाती हो, उनके कलेजेसे लिपटनेकी कोशिश करती हो और मैं। गरीब हूँ, इसलिये मुझे दुत्कार रही हो। मैं तुम्हारा खून पी जाऊँगा। तुम्हारे लिये मैं घरवालोंमें बदनाम हुआ; मुहल्लेवाले मुझपर उङ्गली उठाते हैं और तुम्हीं मुझे दगा दे रही हो। बदमाश कहीं की!"

बेचारी गरीब औरत बड़ी ही करुणामयी आवाजमें बोल रही थी—"तुम मेरे बड़े भाई हो। मैं तुम्हारी छोटी बहिन हूं। मुझे माफ करो। मुझे छोड़ दो। मैं! अमीरोंके यहाँ जाती हूं, क्योंकि मेरे तीन छोटे-छोटे भाई हैं, उनका खर्चा कहाँ से चलेगा! मैं अपने पापी पेटकी तो परवाह नहीं करती, लेकिन मेरे निर्दोष मातृ पितृहीन भाइयोंको मैं भूखसे बिलखते हुए नहीं देख सकती। मेरा हृदय रोने लगता है। मैं नारी हूं। मुझसे अपने शरीरको बेचकर रुपया कमानेके सिवा और हो ही क्या सकता

है। पढ़ी लिखी तो हूं ही नहीं कि किसीके यहां काम मिल जाय। तुम मेरे भाई हो। क्योंकि तुम भी गरीब हो ; मैं भी गरीब हूं। यदि भाई अपनी बहनके प्रति ऐसा व्यवहार करेगा तो यह दुनियां कबतक... !"

लौरेटाका सारा शरीर लहकने लगा। वह दरवाजेके पास पहुंची। दरवाजा अन्दरसे बन्द था। उसने कड़ी आवाजमें पुकारा—'कौन है ? दरवाजा खोलो।'

अत्याचारी भयसे कांप उठा। उसने धीमे स्वरमें कहा—'आप कौन हैं ?'

'सवाल पूछनेकी धृष्टता न करो। चुपचाप दरवाजा खोल दो अन्यथा तुम्हारे प्राणोंपर आ बीतेगी!' लौरेटाके स्वरमें क्रोधकी लपटें उठ रही थीं।

स्त्री दरवाजा खोलनेके लिये आगे बढ़ रही थी और वह पापात्मा उसे रोक रहा था।

'मुझे दरवाजा खोलने दो। न जाने कौन आया है ?' स्त्री गिड़गिड़ाकर बोली।

'तेरा बाप आया है! मैं तुझे दरवाजा नहीं खोलने दूंगा।' कहकर व्यभिचारीने स्त्रीका गला दबाना शुरू कर दिया।

लौरेटाके कानोंमें उस असहायाकी क्रन्दन-ध्वनि पड़ रही थी। लेकिन वह विवश थी। क्या करती! इस बार उसने फिर गरजकर कहा—'दरवाजा खोलते हो या नहीं ?'

लेकिन दरवाजा खोलनेके बदले उस पापात्माने स्त्रीके कलेजेमें

छुरी भोंक दी और बोला—'अब भी दरवाजा खोलेगी? हरामदजादी!'

लौरेटाके कानोंमें उस म्रियमाणाकी कातर क्रन्दन-ध्वनियाँ साफ पड़ रही थीं। वह सब कुछ समझ गयी। उसका हृदय चीत्कार कर उठा! वह आगेको बढ़ गयी।

उसका मस्तिष्क उस समय अनगिनती तूफानोंका क्रीड़ास्थल बन रहा था। न जाने कहाँ-कहाँ से तो उड़-उड़कर चिनगारियाँ आती थीं और उसके अन्तर्देशमें नृत्य करने लगती थीं।......वह सोच रही थी—उफ्! कैसी हाहाकारमयी घटना है! इन सब दृश्योंको देखते हुए भी यदि हम मौन रहते हैं तो इससे बढ़कर कमीनापन और क्या हो सकता है? इतना दुःख इतना चीत्कार—इतनी निदारुण यंत्रणाएँ संसारमें चारों ओर फैली हुई हैं, उसपर भी लोग क्रान्तिकी आवश्यकता महसूस नहीं करते!—उसपर भी कहा जाता है, विप्लवके बिना ही मानव-जातिकी वर्त्तमान अवस्थाको सुधारा जा सकता है—उसके राशि-राशि कष्टोंको दूर किया जा सकता है—दुःखों और क्लेशोंके आलबालसे उसे मुक्त किया जा सकता है!

———

१४

आर्थसको बड़ी बेचैनीका अनुभव हो रहा था। उसका क्रान्तिकारी हृदय राशि-राशि आघातों से तिलमिला रहा था। लौरेटाकी सौन्दर्य-मदिरासे प्रमत्त होकर उस दिन उसने जो भयानक गलती की थी उसके लिये उसके मन-प्राण क्रन्दन कर रहे थे। उसे अपने पतन पर महान् विक्षोभ हो रहा था। न खानेमें उसका मन लगता था, न सोनेमें। रात-रात भर करवटें बदलता रहता था। फिर भी नींद नहीं आती थी। एक ही प्रश्न उसके मस्तिष्कमें हड़कम्प मचाता रहता था—'अब मैं विप्लवी-दलमें अपनी पुरानी तेजस्विताके साथ कैसे प्रवेश कर सकूँगा? लौरेटाको देखते ही मुझे वे पापी प्रहर याद हो आयेंगे, जब मेरे इस चिर विद्रोही हृदयमें मन्मथकी हाला बिखर गयी थी। मानता हूं कि लौरेटा किसीसे कुछ नहीं कहेगी, लेकिन उसकी वे आँखें

सदैव अपनी मौन भाषामें मेरे हृदयको चीरती रहेंगी !—मेरी भर्त्सना करती रहेंगी। मुझे अपने पर कितना अभिमान था। मैं समझता था कि भोग विलासको मैंने सदाके लिये चरणोंसे ठुकरा दिया है। अब उनकी प्रबलतम स्वरूपाभिव्यक्ति भी मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकती ! लेकिन – उफ्। सोचते ही मस्तिष्ककी शिराएँ पश्चानुतापकी प्रलयंकरी वह्निमें जलने लगती हैं !..... मैं अब कैसे किसियोपिकसके पास जा सकूँगा ! कहीं लौरेटा उस दुर्भाग्यमयी रजनीकी बातें प्रकट न कर दे !......एक छोटी सी गलतीने मेरी सारी योजनाओंको मिट्टीमें मिला दिया ! कोई उपाय नहीं सूझता !·····लौरेटाको पकड़ा देना ही अच्छा होगा ! फिर मुझे किसी प्रकारका भय,—किसी प्रकारकी आशंका नहीं रहेगी। विप्लवीदलमें मैं पुनः अपने पुराने शौर्यके साथ काम कर सकूँगा। लौरेटाकी उपस्थिति सदैव मेरे हृदयको उन वासनालोलुप प्रहरोंकी याद दिलाती रहेगी। लौरेटाको पकड़ा देनेसे उस हतभाग्य गायककी मुरझायी हुई आशा-लतिका भी जीवित हो उठेगी,—उसके जीवन-उपवनमें भी वसन्तकी मधुमादकता बिखर जायगी और मुरझाये हुए वृक्षोंकी नवागत हरीतिमासे मद-विह्वल होकर कोइलिया भी दक्षिण-समीरणके प्राणोंमें अपनी 'कुहू-कुहू' बिखेरना आरम्भ कर देगी ! कितना पीड़ाकुल है वह ! जीवनके सारे अरमान,—सारी मधुमयी अभिलाषाएँ हाहाकारके अञ्चलमें सिहर-सिहर कर खून उगलती हुई बेहोश हो चुकी हैं ! नैराश्य के सर्वग्रासी तिमिरमें

आशाका एक बुझता, जलता दीपक लेकर वह दुनियामें इधर उधर भटकता फिर रहा है। क्यों नहीं मैं उसके आलोकको विवर्धित करके उसे नवजीवन प्रदान करूँ! क्यों नहीं उसके सन्तप्त, पीड़ित, तृषाकुल अन्तस्तलको सुधाकी अजस्र धारामें अवगहन करानेमें सहायक बननेकी कोशिश करूँ! क्यों नहीं उसके चीत्कारोंसे भरे हुए दाहक स्वप्नोंमें मिलनके उल्लासकी मधुरिमा सन्निविष्ट करनेका प्रयास करूँ! कितना प्यारा है वह गायक! अभी उसकी उम्र ही क्या है! उसका जीवन तो अभी आरंभ ही हुआ है और दुर्भाग्यने उसे इस प्रकार पीड़ित कर डाला! वह इस अन्तिम आशाको लेकर ही तो जी रहा है! यदि यह आशा भी नष्ट हो गयी तो उसका जीवन बरबाद हो जायगा। वह पागल हो जायगा!

आर्थस आँखें बन्द किये हुए सोच रहा था। अर्धरात्रिकी तिमिरालस घड़ियाँ सिसकियाँ भरती हुईं विश्व-पथसे चली जा रही थीं। दूर-दूर तक फैले हुए खेतोंकी हरीतिमा को छू-छूकर नैश समीरण आता था और आर्थसके सूखे हुए,—ग्रीष्मकी ज्वालासे झुलसे हुए सन्तापित हृदय-उपवनको पुनः हरीतिमा प्रदान करनेकी असफल आकुल चेष्टा कर रहा था।

आर्थस सोच रहा था और सोच-सोचकर पागल हुआ जा रहा था। नानाविध भावनाएँ विष बरसाकर,—उसके हृदयमें आग लगाकर चली जाती थीं। वह तिलमिलाकर रह जाता था। उनके विद्रोही प्राणोंमें इतनी मर्मघातक वेदना—इतना सर्वनाशी

विषाद-- इतना अपरिसीम हाहाकार आ समाया था कि कभी-कभी तो आत्महत्याकी दुर्बल, भीरु भावनासे भी वह अभिभूत हो उठता था। उसके अन्तर्देशका कण-कण एक अविज्ञानित तूफानसे आलोड़ित विलोड़ित हो रहा था! वह सोचने लगा—लौरेटाको पकड़ाकर मैं अपना मार्ग निष्कण्टक कर लूँगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, किन्तु क्या इतने पर भी मुझे शान्ति मिल पायेगी। क्या इस असभ्य और पापपूर्ण कृत्यकी लपटें मृत्यु-पर्यन्त मेरे रोम-रोमको नहीं जलाती रहेंगी!! क्या इस महान् दुष्कर्मकी स्मृति मुझे सदैव पीड़ाकुल नहीं करती रहेगी?...

लौरेटाका पता मैं उस विप्रयोग-पीड़ित गायकको दे दूँगा। वह पुलिसको सूचना दे देगा। पुलिस उसे पकड़कर ले जायगी। सर्वत्र हल्ला हो जायगा कि सुविख्यात क्रान्तिकारिणी महिला पकड़ी गयी। गायकको रुपये मिल जायँगे। वह अपनी प्रेयसी को पा लेगा और जीवनके अवशिष्ट दिवसोंको हर्षोल्लासके अंचलमें क्रीड़ा करनेके लिये युक्त कर देगा। दोनों रात-रात भर एक दूसरेसे प्यारभरी बातें करेंगे,—एक दूसरेको हृदयका सारा रस—सारा अनुराग निवेदित करेंगे। लेकिन उधर लौरेटा-को फाँसी हो जायगी। इसके अतिरिक्त अन्य कोई दण्ड लौरे-टाको नहीं मिल सकता है! उसका वह वीरोचित हृदय, उसकी वे सुन्दर भावपूर्ण आँखें,—उसके वे पाटलकी पंखड़ियों से कोमल कपोल!......उफ्! सब कुछ नष्ट हो जायगा! क्रान्तिकारी-दल उसकी अनुपस्थितिसे आभाहीन हो जायगा।

किसीयोपिकस शायद महीनों तक उदास और विषण्ण बना रहे। मानता हूं कि विप्लवी-दलमें कोई भी यह नहीं जान पायेगा कि इस पापकर्ममें मेरा प्रमुख भाग है, लेकिन इससे क्या हुआ? जीवन भर मेरी अन्तरात्मा मुझे कोसती रहेगी, — मेरी अन्तश्चेतना मुझे धिक्कारती रहेगी। कहीं उस भयंकर पश्चानुतापकी ज्वालासे विकल होकर मुझे अपनी हस्तीको मिटानेके लिये उतारू नहीं हो जाना पड़े!……तो आखिर किया क्या जाय! क्या लौरेटासे जाकर माफी माँग लूँ! उपाय तो अच्छा है। जाऊँगा और बहिन कहकर उसके पैरों पर गिर पड़ूंगा। वह मुझे क्षमा कर देगी। हृदयका सारा कल्मष—सारी मलिन भावनाएँ स्वाहा हो जायंगी। पवित्रता और अनुरागकी प्राभातिक किरणोंके पावन स्पर्शसे हृदयका म्रियमाण शतदल पुनः प्रफुल्लित हो उठेगा! — असमय ही आयी हुई मेघमालाएँ प्रकाशके मार्गको छोड़ देंगी।...लेकिन मुझसे यह हो सकेगा! एक स्त्रीके पैरोंपर गिरना! उससे क्षमा-याचना करना! जीवनमें आज तक मैंने किसीसे क्षमा-याचना नहीं की। बड़ासे बड़ा अपरध करके भी मैं सदैव सिरको ऊँचा किये रहा। और आज एक जरा सी बातके लिये माफी माँगूँ! असम्भव है! नहीं होगा! सब उपाय व्यर्थ हैं!...

उसने घड़ीकी ओर देखा। एक बज गया था। सारा संसार निद्रासे अभिभूत हो रहा था। स्वप्न-कुमारियाँ अपने स्वर्ण कलशोंको लिये हुए सन्तप्त, पीड़ित मानव-हृदयोंको रस-निमज्जित

करनेकी विफल चेष्टाएँ कर रही थीं। आर्थसने कपड़े नहीं पहने। उसी पोशाकमें सरिता-तटकी ओर चल पड़ा। उसने गायकको एक बजे सरिता-तटपर आनेके लिये कहा था।

सरिता-तटसे अभी वह कुछ दूर ही था कि गायकके कण्ठकी कोमल आवाज सुनायी दी। वह रसावेशसे विह्वल हो उठा। गीत न जाने क्यों तो ठीक उसके मनके अनुकूल था। जैसे अन्धड़ उसके मनमें घिर रहे थे और घिर-घिरकर उसको झकझोर रहे थे, वैसे ही बल्कि उससे अधिक पीड़ामय अन्धड़ोंका वर्णन उस गीतमें था, इसीलिये वैसी मानसिक स्थितिमें भी वह विह्वल हो उठा। उसने गायकके पास जाकर धीरेसे कहा—"गायक, तुम्हें मेरी मानसिक स्थितिका पता कैसे चल गया? तुम्हारे इस मर्म-मधुर गीतमें भी वही पीड़ा और वही आत्महन्ता हाहाकर कहाँसे सन्निविष्ट हो गया, जो मुझे दो तीन दिनोंसे सन्तप्त कर रहा है?"

गायकने नम्रतापूर्वक कहा—"भाई, तुम मुझे गायक क्यों कहते हो? मैं गायक नहीं हूं। कवि हूं। गायिका तो वह थी, जिसके वियोगने आज मुझे आवारा बना दिया है—मेरी अन्त-र्वीथिकामें किञ्जल्क-जालके बदले अग्निकणोंकी वर्षा की है। उनके स्वरमें नन्दन-वनके पारिजात-कुसुमोंका सौरभ बिखर गया था। स्वरमें सौरभ सुनकर तुम हँसोगे। लेकिन मैं सच कहता हूं, जब वह गाती थी तो समीरणका कण-कण झूमने लगता था और चारों ओर एक विचित्र मधुमादकता छा जाती थी। मैं उसे कविताए लिखकर देता था और वह उन्हें गा-गाकर सुनाती थी। क्या

जाने हम दोनोंकी कितनी ही मिलन-रात्रियाँ इसी प्रकार व्यतीत हुआ करती थीं! वह तृण-श्यामल स्थलीमें बैठ जाती थी। मैं अपने सिरको उसकी जंघापर रखकर लेट जाता था और अपनी लिखी हुई कविताएँ गानेका अनुरोध करता था। वह गाती थी और गा-गाकर पारिपार्श्विक प्राकृतिक सौन्दर्यमें प्राण फूँक देती थी! युवक, मेरी उस खोयी निधिसे मुझे मिला दो। मैं जीवन भर तुम्हारा गुण गाता रहूँगा। तुम्हें भी उसके गीत सुनाऊँगा। कहता हूं, तुम उसके गीतोंको सुनकर सुध बुध खो बैठोगे। ऐसा मालूम होगा, मानो तुम हवामें उड़े जा रहे हो। युवक! मेरी मदद करो। उस महिलाका पता बता दो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पुरस्कार मिलने पर मैं अपनी हृदयेश्वरीको पा लूँगा।

'लेकिन तुम्हारी प्रेयसी तो रुपयोंकी भूखी मालूम होती है।' आर्थसने कहा।

'नहीं—कदापि नहीं, मैं तुम्हें पहले ही कह चुका हूँ कि वह अभिनेत्री होना चाहती हैं। अभिनेत्री बननेके समस्त महान् गुण उसमें हैं। वह स्नेह और अनुरागकी देवी है, किन्तु कलाके लिये वह इनको ठुकरा सकती है।'

आर्थस उस गायककी भावुकतापूर्ण बातें सुनकर हँसा। बोला—'खैर, जाने दो। वह तुम्हें प्यार करे, चाहे नहीं करे, तुम तो उसे प्यार करते ही हो। इसमें सन्देह नहीं है और। यही क्या कम है! किसीके हृदयकी सुकुमार अनुभूतियोंपर विजय प्राप्त करके अपने अन्तर्देशमें सुख-सुषमाकी चन्द्रिकोज्ज्वल यामिनीको

आमंत्रित करनेके बदले किसीके द्वारा अवहेलित, अनादृत उपेक्षित होकर अपने प्राण-प्रदेशमें हाहाकारकी, चीत्कारोंकी, मर्मन्तुद वेदनाकी कुहू निशाको आमंत्रित करना कलाकारोंके लिये ज्यादा श्रेयस्कर होता है। तुम कवि हो। तुम्हारी कविता मिलनकी माधुरीसे इतनी सुन्दर और मर्मपीड़क नहीं हो पाती। इस समय तुम्हारी लेखनीसे जो कविताएँ निकलती होंगी, वे अत्यन्त हाहाकारमयी और मदभरी होती होंगी। किन्तु यदि तुम्हें तुम्हारी छविमयी मिल जाती - यदि तुम्हारे दुर्भाग्यकी कालिमा उसके मिलनकी रजत-रश्मियोंसे विचुंबित हो जाती और तुम उसके सुरभित अंचलकी शीतल छायामें अपनी चंचल अभिलाषाओंकी क्रीड़ा देखने योग्य हो जाते तो आज तुम्हारा कवि इतनी सफलताके साथ अपनी भावाभिव्यक्ति नहीं कर पाता। तुम्हारे ठुकराये हुए अरमान - तुम्हारी कुचली हुई आशाएँ तुम्हारे द्वारा जिन नव-नवछन्दोंकी उद्भावना करती रहती हैं, वे सचमुच अनुपम होते होंगे !"

गायक कुछ देर मौन रहनेके बाद बोला — लेकिन आजकल मैं कविताएँ लिखता कहाँ हूं ! न जाने कितनी ही तृषाकुल भावनाएँ प्रभातिक विहग-कुमारियोंकी भाँति उड़ती हुई अन्तर्व्योममें आती हैं और गुनगुनाने लगती हैं - न जाने कितनी मादक हालामयी कल्पनाएँ उपवनकी मधुप-बालाओंकी तरह मेरे प्रणय-पाटलपर गुंजार किया करती है, लेकिन उनकी वह गुंजार यों ही शून्यमें विलीन हो जाती है। पहले प्रभातको सुहावनी जागृति-

बेलामें, सन्ध्याकी तिमिराकुल रसीली घड़ियोंमें, निशीथके साँय-साँय करते हुए जादू भरे क्षणोंमें मैं अपने हृदय-मंचपर नृत्य करनेवाले छन्दोंको लिपिबद्ध कर दिया करता था। वे छन्द मेरी रूपपरीके कण्ठसे निकलकर इतने मर्ममधुर हो जाते थे कि हृदयका कण-कण दीवाना हो जाता था—उन्मादकी अनाविल धारा प्रवाहित होने लगती थी और उसमें मिथ्या ज्ञानकी समस्त कालिमा धुल जाती थी। किन्तु अब किसके लिये अपनी कविताओंको लिपिबद्ध करूँ! नित्यप्रति न जाने कितनी-कितनी कविताएँ मेरे हृदयमें अवतरित होती हैं, किन्तु मैं उन्हें केवल गुनगुनाकर रह जाता हूँ!"

आर्थस अपनी आँखोंमें करुणा भर कर गायककी ओर देख रहा था। बड़े ही सहानुभूति भरे स्वर में बोला—'गायक तुम सचमुच बहुत महान् हो। प्रेम करना जानते हो। वियोगकी अवधिको इस प्रकार तपस्यापूर्वक व्यतीत करना साधारण प्रेमियों का काम नहीं है। तुम्हारा हृदय महान् है। चलो, मैं तुम्हें उस क्रान्तिकारिणी महिलाका पता बता देता हूं।'

गायकका उदास मुख एक अज्ञात आशाकी स्वर्ण-रश्मिसे आलोकित हो उठा। न जाने कैसे तो उसकी सदैव अश्रु-आविल रहनेवाली आँखें चमकने लगीं और ओठोंपर मुसकानकी एक हलकी सी रेखा खिच गयी। वह उठ खड़ा हुआ और दोनों जने चलने लगे।

वहाँसे एक मील तक तो दोनोंको पैदल ही जाना पड़ा।

उसके बाद गाँवमें पहुंच कर आर्थसने किराये पर जो घोड़े लिये और दोनों जने उस ओर चल पड़े, जिधर वह वैज्ञानिक रहा करता था।

चलते-चलते दो तीन घंटे बीत गये। रास्तेमें दोनोंमें बहुत कम बातें हुईं। गायक भविष्यके उन्मादक स्वप्नोंकी वारुणी पिला-पिला कर अपनी घायल अभिलाषाओंको नवजीवन प्रदान कर रहा था और आर्थसके हृदयमें भीषण संघर्ष हो रहा था।

वैज्ञानिकका बँगला आर्थसका देखा हुआ था। उसे खोजनेमें ज्यादा देर नहीं लगी। वैज्ञानिक एक साधारण सा कपड़ा लपेटे हुए पागलोंकी भाँति वाटिकामें टहल रहा था। उसके चेहरेपर अङ्कित चिन्ताकी रेखाएँ स्पष्ट थीं। आर्थसने कहा—'देखो, यह एक वैज्ञानिक है। वह क्रान्तिकारिणी महिला इसके द्वारा अपना काम सिद्ध करनेमें लगी हुई है। दो तीन बार वह इसके पास आ चुकी है लेकिन मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह फिर अवश्य आयेगी। तुम यहीं छिप कर बैठे रहो। प्रतीक्षासे ऊब मत जाना। हो सकता है, वह आज न आए, कल आए और यह भी हो सकता है वह कल न आकर दो-चार दिनोंकी देर करके आये। लेकिन आयेगी अवश्य, इसमें मुझे तो कोई सन्देह नहीं है। तुम धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकोगे न?"

"आप भी अच्छी बात करते हैं! दो-चार दिनोंकी तो बात ही क्या है? मैं बिना खाये पिये महीने भर तक प्रतीक्षाकर सकता हूं। जीवनमें अब यही एक अन्तिम आशा रहगयी है। उसे क्या मैं सहज ही लुप्त हो जाने दूँगा!"

वैज्ञानिक वाटिकामें खड़ा था और दोनों जने एक वृक्षकी आड़में खड़े-खड़े धीरे-धीरे बात कर रहे थे। एकाएक वैज्ञानिक ने अपनी नौकरानीको बुलाया और बोला, - 'आज रातको नौ बजे एक रमणी आयेगी। उसके लिये भी भोजन तैयार करना होगा। समझी ?

आर्थसने गायकको इशारेसे चलनेके लिये कहा। कुछ दूर पहुंच कर बोला--'अब क्या है ? जाओ, पुलिसवालोंको ले आओ और ठीक रातके नौ बजे सबके सब यहाँ छिप जाओगे। वैज्ञानिकने जिस रमणीके सम्बन्धमें कहा है, वह वही क्रान्तिकारिणी है, जिसके लिये पुरस्कारकी घोषणा की गयी है और यूरोप भरमें लोग जिसकी खोज कर रहे हैं।'

"आप यह कैसे जानते हैं कि यह वही रमणी है ?"

"मैं जानता हूं, तभी तो कहता हूँ! इस वैज्ञानिकके पास और कोई रमणी नहीं आ सकती है। इसके लिये तुम निश्चन्त रहो। चलो, मैं तुम्हें थाने तक पहुंचा कर चला जाऊँगा। तुम वहाँसे सात-आठ सिपाहियोंको ले लोगे और सबोंको सावधानीके साथ काम करनेके लिये भी कह दोगे! कहीं यह न हो कि लेनेके देने पड़ जायँ। अच्छी तरह याद रखो कि तुम एक ऐसी महिलाको पकड़ने जा रहे हो, जिसका आगमन तूफानों और अन्धड़ोंका सृजन किया करता है,—जो न जाने कितने ही पूजीपतियोंके महलोंमें आग लगा चुकी है और न जाने कितने ही राज्यपदाधिकारियोंके अस्तित्व धूलमें मिला कर मुसकरा चुकी है।"

"तुम भी साथमें चलो न ?"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा !" कहते समय एक विचित्र प्रकारकी आत्मग्लानिसे आर्थसका हृदय सिहर उठा।

कैसी विडम्बना है ! जीवनका कैसा हाहाकारमय आत्मद्रोह है !! जिसके साथ बहिनका सम्बन्ध स्थापित किया,—जिसकी क्रान्तिकारी योजनाओंपर मुग्ध होकर हृदयसे प्यार किया,—जिसके साहसपूर्ण कार्योंपर अभिमान किया, उसीको—हां, उसी विप्लवकारिणी बहिनको, जिसे वह एक दिन पिस्तौल चलाना सिखलाता था और जिसके सामने समाजवादके मौलिक सिद्धान्तोंकी व्याख्या किया करता था, आज वह पुलिसके द्वारा पकड़ानेके लिये उद्यत हो गया है और रैमोना !...उफ् ! भाग्यहीन रैमोनाको ही देखो न ! जिसके लिये वन-वन अलख जगाता फिर रहा है ; दर-दरकी ठोकरें खाता फिरता है ; जिसके प्रेमकी मदभरी प्यारसे पागल होकर पढ़ना-लिखना छोड़ दिया , गृह-द्वारकी ममतामें आग लगा दी ; बन्धुओं और परिजनोंको भी विस्मृतिके अन्धकारमें लुप्त हो जाने दिया, उसे ही—उसी सौन्दर्य सरसीमें खिल उठनेवाली शतदल-कुमारीको,—चन्द्र-ज्योत्स्नासी शीतल, पावन और आकर्षक लौरेटाको पकड़ानेके लिये कितना विकल हो रहा है !......

× × ×

नौ बज चुके। तारिकाओंके क्षुद्र प्रकाश पर अभिमान करती हुई यामिनी व्योम-पथमें किसी निष्ठुरका नीराजन करने लगी।

रैमोना पुलिसके आठ सशस्त्र आदमियोंको लेकर वैज्ञानिकके बँगलेके पास छिप कर खड़ा हो गया। उत्सुक, उत्कण्ठित होकर उस क्रान्तिकारिणी महिलाकी प्रतीक्षा करने लगा।

साँय-साँय करता हुआ नैश समीरण रह-रहकर रमोनाके कानोंमें अपनी अज्ञात भाषामें कुछ कह जाता था, लेकिन दुर्भाग्यके कशाघातसे पीड़ित पागल रैमोनाको इतनी सुध-बुध कहाँ थी! वह तो भविष्यके सुख-स्वप्नोंकी वारुणी पी-पीकर उत्फुल्ल हो रहा था शायद नैश समीरण कह रहा था—'दीवाने, जिसके द्वारा अवहेलित और निरादृत होकर भी तुम प्रेमहीन नहीं हो पाये जिसके प्रणयकी व्रतति बालाको तुमने हृदयका रक्त दे देकर विकसित विवर्धित किया है, वही आज तुम्हारे द्वारा शासकवर्गको सौंपी जायेगी! जिसके लिये तुम पुरस्कारकी कामनासे उद्वेलित हृदय लेकर रात-रात भर घूमा करते हो, उसे ही फाँसीके तख्ते पर झुलाओगे!'

शायद तृतीयाका मयंक भी रैमोनाके भविष्यके सघन तिमिर-जालकी कल्पनासे व्यथित होकर ही रह-रहकर अपने ऊपर श्वेत बादलोंकी चादर डाल लेता था।

सचमुच प्रकृतिका यह नियम कितना क्रूरतापूर्ण है! मनुष्य कुछ देर पहले तक तो आनन्दकी, लहरोंमें नावनेवरिया खेलता रहता है—उल्लासके सुरभित अंचलमें अपनी सलज्ज, सुकुमार भावनाएँ बिखेर-बिखेर कर उन्मत्त होता रहता है—मदभरे अर-मानोंकी बयारमें झूमती हुई मंजरियोंपर कल्पनाकी कोइलियासे

काकली सुनता रहता है और कुछ देर बाद ही अपनी ही तृषाकुल आँखोंसे देखता है—उसकी तरणी उसीके हाथोंके द्वारा उलट दी गयी है; उसने अपने ही हाथोंसे नाविकको कत्ल कर दिया है; उल्लासके अंचलमें उसने अपने ही हाथोंसे आग लगा दी है—कुहू-कुहूकी ध्वनिसे जीवन-वनान्तको रसमय करनेवाली कोइलिया-का गला घोंट दिया है। और सबसे बढ़कर आश्चर्यकी—प्राणोंके अणु-अणुको दहला देनेवाले, हृदयके टुकड़े-टुकड़ेको कँपा कँपाकर विनाशके अन्धकारित गर्त्तमें फेंक देनेवाले आश्चर्यकी तो बात यह है कि यह सारा अनय—यह सारा पाप वह अपने हाथोंसे करता है! अपने ही द्वारा वह चीत्कारोंको आमंत्रित करता है!—हाहाकारमयी सर्वदाहक ज्वालाको बुलाकर मरघटकी शय्या रचता है!

१५

आर्थस रमोनाका साथ छोड़कर चला आया था और एक होटलमें बैठकर खाना खानेकी चेष्टा कर रहा था।

दो दिनोंका भूखा था वह! भूख उसे लग नहीं रही थी। कहाँ तो पहले साधारणसे साधारण भोजनको भी बड़े चावसे खाया करता था और कहाँ आज दूध, मक्खन, मलाई इत्यादि भी उसके लिये आकर्षणहीन हो रहे थे। दो चार कौर मुँहमें डालनेके बाद ज्यादा खाना उसके लिये असंभव हो गया। ऐसा मालूम हो रहा था मानों हृदयके अन्दर कोई शक्ति उसको पीस डालनेकी कोशिश कर रही है!—कोई भस्मासुर दानव उसके मस्तिष्कमें हाहाकार कर रहा है!—जैसे कोई उसके सारे जीवनकी भर्त्सना करता हुआ कह रहा है—'खा ले! क्रान्तिकारी आर्थस जी भर खा ले! दुनिया भूखों मर रही है! माताएँ अपने बच्चोंको दूध तक नहीं पिला सकतीं! रोटीके सूखे टुकड़ेके लिये

बहनें अपने भाइयोंके सामने अपमानित होती हैं ! कोटि-कोटि भूखे नंगे मानव दिन रात अपनी छाती पर जीवनका बोझ लिये तिलमिलाया करते हैं और तू—विप्लवी-दलका सर्वमान्य सदस्य तू यहाँ इस होटलमें बैठकर दूध, मक्खन और-मलाई खा रहा है खा ले ! निर्लज्ज आर्थर। तू इतना बेहया हो जायगा और फिर भी मृत्यु तुझे अपने आलिंगन-पाशमें नहीं बाँध सकेगी, इसकी सम्भावना किसे थी ! तेरी क्रान्तिकारणी बहिन अभी तक पकड़ी जा चुकी होगी और उसकी सारी योजनाएँ मिट्टीमें मिल चुकी होंगी !...

आर्थर पागलोंकी भाँति खड़ा हो गया। उसने तश्तरी उलट दी। समीपस्थ आदमी उसके इस विचित्र व्यवहारपर चकित होने लगे ! तश्तरी उलट देनेसे सारी मेज खराब हो गयी। होटलके नौकरने कहा—'बाबू आपने यह क्या किया ? सारी मेज खराब कर दी ! आपका दिमाग तो नहीं खराब हो गया है !'

आर्थरको अपने ऊपर तो क्रोध आ ही रहा था, अब नौकर की धृष्टताने उसे और भी भड़का दिया। कसकर एक चाँटा रसीद करते हुए वह बोला—'सूअरके बच्चे, आदमी देखकर बातें किया कर !'

होटलका नौकर उसके पुष्ट हाथोंकी चपत नहीं सह सका। गालोंपर रेखाएँ अंकित हो गयीं और पांच मिनट तक वह मूक, निस्तब्ध सा खड़ा रहा। अन्य आगन्तुक भी चुपचाप देखते रहे।

थोड़ी देरके बाद एकने साहस बटोर कर कहा—'वाह साहब, आप तो अच्छा काम करते हैं न ? बेचारेने क्या गलती की थी, जो आपने उसे चांटा जड़ दिया। उसने तो ठीक ही कहा था।'

इतनेमें ही होटलके मालिकने पहुँचकर नौकरसे पूछा क्यों रे, क्या गड़बड़ी मचाता है ? ग्राहक तेरे और मेरे दोनोंके बाप हैं ! उनसे अदबके साथ पेश आया कर· नहीं तो तू तो भूखों मरेगा ही, मुझे और मेरे बीबी बच्चोंको भी भूखों मार देगा। उल्लूके पट्ठे !'

बेचारा गरीब नौकर इस दूसरी मारसे बरस पड़ा। चांटेने तो केवल उसके गालको ही पीड़ित किया था, किन्तु शब्दोंकी मारने उसके सारे शरीरमें आग लगा दी। वह बोला—'क्या ग्राहकोंको यह भी अधिकार हैं कि वे नौकरोंको जब जी चाहे तब मार भी दिया करें। मुझे भूखों मरना स्वीकार है, लेकिन ऐसी नौकरी मैं नहीं चाहता। गरीब हैं तो क्या हुआ। इज्जत रखना जानते हैं। इज्जतके बिना दुनियामें जीना मृत्युसे भी ज्यादा खराब है। ग्राहकोंके जूते आप चाटिये। मुझसे तो नहीं होगा।' यह कहकर नौकर जाने लगा।

मालिकने उसे पकड़ लिया। बोला—'तू बड़ा बदमास है। कल चला जाना। अभी ही चला जायगा तो आज दिन भर क्या तेरा बाप यहांका काम सम्हालेगा। अकेला गंग्रियरों कैसे सारा बोझ सम्हाल सकेगा। दगाबाज !'

मालिकको गालियां देनेकी आदत सी हो गयी थी। उसके

दोनों नौकर गालियाँ सह भी लिया करते थे। लेकिन कभी-कभी जलदोंकी देहमें भी आग लग जाया करती है। माना कि वह आग क्षणिक ही होती है। केवल कुछ क्षण कड़क कर, चमक कर पुनः अन्धकारमें तिरोहित हो जाती है और फिर वही अश्रुवर्षण आरंभ हो जाता है। आज उस नौकरको भी अपनी अवस्थापर क्रोध आ रहा था। उसने कड़क कर कहा 'देखिये, जबान सम्हालकर बात कीजिये; नहीं तो एक लात मारूँगा कि तोंद फट जायगी!

तोंदपर व्यंग प्रहार होता देख मालिक से नहीं सहा गया! उसने अपने काँचके गिलासको उसके चेहरेपर दे मारा! गिलास फूटकर चकनाचूर हो गया और नौकरके चेहरेसे खून निकलने लगा। वह बिगड़कर होटलके मालिकसे चिपट गया और बातकी बातमें उसकी छातीपर सवार होकर गला घोटते हुए कहने लगा 'दोजखके कुत्ते! तेरे पास पैसे हो गये हैं तो क्या तू जो जी चाहेगा वहीं कर लेगा! अभी तेरी जान मेरे हाथोंमें है। मैं चाहूं तो तुझे जहन्नुममें पहुंचा दे सकता हूं। जनम भर तो ग्राहकोंके साथ दगाबाजी करता रहा। आज उन्हें बाप बतलाता है! मैं तो फाँसीपर लटकूँगा ही। दुनियांमें इस तरह प्रतिदिन अपमानित हो-होकर जीनेकी अपेक्षा तो एकबार फाँसीके तख्ते पर झूल जाना ही अच्छा है! लेकिन तू..." कहता हुआ वह दानव बन गया और जोरों के साथ उसका गला घोटने लगा। अब तक तो होटलमें खानेके लिये आये हुए लोग इस लड़ाईको

मनोविनोदका साधन समझ रहे थे, लेकिन मामला यहां तक बढ़ता देख लोगोंके दिलमें घबराहट पैदा हो गयी। कहीं नौकरने अपने मालिकका खून कर दिया तो फिजूलकी परेशानी होगी। गवाही देनी पड़ेगी। पुलिसके सवालोंका जवाब देना पड़ेगा। कितने तो चुपचाप खिसक गये। एकने होटलके मालिकके प्रति सहानभूति दिखलाते हुए कहा‘—ओफ! कैसा बदमाश नौकर रखा है आपने! ऐसे नौकरसे तो नौकरका न रहना ही अच्छा है।’

दूसरेने कहा—‘लेकिन यह पहले तो वैसा नहीं था। मैं तो इसे बहुत ही सीधा सादा आदमी समझता था।

दूसरा नौकर अग्नियरो अपने मालिककी इतनी तौहीनी नहीं देख सका। पहले नौकरकी गर्दन पकड़ कर दबाने लगा। पहला नौकर बोला—‘दबा ले। मेरी गर्दनको तू जितना दबा सके, दबा ले। यही तो मजा है। तू भी नौकर है, मैं भी नौकर हूं। तू भी सर्वहारा है, मैं भी सर्वहारा हूं। तेरे बीबी बच्चे भी अच्छे-अच्छे कपड़ोके लिये और घी दूधके लिये तरसते हैं, मेरे बीबी बच्चे भी तरसते हैं। लेकिन तू मुझे मार रहा है और मैं शोषकको मार रहा हूं! कितना सुन्दर चित्र है यह श्रमिकोंकी दर्दनाक हालतका! आज दुनियांके मजदूर क्यों पिड़ित और क्लेशित हैं, इसे समझनेके लिये इससे बढ़कर दृश्य कहां मिलेगा!! खूब हाथ चलाता जा! तेरे पास लाठी नहीं है क्या? ले आ उसे भी! .. !!

लेकिन गोंग्नियरोको इतनी अक्ल कहां थी कि वह इन सब

बातोंको समझता ! वह तो अपनी तनख्वाह बढ़ानेका और मालिकका कृपापात्र बननेका इसे बहुत ही अच्छा अवसर समझे हुए था। उसके हाथ चलते ही गये !

'भले आदमियो, देखते क्यों हो ? दो आदमियोंकी जान जा रही है और तुमलोग टुकुर टुकुर ताक रहे हो !
आदमीने मुँहका पसीना पोंछते हुए कहा !

आर्थर यह सब कुछ देख रहा था और देख कर भी मौन था।

इतनेमें ही बाहर कुछ हल्ला सुनायी दिया। एक आदमी दौड़ा-दौड़ा आया और बोला—'वह क्रान्तिकारिणी महिला जिसकी तलाशमें सारा यूरोप हैरान हो रहा था, आज पकड़ी गई।'

क्रान्तिकारिणी महिला पकड़ी गयी, यह सुनकर लोग होटलसे बाहर निकल गये। नौकरने अपने मालिककी गर्दन छोड़ दी और होटलसे बाहर निकलकर देखने लगा !

लोगोंमें खलबली मची हुई थी। सबके सब कानाफूसो कर रहे थे।

आर्थर चुपचाप सबोंसे दूर खड़ा-खड़ा यह सब देख रहा था ! धरती फटी नहीं, अन्यथा वह उसमें समा जाता। उसे भीषण आत्मग्लानि हो रही थी। उसके पार्थिव अस्तित्वका अणु-अणु उसकी भर्त्सना कर रहा था। उसका रोम-रोम उसे धिक्कार रहा था। हृदयके अन्दर कोई दानव आग उगल-उगलकर उसे

जला डालना चाहता था !......आर्थस ! तूने यह क्या किया ? किस अन्ध अमंगलकी सृष्टि तू करने जा रहा है ? तेरी क्रान्तिकारणी बहनको पकड़ना क्या आसान बात थी ! बड़ेसे बड़े गुप्तचर भी उसे नहीं पकड़ सकते थे। शासकवर्ग नाक रगड़कर मर जाता, फिर भी लौरेटाका चिह्न उन्हें नहीं मिलता। कितनी बुद्धिमती और कार्यपटु है लौरेटा। किन्तु—किन्तु हाय ! तूने—पापी आर्थस ! तूने उसका सर्वनाश कर दिया ! क्रान्तिकारी-दल तेरे इस पाप-कृत्यपर सदैव आहें भरता रहेगा ! माना कि यह बात किसीको भी नहीं मालूम हो सकेगी, किन्तु तेरा हृदय कैसे शान्त रह सकेगा ! बैठकके कमरेकी प्रत्येक चीजसे धिक्कार की आवाज निकलेगी ! रात-रात भर अब तू नहीं सो सकेगा ! स्वप्नोंमें लौरेटा आयेगी और तेरी भर्त्सना करेगी ! तू संसारमें महाक्रान्तिका सृजन करके मानव-जातिके समस्त निवारणीय क्लेशोंको दूर करना चाहता था ! तेरी योजनाएं आसमानको चूमती थीं और तेरी विप्लवकारिणी कल्पना सितारोंको तोड़कर धरणी पर ले आती थी। किन्तु तू—तू पापी नराधम आर्थस, तू आज शासकवर्गसे भी ज्यादा पतित निकला ! तुझे मर जाना चाहिये था ! तेरे बिना, तेरे जैसे पापपरायण व्यक्तिके बिना विल्पवी-दलका कुछ भी नहीं बिगड़ता ! वह ज्योंका त्यों रहता और सदैव पूंजीपतियोंके विनाश-साधनमें लगा रहता। किन्तु लौरेटाकी मृत्युसे विप्लवी-दलकी अपरिसीम क्षति होगी ! वह आभाहीन हो जायेगा !... ..

आर्थस एक कोनेमें खड़ा-खड़ा सिहर रहा था !

इतनेमें ही दो चार छात्र दौड़े-दौड़े आये और बोले कि पुलिसवाले क्रान्तिकारिणीको पकड़े हुए आ रहे हैं! उससे पैरोंमें और हाथोंमें जंजीरें जकड़ी हुई हैं! पुलिसके आठ सशस्त्र आदमी उसको घेरकर ला रहे हैं !......"

लोग उत्सुक हो कर प्रतीक्षा करने लगे। भीड़में एक आदमी ने अपने साथीसे कहा—'ओह ! बड़ी बहादुर रमणी थी ! धन-पतियोंका छक्का छुड़ा दिया था इसने ! यह कैसे पकड़ी गयी। मुझे तो बड़ा दुःख हो रहा है !'

'धीरे-धीरे बोलो' यदि कोई सरकारी आदमी सुन लेगा तो बँध जाओगे।' उसके दूसरे साथीने कहा।

तीसरा मौन नहीं रह सका। बोला— 'अजी, दुनियामें दगा-बाजों और स्वार्थपरायण व्यक्तियोंकी कमी किस दलमें रहती है ! सर्वत्र इनका प्रवेश रहता है। इसके दलमें भी कोई ऐसा ही आदमी होगा· जिसने पुरस्कारके लोभसे या अन्य किसी लोभसे इसे पकड़ा दिया होगा !"

पहला बोला—' पुरस्कारका लोभ तो क्या होगा ! हाँ, दलमें अपनेको सर्वसर्वा बनानेका लोभ अवश्य हो सकता है ! क्रान्ति-कारियोंको धनका लोभ नहीं होता है ! यह रमणी अपनी वीरता और अनुपम शौर्यसे उसकी ईर्ष्याभाजन बन गयी होगी।"

दूसरा बोला—"लेकिन चाहे जो हो। वह व्यक्ति कितना कमीना—कितना नीच होगा, जिसने इस वीर बालाको पकड़ा

दिया, जिसे पकड़नेमें बड़े-बड़े गुप्तचरोंके भी दांत खट्टे हो गये थे।"

तीसरा साथी बोला—'तुम लोग भी विचित्र आदमी मालूम होते हो! यह कैसे जानते हो कि किसी क्रान्तिकारीके कारण यह पकड़ी गयी है। इसे खोजनेमें क्या जाने कहां-कहां के लोग व्यस्त थे।'

आर्थस सब कुछ सुन रहा था। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह उन्हें कह दे कि मैं ही वह कमीना हूँ,—मैं ही वह दगाबाज दुष्ट क्रान्तिकारी हूँ, जिसके कारण यह वीरबाला पकड़ी गयी। तुम लोग मुझपर थूको। घृणाभरी दृष्टिसे मेरी ओर देखो। मुझपर धूल फेंको। तभी—हां, तभी मेरे पापका,—मेरे इस महान् कुकर्मका प्रायश्चित आंशिक रूपमें हो सकेगा।

कुछ ही देर बाद आर्थसने अपने सूने नेत्रोंसे देखा लौरेटा-को जंजीरोंसे जकड़े हुए पुलिसके आदमी घोड़ागाड़ीपर चले आ रहे हैं! और उनके पीछे-पीछे पागलोंकी भांति वह गायक चिल्लाता हुआ दौड़ा आ रहा है! उसके चेहरेपर हाहाकार मरघट की लपटों सी ज्वाला लिए हुए नृत्य कर रहा था! वह चिल्ला रहा था—'धोखा-धोखा! सारी दुनिया धोखेमें है! अरे, मैं कहता हूं, यह वह महिला नहीं है! यह तो सरसीके शतदलसे भी ज्यादा सुकुमार, तारकोंसे भी ज्यादा सरल और अकिञ्चन लौरेटा है! यह ग्रामीण बाला भला क्रान्तिके रहस्योंको क्या समझेगी! पुलिसवालो, मुझसे

गलती हो गयी। इसे छोड़ दो। यह सर्वथा निरपराध है! क्रान्ति क्या करेगी! क्रान्तिका मतलब तो यह समझती ही नहीं है! पाटलकुसुमोंसी मंजुल इस सौरभमयी लौरेटाको छोड़ दो! मुझे धोखा दिया गया है। एक दुष्ट, दगाबाज, प्रपंच-प्रवीण व्यक्तिने मुझे धोखेमें डाल कर मेरी लौरेटाको इस तरह पकड़ा दिया है! वह हत्यारा था—खूनी था नारकीय कुत्ता था। ......अरे, बचाओ-बचाओ! मेरी लौरेटाको, मेरी सहज सुकुमार, रसस्निग्ध लौरेटाको, -मेरे स्वप्नलोककी राजकुमारीको हत्यारे पकड़े ले जा रहे हैं! उसके किसलय-पेलव करोंसे लोहे की जंजीरें उतार लो वे हाथ फूलोंकी माला पहननेके लिये बनाये गये हैं! उसके चरणोंमें जंजीरें डालकर ओ नरपिशाचो! तुम घोर अन्याय कर रहे हो! उन चरणोंको अपनी आँखें खोलकर देखो। तुम्हें सौन्दर्यकी किरणें वहाँसे विनिःसृत होती हुई दिखलायी देंगी! वह स्वर्गसे भेजी हुई अप्सरा है। हत्यारो! उसे छोड़ दो! मैं गलती कर गया! भीषण भूल हो गयी मुझसे! मुझे क्या पता था कि मेरी स्वर्ण-रश्मियोंसे स्नाता लौरेटा ही उस वैज्ञानिकसे इस तारक-खचित यामिनीमें मिलनेके लिये आनेवाली है!......अरे, मैं क्या करूँ! सारा संसार आज विद्रोही हो गया है। क्या कोई भी मेरी लौरेटाको नहीं छुड़ा सकता?—क्या कोई भी इन दानवोंके खूनी पंजोंसे इस हरिणी को नहीं बचा सकता? उसके नवनीत कोमल हाथ जंजीरोंके बोझसे ...!!

वह चिल्लाता हुआ, क्रन्दन करता हुआ घोड़ागाड़ीके पीछे-पीछे दौड़ता चला जा रहा था। भीड़ वाले आश्चर्य-चकित होकर उसकी ओर देख रहे थे। कुछ उसकी दशापर हँस भी रहे थे।

आर्थर चुपचाप खड़ा था। उसके हृदयमें विचित्र आन्दोलन हो रहा था। उसके पास पिस्तौल भी नहीं थी, अन्यथा वह आत्महत्या कर लेता।

रैमोनाके केश बिखरे पड़े थे। वह मार्गकी धूल अपने केशोंपर डाल-डाल कर उन्हें खींच रहा था। कभी क्रोधान्ध हो कर अपने गालोंपर थप्पड़ मारता, कभी दाँत कटकटाता, कभी चीखने लगता। विचित्र हालत हो रही थी उसकी! उसके प्राणोंकी विकलता अपरिसीम हो चली थी! विक्षुब्ध सागरका गर्जन उसके प्राणोंमें हो रहा था। शत-शत ज्वालामुखी एक ही साथ उसके मस्तिष्कमें फूट रहे थे। चिल्लाते-चिल्लाते उसके सूखे, मुरझाये हुए ओठ सुलग उठते थे। मरुस्थली से अन्तर्देशमें आँधियाँ चल रही थीं। सुकुमार अभिलाषाकी आशा-मालञ्चाश्रित व्रतति-बालामें आग लग गयी थी। उमंगोंके कोमल, सुरभित पुष्पोंकी नववीत-मसृण पंखड़ियाँ उसकी लपटोंमें जल रही थीं। सिरसे लेकर पैर तक उसके सारे शरीरमें एक खूनी हड़कम्प मचा हुआ था। वह चिल्ला रहा था—'अरे यह क्या हुआ? मैंने अपने ही हाथोंसे अपनी वाटिकाको उजाड़ डाला, अपने सहकारी पर कूकती हुई श्यामाका गला घोंट दिया और अपने ही निर्दय करोंसे मालिनको कत्ल कर दिया! इतनी बेरहमीसे—इतनी

निष्ठुरतासे भी क्या कोई अपने प्रति अन्याय कर सकता है!! कैसी अन्ध छलना है! आह! व्योम-पथमें ज्योतिष्क-कुमार मेरी इस वहशतपर—इस घातक उन्मादपर हँस रहे हैं! मयङ्क भी मेरा उपहास कर रहा है! जो तारे एक दिन अर्धरात्रिकी नीरव और मदिर घड़ियोंमें हम दोनोंकी रँगरेलियोंको देख कर आपसमें कानाफूसी किया करते थे और कहा करते थे कि इनके जीवनमें कितना रस—कितनी मधुरिमा—कितनी म्रदिमा बिखरी पड़ी है दुःखकी एक हलकी सी बदरिया भी इनके जीवन-व्योमको स्पर्शित नहीं कर पायी है, इनके सौभाग्यकी अपरिसीम विस्तृति राशि-राशि कविताओंकी मादकताको लेकर विश्व-पथमें मुसकराया करती है! आज वही मेरे इस आत्मघातक कृत्यपर हँस रहे हैं और कह रहे हैं कि इस पागलने अपनी रसवन्तीको अपने ही हाथोंसे मृत्युके मुखमें फेंक दिया!—इस यूसुफने अपनी जुलेखाको अपने ही हाथोंसे जहरका प्याला पिला दिया और वह भी अमृत समझकर!...

आर्थस चुपचाप खड़ा था। उसके पैरोंमें पत्थरसे पड़ गये थे। भीड़के एक कोनेमें वह अपनी छातीमें आ-आ कर बिखरने वाली चिनगारियोंको सँवार रहा था!

आधी रात सॉंय-सॉंय कर रही थी। पुलिस वाले लौरेटाको ले गये! रैमोना—भाग्यहीन रैमोना उसी तरह चिल्लाता हुआ उनके पीछे दौड़ता गया। और आर्थस,—लौरेटाको एक दिन अपनी क्रान्तिकारिणी बहिन कह कर गलेसे लगा लेने वाला आर्थस आज कमीना बन कर यह सब कुछ देखता रहा।

———

१६

प्राभातिक विहगोंके कलरवसे उद्यान मुखरित हो उठा। वापीकी निर्मल सलिल-राशिकी नीलिमा नव किरणोंके स्पर्शसे अनुरञ्जित हो उठी।

आथस वापीके तटपर बैठकर सोच रहा था,—अब मेरा मार्ग निष्कण्टक है। मैं पुनः विप्लवी-दलमें अपनी पुरानी शानके साथ कामकर सकूँगा। मेरे ऊपर अब कोई उँगली नहीं उठा सकेगा। लौरेटाको तो फांसी हो ही जायगी। उसका बचाना असंभव है!

उसने समीपस्थ वृक्षोंसे कुछ फूल तोड़ लिये और मनो-विनोदके लिये उनकी माला बनानेका प्रयास करने लगा। उसे अपने ऊपर हँसी आ रही थी कि भला जो हाथ पूँजीपतियों और साम्राज्यवादी डाकुओंके अस्तित्वको खाकमें मिलानेके लिये

बनाये गये हैं,—जिनमें पिस्तौलके अतिरिक्त अन्य कोई चीज शोभा नहीं पा सकती, वे आज पुष्प-माला बना रहे हैं !

कुछ देरतक यों ही बैठे रहनेके उपरान्त उसने उन पुष्पोंको तोड़ मरोड़कर वापीके जलमें फेंक दिया और आपही-आप कहने लगा—"मैं क्रान्ति पथका पथिक हूं। जब तक अपनी मंजिल तक नहीं पहुंच जाऊँगा, तब तक मेरा काम केवल ध्वंस ही ध्वंस है। निर्माणके दिन तो तब आयेंगे, जब संसारके समस्त पूंजीपति और राज्यपदाधिकारी करबद्ध होकर श्रमजीवी-दलके नेताके सामने खड़े होंगे और अपने द्वारा किये गये राशि-राशि अन्यायों एवं दानवी अत्याचारोंके लिये क्षमा मांगेंगे। मेरे जीवनमें अभी फूलोंका कोई स्थान नहीं है ! मैं कांटोंको प्यार करता हूं।" और यह कहकर उसने एक कांटा तोड़कर अपनी छातीमें चुभो दिया। वहां से रक्त निकलता देख वह जोरोंसे हँस पड़ा। न जाने क्या सोचकर तो उसने उस रक्तको अपने ओठोंपर लगा लिया और एक क्रान्तिकारी गीत गुनगुनाने लगा।

गीतकी आवाज क्रमशः तेज होती गयी। अभी तक उस उद्यानके मालिकको आर्थरकी उपस्थितिका पता नहीं था। वह बँगलेमें बैठा-बैठा चाय और बिस्कुटके मजे ले रहा था। गीतकी आवाज कानोंमें पड़ते ही वह चौंक खड़ा हुआ और अपने नौकरको बुलाकर बोला—"देखो तो, बागीचेमें कौन घुस आया है। तुम तनिक भी सावधानीसे काम नहीं लेते। यदि ऐसी ही हालत रही तो तुम्हें जवाब देकर कोई दूसरा नौकर रखना

पड़ेगा। तनख्वाह देता हूं या मुफ्तमें काम लेता हूं। मुफ्तखोर कहींके!"

बेचारा नौकर जाड़ेमें काँपता हुआ वापीके पास पहुंचा और बोला—'आप अनुमति लिये बिना ही दूसरेके बँगलेमें क्यों घुस आये? जानते हैं, इसकी क्या सजा है?'

आर्थसने कड़ी आवाजमें उत्तर दिया—'जाकर अपने मालिकको भेज दो। मैं नहीं उठता।'

नौकर चुपचाप अपने मालिकके पास चला आया और आकर बोला—'वह तो कोई पागल मालूम होता है। कहता है कि जाकर अपने मालिकको भेज दो। मैं नहीं उठता।'

बँगलेके मालिक अपनी पत्नीके साथ प्रेमालापमें तल्लीन थे। कभी उसके मदिर अधरोंको चूमते, कभी उसे अपने बाहुपाशमें बांधते, कभी उसके चिबुकको पकड़कर हिलाते। प्रभातकी उन सुनहली, ज्योतिर्मयी घड़ियोंमें संसारके अधिकांश धनपति इसी प्रकार अपनी शारीरिक वासनाओंको सुहलाया करते हैं। नौकरकी बात सुनकर उन्हें क्रोध हो आया। बोले—"उल्लू और गधेके बच्चे, तुझसे एक पागल भी नहीं भगाया जा सकता है तो तू चोरों और डाकुओंसे मेरे बँगलेकी क्या खाक रक्षा करेगा! इस महीनेके अन्तमें अपना हिसाब कर लेना।" और यह कहकर एक हाथसे अपनी बेंत सम्हाले हुए और दूसरेसे अपनी पत्नीकी कमर थामे हुए वे वापीकी ओर चल पड़े।

वहां पहुंचकर क्रोधयुक्त स्वरमें बोले—"अबे ओ नालायक ! क्या कर रहा है यहां ? बँगला क्या तेरे बापका है ?"

आर्थस कुछ बोला नहीं। चुपचाप उठ खड़ा हुआ और कसकर एक चांटा रसीद कर दिया। बँगलेका मालिक चक्कर खाकर गिर पड़ा और हांफने लगा! उसकी पत्नी आर्थसको निर्निमेष देख रही थी। शायद कुछ पहचाननेकी कोशिश कर रही थी। एकाएक उछल पड़ी। बोली—'अरे, आर्थस ! भैया आर्थस ! प्यारे भैया, तुम यहां कैसे ?'

आर्थसने अभीतक अपनी बहिन जूलियाकी ओर दृष्टि नहीं डाली थी। उसे देखकर वह उल्लसित होकर बोल उठा 'बहिन, जूलिया ! तुम यहां कैसे ?'

जूलियाने भाईके गलेसे लगते हुए कहा—'ये मेरे पति हैं। दो मास हुए, इनसे मेरी शादी हो गयी है।'

'ओफ् ! तब तो बड़ी गलती हो गयी।' कहकर आर्थस अपने बहनोईकी गर्द झाड़ने लगा।

'कोई हर्ज नहीं। यह सब हो ही जाता है। मैं भी आपको चांटा रसीद करनेका विचार कर ही रहा था कि जूलियाने आपका परिचय दे दिया, अन्यथा आपकी गर्द झाड़नेके लिये मुझे धोबी बुलवाना पड़ता। खैर, कोई हर्ज नहीं। आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। आइये, हम दोनों पहले एक दूसरेके गलेसे तो मिल लें !'

दिवाकरकी किरणें धीरे-धीरे विश्वको अधिकाधिक आलोकित

करती जा रही थी। थोड़ी देरके बाद ही वे तीनों जने बँगलेके बरामदेमें आरामकुर्सियोंपर बैठकर चाय पीते हुए दिखायी देने लगे।

'अच्छा! आप क्या काम करते हैं आर्थस महोदय।' जूलियानाके पतिने पूछा।

'काम? बहुतसे हैं! आप सरीखे भले आदमियोंके बँगलोंमें घुस जाता हूं और जितने रुपयोंकी जरूरत होती है, ले लेता हूं!'

'सचमुच, तुम्हारी पुरानी आदत अभीतक नहीं छूटी आर्थस भैया! तुम हर बातमें मजाक करने लगते हो।' जूलियानाने बड़े ही मीठे स्वरमें कहा!

'नहीं, तुम इसकी कोई चिन्ता न करो। अपने बहनोईसे तो हर कोई माजक किया करता है, फिर ये तो ठहरे जूलियटकी तरह हसीन और दिलरूबा!'

आर्थसको हँसी आ गयी। अपनी मांसल भुजाएँ दिखलाते हुए बोला—'अभी तो उँगलियोंकी ही मार पड़ी है!'

जूलिया अपने भाईके उद्दण्ड मजाकसे कुछ सकपकायी। फिर बोली—'आर्थस, तुम इतने बेहूदे तरीकेसे तो कभी बातें नहीं किया करते थे? यह परिवर्तन तुममें कैसे हो गया?'

'वाह' और आरंभमें मुझसे इन्होंने बहुत ही अच्छे तरीकेमें बातें की थीं? नालायक और इसी तरह न जाने क्या-क्या बक गये थे!'

'नहीं-नहीं। कोई हर्ज नहीं। मुझे बड़ा आनन्द मिल रहा है! जूलिया, तुम चिन्ता न करो। अपनी पत्नीके भाइयोंसे गाली

सुननेमें और मार खानेमें जो मजा है, वह अतुलनीय है !......
हाँ, तो आर्थस ! तुम दो चार गालियाँ मुझे और दो न ?'

आर्थस इस बार हँस पड़ा। चायकी प्याली उसके हाथोंसे छूटकर जमीनपर गिर पड़ी और फूट गयी।

'आर्थस ! तुम होशमें हो या नहीं ?' उसकी बहिनने कुछ तीखे स्वरमें कहा।

"होशमें होता तो दूसरेके बँगलेमें ही क्यों आता ?"

'नही-नहीं। कोई हर्ज नहीं। सबेरे-सबेरे अच्छा शकुन हुआ है ! अब मैं उन क्रान्तिकारियोंको अवश्य पकड़ लूँगा। क्या कहूं ! उस विप्लविनीको भी पकड़ लेता। लेकिन कुछ देर हो गयी, अन्यथा आज मैं तुम्हें हीरे मोतियोंसे जड़ देता !'

आर्थस चौंका ! उसने अपने चेहरेके भावको छिपाते हुए कहा—'वह विप्लवकारिणी महिला पकड़ा गयी न ? सारे देशको तबाह कर डाला था उसने ! मुझे तो उसके डरसे रात-रात भर नींद नहीं आती थी !'

जूलिया इस बार हँसी। बोली—'भैया, तुम भी धन्य हो ! अपने बहनोईको तो अपनी मांसल भुजाओंका भय दिखला सकते हो और एक स्त्रीसे इतना डरते हो ?'

जूलियाके पतिदेव बोले—'अरे, तुम उसे एक साधारण सी स्त्री समझती हो क्या ? उसने सारे देशको कँपा दिया था। आर्थस बेचारा तो अभी बच्चा है ! बड़े-बड़े बूढ़े भी उसके कारण रात-रात भर नहीं सोया करते थे ! क्यों आर्थस ठीक बात है न ?'

जूलिया बोली—'आर्थस तो अपने बहनोईका पक्ष अवश्य लेगा ही।'

आर्थसने अपने ओठोंपर कृत्रिम मुसकान बिखेरकर कहा—'अच्छा, एक बात तो बतलाइये। डाकुओं और क्रान्तिकारियोंमें क्या अन्तर होता है ?'

जूलियाका पति हँसा। बोला—'सचमुच तुम्हें अभी कुछ दिनों तक अपने साथ रखना पड़ेगा! तुम्हें यह भी मालूम नहीं है! डाकुओं और क्रान्तिकारियोंमें मैं कोई विशेष भेद नहीं मानता। डाकू अपने स्वार्थके लिये हत्या करते हैं और धन एकत्र करते हैं; ये क्रान्तिकारी मानव-जातिकी हितैषणाकी आड़में हत्या करते हैं और धन एकत्र करते हैं! बस, इतना ही फर्क है! डाकुओंका ही गिरोह सभ्य और संस्कृत रूप ग्रहण करके क्रान्तिकारी दल बन गया है।'

आर्थसका हृदय क्रोधसे जल उठा। लेकिन उसने अपने चेहरे पर उदासीनताका भाव लाते हुए कहा—'आप उन क्रान्तिकारियोंको पकड़ियेगा कैसे ? वे तो बड़े भयानक होते हैं ? सुनता हूं कि हत्या कर डालना तो उनके लिये एक मामूली सी बात है।'

जूलिया हँसी। बोली—'यह सब कुछ मेरे कारण हो रहा है। इन्हें तो कुछ पता ही नहीं था। दो वर्ष पहले डेड्रियामा नामक एक देहातीको फांसीकी सजा हुई थी। उसने अपने गांवके किसी बूढ़े किसानको जानसे मार डाला था। साथ ही वहांके स्टेशन

मास्टरको भी इतना मारा था कि शायद वह अभी तक पलंगसे नहीं उठ सका होगा ! डेड्रियामाका एक मित्र था। वह भी इसमें सम्मिलित था ! उसे भी जेलकी सजा दे दी गयी थी। उसके घरकी तलाशी लेते समय रशियन भाषामें लिखा हुआ एक पत्र मिला था, जिसे उठाकर इन्होंने जेबमें रख लिया था। वह फिर आजतक पढ़ा नहीं गया। कोट सूटकेसके अन्दर चला गया और वह पत्र कोटके ही अन्दर पड़ा-पड़ा अपनी किस्मत पर रोता रहा। कल मैंने सूटकेसकी चीजोंको सहेज कर रखने वक्त उस पत्रको निकाला और पढ़ा। मेरे पतिदेव तो रशियन भाषा जानते नहीं हैं। मैंने किसी तरह टटोल-टटोलकर उसे पढ़ा। उसमें क्रान्तिकारियोंके वासस्थलका पता दिया हुआ है और इसके अतिरिक्त अन्य बहुत सी बातें भी हैं, जिन्हें मैं अच्छी तरह नहीं पढ़ पायी। तुम तो रशियन अच्छी तरह जानते हो। उसे पढ़ो न। ठहरो, मैं लाती हूं।' कहकर जूलिया उठी और वह पत्र ले आयी।

जूलियाका पति कुछ डर रहा था। उसकी इच्छा तो हो रही थी कि वह जूलियाको पत्र लानेके लिये मना कर दे, किन्तु अभद्रताके भयसे उसने ऐसा नहीं किया। और साथ ही साथ जूलियाकी अप्रसन्नताका भी भय था। शायद वह अपने मनमें सोचे कि मेरे भाई पर विश्वास नहीं करता है।

आर्थसने पत्रको आदिसे लेकर अन्ततक पढ़ लिया और सब कुछ समझ गया। बोला—'मैंने किसी तरह पढ़ तो लिया है,

किन्तु सब बातें समझमें नहीं आती हैं। कई शब्द तो मेरे लिए सर्वथा नवीन हैं।'

'तुम तो कहा करते थे कि मैं रशियन भाषाकी किताबें बड़ी आसानीसे पढ़ लिया करता हूं।' जूलिया हँसकर बोली।

'यों ही कह दिया करता था। तुम्हारे सामने बड़ा बननेमें मुझे एक विशेष आनन्दकी उपलब्धि होती थी।' आर्थर मुसकराकर बोला।

'अच्छा, लाओ। पत्र मुझे दे दो।' कहकर जूलियाके पतिने आर्थरके हाथोंसे वह पत्र ले लिया।

कुछ देर तक इधर-उधरकी बातें होती रही। फिर तीनोंने एक साथ भोजन किया। भोजन करते समय आर्थरने जान बूझकर केवल मूर्खतासे भरी हुई बातें कीं। जूलिया अपने भाईकी बातोंपर लज्जित और दुःखित हो रही थी और उसका पति प्रसन्न हो रहा था। जूलिया सोच रही थी 'मेरा भाई अपने बहनोईके सामने मुझे हास्यास्पद बना रहा है। ये भी समझेंगे कि कैसे मूर्ख भाईकी बहिन है।' और उसका पति सोच रहा था—'यह तो अव्वल दर्जेका बेवकूफ है! इसके पत्र पढ़ लेनेसे किसी प्रकारकी हानिकी आशङ्का नहीं है!'

भोजन करनेके उपरान्त आर्थरने दोनोंसे बिदा मांगते हुए कहा—'अच्छा, आप लोगोंको फिर कब दर्शन देने जाऊँ?'

जुलियाको दर्शन देनेका मजाक भी अच्छा नहीं लगा। उसने तीखे स्वरमें कहा—'जब तुम्हारी इच्छा हो!'

उसके पतिने कहा—'नहीं, नहीं, इच्छाकी बात नहीं है। जूलिया तुम अपने भाईको क्या तनिक भी प्यार नहीं करती। मैं तुम्हारी जगह पर होता और इस प्रकार काफी अर्सेके बाद यदि मुझे मेरा भाई मिलता तो मैं कभी नहीं जाने देता। कमसे कम एक हफ्ते तक तो उसे अपनी आँखोंके सामने अवश्य ही बिठाये रखता।'

आर्थस हँसा और पत्रकी बातें सोचता हुआ बँगलेसे बाहर निकल गया। यह वही पत्र था, जो लौरेटाने रेमोनाके प्रति लिखकर बूढ़े किसानको दिया था!

१७

रैमोना,—भाग्यहीन, चिर-वञ्चित रैमोना अर्धरात्रिके निविड़ अन्धकारमें शैल-शिलाओंपर सिर पटक-पटककर रो रहा था! कई स्थान रक्तसे अत्यन्त अनुरञ्जित हो गये थे!

चारों ओर नीरवता छायी हुई थी। केवल कभी-कभी कोई आवारा पंछी अपने पंखोंकी फड़फड़ाहटसे उस नैश नीरवताको भंग करनेका प्रयास कर रहा था। समीरण भी शान्त था। आज उसके प्राणोंमें कोई स्पन्दन—कोई हिल्लोल नहीं थी। चाँद विनाशके न जाने किस अन्धकारित महोदधिमें डूब मरा था और तारकोंके स्मितको लुप्त करती हुई—रजनीके उल्लासको लूटती हुई वारिदमालाएँ भी आ पहुंची थीं और कत्ल किये हुए प्राणीकी भाँति व्योम-पथमें बेहोश पड़ी थीं। न गरज रही थीं, न बरस

रही थीं और न वहाँ से जा रही थीं। कहीं-कहीं तारकोंकी भाँति कुछ रक्तविन्दु दिखलायी दे रहे थे।

रैमोनाने अपने रक्तसे उँगलीको अनुरञ्जित किया और फिर एक शिलापर सुन्दर अक्षरोंमें धीरे-धीरे लिखा—'लौरेटा!' लिख कर उसपर अपने ओठोंको रख दिया।

इस बार हवाका एक झोंका आया और समीपस्थ विटपी-दल धीरेसे कुछ बोल उठे। नीरव निस्संग यामनी न जाने क्यों तो सिहर उठी।

उफ़! उस समय रैमोनाका हृदय कितना पीड़ित—कितना सन्तप्त हो रहा था, इसकी आंशिक कल्पना भी शिक्षाओंको कँपा डालती है! स्मशानके भयंकर निशीथकी सी घातक साँय-साँय उसके प्राणोंमें छा रही थी। सब कुछ नीरव हो गया था। जीवन-का सारा उल्लास—सारा रस-कल्लोल उस दाहक मौनताके अन्धकारमें खो गया था। व्याकुल पाषाण की भाँति, ग्रीष्मसे मध्याह्नमें जलती हुई मरुस्थलीके लहकते हुए पाषाणकी भाँति वह निश्चल, पड़ा था, अपने तपते हुए ओठोंको रक्तसे लिखे हुए नाम पर रखे हुए। अन्धकारी उस पीड़ामयी मायामें प्रेम-प्रवञ्चित रैमोनाके जीवन-दीपककी बाती डगमग हो रही थी।

जीवनकी सारी लालसाएँ बेहोश होकर खून उगल रही थीं। अरमानोंकी सुप्त, शिथिल चेतनाका आकुल क्रन्दन धीरे-धीरे गंभीर विषादके श्यमाञ्चलमें मौन हुआ जा रहा था। अन्त-र्व्योमकी सारी श्रीसुषमा लुट चुकी थी। तारकोंका स्मित और

सुधांशुका ज्योत्स्ना-वर्षण उमड़ घुमड़कर आती हुई दुर्भाग्यमयी मेघमालाओंके द्वारा नष्ट हो रहा था। हृदय क्या था? कुचले हुए—मसल-मसल कर सताये हुए पाटल-पुष्पोंकी पँखड़ियोंकी भाँति—समीरणके निर्मम, निष्ठुर आघातोंसे पीड़ित होकर इधर-उधर उड़ती हुई पंखड़ियोंकी भाँती उसकी अनुरागमयी भावनाएँ शुष्क और श्रीहीन होकर, सारी मसृणता और सारी कोमलता खोकर अपरिसीम शून्यतामें लुप्त होती जा रही थीं। वह अब क्या करे! किसके पास जाए? किसके पास जाकर अपना दुखड़ा रोये! .. कौन उसकी हाहाकारमयी अन्तर्व्यथाका ओलोड़न शान्त कर सकेगा?—कौन उसकी लौरेटाको वापस कर सकेगा। वह पुलिशमें निष्ठुर कर्मचारियोंके द्वारा सतायी जा रही होगी! उससे विविध प्रकारके प्रश्न पूछे जा रहे होंगे। वह उनका क्या उत्तर देती होगी! सुख, श्रीसुषमाकी मनोरम वीथियोंमें सौरभ विकीर्ण करनेवाली शतदल-कुमारी उनके अपावन संसर्गसे कितनी विषण्ण—कितनी कुण्ठित हो रही होगी! अपनी मदिरामयी चितवनसे प्यारकी अजस्र वर्षा करनेवाली वह रूपपरी—रूप और रसकी वह साकीबला कैसे उन दानवोंके द्वारा किये गये अत्याचारों, उत्पीड़नोंको सह रही होगी। वह तो अपराजिताकी मालञ्चशयिता कुसुम-लताकी भाँति कोमल और मधुरिमामयी है। उन कठोर प्रश्नोंको वह कैसे सह पाती होगी! शरच्चन्द्रिकोज्वल यामिनीमें सरिताके तटपर दूरगत बाँसुरीकी आवाज सुनकर मद-विभोर हो उठनेवाली वह अनुरागवती कारागारकी अंधेरी

कोठरी में कसे साँस ले रही होगी !– जिसके जीवनमें केवल कुहू-कुहू की मनोरम, मर्ममधुर ध्वनियाँ ही बिखरा करती थीं, वह अब कारण्डोंकी कठोर, कर्कश आवाजसे कैसे अपने चित्तको स्थिर रख पाता होगी !...उफ् ! रैमोना कितना सोचे— कितना पश्चात्ताप करे, अनुतापकी लपटें अपने भयावह स्वरूपको लेकर उसके भावुक हृदयको कितना जलायें।... सब कुछ तो खो गया ! एक क्षीण आशा थी। जीवनके सघन अन्धकारमें आशाकी छोटी-सी सुनहली रश्मि-रेखा थी। उसीको देख-देख कर वह अपनी आहत अभिलाषाओंको पुचकारता हुआ जीवन-पथपर बढ़ा चला जा रहा था। अब वह रश्मि-रेखा भी लुप्त हो गयी और इस बेदर्दीके साथ—इस घातक आत्म-द्रोहमयी प्रवञ्चनाके साथ लुप्त हुई कि कुछ न पूछो !—रैमोना ही जानता है कि उसका मस्तिष्क—सदैव नित्य नूतन कविताओंकी अवतारणा करनेवाला मस्तिष्क किस हाहाकारमयी ज्वालामें छटपटा रहा था कराह रहा !

हृदयके अन्दर न जाने कौन तो रैमोनाकी भर्त्सना करता हुआ उससे कह रहा था रैमोना ! अब रोनेसे क्या होगा ? इतने दिनों तक तो रोता रहा ! रो-रोकर अपनी आँखोंको प्रभाहीन करता रहा ! आँसुओंको बरसा कर प्रेयसीका पथ सजाता रहा। अब अधिक रोनेसे—क्रन्दन करनेसे—अपने आर्त्तनादोंसे निर्जन प्रान्तरोंकी नीरवता भङ्ग करनेसे क्या होगा ! पागल ! लौरेटा तो अब तुम्हें मिल चुकी !—उसे तू अब अपने तृषाकुल नयनोंके

सामने बिठाकर मिलनके गीत तो गा चुका !...लेकिन अपनी इस सर्वदाहक भूलपर एक बार जी भरकर हँस तो ले! पागल बनकर, दीवाना बनकर सब कुछ भूल जा—सारी वेदनाओंको विस्मृतिके श्यामांचलमें, सो जाने दे और थोड़ी देरके लिये जी भरकर हँस ले! तेरी हँसीको इस निर्जन प्रान्तके विटपी-दल सुनेंगे! आकाशपथमें बिखरी हुई ये तारकावलियाँ सुनेंगी! सुदूर किसी पर्वतके हृदयसे निकलकर वन-वन भटकती हुई यह सरिता सुनेगी! नीड़ोंमें सोयी हुई विहग-कुमारियाँ सुनेंगी। रैमोना, तेरी हँसी व्यर्थ नहीं जायगी। कमसे-कम ये इतना तो देख लेंगे कि किस प्रकार अपने ही हाथोंसे अपनी ही लतिकाको उखाड़ कर फेंकनेवाला माली हँस सकता है!—निशीथके सघन अन्धकारमें बड़ी कठिनाईसे एक दीपक प्राप्त करके एकाएक उसे बुझा देनेवाला पथहारा यात्री भी हँस सकता है—कवि दिन भर अपने हृदयके रक्तको कागजपर शब्दोंका रूप देते रहनेके उपरान्त सन्ध्याकी धूमिल तिमिराकुल वेदनामयी घड़ियोंमें उन्हें फाड़कर फेंक सकती है और इस कठोरतम पागलपनके बाद मुसकरा भी सकता है!—जिसके लिये जीवनकी अनुरागमयी लतिकामें सदैव रक्त-सिञ्चन होता रहता है, जिसके स्नेहमय आलिङ्गनके लिये सृष्टि-पथमें तूफानोंको आमंत्रित करके सर्वनाशका ताण्डव कराया जाता है, वही रूप और सुषमाकी रानी जब मिलती है तो प्रेमी अपनी आँखें मूंद लेता है और ऐसा करके भी वह अपने सूखे रक्तलिप्त ओठोंपर हास्य ला सकता है! रैमोना!

यह रोदन—यह क्रन्दन—रात्रिदिवसकी ये विषभरी आहें—समीरणके अन्धे प्राणोंमें भी तृष्णा जागृत करनेवाले ये विस्फोट भरे आर्त्तनाद अब रहने दो और एकबार—मेरी बात मानकर केवल एकबार जी भरकर हँसो ! पागलोंकी भांति अट्टहास करो । पागल तो तुम हो ही गये हो ! तुम्हारा मस्तिक सर्वथा उद्भ्रान्त हो गया है, इसमें सन्देह ही कौन-सा ! अन्यथा जीवनके इन सुख और वैभवका आलिङ्गन करनेवाले वासन्ती दिवसोंमें तुम पढ़ना लिखना छोड़कर—भविष्यकी उम्मीदोंपर लात मार कर—अपने माता-पिताकी कोमल और स्वर्ण-किरणोज्ज्वल अभिलाषाओंको कुचल कर इस प्रकार भटकते नहीं फिरते ! तुम कहते हो—तुम लौरेटाको प्यार करते हो !—उसके बिना जी नहीं सकते।—उसके बिना मर भी नहीं सकते । कैसी विचित्रता है—कैसा घातक इन्द्रजाल है ! लौरेटा तुम्हें नहीं मिल सकेगी......नहीं मिल सकेगी ! हतभाग्य रेमोना ! तुम्हारी लौरेटाको फांसीके तख्तेपर लटकाया जायेगा । पुष्परेणु भी जिसके नवनीत-कोमल कपोलोंको म्लान कर दिया करती थी, निशीथ-समीरणका कोमलतम आघात भी जिसकी अलकावलियोंको विकम्पित करके हृदयमें सिहरन पैदा कर दिया करता था, प्रणयकी लहरोंमें रंगरेलियां करनेवाली वह गायिका कैसे कारागारकी तिमिरान्ध कोठरीमें रह रही होगी ! आह ! कल्पना भी इस समय अपने समक्ष लौरेटाका चित्र खींचकर चीख उठती है—सिहर उठती है ! वह वहाँ भूखी-प्यासी बैठी होगी ?—

दुनिया उसे क्रान्तिकारणी समझती है! पुलिसवाले भी उसे विप्लवकारिणीके रूपमें देखते होंगे और देख देखकर हैरतसे दाँतों तले उँगली दबाते होंगे। लेकिन—लेकिन उन कमीनोंको—उन नारकीय कुत्तोंको कौन बतलाये कि वह तरुणी—पुष्पों-सी कोमल और सुकुमार तरुणी—किसीके हृदय-मालञ्चपर लतिका-बालाकी भाँति लगी रहनेवाली वह रसवती अपने कमनीय करोंसे शायद पिस्तौल पकड़ भी नहीं सकी होगी! उफ! मस्तिष्कमें इंगुरगिरि सी भयंकर ज्वाला जल रही है! रोएँ-रोएँ से रक्त-धूम उठ-उठकर मेरे पारिपार्श्विक वातावरणको विकम्पित करता हुआ-सा प्रतीत होता है! कब मैंने सोचा था कि मेरे साथ यामिनीकी चन्द्रिका-स्नात सुषमाके गीत गानेवाली—निर्झरके तटपर बैठकर उसकी चंचल वीचियोंमें अपने प्राणोंको परिमल बिखेर-बिखेर कर मुसकरानेवाली—सरसीके तटपर मेरे साथ खड़ी होकर अपने श्वास-सौरभसे शतदल-दलके लज्जित करनेवाली लौरेटा इस प्रकार एक समय कारागारमें बन्दिनी बनायी जायगी और इसका—इस भीषण पागलपनका सारा श्रेय होगा उसके रेमोनाको! लेकिन जीवनमें जो ये अभिशाप आया करते हैं—विश्वके इस नीले-नीले अन्तरिक्षमें जो अनन्त संकट, अपरिसीम आपत्तियाँ चक्कर काटा करती हैं, वे किसको सूचना देकर आती हैं! किसको मालूम रहता है कि अब जीवनका प्रकाश लुप्त होनेवाला है—हर्षोल्लासकी परियाँ अब अपने नुपूर-रवको बन्द करके आर्त्तनाद करनेवाली हैं और किञ्जल्ककी वर्षाके स्थान

पर अब मरुस्थलीकी तपती हुई दोपहरी सिकता-कणोंको ला-लाकर बरसानेवाली है! किसे पहलेसे ही इस बातका ज्ञान हो पाता है कि जहाँ निरन्तर साकीबाला मुसकरा-मुसकराकर सुरापी-दलको मद-विह्वल किया करती थी—जहाँ खुमके खुम मदिरा ढालकर मदपायी-दल झूमता रहता था और झूम-झूमकर चाँदनी रातोंमें दीवानापन बिखेरता रहता था—जहाँ रत्नदीपोंकी मालिका अपने स्निग्ध प्रकाशसे दूरागत श्रान्त-क्लान्त पथिकोंका मार्ग शोभित करती थी, वहाँ ही साकीबाला निर्दय कालके एक ही आघातमें कत्ल हो जायगी, उसकी वे सलोनी नरगिस सी आँखें उलट जायँगी, और बात-बातमें आन्दोलित हो उठनेवाला वक्षस्थल, जो रत्नमालाओंसे चुम्बित होता रहता था, शोणितसे अनुरञ्जित होने लगेगा!—सुराके फूटे हुए प्यालोंको लेकर शराबी चीखते, चिल्लाते फिरेंगे, चाँदनी रातें दुर्भाग्यको अमावसको आमन्त्रित करती हुई चीत्कार किया करेंगी और पथिकोंका मार्ग कलेजेको कँपा देनेवाले अन्धकारसे आक्रान्त हो जायगा।—टूटे फूटे दीपक अपने क्षुद्र अस्तित्वका नैश नीरवतामें उपहास कराते रहेंगे!... इन बातोंको—दुर्भाग्यके इस अनोखे बेदरदी आगमनको पहले कौन जान पाता है! सृष्टिका यही-शायद यही चिरन्तन नियम है! रमोना तेरे जीवनमें यह कोई नयी बात नहीं हुई है; तू इतना पीड़ित—इतना क्लेशातुर क्यों होता है! एक तो तेरे जीवनमें पहले से ही आमावसकी तिमिस्रमाया फैली हुई है,—आलोककी समस्त रश्मियाँ लुप्त हो चुकी हैं, उसपर यह अभिनव रोदन-क्रन्दन तो

तुझे जानसे मार डालेगा ! यदि मरना ही चाहता है - यदि अब इस दिवाकर-किरणोंसे आलोकित एवं शशाङ्क-ज्योत्स्नासे मदिरा-कुल संसारमें रहनेकी तेरी इच्छा नहीं है तो भी ठीक है ! किन्तु मरनेसे पहले एक बार जोरोंसे हँस ले, ताकि संसारकी यह नैश-नीरवता चकित होकर कुछ बोल उठे,—ताकि तुम्हें सतानेवाली अज्ञात दानवी शक्तियाँ भी समझ लें कि रैमोना कैसा था ! उसके बाद तो तुझे चीत्कार सम्हाले हुए—अपने तृषा-दग्ध ओठोंपर हाहाकार बाँधे हुए जाना ही पड़ेगा ।

रैमोना सचमुच हँस पड़ा ! उसकी वह हँसी एक बार तो उस निशीथ—नीरवताको चीरकर उस जनहीन सरिता-तटपर गूँज ही उठी !!

उधर से आथंस चला आ रहा था ! गाँवमें उसे बहुत ही बुरा मालूम हो रहा था । न जाने क्यों तो वह इस समय सबोंसे दूर एकाकी रहकर कुछ सोचना चाहता था ! वह भविष्यकी योजनाएं बनानेमें तल्लीन था । लौरेटाको तो अब फाँसी हो ही जायगी । क्रान्तिकारी-दलमें उसका आगमन असंभव है ! अब मैं निष्कण्टक होकर विप्लवी-दलमें अपनी योजनाएँ रख सकूँगा और अपने प्रभावको अक्षुण्ण बना लूँगा ।

लेकिन उस उन्मादमयी हँसीने उसके ध्यानको भङ्ग कर दिया । वह उस ओर जाने लगा, किन्तु न जाने क्या सोचकर तो मुड़ गया और फिर आगेकी ओर बढ़ने लगा ! अन्धकारकी उस

अल्पविस्तृत सम्मोहन-मायामें आर्थस चुपचाप उस जनहीन पथसे चला जा रहा था !

वह सोच रहा था कि जाकर क्रान्तिकारियोंको अपने बहनोई के सम्बन्धमें और उस पत्रके सम्बन्धमें सब कुछ कह दूँगा ताकि वे लोग सावधान हो जायँ और उस स्थानका सदाके लिये परित्याग कर दें। वह सोच रहा था और सोच-सोचकर फूला नहीं समाता था कि इतने दिनोंकी अप्रत्याशित, असूचित अनुपस्थितिके उपरान्त इस महत्वपूर्ण सूचनाको लेकर जब वह पहुंचेगा तो क्रान्तिकारीदल उसको गलेसे लगायेगा, उसके प्रति अशेष प्रेमकी भावनाओंसे भर जायेगा।

उसे अधिक दूर जाना नहीं हुआ। किसियोपिकस अपने एक विप्लवी सहकर्मीके साथ एक कारपर चला आ रहा था। आर्थसने उसे नहीं देखा, किन्तु उसने आर्थसको देख लिया और कार खड़ी कर दी। उतरकर बोला—'आर्थस ! कहाँ जा रहे हो ?'

किसियोपिकसके स्वरमें तीखापन था, जो आर्थसको असहनीय सा प्रतीत-हुआ। बोला—'आपके ही पास तो जा रहा था ?

'मेरे पास ?'

'हाँ, आपके पास। इसमें आश्चर्यकी कौन सी बात है ?'

'आश्चर्यकी तो बात है ही। मेरे पास तुम सरीखे, आदमियोंका,—तुम सरीखे कायर, लालची और दगाबाज आदमियोंका जाना क्यों कर हो सकता है ?' किसियोपिकसने घृणा भरे स्वरमें कहा।

'आप क्या बोल रहे हैं ? मैं कायर हूं,—लालची हूं,—दगाबाज हूं !...'

'आर्थस, ज्यादा बननेकी कोशिश न करो। मैं सब जानता हूं। तुमने विप्लवीदलके प्रति जो घोर अन्याय किया है, वह मुझसे अविदित नहीं है। लौरेटा तुम्हारे कारण पकड़ी गयी है। अन्यथा किसे मालूम था कि उस दिन वह वैज्ञानिकसे मिलनेके लिये जायगी !--विप्लवी-दलके शेरोंकी योजनाओंका पूर्वाभास किसे मिल सकता था ?...आर्थस ! मुझे तुमसे आरम्भमें ऐसी ही आशा थी। जब तुमने शुरू-शुरू मुझसे विप्लवी-दलमें अपनेको ले लेनेका अनुरोध किया था, उस समय मैं बहुत हिचकिचा रहा था। लेकिन तुम्हारे बादके साहसपूर्ण कृत्योंने एवं अनवरत उद्योगने तुम्हारे प्रति मेरे हृदयमें—मेरे हृदयमें ही नहीं बल्कि समस्त क्रान्तिकारियोंके हृदयमें प्रेमकी भावना जागृत कर दी। लेकिन आखिर तुम्हारे हृदयकी कालिमा प्रकटित हुए बिना नहीं रह सकी ! तुमने अपने घृणित कुत्सित स्वरूपको खोल ही दिया।'

आर्थस हक्का-बक्का सा—विस्मय-विमूढ़ सा यह सब सुन रहा था। उसे इन बातोंको सुननेकी तनिक भी आशा नहीं थी। उसने बहुत ही सम्हलते हुए कहा—आप आखिर मेरे बारेमें जो कुछ बोल रहे हैं, उसका कोई आधार भी है या यों ही ? लौरेटाको पकड़ानेमें मेरा हाथ है—मैं क्रान्तिकारी-दलका कलङ्क हूं—मैं दगाबाज हूं !...अच्छा, यही सही। ठीक है ! मैं अभी आप लोगोंकी भलाईके लिये जा रहा था, किन्तु—"

"किन्तु हम लोगोंको अब तुम्हारी भलाईकी जरूरत नहीं है! तुम्हारी भलाई उसी दिन बुराईमें परिणत हो गयी, जब तुमने लौरेटाको—"

"क्या लौरेटा को ? ··" आर्थसका हृदय धड़क भी रहा था और क्रोधसे जल भी रहा था।

"क्या लौरेटाको ? जैसे हम लोग कुछ जानते ही नहीं।" किसियोपिक्सके स्वरकी भर्त्सना धीरे-धीरे बढ़ती चली जा रही थी। दूसरा विप्लवी अभी तक मौन था। इस बार उसके मुँहसे भी अग्निभरे शब्द निकले—'आर्थस, तुम जीवनके अन्तिम क्षणों तक अपने कुकर्मके लिये पश्चात्ताप करोगे। जीवन भर रोते रहोगे कि हाय! मैंने यह क्या किया! लौरेटाको फाँसीसे बचानेके लिये हमलोग जी जानसे लगे हुए हैं, किन्तु, यदि उसे फाँसी हो गयी तो याद रखो ·····।"

'क्या याद रखूँ! यही न कि तुम लोग मुझे भी जानसे मार डालोगे। मार डालना। मुझे परवाह नहीं है छिः यही तो तुम लोगोंकी कृतज्ञता है। क्या जाने कितनी बार अपनी जानको जोखिममें डालकर मैंने अनेकानेक विप्लवियोंको बचाया है—अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्योंके द्वारा क्रान्ति-पथको आलोकित एवं प्रशस्त किया है। प्राणान्तक कष्टोंको सहकर भी अडिग रहा हूं। लेकिन एक स्त्रीके कारण मेरी इस प्रकारकी भर्त्सना की जा रही है। लौरेटाने क्या किया है! उसे इस दलमें आये हुए अभी कितने दिन हुए थे। वह तो आप लोगोंके प्रेमकी पात्री बन गयी

और मैं इस अशेष भर्त्सना और उपेक्षाका पात्र। ठीक है, वह औरत है न! औरतोंके सामने पुरुषोंके समस्त कृत्य नगण्य और तुच्छ हो जाते हैं! वे एक परिम्लान, विशुष्क पत्र तोड़ डालती हैं, तो उसका महत्त्व एक पुरुषके अनेक वीरोचित कृत्योंसे ज्यादा होता है। ठीक है।"

"आर्थस! ज्यादा बकबक मत करो। नहीं तो यह रही पिस्तौल। किसियोपिकसने इसी दाहिने हाथसे तीन अन्य दगा-बाज क्रान्तिकारियोंकी हत्या की है। चौथे तुम होगे।"

आर्थसने एक बार बहुत ही जलती हुई दृष्टिसे किसियोपिकस-की ओर देखा और फिर बोला - 'अच्छा, वन्दे!...विप्लवी-दल जिन्दाबाद!'

और यह कहकर आर्थस आगेको बढ़ गया।

'आप लोग डरें नहीं। मैं अपने हाथोंसे आप लोगोंका कोई अनिष्ट नहीं करूँगा।' आर्थसने एक बार मुड़कर देखा और बोला।

भुनभुनाते हुए दोनों क्रान्तिकारी कार पर चढ़े और चल पड़े।

आर्थसका सारा शरीर क्रोधसे जल रहा था। उसे उस समय बड़ी अशान्ति मालूम हो रही थी। सारे संसारके प्रति एक विचित्र आक्रोशकी भावनासे उसका अन्तर्देश धीरे-धीरे अभिभूत होता चला जा रहा था।

वह लौटा और उस ओर जाने लगा, जहाँ उसने उन्मादपूर्ण हँसी सुनी थी! न जाने क्यों तो जीवनके उन अन्धकारित प्रहरोंमें उसे वह हँसी बहुत प्यारी लगी - बहुत ही आश्वासनपूर्ण

मालूम हुई। वह उस बहशतभरी हँसीमें अपने हृदयका प्रतिविम्ब देख रहा था।

पतझड़की चीत्कारभरी अरण्य-रजनी सी एक घातक विषादमयी भावना उसके अन्तर्देशमें छा रही था। उसे चलना भी उस समय कठिन मालूम हो रहा था। उसका हृदय किसी सच्चे हमदमकी तलाशमें था।

एकाएक किसीने पीछेसे पुकारा—"तू ?...तू ही है क्या ? दगाबाज ! धूर्त्त ! नरपिशाच ! क्या इस अर्धरात्रिमें तू ही इस जनशून्य पथमें खड़ा-खड़ा फिर किसीके जीवनको बरबाद करनेकी बात सोच रहा है ?'

आर्थस सिहरा ! उसे ऐसा मालूम हुआ, मानों अन्तरिक्षसे उतरकर कोई आवाज इस पृथ्वीपर आयी है और उसके वक्षको चीर चली है ! भयभीत सा—विकम्पित सा वह खड़ा का खड़ा रह गया !

फिर आवाज आयी—"हत्यारे ! क्या तुझे हत्या करनेके लिये दुनियांमें वही एक मिली थी ? क्या सारा संसार शून्य हो गया था ? क्या उसके सिवा—उस कोमलताकी देवीके सिवा और कोई भी तुझे अपनी राक्षसी वृत्तियोंका शिकार नहीं मिला ! कमीने ! नरक-निवासी ! ठहर, मैं आता हूं !"

इस बार आवाज परिचित सी मालूम हुई। उसने देखा, वही गायक चला आ रहा था, जो पहले तो क्रान्तिकारिणीको पकड़नेके लिये अत्यन्त आतुर हो रहा था और पकड़ा देनेके

उपरान्त न जाने पागलपनके किस सर्वघातक दुर्दान्त आग्नेय प्रवाहमें पड़कर रोदन-क्रन्दन करने लगा था। उसे न जाने क्यों तो गायककी—रैमोनाकी भर्त्सनाभरी वाणी तनिक भी अप्रिय नहीं लगीं। उसने बड़े ही प्रेमसे कहा—'गायक, मैं तुम्हें ही खोज रहा था। कहाँ थे तुम ?'

'क्यों, क्या इस बार फिर कोई नूतन अभिसंपात मेरे जीवन पर बरसाना चाहते हो ?—क्या नूतन झंझा फिर बुलाकर मेरे जीवनकी व्रततिबालाको नष्ट करना चाहते हो ? लेकिन अब क्या नष्ट करोगे ? जो करना था, वह तो कर ही चुके ? मेरी मधुशालामें आग लाकर अपने निर्मम करोंसे तुमने मेरे साकीको कत्ल कर ही डाला ? अब शेष क्या रहा है ! अब किसे धोखा दोगे ? किसे छलोगे ? किसके दुर्बल कोमल प्राणोंपर अशनि-प्रहार करोगे ?

आर्थस चुपचाप सुन रहा था। वह स्वयं आश्चर्यित हो रहा था कि उसे उसकी बातोंपर क्रोध क्यों नहीं आ रहा है। किसियोपिकसने भी उसकी भर्त्सना की थी और यह दीवाना गायक भी उसकी भर्त्सना ही कर रहा है। किसियोपिकसको तो बल्कि अधिकार भी था, किन्तु यह गायक उसकी भर्त्सना करे और वह—वह विद्रोही वीर चुपचाप सुनता रहे, आश्चर्यकी बात थी !

आर्थस बोला—'देखो, मुझे मालूम नहीं था कि वही तुम्हारी यसी है !—तुम्हारे अशेष अनुरागकी पात्री है !'

आर्थसको रैमोनाने अधिक बोलने नहीं दिया। वह हाहाकार

भरे शब्दोंमें कहने लगा—'आह! अतीतके सपने और भविष्यकी कल्पनाएँ आज वर्त्तमानके चरणोंसे रौंदी जाकर कराह रही हैं। जीवनकी सारी तृष्णा—सारी लालसा—सारी कामना आज तुम्हारे द्वारा किये गये इस ज्वलन्त आघातकी घातक आँचमें झुलस रही है। मेरे प्राणोंकी इस कारुणिक चीत्कारमयी अवस्था पर क्या तुम्हें तनिक भी दया नहीं आती। निष्ठुर!.....उफ्! ऐसा भी अमंगल होता है! अनिष्टका ऐसा भी प्रखर आघात होता है!...'

कुछ क्षण रुककर रेमोना फिर बोलने लगा—'लेकिन नहीं', दोष तुम्हारा नहीं है! मैं तुम्हें दोष नहीं देता! उन अभिशापित घड़ियोंको भी दोष नहीं देता, जब सरिताके तटपर तुमसे मेरा परिचय हुआ था! मैं किसीको दोष नहीं देता! सारा दोष मेरा है—मेरी जीवन तरणीको खेनेवाले पागल माँझीका है, जिसने अपने ही हाथोंसे पहले तो पतवारके दो टुकड़े कर दिये और अब स्वयं तरणीको बीच भँवरमें फेंककर चीख रहा है! आह! आथस! मानसमें प्रलयके तूफान घिर रहे हैं और मेरी सुकुमार भावनाएँ चीख-चीखकर सिहर रही है! मेरी कल्पनाके आँचलमें आग लग गयी है और वह झुलस-झुलसकर कराह रही है! ऐसा मालूम हो रहा है मानों जीवन-पथ रक्तसे अनुरञ्जित हो गया है! अज्ञात, अविदित कूलकी ओर अपनी नौकाको ले जानेका प्रयास करनेवाला नाविक आज तरंगोंमें भी जलनका आभास पा रहा है और अतलसे आह्वान आ रहा है!...आह। कैसी

मर्मघातिका छलना है ! यदि दुनियाँ में इसीको प्रेम कहा जाता है—इसी तरसने, तड़पने और अपने हृदयके अणु-अणुको गलाने, घुलानेके बाद फिर नीरव और निस्पन्द हो जानेको ही ······ ! क्या बोलूँ ! क्या बतलाऊँ ! मेरे वाक्य पूरे होनेके पहले ही क्रन्दन कर उठते हैं। मृतकके समीप बैठी हुई स्त्रियाँ या उसके अन्य स्नेही परिजन जिस प्रकार बीच-बीचमें आँसू पोंछकर और हृदयके उच्छ्वसित आवेगको रोककर कुछ बोलनेका प्रयास करते हैं, किन्तु फिर एकाएक आँसुओंका बाँध टूट जाता है और प्राणोंमें रोदन-क्रन्दन उमड़ने लगता है, उसी प्रकार आज मेरी भी हालत हो रही है ! मेरे वाक्य रो रहे हैं ! मेरी भावनाएँ रो रही हैं।—मेरे हृदयका अणु-अणु रो रहा है ! और रोदनके -- आत्म दहनके इस मरघटसे दृश्यको अपने खूनसे और भी वीभत्स बनाकर मेरा रहनुमा न जाने किधर—कहाँ अंतर्धान हो गया है ! ·· आर्थर ! मेरी भावनाओंका अतीतकालीन सोम-प्रवाह इतने दिनोंतक गरल प्रवाह बने रहनेके कारण अब अग्नि-प्रवाह बन गया है ! सुखकी एक सूक्ष्मतम रश्मि-रेखा भी इस मर्म-विदारक अनुभूतिकी आँचमें जलनेके लिये अवशिष्ट नहीं रह गयी है !

"रमोना ! तुम अत्यधिक पीड़ाकुल हुए जा रहे हो ! तुम कवि हो ! यदि तुम्हें जीवनका यह अन्धकार इतना भयातुर कर सकता है और तुम्हारे सारे उत्साहको नष्ट कर सकता है, तो फिर औरोंकी क्या हालत होगी ? जीवनमें तो यह सब हुआ ही

करता है! यदि इस घटनाने तुम्हारी सुकुमार स्नेहप्रवण कल्पनाके रेशमी अंचलमें अग्निकणोंको बिखेर कर समस्त कमनीय अनुभूतियोंको जलाकर खाककर डालना आरंभ कर दिया, तब तुम्हारे 'कवि' की महत्ता कहाँ रही ? तुम्हें तो महामहिम हिमगिरिकी तरह अडिग रहना चाहिए। जिन किरणोंके शीतल, स्निग्ध प्रकाशके द्वारा तुम्हारा 'कवि, विश्वके अधिवासियोंको नित्य नूतन मार्ग प्रदर्शित करनेकी क्षमता रखता है, यदि वे ही इस प्रकार कतिपय क्षुद्र, नगण्य श्यामल मेघमालाओंसे आक्रान्त होकर चीखने लगेंगी, तब तो हो चुका! कविकी कल्पना—चितानल से धधकते हुए विश्वके अन्तरालमें निरन्तर रस-वर्षण करनेवाले कविकी कल्पना इतनी दुर्बल हो जाय!—कैसा आश्चर्य है! कैसी भैमी छलना है!!..."

"आर्थस! मेरा रोम-रोम रो रहा है! एक ही हाहाकारमयी भावना मेरे चारों ओर विषकी वर्षा करती हुई फिर रही है।" रैमोना बोला।

रैमोना, संसारको जिस दृष्टिसे तुम देखते हो, यह वैसा नहीं है।'

तो फिर कैसा है?'

कैसा है ? इसका उत्तर मुझसे क्या पूछते हो, पूछो उन झोपड़ियोंसे, जिनमें सदाचारी और धार्मिक श्रमजीवी भूखों मरते हैं—राशि-राशि दुःस्वप्नोंसे आक्रान्त रहकर जीवन-यापन करते हैं—जिनके जीवनका सारा रस न जाने किस पैरासाइटके द्वारा

सोख लिया जाता है। रैमोना, इसका उत्तर उन महलोंसे—रत्न-दीपोज्वल हर्म्यावलियोंसे पूछो, जहाँ सदैव व्यभिचारी और अधार्मिक व्यक्ति भोगोन्मत्त होकर जीवनयापन करते हैं!—सब प्रकारके सुखैश्वर्य जिनके तलावोंको चाटा करते हैं? इस प्रश्नका उत्तर उस प्रेमीसे पूछो, जो प्राणोंके अशेष अनुरागको ओठोंपर सुलगाकर—अपनी प्रेयसीके लिये जीवनके समस्त विभव-विलासको कुचलकर—अपनी समस्त महत्त्वाकांक्षाओंका किसीके एक ही इशारेपर रौंद करके—कत्ल करके भी अपनी प्राणप्रियाको नहीं पाता है—इसके द्वारा अवहेलित होता है और उसीको—उसी रूपसीको एक दूसरा व्यक्ति चांदीके टुकड़े उछालकर और वैभव-विलासका नग्न प्रदर्शन करके पा लेता है! उस सर्वस्व-त्यागीसे इसका उत्तर पूछो' जो जीवनका बड़ासे बड़ा बलिदान करके भी अपने देशमें कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं पाता! जिसे पग-पगपर अपमानित किया जाता है, जब कि केवल आडम्बर रचनेवाले और आडम्बर रचकर नेता बन बैठनेवाले पापियोंको पूज्य समझा जाता है उनका नानाविध सत्कार होता है—सारा देश अपने कल्याणका सम्पूर्ण श्रेय उन्हींके अक्लान्त एवं अनवरत उद्योगको देता है, यद्यपि उनके अक्लान्त एवं अनवरत उद्योगको करोड़ों गुणा बढ़ा देनेपर भी वह उस सर्वहारा देशभक्तकी घोर साधनाके सामने सर्वथा नगण्य ही रहता है। रैमोना! तुम पागल हो। तुम दुनियाको केवल ऊपर-ऊपरसे देखते हो और चाँद और सितारोंके गीत गाते हो। लेकिन ज़रा दुनियाँको आँखें

खोलकर देखो और यहाँके कण-कणमें बिखरी हुई नग्न बुभुक्षा एवं दानवी प्रवृत्तियोंको भी पढ़नेका प्रयास करो ! केवल किसीको प्रेम करके—किसीके सुन्दर, नवनीत-मसृण श्रीचरणोंपर जीवन-शतदल निवेदित करके निशीथकी नीरव एवं मदिराकुल घड़ियोंमें सरिता-तटपर बैठकर गीत गा लेना ही सब कुछ नहीं है रैमोना !" बोलता-बोलता आर्थस उत्तेजित सा हो उठा।

रैमोना बड़े ध्यानपूर्वक आर्थसके चेहरेकी ओर देख रहा था।

आर्थस कुछ रुककर एक हल्की सी साँस लेकर फिर बोलने लगा—'रैमोना ! मैं जान गया हूं कि तुम लौरेटाको अत्यन्त प्रेममयी दृष्टिसे देखते हो – उसे अपने अन्तस्तलका सबसे महत्त्व-पूर्ण स्थान प्रदान कर चुके हो और उसीके लिये—केवल उसीके लिये घर-बार छोड़कर—अपने पिता-माताकी आँखोंमें अगणित अश्रु-विन्दु भरकर इस तरह दर-दर भटकते फिरते हो। लेकिन रैमोना ! मुझे यह पहले कहाँ मालूम था ! तुमने मुझसे पहले कहाँ बताया था कि तुम्हारी प्रेयसीका नाम लौरेटा है और केवल नाम बतानेसे ही क्या हो जाता ! तुमने तो कहा था कि वह अभिनेत्री होना चाहती है, उसे अभिनय-कला बहुत प्यारी लगती है और उसने किसी प्रकार हालीउड तक पहुंचनेका पूर्ण निश्चय कर लिया है ! और तुम्हारे प्रेमकी—तुम्हारे चीत्कारोंसे लदे हुए कोमल प्रणय-पुष्पको भी उसने अपने हृदयसे केवल इसीलिये निकाल फेंका है कि तुम उसे काफी आर्थिक सहायता नहीं दे सकते !... अब तुम्हीं बताओ रैमोना ! इसमें मेरा कौन-सा दोष है ? मैंने

तो तुम्हारे उपकारके लिये ही ऐसा किया था ! मैं तो समझता था कि ऐसा करनेसे तुम्हें पुरस्कारके रुपये मिल जायँगे और तब तुम अपनी प्राणप्रियाके साथ सुखपूर्वक जीवनके अवशिष्ट दिवसोंको बिता सकोगे। लेकिन दुर्दैवके हृदयान्तरालमें कौन सी दुरभिसन्धि छिपी हुई रहती है, यह कौन जान पाता है ? कब किस प्रकार—किस पथमें झंझानिल अपना उग्र रूप धरकर आता है और कामनाओंके सुकुमार पुष्पोंकी पंखड़ियाँ छितराकर हृदयकी व्रतति-कुमारीका रोम-रोम कँपा जाता है, इसका ज्ञान पहलेसे किसे हो पाता ? रेमोना ! मेरा तो कोई भी अपराध नहीं है ! तुम मेरी भर्त्सना क्यों कर रहे हो ?' - बोलते-बोलते उसकी आँखें आँसुओंसे भर आयी।

रेमौनाको जीवनमें शायद पहली बार इतनी सहानुभूति प्राप्त हो पायी थी, अन्यथा वह सदैव अपने प्रेमके लिये उपहसित ही होता आया था। आज जीवनमें अपने ठुकराये हुए प्रेमके प्रति इतनी अनुरागमयी अश्रु-आविल साहानुभूति पाकर वह अपनेको सम्हाल नहीं सका। आर्थसके—उस आर्थसके, जिसे वह कुछ देर पहले अपना महान् शत्रु समझ रहा था और जिसको अनन्त अभिशापोंसे आक्रान्त करनेकी कोशिश कर रहा था, कलेजेसे चिपट गया और बालकोंकी तरह फूट-फूट कर रोने लगा।

"रेमोना, तुम यह मत समझना कि मैं बहुत ही परोपकारी एवं परदुःखकातर आदमी हूं।"—आर्थस फिर बोलने लगा,—'मैं न तो परोपकारी हूं और न और कुछ ही। मैं मैं हूं—बस

इतना ही जानता हूं। किसीके सामने मैंने आज तक अपना मस्तक झुकाया है, मुझे याद नहीं आता। तुम्हारे समक्ष मैं जितना नम्र बन रहा हूं, उतना शायद अपने जीवनमें पहले कभी भी नहीं बना था। दुनियाँमें मुझे बहुत कम आदमी जानते हैं, लेकिन जो जानते हैं वे मुझे एक विद्रोही व्यक्तिके रूपमें ही जानते हैं। भर्त्सनाका एक शब्द भी मुझे क्रोधसे लाल कर देनेके लिये काफी है। किन्तु रैमोना! तुम्हारी भर्त्सना सुन कर भी मैं आज इतना नम्र बना हुआ हूं, इसका कारण यह है कि हम और तुम दोनों ही ठुकराये हुए प्राणी हैं। तुम्हें तुम्हारे प्रेमने ठुकराया है, तुम्हारी किस्मतने ठुकराया है और मुझे स्वयं क्रान्तिने ठुकरा दिया है। मैं समझता था कि मैं अपनी समस्त शक्तियोंको नियोजित करके विश्व-क्रान्तिका सूत्रपात्र कर दूँगा और इसके लिये मैंने जो योजना बनायी थी, वह अत्यन्त उपयोगी भी थी। किन्तु क्रान्तिकारियोंने मेरा उपहास किया, मुझे लांछित किया। मैं और तुम दोनों ही प्रवंचित है। दोनोंको ही धोखा दिया गया है। मुझे मेरे अपने हृदयने ही धोखा दिया है!...रैमोना! सब व्यर्थ है। दुनियावाले किसीके नहीं होते। जब तक तुम्हारे द्वारा इनके सुखमें बाधा नहीं पहुंचती है, तभी तक ये तुम्हें अच्छी दृष्टिसे देख सकते हैं और जब तक तुम्हारे द्वारा इनके सुखमें वृद्धि होती रहती है तभी तक ये तुम्हें प्यार भी कर सकते हैं, लेकि जहाँ तुम्हारे द्वारा इनके व्यक्तिगत सुखका हनन होना आरम्भ हुआ कि ये तुम्हें

दूधसे मक्खीकी तरह निकाल फेकेंगे। मुझे तो अब धीरे-धीरे न जाने क्यों तो एक प्रकार की घृणा-सी मालूम हो रही है !"

रैमोना आर्थसके गलेसे अलग हट कर खड़ा हो गया। बोला—'आर्थस, यहाँ मेरा तुमसे मतभेद है। जो प्रेम ठुकराये जानेपर प्रेम न रह कर कुछ दूसरी वस्तु बन जाता है, मैं उसे प्रेम ही नहीं कहता। प्रेम तो ठुकराये जानेपर भी प्रेम ही रहता है! विभेद केवल इतना है कि पहले वह प्रेम शारदीय पूर्णिमामें ज्योत्स्नाके साकीकी भाँत मुसकराता रहता है और ठुकराये जानेपर श्रावणी अमावसके काले-काले भयावने बादलोंकी तरह चीत्कार किया करता है,—कराहा करता है।"

आर्थस मौन था। उसकी इच्छा हो रही थी कि वह रमोनाको समझा दे कि वह गलती पर है और वैसा प्रेम कमसे कम इस दुनियामें तो असम्भव है। रैमोना लौरेटाको नहीं प्यार करता है, लौरेटाके सौन्दर्यको प्यार करता है। लौरेटा यदि अत्यन्त कुरूप बना दी जाय और रैमोनाके सामने खड़ी कर दी जाय तो क्या रैमोना उसे प्यार कर सकेगा!! असम्भव है!...

रैमोना सोच रहा था, आर्थस आदमी अच्छा है, किन्तु इसका दृष्टिकोण केवल भौतिक है। शरीरसे परे इसका ध्यान ही नहीं जाता। यह समझता है कि शारीरिक सौन्दर्य प्रेमका उत्पादक है। भ्रममें पड़ा है यह!...

"अच्छा, रैमोना ! अब यह वहशत छोड़ो और चलो, कोई ऐसा उपाय करें, जिससे लौरेटा छूट जाय।" आर्थस बोला।

प्रसन्नताके मारे रैमोनाकी दोनों आँखें चमक उठीं। बोला—'मैं तो उसे छुड़ानेके लिये अपने प्राणोंकी बाजी लगा दूँगा। लेकिन उससे छुटनेका कोई उपाय भी तो होना चाहिये।"

आर्थस कुछ देर सिर खुजलाकर सोचनेके बाद बोला—'उपाय तो एक सूझा है। उस एकान्तवासी वैज्ञानिकके पास चलकर उससे मदद माँगी जाय। वह कभी इन्कार नहीं करेगा!'

'वह क्या मदद कर सकेगा?'

"पागल हुए हो क्या? वह यदि चाहे तो पलभरमें सारे पेरिसको स्वाहा कर सकता है। यदि वह अपने जीवनको कुछ नियमित बनाये और अपनी कतिपय विचित्र एवं उद्भ्रान्त विचार-धाराओंके स्थानपर सुंदर एवं परिमार्जित विचारोंको स्थान दे तो वह दुनियाँ के लिये बहुत कुछ उपकारी सिद्ध हो सकता है। लरिटाको छुड़ाना उसके लिये मामूली-सी बात है।"

"तो चलो, उसके यहाँ चलें।" रैमोना व्यग्र होकर बोला

'नहीं, आज और कलके लिये माफ करो। परसों चलेंगे। परसों सबेरे तुम पार्कमें चले आओगे। वहीं मैं भी चला आऊँगा। फिर दोनों जने साथ ही चलेंगे।' कहकर आर्थस चल पड़ा।

रैमोना आश्चर्यपूर्वक, स्नेहपूर्वक और आदरपूर्वक उसको तब तक देखता रहा, जबतक कि वह आँखोंसे ओझल नहीं हो गया।

× + + ×

दूसरे दिन—

दस बज गये थे।

आर्थसको पूर्ण निश्चय था कि उसके बहनोई सशस्त्र पुलिसके आदमियोंके साथ आ रहे होंगे। वह छिपकर एक कोनेमें खड़ा हो गया और उनकी प्रतीक्षा करने लगा। उसका अपमानित हृदय क्रन्दन कर रहा था! विक्षुब्ध वक्षस्थलको छेदकर आक्रोशकी अग्निमयी भावनाएं समीरणकी छातीपर नृत्य कर रही थीं।

अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। सवा दस बजते ही वे लोग आ पहुँचे। आर्थस अपने बहनोईके पास गया और बोला—"आप लोग कृपया मेरे द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलें, अन्यथा सफलताकी सम्भावना कम है। क्रान्तिकारियोंको पकड़ना कोई साधारण बात नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि उन्हें पकड़नेके बदले आप ही लोग पकड़े जायँ।"

"आर्थस, तुम चिन्ता न करो। हमलोग एक सौ सशस्त्र आदमी हैं। जातेके साथ ही घेर लेंगे और आवश्वयकता पड़ने पर फायर भी कर सकते हैं। डरनेकी कोई बात नहीं है। तुम भी चलो न।"

"नहीं, मैं नही जाऊँगा। मुझे बड़ा डर लगता है। लेकिन मुझे एक बातका पता लग गया है। इन लोगोंकी बैठक जिस कोठरीमें है, उससे तीन कोठरी हट कर इनका शास्त्रागार है, जिसमें ये लोग अपने शस्त्रोंको बहुत ही सावधानीके साथ रखते हैं। इसके कई अस्त्र तो ऐसे हैं, जिन्हें असावधानीके साथ

छूनेसे भी आदमी अपनी जान दे सकता है। अतएव आप लोग बीस-बाईस आदमी तो पहले उस शस्त्रागारको घेर लीजियेगा ताकी कोई वहाँ जा न सके। फिर शेष आदमी मिलकर क्रान्तिकारियोंको पकड़ लीजियेगा।"

आर्थस, तुम तो मेरे भी उस्ताद निकले। तुम्हें इतनी बात मालूम कैसे हो गयीं? मैं तो तुम्हें सीधा सादा आदमी समझता था।" जूलियाके पतिने कहा।

"मैं उसी दिनसे इन क्रान्तिकारियोंके पीछे पड़ गया और इनके सम्बन्धमें सब कुछ जान लेनेकी चेष्टा करता रहा। लेकिन ये लोग बड़े भयानक आदमी होते हैं। स्फूर्ति तो इनमें इतनी है कि कुछ न पूछिये।"

"अच्छा, तो तुम भी चलोगे।"

"नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। मैं इन लोगोंके यहाँ एक सन्तप्त श्रमजीवी बन कर गया था और अपना दुखड़ा रोने लगा। इसी बहानें तो इनके सम्बन्धमें मैं इतना जान पाया हूं। ये लोग मुझे पहचान गये हैं। यदि आप लोग इन्हें नहीं पकड़ पाए तो मेरी जानके लाले तो पड़ ही जायँगे, इसके अतिरिक्त भविष्यमें मैं इनके यहाँ नहीं जा सकूँगी।"

"हाँ-हाँ, तुम ठीक कहते हो। बड़े समझदार हो तुम।" कह कर जूलियाके पति महोदय अपने चार साथियोंके साथ आगेको बढ़ गये। अन्य सशस्त्र व्यक्ति चार भिन्न रास्तोंसे आ रहे थे। कुछ चौराहेके किनारे छिप कर खड़े हो गये थे।

पाँचों जने दबे-दबे चढ़ने लगे।

सातों क्रान्तिकारी वीर अखबार पढ़नेमें तल्लीन थे। एकाएक किसियोपिकसने अखबारको एक कोनेमें रख कर कहा—"मुझे तो लौरेटाके सिवा कुछ भी नहीं सूझता। मस्तिष्कमें हलचल मची हुई है। उसे कैसे छुड़ाया जाय।"

"आप निश्चिन्त रहिये। हम लोग अपने प्राणोंकी समस्त शक्तिको नियोजित कर देंगे।"

"लेकिन अधिक समय कहाँ है? जहाँ तक मेरी धारणा है, वे लोग उसे जल्दीसे जल्दी फाँसी दे देंगे। क्रान्तिकारी महिला-की उपस्थितिसे राज्यपदाधिकारी कितना डरते हैं, क्या यह भी बतलाना पड़ेगा?"

"हम लोगोंके सामने दो ही मार्ग हैं। या तो लौरेटाको हम लोग शासक वर्गके रक्त-लिप्त अधिकारसे छुड़ा कर ले आयें या अपनी भी जान दे दें। हम लोग छहों आदमी प्रतिज्ञा करके निकलते हैं कि लौरेटाको वापस लाये बिना हम लोग नहीं लौटेंगे। या तो लौरेटाके साथ हम लोग काम करेंगे और या क्रान्तिकारी-दलकी ही इतिश्री हो जायगी।"

"नहीं-नहीं, पागल हुए हो क्या? ऐसा भूलकर भी न करना। एक लौरेटाकी तो हस्ती ही क्या है? हजारों लौरेटाओंके पकड़े जाने पर भी और फाँसीके तख्तोंपर झुलाये जानेपर भी हम लोगोंका दल ज्योंका-त्यों रहेगा। लौरेटाके या किसियोपिकसके प्रणोंकी अपेक्षा विप्लवी दलका ज्यादा महत्त्व है।" किसियोपिकस-

के स्वरमें प्राणोंको कर्मोन्मादना-पूर्ण कर डालनेवाला ओज बिखरा पड़ा था। उसका मुख एक अनुपम आभासे चमक उठा था!

सबोंने अशेष भक्ति और उत्साहके साथ धीमे स्वरमें कहा- "विप्लवी दल जिन्दावाद!"

"यह क्या करते हो? भावनाओंके अन्धड़से वेगमें पड़कर कहीं ऐसी गलती न कर बैठो कि पुलिसवाले हमलोगोंको भी पकड़ लें! लौरेटाको पकड़ लेनेके बाद पुलिसवालोंका साहस बहुत बढ़ गया होगा!"

बातें हो ही रही थीं कि सात सशस्त्र आदमियोंने उन लोगों-को घेर लिया। सबके सब चौंक पड़े। उनके चेहरेपर भय या घबराहटका कोई भी भाव नहीं था। वीरतापूर्वक इस आकस्मिक संकटसे परित्राण पानेके लिये सब किसियोपिकसके मुखकी ओर देखने लगे और उसकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे! पुलिसके सातों आदमी अपनी-अपनी पिस्तौलें तानकर खड़े थे।

किसियोपिकसने अपनी जेब टटोली और पिस्तौल निकाली। लेकिन उसमें गोली नहीं थी।

आर्थसके बहनोई नार्थमने सीटी बजायी। पल भरमें ही पाँच आदमी और पहुंच गये और ………!

और कुछ ही देर बाद पाँच बन्दियोंके साथ अर्धरात्रिके अन्धकारमें एक सौ सशस्त्र पुलिसके आदमी जाते हुए दिख-लायी दिये।

आर्थस एक कोनेमें छिपकर खड़ा था और यह दृश्य देख रहा था। एक बार तो उसकी इच्छा हुई कि दौड़कर जाये और शस्त्रागारमें गुप्त रूपसे रखे हुए तीन चार बमोंको उठा कर ले आये और पुलिस वालोंपर छोड़ दे। बातकी बातमें भगदड़ मच जाये और उसके विप्लवी भाई छूट जायें......मगर......। यह इच्छा क्षणिक थी; अपमान भरे वे शब्द रह-रहकर आर्थसके अन्तर-अन्तरालमें विषकी बरसा कर रहे थे! उसे मालूम हो रहा था जैसे अभी भी—इस अवस्थामें भी किसियोपिकस कह रहा है,—'आर्थस! तुम नालायक हो। क्रान्तिकारी-दलके कलङ्क हो!'

१८

जेलकी एक तंग कोठरी। चारों ओर मकड़ोंके द्वारा फैलाया हुआ जाला। दीवालें काली पड़ गयी हैं। खिड़कीके नामपर एक छोटी सी सूराख है, जिससे बाहरके मैदानका एक छोटा हिस्सा भी नहीं दिखलायी देता। कोनेमें एक फटी पुरानी कंबल है। उसीको आधा बिछा कर और आधा ओढ़ कर उसमें एक कैदी बैठा है। उसकी दाढ़ी काफी बढ़ गयी है। सिरके केश,—बड़े-बड़े और रूखे केश चेहरेपर बिखड़े पड़े हैं। निरन्तर प्रकाशहीन कमरेमें रहनेके कारण उसकी आँखें निस्तेज हो गयी हैं। चेहरेपर झुर्रियाँ पड़ गयी हैं। कमरेके एक कोनेमें गीता रखी हुई है। जेलरने कैदीके गिड़गिड़ाने पर बड़ी दया करके इस पुस्तकको साथमें रखनेकी आज्ञा दे दी है।

थोड़ी देरमें दरवाजा खुलता है और एक आदमी सड़े हुए दो चार फल, अधपकी रोटियाँ और दुर्गन्धिसे नाकको फाड़ देने वाली मछलियाँ लेकर आता है।

"ओ हिन्दुस्तान के बच्चे ! क्यों ऊँघ रहा है ? ले, खा ले !"

कदीकी आँखें खुलती हैं। वह दुर्बलतापूर्वक बोलता है— "मुझे हिन्दुस्तानका बच्चा क्यों कहते हो ? बच्चा तो मैं यहाँका ही हूँ। हिन्दुस्तानके प्रति मेरे हृदयमें अशेष श्रद्धा और अनुरागकी भावना है।"

आगन्तुक हँसता है। बोलता है—"जिस देशको दूसरोंकी गुलामी करते हुए शताब्दियाँ बीत रही हों, उसके प्रति श्रद्धा और अनुरागकी भावना नहीं रखोगे तो फिर किसके प्रति रखोगे ! जिस देशके नवयुवकोंमें अपनी-संस्कृतिका कोई अभिमान नहीं हो,—जो बात-बातमें हम लोगोंका मुंह ताकते हों,—जिनको न तो अपनी भाषासे प्रेम हो और न अपने यहाँके साहित्य पर ही गौरव हो, उस देशको श्रद्धाकी दृष्टिसे देखना तुम सरीखे आद-मियोंका ही काम है।"

कैदी इस बार जोशमें आ जाता है और बोलता है,— 'भारतवर्षको यदि पहचानना चाहते हो तो उसके गौरवोज्वल अतीतकी ओर देखो। कितना पुण्य—कितनी राशि-राशि ज्ञानो-ज्वल पावनता वहाँके रजकणोंमें बिखरी पड़ी है। वहाँके ऋषि-आश्रमोंका समीरण अपने स्पर्शमात्रसे ही जीवनकी समस्त कालिमा—समस्त कुत्साको दूर करनेकी क्षमता रखता था।

माना कि आज भाग्य-विपर्ययसे भारतवर्षके नरनारी अपने उच्चादर्शको विस्मृतिके गर्त्तमें फेंक कर अत्यन्त कुत्सित और हेय जीवन व्यतीत कर रहे हैं,—उनके जीवनमें कोई महत्त्वाकांक्षा, कोई उच्चाभिलाषा नहीं हैं। पशुओंकी भाँति केवल खाना और बच्चे पैदा करना ही उनका काम रह गया है। किन्तु यह सब शताब्दियोंकी गुलामीका अवश्यंभावी परिणाम है। दुनियाँका कोई भी देश किसी दूसरेका गुलाम रह कर अपनी सांस्कृतिक श्री-सुषमाको अक्षुण्ण नहीं रख सकता है। किसी जातिकी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्तियोंको विनष्ट करनेके लिये उसे दूसरोंका गुलाम बना देनेसे बढ़ कर सरल उपाय दूसरा नहीं है। दुनियाँका इतिहास इस बातका साक्षी है। पराधीनताने सदैव राष्ट्रीय सांस्कृतिक स्वरूपको कुत्सित बनाया हैं। इंग्लैण्ड जब रोमनोंके द्वारा शासित हो रहा था, उस समय क्या हालत हुई थी इंग्लैण्ड निवासियोंकी। क्या उनका पुराना शौर्य—उनकी पुरानी युक्त-शक्ति,—उनकी पुरानी कार्य-क्षमता और पटुता उनमें अवशिष्ट रह गयी थी और क्या वे रोमनोंके जाते ही बाहरी आक्रमणकारियोंसे पराभूत नहीं हो गये थे? एक नहीं अनेकानेक उदाहरण मैं दे सकता हूं! ग्रीसका इतिहास ही देखो। फिर भारतवर्ष,—दार्शनिकों एवं मानवी-सभ्यताके पथमें नित्य नवीन आलोक-रश्मियोंको वितरण करने वाले कवियोंके देश भारतवर्षको ही इस नियमका अपवाद क्यों समझा जाय? यदि भारतवर्षको धोखेके द्वारा—जालसाजीके द्वारा गुलाम न बना

दिया जाता तो आज दुनियाँ देखती कि भारतवर्ष क्या है और मानवी सभ्यताकी अग्रगतिके लिये क्या कर सकता है। आज भी,—इस गयी गुजरी अवस्थामें भी भारतवर्ष दुनियाँके सामने ऐसे-ऐसे महाप्राण व्यक्तियोंको रख रहा है, जिनकी विचारधारा हृदयके सारे कल्मषको दूर कर डालती है।"

"अच्छा, अब अपना भाषण बन्द करो और जो लाया हूं, उसे खा लो। दो-तीन घण्टोंके बाद आज तुम लोगोंको घण्टे भरके लिये इस कोठरीसे बाहर निकल कर बगीचेमें घूमनेकी आज्ञा दे दी जायगी।"

कैदी बोलता है—"आखिर इस कृपाका कारण क्या है?"

उत्तरमें कैदीको डाँट और फटकार मिलती है। फिर भी कैदी मुसकराता ही रहता है। उसके चेहरेपर क्रोध या विक्षोभकी छाया तक नहीं आ पाती।

आगन्तुक चकित हो कर पूछता है—"कैदी! तुममें मैं एक विशेषता पाता हूं, जो मुझे तुम्हारी ओर खींच लेती है। इतनी अवहेलना—इतना तिरस्कार—इतना कष्ट सहनेपर भी तुम अपनी शान्ति कैसे अक्षुण्ण रख पाते हो, मुझे तो इसीका आश्चर्य होता है। मैंने यहाँ एकसे एक बहादुर कैदियोंको देखा है, लेकिन तुम्हारे जैसा मैंने आज तक नहीं देखा। तुम कभी घबड़ाते हो या नहीं?"

कैदी इस बार हंसता है और बोलता है—"मैं इस प्रशंसाके योग्य नहीं हूं। प्रभुकी दया है। 'और इस पुस्तकका प्रताप।' उसने गीताकी ओर इशारा किया।

"बस, तुम्हारी यही बात तो मुझे अच्छी नहीं लगती। आखिर यह प्रभु क्या बला है! यदि तुम्हारा प्रभु सचमुच बड़ा दयालु है तो क्यों नहीं तुम्हें आ कर इस कारासे छुड़ा ले जाता है! इतने सबल व्यक्तित्वके होकर भी तुम ऐसी बातें करते हो।"

कैदी इस बार गम्भीर हो जाता है और बोलता है,—"इतना हेय और नगण्य जीवन व्यतीत करते हुए भी मुझे यहाँ कोई दुःख नहीं मालूम होता है! मुझे सदैव प्रभुके सान्निध्यकी सुखमयी अनुभूति होती रहती है। मुझे यह छोटी सी गन्दी कोठरी भी प्रभु-प्रेमके कारण उन्मुक्त स्थलोकी तरह आनन्द देती है! प्रभुकी इच्छा होगी तो वे मुझे इस कारागारसे मुक्त करा देंगे। मेरी तो कोई इच्छा नहीं है। उनकी इच्छा ही मेरी इच्छा है।"

आगन्तुक कैदीकी ओर आश्चयपूर्वक देखता है। फिर बोलता है,—"तुम्हारी बातें मेरी समझमें आने लायक नहीं हैं। रहस्यमय व्यक्ति हो तुम। यहां मैं दृढ़ निश्चय करके आता हूं कि आज उस कैदीको अवश्य देरी तक फटकारूँगा, किन्तु तुम्हारी दो-चार बातें सुननेके बाद न जाने वह निश्चय कैसे तो लुप्त हो जाता है और तुम्हारे प्रति एक श्रद्धा सी जागृत हो जाती है।...अच्छा, कैदी! यह ता बताओ, तम यहाँ किस अपराधमें लाये गये थे और हाँ, तुम्हारा नाम भी तो मैं भूल रहा हूं।"

कैदी इस बार फिर मुसकराता है और बोलता है— मेरा नाम

जेली है। मैं अपने एक मित्रके साथ यहाँ लाया गया था। उसका नाम डेड्रियामा था। हम लोगोंके गाँवसे लौरेटा नामक एक लड़की चली गयी थी। उसकी उसी गाँवके एक लड़केके साथ बड़ी घनिष्ठता थी। उस लड़कीने जाते वक्त गाँवके एक बूढ़े किसानको एक पत्र दिया था—अपने प्रेमीको दे देनेके लिये। लेकिन दुर्भाग्यवश वह किसान उस पत्रको लेकर स्टेशन पहुंचा। वहाँ स्टेशन मास्टरने उससे वह पत्र भी छीन लिया और उसे काफी मारा भी। इतना मारा कि वह शक्तिहीन बूढ़ा मर गया। उसी समय हम दोनों,—मैं और डेड्रियामा घटनास्थलपर पहुंचे। डेड्रियामा अपने क्रोधको नहीं रोक सका। स्टेशन मास्टर पर पिल पड़ा। मैं उस बूढ़ेका उपचार करने लगा। लेकिन कुछ ही देरमें उसके प्राण निकल गये। स्टेशन मास्टरने हम दोनों पर झूठा दोषारोपण किया। उस कृषककी हत्या उसने स्वयं की और अपराध मढ़ा गया मुझपर और डेड्रियामा पर। न्यायालयने भी स्टेशन मास्टरके ही पक्षमें फैसला दिया। मुझे दस वर्षका कठोर कारावास मिला डेड्रियामाको फाँसीकी सजा मिली।"

आगन्तुक बोलता है—"उस लड़कीका नाम तुमने क्या बतलाया ?"

'लौरेटा।"

"इस नामकी तो एक क्रान्तिकारिणी पकड़ी गयी है, जिसे शीघ्र ही फाँसी दी जानेकी संभावना है।

"क्रान्तिकारिणी !......फाँसी दी जानेकी संभावना है !

……"उसका नाम लौरेटा है ! ……" कैदीके स्वरमें कुछ वेदना-मिश्रित जिज्ञासा होती है !

आगन्तुक चला जाता है। कैदी एक दीर्घ निश्वास छोड़ता हुआ कहता है—"तुम्हारी माया अपरम्पार है दीनानाथ ! तुम्हारी कार्य-प्रणालीको समझनेकी शक्ति न होनेके कारण ही हम लोग टीकाटिप्पणियाँ किया करते हैं !"

× × + +

उसी कारागारकी एक दूसरी कोठरी ! उससे भी ज्यादा तंग, मली और अँधेरी। बदबूसे नाक फटी जा रही है। उस कोठरीमें एक सूराख तो थी, यहाँ वह भी नहीं है। कोठरी क्या है, एक पिंजड़ा है। ऐसा मालूम हो रहा है, जैसे छत धमसे गिर पड़ेगी ! दीवारमें मोटे-मोटे अक्षरोंमें लिखा हुआ है "तुम पापी हो ! ईश्वरके सामने तुम्हें अपराधीके रूपमें दण्ड ग्रहण करनेके लिये खड़ा होना पड़ेगा। अभी क्या हुआ है ?"

बन्दी इन पंक्तियोंको पढ़ता है और घृणाकी दृष्टिसे चारों ओर देखता है। उसके चेहरेपर पहले बन्दीकी तरह झुर्रियाँ नहीं पड़ी हुई हैं। दुर्बलताका भी कोई चिह्न नहीं है। गालोंपर लालिमा है और ओठ रह-रह कर फड़फड़ाने लगते हैं ! आँखें सतेज हैं और उस कारागारको भस्मसात् कर देनेके लिये अग्नि-स्फुलिङ्गोंकी वर्षा करनेके लिये उद्यत होती हुई सी प्रतीत होती हैं। उससे चुपचाप बैठा नहीं जाता। वह उठता है और इधर-उधर अपने शरीरको हिलाकर फिर बैठता है। कभी-कभी कुछ

गाने लगता है। उसका स्वर म्रदिमाहीन है किन्तु उसमें उसकी रक्तालोडित शिराओंका भी कम्पन स्पष्ट प्रकटित हो रहा है।

कुछ देर बाद द्वार खुलता है और वही व्यक्ति प्रवेश करता है। उसके हाथोंमें भोजन-सामग्री है। लेकिन उसे भोजन-सामग्री न कह कर रोगोत्पादक-सामग्री कहना चाहिये। पहले कैदी को दी गयी रोटियोंसे भी अधिक गन्दी और खराब रोटियाँ हैं।

कैदी आगन्तुकको देख कर क्रोधपूर्वक बोलता है—"क्या मेरे लिये खाना लाये हो ?"

आगन्तुक कुछ उत्तर नहीं दे पाता। कैदीको यहाँ आये हुए अभी कुछ ही दिन हुए हैं। अतएव उसकी शारीरिक शक्ति अभी बहुत कम क्षीण हो पायी है। उसकी क्रोधमयी आवाजसे कुछ भयभीत सा होकर वह भोजन-सामग्री उसके सामने रख देता है और खड़ा हो जाता है।

"डरो मत ! मैं तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ूँगा ! ये बलिष्ठ पंजे तुम्हारे जैसे दीन हीन व्यक्तियोंको सतानेके लिये नहीं बनाये गये हैं। इससे आज तक केवल हर्म्यनिवासी श्रम-जीवी-रक्त-शोषक पूँजीपतियों और लम्बी-लम्बी तनख्वाह पाने वाले पाप-परायण उच्चराज्यपदाधिकारियोंकी ही हत्या हुई है।" —कैदी बोलता है और शेरके समान गुर्राता है।

"मुझे तुमसे डर लगता है कैदी !"

कैदी हँसता है और बोलता है—"अच्छा, यह तो बताओ, हम लोगोंको फाँसी किस दिन दी जायगी ?"

आगन्तुक आश्चर्य-चकित होता है। मन ही मन सोचता है— यह तो उस कैदीसे भी ज्यादा रहस्यपूर्ण व्यक्ति है। कितनी लापरवाहीके साथ पूछ रहा है कि किस दिन फाँसी होगी!... मानों, फाँसी चढ़ना लड़कोंका खेल है,—कोई उत्सव है!

"मैं कैसे कहूं?" वह धीमे स्वरमें बोलता है,— बोलनेकी कोशिश करता है।

"मेरे अन्य साथी मजेमें हैं न?"

"हाँ, मजेमें ही हैं।"

"उन्हें भी भोजनके नाम पर ये सड़ी गली अधपकी रोटियाँ तुम्हीं पहुंचाते होगे?"

"हाँ, मैं ही पहुंचाता हूं।"

"अच्छा, यहाँ लौरेटा नामकी क्रान्तिकारिणी बन्दिनी भी है?"

"हाँ, है। अभी उसीके पास भोजन ले कर जाऊँगा। वह तो कुछ भी नहीं खाती है। उसे भी फाँसीकी सजा होगी और आप लोगोंसे बहुत पहले। लेकिन वह आपके समान निर्भीक नहीं मालूम होती है। उसके चेहरे पर गंभीर विषादकी छाया पड़ी रहती है।"

"तुम गधे हो। लौरेटा और फाँसीसे डरे! असंभव है। वह हँसती-हँसती फाँसीके तख्तेपर चढ़ेगी और दुनियाँको दिखला देगी कि पूँजीवादके विरुद्ध रण भेरी बजाने वालोंका हृदय कितना महान्, कितना तेजोमय और कितना त्यागी होता

है। दुनियांवाले उसको फांसीके तख्ते पर झूलते हुए देख कर सबक सीखेंगे। वह वीरबाला है।"

थोड़े देर तक बिल्कुल नीरवता छायी रहती है। कैदी बोलता है—"क्यों क्या सोचने लगे ?"

"कुछ नहीं ! मैं वही सोच रहा हूं कि मुझे भी कैसे-कैसे आदमियोंसे मिलना पड़ता है।"

× × × ×

उसी नरकोपम कारागारकी एक तीसरी काल-कोठरी।

बन्दिनी गंभीर चिन्तामें निमग्न है। उस उदास और विषाद-ग्रस्त अवस्थामें भी उसका सौन्दर्य चारों ओर रजत-रश्मियाँ विकीर्ण कर रहा है।

"भोजन लाया हूं !" आगन्तुक बोलता है।

"धन्यवाद। भोजन रख दीजिये और आप चले जाइये।"

"आपकी आज्ञाका पालन करनेके लिये मैं सहर्ष तैयार हूं, किन्तु अफसरोंकी ऐसी आज्ञा नहीं है।"

बन्दिनीने घृणापूर्वक आगन्तुककी ओर देखा। बोली—"क्या इस पराधीन जीवनकी अपेक्षा तुम्हें मृत्यु अधिक प्रिय नहीं लगती ?

आगन्तुक कुछ नहीं बोलता है। निर्निमेष बन्दिनीको देखता रहता है। फिर कुछ सोच कर बोलता है—"अभी मैं जिस बन्दीको भोजन दे कर आ रहा हूं, वह आपके बारेमें पूछ रहा था।"

"क्या पूछ रहा था ?" बन्दिनीने पूछा।

"यही कि यहां कोई लौरेटा नामकी बन्दिनी भी रहती है ?"

लौरेटा समझ गयी कि प्रश्नकर्त्ता किसियोपिकस ही होगा। उसकी जादूभरी आंखोंमें, उन आंखोंमें, जिनके द्वारा वह मन्मथकुमार आर्थस जैसा विप्लवीको भी उन्मादी बना डालनेमें समर्थ हो गयी थी, आंसूकी दो बूँदं छलक आयीं !

आगन्तुकने बन्दिनीकी ओर देखा। वह विस्मयान्वित हो रहा था। लौरेटाके समान सुषमास्नात नवयुवतीको उसने जीवनमें पहली बार देखा था !

× × × ×

इसी तरह उस भयावने कारागृहकी अन्य कोठरियोंमें बन्दियोंको भोजनके नामपर सड़ी रोटियाँ पहुंचाता हुआ जेलका वह कर्मचारी सोच रहा था—'एक मैं हूं जिसने कुछ रुपयोंके लिये जीवन-यापनकी इतनी कुत्सित कार्यपद्धति स्वीकार की है और एक ये हैं जो अपने महान् उद्देश्यकी सिद्धिके लिये क्रान्तिकी सर्वग्रासिनी लपटोंमें प्राणों तकका निवेदन करनेको समुद्यत हैं !"

१६

लौरेटाके पकड़े जानेके बाद उस विद्रोहभरी हस्तीवाले वैज्ञानिककी जो अवस्था हो रही थी, प्रतीची क्षितिजमें दो नन्हें नन्हें तारे उसके सम्बन्धमें कानाफूसी करते हुए-से प्रतित हो रहे थे।

चारों ओर रजनीकी विषादग्रस्त माया प्रसृत होती चली जा रही थी। वैज्ञानिकका मस्तिष्क सर्वथा अशक्त और अशान्त-सा हो चला था। उसे ऐसा प्रतित हो रहा था, जैसे किसीने उसके मस्तिष्ककी शिराओंको ज्वालामुखीके उत्तप्त आग्नेय प्रवाहसे नहला दिया हा!

उसके नौकरने कहा "जो होना था, वह तो हो ही गया। अब आप व्यर्थकी चिन्तासे पीड़ित क्यों हो रहे हैं?"

वैज्ञानिकके नेत्र ऊपरकी ओर उठे। उसने अपने नौकरकी ओर उदास दृष्टिसे देखा--उस नौकरकी ओर जो आज वर्षोंसे उसकी प्रत्येक सुविधा-असुविधाका ध्यान रखता आया है,—पिता-की तरह बोला "तुम अभीतक यह नहीं जान सके हो कि मेरा और लौरेटाका क्या सम्बन्ध था। मैं उसे अपनी वैज्ञानिक साधनासे भी अधिक प्यार करने लगा हूं! इस सारीकी सारी घृणित, नर कोपम दुनियाँमें मुझे वही एक ऐसी पावन आलोकधारा मिली जिसको अपनानेका मैंने प्रयास किया है। अन्यथा मेरे स्वभाव को तुम जानते ही हो ...लेकिन अब क्या होगा? उसकी मृत्यु-के उपरान्त मैं जीवन-पथपर किस प्रकार चल सकूँगा।"

नौकर क्या उत्तर दे चुपचाप अपने मालिककी विषण्ण, हाहाकार भरी मुखाकृतिकी ओर देखता रहा।

कई मिनट बीत गये। दोनों चुप थे!

कुछ देर बाद नौकरने कहा "आपके समान वैज्ञानिक यदि अपनी वैज्ञानिक साधनाके द्वारा इतनी शक्ति भी नहीं प्राप्त कर पाया कि वह अपनी प्रेयसीको शत्रुओंके हाथसे छुड़ा सके तो वह और क्या कर सकता है?"

वैज्ञानिकने पहले तो कुछ तीक्ष्ण दृष्टिसे अपने नौकरकी ओर देखा। फिर न जाने क्या सोचकर तो वह उठ खड़ा हुआ। बोला "तुमने ठीक कहा है। यदि अपनी वैज्ञानिक साधनाके द्वारा अपने आकर्षण केन्द्रको इन बदमाश दुनियाँवालोंके फन्देसे छुड़ानेमें एक वैज्ञानिक समर्थ नहीं हो सका तो उसका अस्तित्व

नितान्त निरथक है। मैं अपनी प्रयोगशालामें जाता हूं और जैसे भी होगा, सबेरे तक अपने उस वायुयानको तैयार कर ही लूँगा, जिसकी कल्पना भी मानव जातिके अन्य वैज्ञानिक नहीं कर पाये हैं। तुम यहीं रहो। मेरे साथ मत जाओ या तो प्रभातका प्राथमिक किरण-प्रवाह मुझे उस वायुयानपर उड़ता हुआ देखेगा, या प्राणहीन !"

× × × ×

आधीरात न जाने किसकी चीत्कारपूरित विप्रयोग – वेदनाको प्राणोंमें भरकर व्योम-पथमें बेहोश पड़ी हुई थी। वह निर्जन प्रान्त एक विचित्र अवसादकी कालिमामें निमज्जित-सा हो रहा था !

और सारीकी सारी दुनियाँसे घृणा करनेवाला वह वैज्ञानिक अपनी सारी शक्तियोंके साथ उस वायुयानको ठीक करनेमें लगा था, जिसकी कल्पना भी वैज्ञानिक समाज नहीं कर पाया है !

————

२०

नीरव निष्प्रभ निशीथ। एक सुन्दर बँगलेमें अर्थमन्त्री महोदय बैठे थे। उनके पास ही तीन चार आदमी और थे।

अर्थमन्त्रीने कहा—मैं तो उस बन्दिनीके सौन्दर्यपर इस तरह मुग्ध हो गया हूं कि मुझे और कुछ सूझता ही नहीं। रात दिन उसकी स्वप्न देखता रहता हूं।"

"यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। उतनी सुन्दर तरुणी सारे फ्रांसमें नहीं मिलेगी!" उपस्थित व्यक्तियोंमें एकने कहा।

सारे फ्रांसमें? तुम्हारा दिमाग खराब है। मैं कहता हूं सारे यूरोपमें नहीं मिलेगी! उसका सौन्दर्य अद्वितीय है—अनुपम है।" दूसरेने कहा।

"मैं यदि उसे अपना नहीं बना सका तो शायद ही जीवित रह सकूँगा !" अर्थमंत्राने एकदीर्घ उछ्वास छोड़ते हुए कहा।

"आपके लिये यह कौन-सी बड़ी बात है। वह क्रान्तिकारिणी आपकी जीवन, सहचरी बनकर अपनेको धन्य मानेगी !"

"तुमलोग पागल ही नहीं गधे भी हो। साथ ही उल्लू भी। जिसने इस सरस सुकुमार अवस्थामें सब कुछ छोड़कर-जीवनके समस्त सुखोपभोगोंकी हत्याकरके यह महान् व्रत स्वीकार किया है, क्या उसे अपने वशमें करना सहज है ? मुझे तो विश्वास नहीं होता कि वह आसानीसे मेरा वरण कर लेगी।"

कुछ देर शान्ति छायी रही। समीरण भी शान्त था, जैसे उन घृणित, पापपरायण व्यक्तियोंके वार्त्तालापसे निस्पंद-सा हो गया हो।

"जो हो चलो, हमलोगोंको कोशिश तो करनी ही चाहिये। यदि उसने मेरी बात स्वीकार कर ली तो फिर फाँसी की सजासे तो मैं उसे अवश्य ही बचा लूंगा। मेरी इच्छाके विरुद्ध फ्रांसमें कोई कुछ नहीं कर सकता !"

"तो फिर हमलोगोंको अभी ही चलना चाहिये। देर करने से क्या लाभ ?" दूसरे व्यक्तिने कहा।

तुरन्त कार आयी। और वे लोग कारागृहकी ओर चल पड़े।

× × × ×

अर्थमंत्रीका अप्रत्याशित आगमन देखकर कारागारके कर्मचारियोंका अतिशय आश्चर्यित हो जाना पड़ा !—केवल जेलरको

छोड़कर क्योंकि लौरेटाके भविष्यको अर्थमंत्री कौन सा स्वरूप प्रदान करना चाहते हैं, इस सम्बन्धमें उसकी और अर्थ मंत्रीकी घंटों बातें हो चुकी थीं और वह हर तरहसे उनकी आज्ञा-का पालन करनेको तैयार था।

जेलरके साथ वे लोग उस कमरेमें पहुंचे जहां लौरेटा—राकेशकी शारदीया ज्योत्स्नासे धौत लौरेटा बन्दिनी बनाकर रखी गयी थी-फाँसीकी सजाके लिये।

वे लोग जब लौरेटाके पास पहुंचे और इधर उधरकी बातोंसे उसे अपनी ओर आकर्षित करनेका प्रयास करने लगे तो लौरेटा को बुरा लगा। उसने कड़क कर कहा—'आखिर आपलोग क्या कहना चाहते हैं? कहते क्यों नहीं?'

अर्थमंत्रीने ध्यानपूर्वक लौरेटाके चेहरे की ओर देखा। वह सोच रहा था, सचमुच इतनी खराब अवस्थामें रहनेपर भी इसका चेहरा कितना खूबसूरत मालूम होता है,—इसके ओठ किस प्रकार सदैव चमकते रहते हैं इसके केश किस प्रकार कपोलोंको चूम-चूम कर समीरणको उन्मत कर डालते हैं!...... वह पागल हो रहा था। रह-रह कर लौरेटाको कलेजेसे लगाकर अपने ओठों की प्यास मिटानेकी कामना उद्वेलित होने लगती थी।

जेलर बोला—'हमलोग चाहते हैं कि तुम्हें फाँसी न हो।'

लौरेटाको इसकी तनिक भी आशा नहीं थी। उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि उसे अवश्य ही फाँसी होगी और वैसी हालतमें इसके अतिरिक्त और दूसरा विश्वास हो ही क्या सकता

था ! उसने कहा—'इससे बढ़ कर खुशीकी बात और क्या हो सकती है। मैं भी तो यही चाहती हूं।'

'जब तुम यही चाहती हो तो तुमने विप्लवी-दलमें शामिल होकर देशमें उत्पात मचाना क्यों आरम्भ कर दिया था।' अर्थ-मंत्रीने कहा।

'उत्पात शब्दको कृपया वापस ले लें। वह उत्पात नहीं था। मैं विप्लवकारिणी बनी थी आपलोगोंके और पूंजीपतियोंके उत्पात-को दूर करके बुभुक्षित और गृहहीन मानवोंके जीवनमें सुख और शान्तिका सन्निवेश करनेके लिये। मैं विप्लवकारिणी बनो थी संसारमें फैली हुई राशि-राशि उत्पीड़नाओं और विपुल यंत्र-णाओंको दूर करके चतुर्दिक हासलास और श्री-सुषमाका प्रसार करनेके लिये। मैं विप्लवकारिणी बनी थी मानव जातिके भाग्य-काशमें चीत्कार करती हुई सघन श्याम मेघमालाओंको दूर करके पूर्णिमाके शशाङ्ककी समुज्वल, शीतल एवं प्राणप्रद ज्योत्स्नाको आमंत्रित करनेके लिये। मुझे विप्लवकारिणी बननेका कोई शौक नहीं था। लोगोंकी हत्या करनेमें—उनके महलोंमें आग लगानेमें ट्रेन उलट देनेमें मुझे कोई मजा नहीं मिलता था। लेकिन विव-शता है ! दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है, जब समझानेसे कोई नहीं मानता तो उसे दण्ड देना पड़ता है और जब साधारण दण्डसे भी काम नहीं चलता है तो प्राणदण्ड देना पड़ता है। दुनियाके पूँजीपति शताब्दियोंसे मानव-जातिका रक्त-शोषण करते आ रहे हैं। लक्ष-लक्ष नर नारियोंको अपने महलोंके द्वारके

सामने ही क्रन्दन करते देखकर भी ये कमरोंमें गद्दे दार कुर्सियोंपर बैठकर स्वर्णभूषणमण्डिता रूपाजीवाओंसे प्रेमालाप किया करते हैं,—उनके कलुषित किन्तु कोमल करोंसे रक्तभरी मदिराका पान किया करते हैं! इन्हें लज्जा भी नहीं आती! दुनियांके करोड़ों आदमियोंको—रात्रि-दिवस परिश्रम करनेवाले श्रमजीवियोंको भूखों मार कर ऐश करनेवाले इन नारकीय कुत्तोंके चेहरेपर दया नामकी तो कोई चीज ही नहीं है। हमलोग—क्रान्तिकारी लोग इसलिये केवल इसीलिये क्रान्तिकारी बनते हैं कि दुनियांमें इन अत्याचारियोंका--मानवी सभ्यताके मार्गके इन बड़े-बड़े कांटोंका चिह्न भी नहीं रह जाय और फिर संसारके समस्त शारीरिक एवं बौद्धिक श्रमजीवी सुखपूर्वक काल-यापन कर सकें। हमलोग अपना दिल बहलानेके लिये क्रान्तिका सूत्रपात नहीं करते हैं। मानव-जातिकी सन्तप्त क्रन्दन-ध्वनियाँ हमलोगोंके प्राणोंमें विप्लवका शंख फूँकती हैं।.....आप फांसीकी बात कहते हैं, फांसीकी इच्छा हमलोगोंको क्यों होगी? क्या हमलोग पागल हैं?.. ...इसमें कोई सन्देह नहीं कि बहुतसे आदमी मरना चाहते हैं। उनकी यही इच्छा रहती है कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपने जीवनके समस्त चीत्कारोंसे परे मृत्युकी शीतल छायामें विश्राम कर सकें। किन्तु मैं इसे कायरता समझती हूँ। मैं मृत्यु चाहती भी नहीं।......'

जेलर और अर्थमंत्री दोनों आश्चर्यितसे होकर लौरेटाके मुखसे निकलती हुई उन चिनगारियोंको सुन रहे थे। इतनी बुरी

हालतमें रहकर भी कोई इतनी तेजस्विताके साथ कुछ कह सकता है, उन लोगोंके लिये एक अभूतपूर्व बात थी।

थोड़ी देर मौन रहनेके बाद अर्थमंत्रीने कहा 'बन्दिनी, मैं नहीं चाहता कि तुम फाँसीके तख्तेपर लटकायी जाओ। तुम्हारी इस अल्पवयस्कतापर मुझे दया आ रही है। अभी तो इस दुनियाँमें रहकर कुछ करनेके दिन हैं! कानून तो तुम्हें हर तरह-से फाँसीकी सजासे देनेके लिये मजबूर करेगा। लेकिन यदि तुम चाहो तो तुम्हें फाँसीकी सजासे बचा लिया जा सकता है!"

'वह किस तरह!' लौरेटाके हृदयकी प्रसन्नता उसकी आवाज से झलक रही थी!

'तरीका जानकर क्या करोगी? केवल इतना ही समझ लो कि यदि तुम हमलोगोंकी बात मान लो, तो तुम्हें किसी न किसी प्रकार इस दण्डसे बचा लिया जायगा।' जेलर बोला।

"आखिर वह बात बतलाइये भी तो सही, कौन सी बात है?" लौरेटा उत्सुकतापूर्वक बोली।

"उस बातको कहनेके पहले मैं फिर कह देना चाहता हूँ कि तुम क्षणिक जोशमें आकर इन्कार न कर देना। इन्कार करोगी तो ठीक न होगा! फाँसीके तख्तेपर लटक जाओगी तो क्या लाभ होगा! "

लौरेटाको चिन्तालीन देखकर अर्थमंत्रीने सोचा,—अब चल गया है। बोला—'देखो, अच्छी तरह सोच लो। तुम्हें फिर कोई अभाव—कोई दुःख नहीं रहेगा। सारा जीवन सुखपूर्वक

व्यतीत करोगी। तुम्हें गरीबोंसे बहुत प्रेम मालूम होता है। मैं प्रतिमास गरीबोंके लिये कुछ न कुछ किया करूँगा।'

लौरेटाको जो कुछ सोचना था वह सोच चुकी। बोली—'मैं तैयार हूं। आपकी जीवन-संगिनी बनकर मैं धन्य हो जाऊँगी!'

अब क्या था? अर्थमंत्रीकी आँखें प्रसन्नतासे चमक उठीं। बोला—'तुम सरीखी विदुषीसे मुझे ऐसी ही आशा थी।'

खुशी-खुशी दोनों जने लौट आये।

२१

वैज्ञानिकका व्योमयान बन गया।

सारी रात बीत चुकी थी। सारा दिन भी बीत चुका था। फिर रात हो आयी थी और अन्तरिक्ष तारोंसे भर चला था। लेकिन उसे कुछ भी नहीं मालूम हुआ कि कितना समय बीता।

दीवारोंमें सुराख करनेकी एवं लोगोंको निद्राभिभूत करनेकी सामग्रियां भी ले लीं और चल पड़ा।

व्योमयान बहुत ही छोटा था। उसे आकाशमें उड़ते हुए देख कर व्योमयान कहना भी लोगोंके लिये मुश्किल था।

कुछ देरके बाद वह कारागारसे तीन मीलकी उँचाईपर मँड-राने लगा। चारों ओर अँधेरा छाया हुआ था। दूरवीक्षण

यंत्रके द्वारा वैज्ञानिकने देखा,—चारों ओर नीरवता है। केवल द्वार प्रहरी जाग रहे हैं।

उसने व्योमयानको धीरे-धीरे नीचे लाना शुरू कर दिया। बिना किसी प्रकारकी आवाज किये ही व्योमयान जेलके अन्दर मैदानमें उतर आया। वैज्ञानिक एक हाथमें विषाक्त गैस प्रसारित करनेका यन्त्र लेकर लौरेटाकी खोजमें जेलमें इधर-उधर भटकने लगा।......

अर्धरात्रि थी,—निस्संग तमाकीर्ण अमावसको साँय-साँय करती हुई अर्धरात्रि। सारा संसार सो रहा था! केवल वह वैज्ञानिक— अपनी प्रखर बौद्धिक शक्तियोंपर गर्व करनेवाला वह वैज्ञानिक कारागारमें प्रहरी-गणकी आँखोंसे बचता हुआ किसीको खोज निकालनेकी आकुल चेष्टाएँ कर रहा था।

लेकिन लौरेटा थी कहाँ! घण्टों तक माथापच्ची करनेके बाद भी जब वह लौरेटाको नहीं देख सका, तो उसे अपने ऊपर क्रोध आने लगा! उसने सोचा, कहीं उसे फाँसी तो नहीं हो गयी! और यह विचार मनमें आते ही वह पागल हो उठा! उसका रोम-रोम चीत्कार कर उठा! ऐसा मालूम होने लगा, मानों हृदय को किसीने चीर दिया हो! उसने एक बार फिर जेलके सब कमरोंको देख डाला! लेकिन लौरेटा हो, तब तो मिले! .. वैज्ञानिकका रोम-रोम रोने लगा!

अब वह क्या करे! इतनी कठोर तपस्याके बाद तो वह व्योमयान बनाकर यहाँ तक आ पाया है! अब लौटकर वह

जाये भी कहाँ जाये ! क्या वह भी जीवित रहने योग्य है ? क्या वह भी अपनी बौद्धिक शक्तियोंपर अभिमान कर सकेगा ?...... वह जो अपने हृदयके अनुरागकी पात्रीको बुद्धिहीन शासकवर्गके हाथोंसे बचा नहीं सका, वह भी क्या अपनेको विज्ञानका उपासक कहनेकी धृष्ठता कर सकता है !...... ौरेटा ! लौरेटा ! उस वैज्ञानिकका रोम-रोम क्रन्दनमयी वाणीमें पुकार रहा था !

उसने एक बार अपने व्योमयानकी ओर देखा और एक बार तो उसकी इच्छा हुई कि वह उसे नष्ट-भ्रष्ट कर डाले और अपनी लौरेटाकी ही भाँति स्वयं भी फाँसीके तख्तेपर झूलनेके लिये तैयार हो जाये !......वह उस कमरेके पास गया, जो खाली था। उसने समझ लिया कि इसमें लौरेटाको रखा गया था ! उसकी इच्छा हो रही थी कि वह उसकी दीवारोंसे सिरको टकरा टकरा कर जान दे दे !

उसे जेलमें आये हुए दो-ढ़ाई घण्टे हो गये थे ! लेकिन उसे उसका कुछ भी खयाल नहीं हो रहा था ! एकाएक एक कमरेसे आवाज आयी—

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा
त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः
करिष्ये वचनं तव ॥

वह चौंका। फ्रांसके एक कारागारमें सुदूरवर्त्ती भारतवर्षकी प्राचीन भाषाको सुनकर वह आश्चर्यित हो उठा ! भारतवर्षमें

वह कुछ समय तक रह चुका था और अपनी वैज्ञानिक साधनामें उसे संस्कृतके ग्रन्थोंसे काफी सहायता मिली थी।

आवाज पासके ही एक कमरेसे आ रही थी। वैज्ञानिक वहां गया और धीरेसे कहा—'क्या तुम भी क्रान्तिकारी-दलके आदमी हो ?'

'नहीं !' बन्दीने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया !

'तुम लौरेटा नामक बन्दिनीको जानते हो ! उसका क्या हुआ ? वह अपने कमरेमें नहीं है ? उसे फांसीकी सजा तो नहीं हो गयी है ?'

बन्दीने वैज्ञानिककी ओर शान्तिपूवक देखते हुए कहा—'मैं कुछ भी कह सकता !'

वैज्ञानिक पागल हो रहा था। उसने अपने यन्त्रके द्वारा चार पांच छड़ोंको मिनट भरमें गला दिया और बन्दीको बाहर निकाल लाया। बन्दी बोला—'आप कौन हैं ? मुझे इस कारागार से क्यों मुक्त कर रहे हैं ?'

'मैं कौन हूं और क्यों मुक्त कर रहा हूं, यह जान कर क्या करोगे ? जो कहता हूं, वह करो !' कहता हुआ वैज्ञानिक बन्दीके साथ व्योमयानके पास चला आया और उसे बिठा कर स्वयं भी एक उष्ण उछ्वास छोड़ता हुआ बैठ गया !

रात काफी बीत चुकी थी। कई कर्मचारी जाग गये थे। और तीन व्यक्तियोंने तो उस व्योमयानपर दोनोंको बैठते हुए भी देख लिया था। वे उस ओर दौड़े भी। लेकिन वे उनके

पास पहुंचे, इसके पहले ही वैज्ञानिकने परिचालक यंत्र घुमा दिया और व्योमयान आकाशमें उड़ता हुआ नजर आने लगा।

वैज्ञानिककी विचित्र हालत हो रही थी, कभी-कभी तो उसकी ऐसी इच्छा हो रही थी कि वह किसी अज्ञात दिशाकी ओर उड़ जाये, जहांसे फिर कभी लौटना ही न हो! उसे पूर्ण विश्वास हो गया था कि उसकी लौरेटाको फांसी हो गयी है!

उसने बड़ी ही उपेक्षाभरी वाणीमें पूछा—'तुम्हारा नाम क्या है?'

'मेरा नाम जेली है!'

वैज्ञानिकने फिर कोई प्रश्न नहीं किया। वह सोच रहा था, काश! जेलीके स्थानपर उसे लौरेटा शब्द सुननेको मिलता! ……उसे बड़ी ही आत्मग्लानि हो रही थी, लौरेटा अब इस जीवनमें नहीं मिल सकेगी, यह विचार ज्यों-ज्यों उसके मस्तिष्क की शिराओंको पीड़ित करता जाता था, त्यों-त्यों उसका अनुराग भी उग्रतर होता जाता था।

यही तो मानव-जीवनकी सबसे ज्यादा घातक पहेली है! जो चीज मिल जाती है, वह उतनी प्यारी नहीं लगती, जितनी वह चीज, जो अहर्निश शिर पटकते रहने पर भी नहीं मिल पाती! कभी-कभी तो उसका न मिलना ही प्रेमका उत्पादक हो जाता है!……

वैज्ञानिककी निराशा ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों उसका उन्मद भी विवर्धित होता जाता था! वह रहरह कर

अपने केशोंको नोचने लगता था ! कभी बड़बड़ाने लगता,—छिः ! मैं अपनी लौरेटाको भी नहीं बचा सका। अपनी इसी वैज्ञानिक साधनापर मुझे अभिमान था !…मैं अपनी प्रयोग-शालाको नष्ट कर डालूँगा ! अपने समस्त अपूर्ण आविष्कारोंमें आग लगा दूंगा !…

जेली मौन, विस्मय-विमूढ़-सा उसकी ओर देख रहा था। वह क्या बोले, यही उसकी समझमें नहीं आ रहा था !

× + + ×

उधर व्योम-पथमें तो वैज्ञानिक इस प्रकार हाहाकार कर रहा था और इधर पृथ्वीपर एक कारमें लौरेटा अर्थमन्त्रीसे सटकर बैठी हुई चली जा रही थी।

'दुनियाँ बड़ी प्यारी लग रही हैं लौरेटा !' अर्थमन्त्रीने कहा !

'वास्तवमें आज मुझे भी यहाँकी दृश्यावली बड़ी ही लुभा-वनी प्रतीत हो रही है ! यों तो मैं पहले भी कई बार इस ओरसे आयी गयी हूं, किन्तु आजका-सा सौन्दर्य मुझे पहले कभी भी नहीं दिखलायी दिया ! ये मेघमालाएँ प्राणोंको अत्यन्त मद-विभोर कर रही हैं !' लौरेटाने एक कुशल अभिनेत्रीकी भाँति प्रेमका अभिनय करते हुए कहा।

'लेकिन लौरेटा ! तुम्हें प्रभात होनेके पहले ही जेलमें पहुंचा देना होगा, अन्यथा लोगोंको यह बात मालूम हो जायगी अधिक नहीं केवल सात आठ दिनों तक ऐसी हालत रहेगी। उसके बाद तो हम तुम दोनों स्वतन्त्रापूर्वक भ्रमण कर सकेंगे।

मैं तुम्हें अवश्य फाँसीकी सजासे बचा लूँगा। न्यायाधीश मेरी बातको कभी नहीं टाल सकता। अर्थमन्त्रीने लौरेटाकी ओर कामुकतापूर्ण दृष्टिसे देखते हुए कहा।

लौरेटा उस दृष्टिको सह नहीं सकी। उसका रोम-रोम घृणासे सिहर उठा, किन्तु उसने किसी तरह अपनी उभड़ती हुई भावनाओंको दबा लिया और अधरोंपर कृत्रिम मुसकान बिखेर कर बोली—'आपकी दया है। मुझे न जाने क्यों आपका संसर्ग बड़ा प्यार लगने लगा है। इस अँधेरी रातमें आपसे अलग होने की इच्छा ही नहीं होती है!'

लौरेटा सोच रही थी,—यह कैसा बेवकूफ है! समझता है कि मैं इससे प्रेम करती हूं! ऐसे-ऐसे नारकीय कुत्तोंसे एक क्रान्तिकारिणी प्रेम करने लगे; तब तो क्रान्तिकारियोंको सफलता मिल चुकी। किसी तरह अपने विप्लवी बन्धुओंको छुड़ाना है। उनके छूटते ही मेरी पिस्तौलका पहला शिकार यह नालायक बनेगा!'

———

२२

आर्थस और रंमोना वैज्ञानिकके बँगलेके प्रवेश-द्वारपर बैठ-बैठे उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

आकाश धीरे-धीरे जलदावलियोंका क्रीड़ा-क्षेत्र बनता जा रहा था और विद्‌युन्माला अपनी क्षीण आभासे पथहारा पथिकोंको प्रहर्षित करने की असफल आकुल चेष्टा कर रही थी। शीतल चपल अनिलके द्वारा आहत होकर कभी-कभी पार्श्ववर्त्ती विटपीदलोंकी प्रशुष्क प्रत्रावलियां कुछ बोल उठती थीं। सब विहंगोंके सो जाने पर एक पागल तृषाकुल विहंगम नीड़हीन सा इधर-उधर चीखता फिर रहा था।

रैमोना बोला—आर्थस ! यह अन्धेरी यामिनी मेरे हृदयस

कितनी सादृश्य रखती है। इसके अन्तर्तममें भी राशि-राशि कृष्ण मेघमालाएँ घहराती रहती हैं और घहरा-घहरा कर अन्धकारकी वेदनाको घनीभूत करती रहती हैं। मेरे हृदयमें भी अभिशापों और निदारुण पश्चात्तापोंका निरोदन होता रहता है और नैराश्य-का तिमिर प्रतिपल घनीभूत होता जाता है। इसके सुविस्तृत नीरव हृदयान्तरालमें एक छोटा सा तारक भी आलोक प्रदान नहीं कर रहा है, केवल चपला अपने चपल आलोकको बिखेरती हुई इसका उपहास कर रही है। मेरे अन्तर्तममें भी इसी प्रकार उपेक्षित, अवहेलित अन्धकार प्रकाशकी एक क्षीणातिक्षीण रजत रश्मिके लिये हाहाकार कर रहा है। उसे आशाकी एक लघुतम और अत्यन्त चंचल किरण कभी-कभी ज्योतित कर जाती है इस सुविस्तृत नीरवतामें जिस प्रकार वह पागल पंछी चीख-चीख कर किसी निर्ममको अपनी अन्तर्व्यथा बतलानेकी चेष्टा कर रहा है, उसी प्रकार मेरे इस अनन्त सन्नाटेमें भी कल्पना-विहंगम चीखें चीखकर किसीको अपने पास बुला लेनेकी पीड़ातुर मनुहार कर रहा है!......हाय!

आर्थर रैमोनाकी भावुकतामयी बात सुन कर मन ही मन हँसा। फिर बोला—रैमोना, तुम बड़े भावुक हो। इतनी प्रखर भावुकता लेकर इस दुनियांमें रहना बड़ा मुश्किल है। तुम्हारे जीवनमें यह जो इतना-इतना हाहाकार बिखर गया है, इतना राशि-राशि उत्पीड़न और मर्मघातक चीत्कारका समूह आ पहुंचा है, इसका बहुत कुछ श्रेय तुम्हारी इसी भावुकताको है। तुमने

संसारको प्रेमस्थल समझा है और यही तुम्हारे जीवन-व्योममें सिसकियाँ भरनेवाले अन्धकारका कारण है। जीवन संग्राम है। इसमें वीर यौधेयकी भाँति डट कर लड़ना पड़ेगा। बुद्धिके प्रशान्त आलोकमें शत्रुओंको पहचानना पड़ेगा और उन्हें पराभूत करके आगे बढ़ना होगा। अन्यथा तुम्हारे शत्रुओंकी संख्या और शक्ति सदैव विवर्धित होती जायगी और वे तुम्हारे हृदय और मस्तिष्क दोनोंको ही आक्रान्त करके तुम्हारा सर्वनाश कर डालेंगे!......रैमोना! मैं तुम्हें इतना उपदेश कभी नहीं देता। लेकिन न जाने क्यों तुम्हारे प्रति एक विचित्र स्नेह भरी ममता-सी हो गयी है, जो मुझे तुम्हारे जीवनको समुन्नत करनेके लिये विवश करती रहती है। तुम लौरेटाको प्यार करते हो,—उसके लिये सर्वस्व स्वाहा कर सकते हो। मैं भी लौरेटाको चाहता हूँ, लेकिन उसके लिये किसी प्रकारका भी ऐसा त्याग नहीं चाहता, जिससे मेरे हृदयको या मस्तिष्कको क्लेशोंसे आक्रान्त होना पड़े। मैं उसके यौवनसे,—उसके सौन्दर्यकी मादक ज्योत्स्नासे—उसकी वाणीकी अनुपम मोहकतासे प्रभावित होकर उसे चाहने लगा हूँ, किन्तु तुम्हारी तरह मैं उसे अपनी सब कुछ नहीं मानता।

रैमोना चुपचाप सुन रहा था। उसका सिर अभी तक नीचे झुका हुआ था और दोनों नेत्र अश्रु-आविल हो रहे थे। उसने सिर ऊपर उठाया और एक बार ध्यानपूर्वक आर्थसकी ओर देखा। फिर बोला—'आर्थस, क्या तुम भी मेरी लौरेटाको प्यार करते

हो ? क्या तुम भी उसके सौन्दर्य-शतदलमें पागल मधुकरकी भाँति सान्ध्या-शापाक्रान्त होकर बन्दी बन गये हो ?'

'मैं उसे प्यार नहीं करता हूं। केवल चाहता हूं। उसके रूप और रसने मुझे मदिरोन्मत्त किया है और जिस दिन उस मदिरा का नशा उतर जायगा उस दिन लौरेटा मेरे लिये सर्वथा नगण्य रह जायगी।'

'चाहे जो हो। तुम उसे चाहते हो, इसमें कोई सन्देह नहीं। तुम्हें उसकी आवश्यकता है, इसमें भी कोई सन्देह नहीं। लेकिन आर्थस, क्या तुम लौरेटाको केवल अपनी वासना-तृप्तिका साधन मात्र बनाना चाहते हो ! क्या लौरेटाका तुम्हारी दृष्टिमें इतना ही महत्त्व है कि वह तुम्हारे कलेजेसे लगकर उसकी तपिशको दूर कर दे और उस तपिशके दूर हो जाने पर, - उस ज्वालाके प्रशमित हो जाने पर फिर उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती आर्थस ! लौरेटासे मेरा सम्बन्ध अनन्त है - अक्षय है। जीवनके इस पारसे लेकर उस पार तकके लिये वह मेरी है और मेरी ही रहेगी। मृत्युके उस पार भी लौरेटाको मैं प्यार करता रहूंगा। तुम्हारी बातोंको सुनकर मुझे दुःख अवश्य हुआ है और यदि दूसरा समय होता तो शायद क्रोध भी आ जाता, किन्तु आर्थस ! अब तो जीवनमें क्रोध करनेकी क्षमता ही नहीं रह गयी है ! हृदय इतना जल चुका है कि अब क्रोधकी अग्नि उसे जला ही नहीं सकती। वह जल कर खाक हो गया है। किन्तु इतना अवश्य कहूँगा कि तुम लौरेटाको इस दृष्टिसे न देखो।

वह प्रभातके किरण-स्पर्शसे मुकुलित पाटलके सौरभ-वितरण-सी पवित्र है ! उसका सौन्दर्य शारदीय इन्दुकी पूर्ण विभाकी भाँति पावन है ! वह तापस-बाला है। उसने जीवनके इन सुकुमार दिवसोंको अनवद्य साधनाके श्रीचरणोंपर निवेदित कर दिया है!"

आर्थसने रैमोनासे लौरेटाके सम्बन्धमें —क्रान्तिकारी दलमें उसके आगमन एवं उसके महान् कृत्योंके सम्बन्धमें सब कुछ कह दिया था। पहले तो रैमोनाको अपनी लवंगलता-सी मृदुल व्यक्तित्ववाली लौरेटाके द्वारा किये गये वीरत्वपूर्ण कृत्योंपर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन पीछे विश्वास करना ही पड़ा था।

अच्छा अभी जाने दो ! मैं निश्चयपूर्वक कुछ भी नहीं कह सकता। मेरे विचारोंमें इस समय स्थिरता नहीं है। क्या जाने कब मेरे विचार परिवर्त्तित हो जायँ। मैं प्रेमी नहीं हूं इतना तो मैं अच्छी तरह जानता हूं। सिरसे लेकर पैर तक मेरा रोम-रोम केवल एकही झंकारसे अनुप्राणित होता रहता है और वह झंकार निकलती है महाक्रान्तिकी महामहिम वीणासे। मैं अपनी योज-नाओंको कार्यरूपमें परिणत करके आज दुनियाँमें एक देशसे तो पूँजीवादका नामोनिशान मिटा ही डालता और वहाँ श्रमजीवी राज्यकी स्थापना करके ही छोड़ता, किन्तु मेरे क्रान्तिकारी बन्धुओंने मेरा जो अपमान किया है, वह मुझसे भूला नहीं जाता। मैं सोचता हूं कि जब मेरे क्रान्तिकारी बन्धुओंने ही, जिनके द्वारा एक समय मुझे अशेष प्रेम और आदरकी प्राप्ति हुआ करती थी, मेरी इस प्रकार भर्त्सना की और मुझे क्रान्तिकारी

दलका कलङ्क बताया,—मेरे द्वारा किये गये समस्त महत्त्वपूर्ण कृत्योंको, जिनसे क्रान्तिकारी दलकी नींव ही मजबूत नहीं हुई बल्कि साथ ही साथ पूँजीवादकी दीवारें भी हिलती गयीं, इतनी जल्दी विस्मृतिके अन्ध तिमिराच्छन्न गर्त्तमें फेंक दिया गया, तब मुझे दूसरोंसे आशा ही क्या हो सकती है! दूसरे मुझे, कब तक स्नेह प्रदान कर सकते हैं। आज मैं उनके लिये मरूँ,—रात्रि-दिवसकी कठोर साधना और निदारुण तपस्याके उपरान्त मानव-जातिके पथमें बिखरे हुए अग्नि-स्फुलिंगोंको नष्ट करके वहाँ कोमल कुसुम विकीर्ण करूँ और कल मेरी एक छोटी-सी गलती पर वे मेरे ऊपर भर्त्सनापूर्ण शब्दोंका प्रहार करने लगें। यह तो अच्छा रहेगा न! मैं दुनियाँके इतिहासमें भी यही देखता आ रहा हूं। कोई व्यक्ति अपने समस्त आनन्दोपभोगके साधनों-को लात मारकर मानव-जातिकी हित-साधनाके लिये नानाविध कष्ट सहन करता हुआ अहर्निश उद्योग करता रहता है और एक जरा-सी गलती पर उसे इस प्रकार अपमानित किया जाता है कि कुछ न पूछो! उसके समस्त गुणोंको उसके एक छोटेसे अवगुणके कारण भुला दिया जाता है। अब तुम्हीं बताओ ऐसे कृतघ्नोंके लिये मैं क्यों अपने जीवनको संकटापन्न करूँ! सच कहता हूं, यदि मेरे विप्लवी बन्धुओंने मेरे प्रति इतना बुरा व्यवहार नहीं किया होता तो मैं एक वर्षके भीतर-भीतर इस देशसे पूँजीवाद और साम्राज्यवादको समूल उखाड़ फेंकता। किन्तु—।”

बोलता-बोलता आर्थस रुक गया। सुदूर अंबरकी कालिमाको देखकर उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ा और फिर बोलने लगा—रमोना! मेरा इस समय कुछ ठीक नहीं है। किस समय मैं पुनः महाक्रान्तिके पावन उद्देश्यसे अनुप्राणित हो उठूँ, यह कहना कठिन है। प्रतिक्षण परस्पर विरोधी विचारोंके बवण्डर मस्तिष्कमें आते हैं और शिरा-शिराको झकझोर कर हड़कम्प मचाते हुए चले जाते हैं। कभी-कभी तो अपनी वर्त्तमान अवस्थापर बड़ी ही ग्लानि होती है। हृदयका अणु-अणु मेरी भर्त्सना करने लगता है!"

एकाएक वैज्ञानिकका बूढ़ा नौकर लालटेन लिये हुए वहाँ आ पहुंचा और बोला—'हमलोग कौन हैं और क्या चाहते हैं?'

आर्थस बोला—'हमलोग दोनोंके दोनों किस्मतके मारे हुए हैं और वैज्ञानिकसे मिलनेके लिये आये हैं।'

'आपलोगोंका क्या उनसे पहलेका भी परिचय है।'

'नहीं।' आर्थस बोला।

'फिर आपलोगोंको उनसे क्या काम है? वे इस समय यहाँ नहीं हैं? आवश्यक कार्यसे बाहर गये हुए हैं!'

'हमलोगोंको उनसे बहुत जरूरी काम है। यह काम उनके सिवा और किसीको भी नहीं बतलाया जा सकता। आप अपना परिचय दें तो हमलोग बतला सकते हैं।' रैमोना बोला।

बूढ़ा नौकर गौरसे उन दोनोंकी ओर देखने लगा। फिर बोला—'मैं उसका सब कुछ हूं, यही मेरा परिचय है। मेरे सिवा

इस दुनियामें उसका कोई भी नहीं। आपलोग चिन्ता न करें। जो कुछ कहना हो, बेखटके कहें। मुझसे छिपानेका नतीजा यही होगा कि आपलोगोंका कार्य सिद्ध नहीं हो सकेगा।'

आर्थर्स कुछ देर द्विविधाग्रस्त रहनेके उपरान्त बोला—'उस क्रान्तिकारिणी महिलाको तो आप जानते ही होंगे, जिसके साथ आपके वैज्ञानिक महोदय पकड़े गये थे। हमलोगोंको उसीके सम्बन्धमें कुछ बातें करनी हैं।'

बातें हो ही रही थीं कि आर्थसने विस्मय-विस्फारित नेत्रोंसे देखा, लौरेटा फ्रांसके अर्थसचिवके साथ कारसे उतर रही है! रैमोना हर्षसे चिल्ला उठा? आर्थसने अपनी पिस्तौल निकाल ली और अर्थसचिव पर गोली चला दी! वह कराह कर गिर पड़ा! उसके गिरते ही आर्थसने लौरेटासे व्यग्रतापूर्वक कहा—बहन लौरेटा, देर न करो। देर न करो। यहाँ खड़ा रहना आपत्तिजनक हो सकता है। जल्दीसे जल्दी हमलोगोंको कहीं चल देना चाहिये। हम दोनों तुम्हारी खोजमें बेचैन हो रहे थे!

किन्तु यह क्या? आर्थसने तो सोचा था कि लौरेटा उसे भाई कहकर गलेसे लगा लेगी और रैमोनाको देख कर हर्ष विभोर हो उठेगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। लौरेटाके कपोल क्रोधावेशसे रक्ताक्त हो उठे! उसने अपने नेत्रोंसे अग्निकणोंकी वर्षा करते हुए कहा,—'आर्थस! तुम कैसे बेवकूफ हो! बिना सोचे विचारे तुमने अर्थसचिवकी हत्या कर डाली! आखिर तुम्हें दिमाग लड़ाना चाहिये था कि मैं क्यों इसके साथ एक ही कार

पर आ रही थी और क्यों इतनी प्रेमभरी भाषामें बात कर रही थी। तुमने सब कुछ चौपट कर दिया! आखिर तुमने विप्लवी दलका सत्यानाश करके ही दम लिया! प्रवञ्चक! तुझे मृत्युके श्यामांचलमें भी शान्ति नहीं मिल सकेगी!'

क्रोधके कारण लौरेटाके ओठ फड़फड़ा रहे थे।

आर्थसका हृदय चकनाचूर हो गया था! उसने अपना पिस्तौल दूर फेंक दिया और मुँहको हाथोंसे ढँक कर बालकोंकी तरह फूट-फूट कर रोने लगा!

जीवनमें कहीं भी अभागेको सफलता नहीं मिल रही है! जो करता है, वही अनिष्टतम बन जाता है। जीवन-वाटिकाके प्रत्येक पुष्पमें अमंगल ही अमंगल बिखरा पड़ा है! उसका हृदय-चंचरीक किस पर बैठकर कुछ क्षण अपनी परिश्रान्ति दूर करे!... वह जो कुछ पाता है, गलत हो पाता है! उसने तो सोचा था कि अर्थमंत्रीकी हत्या करनेसे लौरेटाको प्रसन्नता होगी और वह आर्थसको गलेसे लगा लेगी!...किन्तु सर्वथा विपरित हुआ!... कैसा निष्ठुर भाग्य है उसका!

वह अधिक देर खड़ा नहीं रह सका! पर्वतकी उत्तप्त शिलाओंपर भी निर्भीक होकर दौड़ते फिरनेवाले आर्थसके पैर, राजकीय विभागके आदमियोंसे अपनी प्राण-रक्षाके लिये मीलों तक संघर्ष करनेवाले वीर प्रवर आर्थसके पैर उस समय अत्यन्त अशक्त हो गये और वह कुछ-कुछ बेहोश सा,—अर्धमूर्च्छित सा धड़ामसे गिर पड़ा।

हृदयके अन्दर न जाने कौन सा दानव बारबार लौरेटाके ज्वलन्त शब्दोंको दुहरा रहा था 'आर्थस! तूने विप्लवी-दलका सर्वनाश कर दिया!' कैसी विडम्बना है! आर्थस और विप्लवी दलका सर्वनाश!······विप्लवी-दलकी सफलताके लिये जिस आर्थसने अनेकानेक रक्त पर्वोंकी सृष्टि की,—अनेकानेक शशि-खचित मिलन-यामिनियोंको चिर विरहकी हाहाकारमयी यामि-नियोंमें परिणत कर दिया,—जिसके नेत्रोंकी आक्रोश-वन्हिसे अनेकानेक पापपरायण पूंजीपति बरबाद हो गये, वही आर्थस आज अपनी एक क्रान्तिकारिणी बहनके मुखसे सुन रहा है—आर्थस! तूने विप्लवी-दलका सर्वनाश कर दिया।' जिसकी तूफानी भावनाएँ पारिपार्श्विक वातावरणमें कर्मोन्मावनाका संचार करती थीं,—जिसका चिरविद्रोही हृदय सदैव पूँजीवाद और साम्राज्यवादके नाशके ही स्वप्न देखा करता था,—जिसका शोणित सदैव यौवनकी दुर्दान्त ज्वालासे जलता रहता था,—सृष्टिकी समस्त कालिमा, समग्र हाहाकार, समस्त कलुषके पारा-वारको जो अगस्त्यकी भाँति सोख कर चतुर्दिक श्री-सुख-सुषमाका प्रसार चाहता था, वही आर्थस आज अपने आपको कितना पतित—कितना नगण्य पा रहा है।

तो क्या सचमुच आर्थसके जीवनकी उन दो एक छोटी सी गलतियोंने उसके जीवनके सारे प्रकाशको नष्ट कर दिया। गल-तियाँ कौन नहीं करता? आर्थस भी आखिर मनुष्य ही है। उसके पास भी मनुष्य का सा ही हृदय है। मनुष्यका सा ही मस्तिष्क है

और मनुष्यकी सी ही अन्य वासनाएँ हैं। उसने अपनी अन्य उच्च शक्तियोंके द्वारा जीवनकी तुच्छ एवं कुत्सित वासनाओंको दबा दिया था, किन्तु अवसर पाकर इनमेंसे दो एक वासनाएँ भड़क उठीं।......तो क्या उनके कारण आर्थसका सब कुछ नष्ट हो गया।—वह कहींका नहीं रहा।......

उसने रैमोनासे कहा—'गायक, मेरी और तुम्हारी दोनोंकी भाग्य-रेखा एक सी ही है। दोनोंका जीवन विचित्र आत्मद्रोहमयी छलनाओंसे भरा है।'

रैमोना चुपचाप नीची नजर किये खड़ा था। जिसके वियोग में वह जीवनकी सारी वासन्ती श्री सुषमाको लुटा कर पतझड़के चीत्कारको आमंत्रित कर बैठा था, वही रसमयी लौरेटा उसके सामने खड़ी थी और वह मौन था—उसके मुखसे एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे किसीने उसके कण्ठको कुण्ठित कर दिया हो। हृदय कुछ बोलना चाहता था, किन्तु कण्ठ तक पहुंचते-पहुंचते वह मौन हो जाता था।

लौरेटाने कड़ी दृष्टिसे रैमोनाकी ओर देखा और बोली—'रैमोना! क्या सोच रहे हो? तुम्हारे जैसा पतित और आदर्शहीन व्यक्ति भी प्रेमी बननेका दम भर सकता है, यह बड़े आश्चर्यकी बात है। मैं मानती हूं कि तुम्हें यह बात मालूम नहीं थी कि मैं ही वह क्रान्तिकारी महिला हूं जिसे पकड़नेके लिये पुरस्कारकी घोषणा की गयी थी। किन्तु चाहे रहूंमैं चाहे कोई भी क्यों न

रहे, एक क्रान्तिकारणीको केवल पुरस्कारके लोभमें पकड़ानेका प्रयास करना कितना कठोर दुष्कर्म है। और तुम उसी दुष्कर्मको कर बैठे थे। तुम्हें शरम भी नहीं आयी। कोई तो मानव-जातिका हितैषणासे अनुप्राणित होकर अपने जीवनके समस्त सुख-वैभवको ठुकरा दे—अपनी समग्र सुकुमार अनुभूतियोंका गला घोंटकर क्रान्तिके कण्टकाकीर्ण मार्गका पथिक बने और तुम नालायक बन कर उसे शासकवर्गके खूनी पंजोंमें सौंपनेकी चेष्टा करो। मेरे पकड़े जाने पर तुम पागलोंकी भाँति रास्तेमें जो चिल्लाते जा रहे थे, वह कानोंमें भी पड़ रहा था। किन्तु यदि कोई दूसरी महिला रही होती तब तो तुम बड़ी आसानीसे पुरस्कारके रुपये ले लेते और तुम्हारी प्रसन्नताका ठिकाना नहीं रहता। छिः। ...

रैमोना,—लौरेटाके कारण जीवनके रसमय दिवसोंमें हला हल बिखेरनेवाला रैमोना इसका क्या उत्तर दे। वह कैसे बतलाये कि उसे रुपयोंका लोभ तनिक भी नहीं था। वह तो केवल अपनी लौरेटाको पानेके लिये उस दुष्कर्ममें प्रवृत्त हुआ था।

'अच्छा, अब सोचनेका या पश्चात्ताप करनेका समय नहीं है। अपने समस्त क्रान्तिकारी बन्धुओंको मुक्त करना पड़ेगा। हमलोग तो यहाँ मुक्त नभोमण्डलके नीचे सुन्दर वन-पथमें स्वतन्त्रतापूर्वक खड़े हैं और वे कारागारकी तमाकीर्ण कोठरियोंमें बैठे-बैठे फाँसी के हुक्मकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे। आर्थस ! सब कुछ भूल कर इस समय तो जैसे भी हो अपने बन्धुओंको कारागारसे मुक्त कराओ। अर्थमन्त्रीके प्रति प्रेमका अभिनय करके मैं इस वैज्ञानिककी सहा-

यतासे ऐसा करनेमें बड़ी सरलतापूर्वक सफल हो जाती, किन्तु तुमने सब कुछ खराब कर दिया।

आर्थसने पूछा--'वैज्ञानिककी प्रयोगशालाका पता तो तुम्हें होगा ही। हमलोग दोनों जन कबसे उसीकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। 'चलो, मैं चलती हूं।' यह कह लौरेटा कारपर बैठ गयी और आर्थसको भी बैठनेका आदेश करके चल पड़ी।

रेमोनासे किसीने कुछ कहा तक नहीं। चुपचाप, अवहेलित, निरादृत-सा वह तबतक उस ओर देखता रहा, जब तक कि कार आंखोंसे ओझल नहीं हो गयी।

२३

दूरसे ही दोनोंने देखा,—आगकी लपटें उठ रही है। और वनके विहंगम भयभीत होकर शोर कर रहे हैं!

'लौरेटा! ये आगकी लपटें कहाँ उठ रही हैं?' आर्थसने पूछा।

'अरे यह तो वही स्थान है, जहाँ वैज्ञानिककी प्रयोगशाला है।' लौरेटा कुछ भयभीत होती हुई सी बोली।

'जल्दी चलो! मुझे तो किसी अनिष्टकी आशङ्काहो रही है।' आर्थस बोला।

लौरेटाने कार पूरी तेजी के साथ चलाना आरम्भ कर दिया। संत्रस्त-सी होकर बोली—'मुझे सन्देह हो रहा है, कहीं उस

वैज्ञानिकने स्वयं अपनी प्रयोगशालामें आग न लगा दी हो। वह बड़े विचित्र स्वभावका आदमी है।'

कुछ ही क्षणोंमें कार वहाँ पहुँच गयी। ऊँची-ऊँची लपटें उठ रही थीं और वैज्ञानिककी प्रयोगशाला धू-धू करके जल रही थी।

'उसे बचाओ! वह अंदर बैठा-बैठा न जाने क्या-क्या बड़-बड़ा रहा है।' जेली हड़बड़ाता हुआ आया और बोल उठा।

सब इतने घबड़ाये हुए थे कि न तो लौरेटाकी दृष्टि जेलीपर पड़ी और न जेलीकी दृष्टि लौरेटा पर। लेकिन आँखें चार होते ही जेली चिल्ला उठा,—'अरे लौरेटा!'

'अभी इन सब बातोंकी आवश्यकता नहीं हैं। वह वैज्ञानिक कहाँ है? मैं उसे बचाऊँगी।' लौरेटा कड़े स्वरमें दृढ़तापूर्वक बोली।

'वह अन्दरके कमरेमें एक कुर्सीपर बैठा है और एक विचित्र स्याहीसे एक विचित्र कागज पर कुछ लिख रहा है। मैंने उसे बाहर लानेका लाख प्रयत्न किया लेकिन वह टससे-मस नहीं होता। उसका दिमाग फिर गया है। उस कमरेमें भी आगकी भयावह लपटें पहुँच रही हैं और पता नहीं किस क्षण वे उस आत्मद्रोही वैज्ञानिकको आत्मसात् कर लें।

लौरेटा, तुम यहीं रहो। मैं जाता हूँ मैं मर भी जाऊँगा। तो दुनियाँका कुछ नहीं बिगड़ेगा। मेरी आँखें खुल रही हैं। मैं वास्तवमें विप्लवी-दलका कलङ्क हूँ। मेरे ही कारण क्रान्तिके उज्वल पथमें अन्धकार उमड़ आया है। दुनियाको,—दुनियाके

इन कोटि-कोटि बुभुक्षित और अर्धनग्न मानवोंको मेरे जसे—कामलोलुप, आदर्शहीन एवं परिवर्त्तनशील विचारोंवाले व्यक्तिके द्वारा क्या लाभ पहुंचेगा ? अभी तक तो केवल हानि ही हानि पहुँचती रही है। तुम न जाओ, लौरेटा ! तुम्हारे द्वारा संसारमें सर्वहारा-दलका अपरिसीम कल्याण-साधन हो सकता है। दुनियांको तुम्हारी जरूरत है।'—और यह कहता हुआ आर्थस आग की उन लहरोंको चीरता हुआ अन्दर घुस गया।

लौरेटा अस्थिर हो रही थो। एक-एक पल उसे भारी हो रहा था। रह-रहकर आगकी लपटोंमें कूद कर उस वैज्ञानिकको बचा लानेकी इच्छासे उसका हृदय आलोड़ित-विलोड़ित हो रहा था। जेली उसे कसकर पकड़े था और मना कर रहा था।

"जेली काका, तुम इस वैज्ञानिकको नहीं जानते हो। इसके मस्तिष्कमें अपरिसीम बल है। इसके समान वैज्ञानिक इस समय इस दुनियांमें दो ही चार होंगे। यह यदि चाहे तो अपने जीवनको नियमित बनाकर मानव-जातिका बहुत कुछ उपकार कर सकता है। किन्तु—'

वह वाक्य पूरा भी नहीं कर पायो थो कि जलती हुई छत गिर पड़ी। लौरेटा चीख उठी। जेली भी सिहर उठा और भगवानसे कातर प्रार्थना करने लगा।

एकाएक दोनोंने देखा पिछले दरवाजेसे वैज्ञानिकको कंधेपर उठाये हुए आर्थस चला आ रहा है। उसके शरीरमें स्थान-स्थानपर गहरी चोट लगी हुई है और कपड़े जल रहे हैं।

लौरेटा तक पहुंचते न पहुंचते आर्थस थककर जमीन पर धड़ामसे गिर पड़ा और लंबी-लंबी सासें लेने लगा।

प्रयोगशाला धू-धू करके जल रही थी,—चिताकी लपटोंमें जलनेवाली मानवी देह की भाँति विज्ञानके बड़े-बड़े ग्रन्थ भस्म हो रहे थे। आलमारियाँ, जिनमें एकसे एक मूल्यवान् और अप्राप्य उपादान रखे हुए थे, जल-जल कर गिर रही थीं।

लौरेटाने आँखोंमें आँसू भरकर एक बार उस प्रयोगशालाकी ओर देखा और फिर बोली—'आह ! इस प्रयोगशालासे सन्तप्त, शोषित मानव जातिका बहुत कुछ उपकार हो सकता था। क्रांतिकारी-दल इसके द्वारा बड़ी आसानीसे श्रमजीवियोंका रक्त चूसनेवाले पापपरायण पूँजीपतियोंका मूलोच्छेद करनेमें समर्थ हो जाता !...आह।'

'बीती हुई बातोंको जाने दो और पहले इन दोनोंकी ओर देखो।' जेली विकलतापूर्वक बोला।

'इन लोगोंकी ओर अब क्या देखा जाय। इस विस्तृत अरण्यानीमें इनका उपचार हो भी तो कैसे हो। तुम दया करके कार पर बैठो और जितनी जल्दी जा सको उस बंगले तक जाओ। वहाँ इसका बूढ़ा नौकर होगा। उसे सारी बातें कह दो। वह बड़ा अनुभवी है। उसे लेते आओ। जाओ, एक मिनटकी देरी न करो।'

जेली—इतने दिनों तक कारागारकी अन्धकारित कोठरीमें रहनेके बाद मुक्ति वायुमें आकर भी यह हाहाकारमयी घटना देखने वाला जेली कारपर बैठकर चल पड़ा।

उस पीड़ामयी परिस्थितिमें लौरेटा भूल गयी थी कि यह कार अर्थमंत्रीकी है और प्रभात हानेमें अधिक देर नहीं है।

उसके चले जानेके उपरान्त लौरेटा आँखोंमें आँसू भर कर आर्थस और वैज्ञानिक दोनोंके अर्धदग्ध शरीरकी ओर देखने लगी। दिवाकरकी किरणोंने प्राची क्षितिजको चूमना आरम्भ कर दिया और धीरे-धीरे रात्रीका तिमिर दूर होते न होते वह प्रयोग-शाला पूर्णरूपसे जल गयी।

२४

आर्थस सर्वथा आशक्त होकर पलंगपर लेटा हुआ था। स्थान-स्थानपर पट्टीयाँ बँधी हुई थीं। सारा शरीर आगकी लपटों से झुलस गया था।

वैज्ञानिककी हालत उससे भी ज्यादा बुरी थी। आर्थस बोल तो सकता था, किन्तु वह तो बोलनेकी शक्तिसे भी हाथ धो बैठा था। उसका बूढ़ा नौकर दोनोंकी सेवा-शुश्रूषामें तनमनसे लगा हुआ था और लौरेटाकी तो नींद और भूख दोनों ही गायब हो गई थी। रात-रात भर आर्थसके सिरहाने बैठी रहती और उससे स्नेहभरी वाणीमें बातें करती रहती।

एक दिन लौरेटा समाचार पत्र पढ़ रही थी। पढ़ते पढ़ते वह चीख उठी, और उसके हाथोंसे छूटकर पत्र नीचे गिर पड़ा।

'क्यों वह क्या है ?' आर्थसने पूछा।

'उफ !' लौरेटा इसके आगे कुछ भी नहीं बोल सकी। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उसके हृदयमें शत-शत भूकम्पन हो रहे हों।

'क्यों, बात क्या है ?' इस बार आर्थसने अपने मुखसे नहीं बल्कि अपनी आंखोंसे अपरिसीम पीड़ामय जिज्ञासा भरकर पूछा।

'कुछ न पूछो। सब कुछ चौपट होगया। सबोंको फांसी हो गयी—सबके सब अत्याचारी शासक-वर्गके द्वारा मार डाले गये। 'उफ !' लौरेटा बोल नहीं रही थी, कांप रही थी।

'क्या किसियोपिकसको भी फांसी हो गयी ?' आर्थस रो उठा।

'हां, कह तो रही हूं कि सबको हो गयी।'

थोडी देर तक सन्नाटा छाया रहा। वहां के समीरणकी एक-एक हिलोरमें एक विचित्र पीड़ा जुबिश कर रहा थी। ऐसा मालूम हो रहा था जैसे उस स्थानमें रिक्तता—एक विचित्र मौन क्रन्दन-मयी शून्यता-सी आगयी हो।

कुछ ही मिन्टोके बाद वैज्ञानिकने भी दम तोड़ दिया। लौरेटाने आंखोंमें अपरिसीम हाहाकार भरकर वातायन-पथसे सुनील अन्तरिक्षकी ओर देखा। उसका रोम-रोम रो रहा था, लेकिन मुख मौन था। सिरपर दोनों हाथ रखकर वह अर्धचेतन होकर आरामकुर्सीपर गिर पड़ी।

करीब पन्द्रह मिनटकी विचित्र नीरवताके उपरान्त आर्थस फूट-फूटकर रोने लगा। लौरेटाने न तो उसे आश्वासन ही दिया

और न और ही कुछ किया। चुपचाप ज्योंकी त्यों जड़ पाषाणकी भाँति कुर्सीपर पड़ी रही,—कुचले हुए अरमानकी तरह, असमय ही तोड़कर फेंकी हुई आशा-लतिकाकी तरह।

आर्थस बालकोंकी तरह रोता-रोता बोलने लगा—'बहिन, अब क्या होगा ? विप्लवीदल तो एक प्रकारसे चौपट ही हो गया। यदि कमसे कम किसियोपिकस ही जीवित रहता तो बहुत कुछ हो सकता था, किन्तु वह भी तो,—हाय, मानव-जातिका महान् उद्धारक वह तपस्वी वीर भी तो शासकवर्गके द्वारा असमय ही विदा कर दिया गया।·· लौरेटा मेरी आत्मा रो रही है। मैं नहीं रो रहा हूं। मेरे हृदयका कण-कण मेरी भर्त्सना करता हुआ मुझसे अलग हो जाना चाहता है। सारा शरीर एक विचित्र हुताशनकी सर्वघातक लपटोंमें झुलसा जा रहा है। ऐसा मालूम हो रहा है जैसे मेरे अंग-प्रत्यंग एक दूसरेके विरोध बनकर मुझे मार डालनेकी कोशिश कर रहे हैं। अब क्या होगा लौरेटा ? पूँजीवाद और साम्राज्यवादके दुर्गको कैसे खाकमें मिलाया जायगा ? कैसे दुनियाँमें इन कोटि-कोटि भूखों नंगोंके जीवनकी बेबसीको दूर किया जायगा ? कैसे सारे भू-मण्डलपर समाजवादकी स्थापना करके सुख-श्री-सुषमाका प्रसार किया जा सकेगा ? लौरेटा, सारा अपराध मेरा है ! मैं प्रयोगशालामें ही दुबारा जाकर उन सर्वघातक लपटोंमें आत्म-विसर्जन कर डालता तो अच्छा था। अब इस दुनियाँमें जीवित रहकर क्या होगा ?

लौरेटा कुछ भी नहीं बोली। उसने आर्थसको मना तक नहीं

किया कि तुम अत्यन्त दुर्बल हो। अधिक बोलो मत अन्यथा तुम्हारी अवस्था और भी भयानक हो जायगी।

आर्थस फिर बोलने लगा,—'सब कुछ नष्ट हो गया। इस वैज्ञानिकका आसरा था। यह भी जाता रहा। पता नहीं, इस पागल का भी कौन सी धुन समायी कि अपने ही हाथोंसे अपनी प्रयोगशालामें आग लगाकर जल मरनेके लिये तैयार हो गया।.... मुझसे तो अब कुछ नहीं होगा। लौरेटा मुझे ऐसा मालूम हो रहा है मानों कोई अज्ञात शक्ति मुझे अपनी ओर बुला रही है। उसके रक्तलिप्त अञ्चलके नीचे केवल अन्धकार ही अन्धकार छाया हुआ है। वह मुझे उसी अन्धकारमें आकर प्रकाशके सारे क्लेशों एवं चितकारोंको विस्मृत कर जानेकी आज्ञा दे रही है। मैं बड़ी कठिनाईसे बोल रहा हूं। ऐसा मालूम हो रहा है मानों रह रहकर कोई मेरा गला दबा देता है और मुझे बोलने नहीं देता।

लौरेटा इस बार भी कुछ नहीं बोली। आश्वासनका-- प्यार-का एक शब्द भी उसके मुखसे नहीं निकला। वह वियोगकी चरम सीमापर पहुंची हुई पीड़ाकी भाँति मौन थी।

आर्थसके शरीरमें न जाने कहाँ से तो शक्ति लौट आई। वह उठा और खिड़कीके पास जाकर खड़ा हो गया। बाहरका दृश्य उसे अपनी ओर खींचने लगा सुदूर विस्तृत पर्वतावलियाँ विटपी-दलोंसे आच्छादित होकर नेत्रोंको बहुत ही प्यारी लग रही थी। मध्याह्नकी रवि-किरणें सरोवरकी लहरोंको अत्यन्त विमोहक रूप प्रदान कर रही थीं।

अधिक देर तक खड़ा नहीं रह पाया। उसके सिरमें चक्कर आने लगा। वह आकर पलंगपर गिर पड़ा और लंबी-लंबी सासें लेने लगा। लौरेटा बहुत ही भयमिश्रित आवाजमें बोली—'आर्थस।'

आर्थसने कराहते हुए कहा—'बोलो?'

'कैसे हो?'

'कैसा हूं, यह मैं नहीं जानता। केवल इतना ही जानता हूं कि विप्लवी-दलका सत्यानाश मेरे ही कारण हुआ है। यदि मैं विप्लवी-दलमें नहीं आता तो आज इस प्रकार सब कुछ चौपट नहीं हो गया होता। कुछ वर्षोंके भीतर सारे यूरोपकी नहीं तो कम से कम इस देशकी शक्ल तो अवश्य ही बदल जाती। किन्तु अब क्या होगी? चारों ओर निराशाका अंधकार फैल गया है। आशाकी एक भी रश्मि नहीं दिखायी दे रही है।

लौरेटा उठ खड़ी हुई और बोली—आर्थस। तुम दुर्बल क्यों बन रहे हो? मैं निराशाके इस अंधकारमें प्रकाशकी किरणें लाऊँगी। असमय ही घिरी हुई इस श्याम मेघमालाका हृदय चीर डालूँगी। हृदयमें इस विनाशके दौर्बल्यको प्रश्रय मत दो आर्थस। किसियोपिकसको फाँसी हो गयी तो क्या हुआ? क्रान्ति-कारी-दलके अन्य सदस्योंको फाँसी हो गयी तो क्या हुआ? वैज्ञा-निक भी इस दुनियाँको छोड़कर किसी अविजानित देशकी ओर चला गया तो क्या हुआ? मैं तो हूं। तुम तो हो। हम तुम दोनों मिलकर शोणितकी धारा बहा देंगे। देखें फिर कैसे

संसारका सारा अनाचार – सारा अन्याय कैसे नहीं बह जाता है! अपनी शक्तियोंपर अविश्वास न करो भैया। हम दोनों मिलकर नवयुगके रुद्ध कपाटको अवश्य ही खोल डालेंगे। आर्थस! पागल न बनो। शोषितवर्गकी झुलसी हुई ठठरियाँ, – भूखकी ज्वालासे जलती हुई पसलियाँ,—सर्वथा चिकित्साहीन, उपायहीन रक्त फेंकते हुए कण्ठ—घावोंसे जर्जर शक्तिहीन हाथ-पैर,—संसारकी भयंकर कालिमासे ज्योतिहीन गढ़ेमें धँसी हुई आँखें हम दोनोंकी प्रतीक्षा कर रही हैं। हम दोनोंकी हुङ्कारोंसे इस पृथ्वीके समस्त अन्याय और अमानुषिक अत्याचार काँप उठेंगे। हम दोनोंकी ललकारें मरणासन्न तरुणोंके रुधिरमें नूतन ज्वाला प्रज्वलित करेंगी, उनकी सुप्त, शिथिल शिराओंमें नवयुगका तेजोद्दीप्त आह्वान प्रतिध्वनित होगा मैं विपथगामिनी बनकर महलोंपर अग्नि-स्फुलिंगोंकी वर्षा करती फिरूँगी; तुम महाक्रान्तिके अग्रदूत बनकर शोषितवर्गमें उत्साह, नूतन कर्मण्यता एवं आत्मविश्वासका संचार करते फिरोगे। आर्थस! श्रमजीवियोंके रुधिरमें अनुरञ्जित विशाल प्रासादावलियोंका अहंकार हम दोनोंको बुला रहा है।...हम अपनी अजेय शक्तियोंके द्वारा उन्हें धूलमें मिला देंगे।......'

लेकिन आर्थस वहाँ था कहाँ, जो लौरेटाकी तेजोमयी वाणीसे अपने अन्ततमको अनुप्राणित करता। पंछी पिंजड़ेका द्वार खोलकर उड़ गया था।

लौरेटाने देख लिया था कि आर्थस भी वैज्ञानिकका अनुसरण करता हुआ इस संसारसे सम्बन्ध-विच्छेद कर चुका है।

किन्तु न जाने क्यों तो वह बोलती ही गयी—आर्थस ! अपने जीवनकी छोटी-छोटी भूलोंकी परवाह न करो। पश्चात्तापकी अग्निसे व्यर्थ ही अपने हृदयको क्यों कष्ट देते हो ! स्वर्गीय आत्मा तुम्हारी ओर आशाभरी दृष्टिसे देख रही है। आर्थस ! क्रान्तिके कण्टकाकीर्ण मार्गके तेजस्वी पथिक महाव्रती आर्थस ! हृदयकी यह दुर्बलता—यह विचित्र, मिथ्या, घातक निराशा तुम्हें शोभा नहीं देती। भूख से तिलमिल करते हुए शिशु तुम्हारी ओर कातर दृष्टि से देख रहे हैं,—जवानी के तीखे दिवसोंमें ही जहर का प्याला ओठों से लगा लेने के लिये विवश किये जाने वाले भाग्यहीन मानव तुम्हें पुकार रहे हैं,—करोड़ों गृहहीन मानव तुम्हारे द्वारा महाक्रान्तिका सूत्रपात देखने के लिये अकुला रहे हैं—तुम महान् हो। तुम से विश्व के समस्त, शोषितों का अपरिसीम कल्याण-साधन हो सकता है। तुम अपने एक इशारे से पूँजीपतियों में हड़कम्प मचा सकते हो।... ..

किन्तु इस प्रकार वह कबतक अपनी आँखों को धोखा देती रहती। उससे अधिक बोला नहीं गया। गला रुँध गया और आँखें आँसुओं से तर हो गयीं। वह चीख कर कटे हुए वृक्ष की तरह आर्थसकी मृत देह पर गिर पड़ी।

———

२५

रक्तलिप्त वसन पहने संध्या प्रतीची-गवाक्षसे यामिनीके आगमनको देख रही थी।

दो मजारोंके बीचमें लौरेटा चुपचाप नेत्रोंको अर्धनिमीलित किये हुए बैठी थी। ऐसा मालूम हो रहा था, जैसे उसके प्राणोंमें एक घातक शून्यता सी छा गयी है। उसके केश बिखरे पड़े थे। सन्ध्य समीरणके झोंके आ-आकर उसके केशोंको पाल्ट-पुष्पकी पंखड़ियोंसे कोमल कपोलों पर ला-लाकर चले जाते थे। विषादकी छाया उसके चेहरेके सौन्दर्यको अत्यधिक विवर्धित कर रही थी।

रैमोना,—कई दिनोंका भूखा प्यासा रैमोना न जाने कैसे

तो—न जाने कहाँ से तो वहाँ आ पहुँचा। लौरेटा को देखकर वह विह्वल हो उठा। चिल्ला पड़ा—'लौरेटा ! मैं तुम्हें खोजता-खोजता परेशान हो गया। जिस दिनसे तुम आर्थसके साथ कार पर बैठकर मुझसे विदा हो गयी थीं, उसी दिनसे मैं तुम्हें खोज रहा हूँ। मेरे ओठ सूख गये हैं और इनपर पपड़ियाँ जम गयी हैं, किन्तु मैंने पानीकी एक बूँद अपने गलेके नीचे नहीं उतारी है।'

लौरेटाने विरक्तिपूर्वक रैमोनाकी ओर देखा। लेकिन बोली कुछ भी नहीं।

'जेलीके बारेमें तुमने सुना या नहीं ? उसे बड़ी निर्दयतापूर्वक मार डाला गया है। वह अर्थमंत्रीकी कारमें आ रहा था। फलतः पुलिसने उसे गिरफ्तार कर लिया।'

लौरेटाने सुनी अनसुनी कर दी। रैमोनाने सोचा था कि यह सुनकर वह अत्यन्त पीड़ित हो उठेगी, किन्तु उसके मुखसे जेलीके प्रति एक साधारण-सा भी सहानुभूतिका शब्द नहीं निकला।

रैमोना आश्चर्यित सा—विस्मय-विमूढ़ सा चुपचाप अपनी प्राणप्रियाकी ओर देखने लगा।

लौरेटाने देखा—रैमोना उसे प्यार करता है ! उसके लिये सब कुछ छोड़कर मारा-मारा फिर रहा है ! चाहे वह लाख कायर हो, वह प्रेमी तो है और क्या किसीको सच्चे हृदयसे प्रेम करना,-किसीके लिये जीवनका सारा हर्षोल्लास, सारा रासरंग लुटा देना कम वीरता है ! सब प्रेमी नहीं हो सकते ! प्रेम करना भी एक

महान् काय है, जिसके उपयुक्त सब नहीं। रैमोनाका प्रेम सच्चा है। यह मेरे लिये कितना कष्ट सहन कर रहा है!—अपने प्राण-प्रदेशमें कितनी-कितनी यन्त्रणाएँ बिखेर रहा है!

उसने स्नेहभरी दृष्टिसे रैमोनाकी ओर देखा और बोली—रैमोना!'

रैमोना लौरेटाके मुखसे इतनी मीठी आवाजमें अपना नाम निकलते देख पुलकित—विह्वल हो उठा। बोला—'लौरेटा!'

'तुम मुझे प्यार करते हो न रैमोना!'

'क्या इस प्रश्नका भी उत्तर देना होगा? क्या अभी तक मेरे हृदयके अन्तरात्मामें निसिवासर 'पिया-पिया' चिल्लानेवाले पागल पपिहरेकी कारुणिक आवाज तुम्हारे कानों तक नहीं पहुंचती है? लौरेटा! मुझे इस प्रश्न पर आश्चर्य हो रहा है! तुम यह क्या पूछ रही हो! क्या वे दिन भूल गयीं, जब हम तुम दोनों सरसीके तटपर किसी शिलाखण्ड पर बैठे-बैठे एक दूसरेको देखा करते थे और देख-देखकर अपने-अपने प्राणोंमें मदिराकी अनाविल वर्षा किया करते थे? तुम कहा करती थीं,—'रैमोना तुम इस पृथ्वीके रहनेवाले नहीं हो। न जाने किस प्रेमलोकसे पथभ्रान्त होकर यहाँ चले आये हो! मैं कहा करता था—लौरेटा तुम स्वर्गकी अप्सरा हो। इस वसुन्धरा पर प्रेमकी पावन धारा बहानेके लिये आ पहुँची हो।'.. आह! क्या तुम उन रातोंको—चाँदनीका आसव पीकर विश्व-पथमें झूमती हुई आ पहुंचने वाली रातोंको भूल गईं, जब हम दोनों पर्वतकी चट्टानों पर बैठकर उस सुदूर

विस्तृत निजनताका सौन्दर्य निहारा करते थे? मैं तुम्हें कविताएँ लिखकर देता था और तुम अपने मममधुर स्वरमें उन्हें गा-गाकर सुनाया करती थीं। क्या वह सब एक मिथ्या स्वप्नकी भाँति तिरोहित हो गया लौरेटा!.. क्या उसकी स्मृति भी तुम्हारे मस्तिष्कमें अब नहीं रह गयी है? मैंने तो उन दिनोंकी स्मृतिको ही अपने इस उत्तप्त जीवन-मरुके नीरस मार्गका संबल बना लिया है।

लौरेटाके प्राणोंमें न जाने कहांसे तो कुछ उमड़ सा आया। उसे ऐसा मलूम होने लगा, मानो वह रह-रहकर किसी चीजोंको पाती है और फिर उसे खो देती है। उसने अपने हृदयको संयत करते हुए कहा,—'रैमोना, इन सब बातोंको जाने दो। तुम मुझे प्यार करते हो, यह मैं अच्छी तरह जानती हूं। और यह भी जानती हूं कि तुम प्रेमके लिये बड़ासे बड़ा बलिदान कर सकते हो। जीवनकी प्यारीसे प्यारी वस्तुको तुम मेरे एक इशारे पर लुटा दे सकते हो। किन्तु -।'

'रुक क्यों गयी लौरेटा!' रैमोना बोला।

'तुम्हें एक काम करना होगा। मैं तब तक वह काम तुम्हें नहीं बतलाऊँगी जब तक कि तुम उसे करनेकी प्रतिज्ञा नहीं कर लोगे। और प्रतिक्षा भी तुम्हें मेरी कसम खाकर करनी होगी।'

रैमोना बोला—'लौरेटा! इसमें प्रतिक्षाकी कौन बात है? तुम कहो और मैं न करूँ, ऐसा भी कभी हो सकता है। तुम्हारे एक इंगितपर मैं अग्नि-कुण्डमें कूद सकता हूं।'

लौरेटा कुछ देर सोचती रही। फिर बोली—'लेकिन तुम्हारे लिये यह काम अग्नि-कुण्डमें कूदनेसे भी ज्यादा भयंकर होगा। तुम पहले प्रतिज्ञा कर लो तब कहूँगी।'

रैमोनाको क्या पता था कि लौरेटा इतना भयंकर,—इतना आत्मद्रोहात्मक कार्य करनेको कहेगी। उसने उसकी कसम खाकर प्रतिज्ञा कर ली।

लौरेटाने पिस्तौल रैमोनाके हाथोंमें देते हुए कहा 'इससे तुम मुझे मार डालो। मैं चाहती तो आत्महत्या कर सकती थी किन्तु मैं इसे महापाप समझती हूँ और मैं नहीं चाहती कि दुनियाँके बड़े-बड़े धनपतियोंके हृदयोंको कँपा डालनेवाली,—शासकवर्गके प्राणोंमें हड़कम्प मचा देनेवाली लौरेटाको आत्महत्या करके इस दुनियाँसे जाना पड़े।'

रैमोना लौरेटाका पूरा वाक्य भी नहीं सुन पाया था कि उसके सिरमें चक्कर आने लगा। वह अपने आपको सम्हाल नहीं सका। वहीं जीवित हाहाकारपुञ्जकी भाँति गिर पड़ा।

'लौरेटा, । क्या मेरे प्रेमकी परीक्षा ले रही हो?' उसने अत्यन्त कारुणिक स्वरमें कहा।

लौरेटाने बहुत ही तीक्ष्ण दृष्टिसे रैमोनाकी ओर देखा। बोली,—'इसमें परीक्षाकी कौनसी बात है? मैं चाहती हूँ कि तुम इस पिस्तौलसे मेरा खून कर दो। मैं आत्मघात नहीं करना चाहती।'

'लेकिन लौरेटा!..... ' रैमोना गिड़गिड़ा रहा था।

'तुम्हारी इसी कायरताके कारण तो मैं तुमसे दूर दूर रहती आयी हूं। तुम्हारी कविताओंमें भी तुम्हारे हृदयकी यही दुर्बलता—यही क्लीब कोमल भावना सदैव प्रकाशित होती रही है। सबल बनो रैमोना! दुनियामें निर्बलोंका कोई स्थान नहीं होता। निर्बलोंके लिये वह दुनिया है ही नहीं। तुम निधड़क मुझपर गोली चला दो और फिर मृत्युके अन्तिम क्षणोंतक इस विचित्र हाहाकारमयी घटनाको ज्वलन्त शब्दोंमें अपनी कविताके द्वारा अभिव्यक्त करते चलो। तुम्हारी कवितामें कमनीयता और कोमलता बहुत ज्यादा होती है। ऐसे गीतोंका सृजन करो, जिनकी लपटोंमें संसारका सारा अनाचार सारा अनय जलकर खाक हो जाय! पापपरायण शासकवर्गके हृदयमें हड़कम्प मच आये और संसारके शोषित, सन्तापित, संबलहीन मानवोंके प्राणोंमें नूतन आशा एवं नूतन कर्मोन्मादनका सञ्चार हो।'

'लेकिन लौरेटा!' रैमोना पीड़ाभरे स्वरमें बोला मैं तुम पर गोली चलाकर कितने क्षणोंतक अपने आपको इस नीरस संसारमें जीवित रख सकूँगा। जीवनका एक-एक क्षण मेरी भर्त्सना करता हुआ मुझे लील जानेकी तयारी करने लगेगा।'

'तो तुम्हारे कहनेका तात्पर्य यह है कि तुम मेरी कसम खाकर की गयी प्रतिज्ञाका भी कोई मूल्य नहीं समझते?' लौरेटाकी आवाज़में एक तीखी भर्त्सना थी।

रैमोनाने अपने हाथोंमें कसकर पिस्तौल सम्हाली और बोला,—अच्छा लो लौरेटा। तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य है। जीवन

भर विचित्र-विचित्र प्रकारकी आत्मद्रोहात्मक प्रताड़नाओंसे पीड़ित रहता आया,—कहीं भी किसी अवस्थामें भी सुखकी एक हलकी सी लहर भी मेरे अन्तस्तलमें उत्तापको दूर करनेके लिये नहीं आयी,—भस्मासुरकी भाँति सदैव हृदय अपने आपको ही भस्म करता आया। और अब जीवनकी सबसे बड़ी आत्म-प्रतारणा-का भी सहर्ष स्वागत करता हुआ मैं तुम्हारी आज्ञाका पालन कर रहा हूं। तुम आत्महत्याको पाप समझतीहो, किन्तु मुझे आत्म-हत्या करनेके लिये विवश कर रही हो। मेरी आत्माका परिधान तुम्हारा शरीर है, मेरा शरीर नहीं। लौरेटा पर गोली नहीं चल रही है, गोली रैमोना पर चल रही है। इस स्थानके समस्त विटपी-दल अपने राशि-राशि पुष्प-दृगोंसे इस चित्कारमय दृश्य को देखें। सृष्टिके इतिहासमें कैसी-कैसी कठोर और मर्मघातक घटनाएँ हुआ करती हैं; लौरेटा ...जिसकी स्मृतिको पुचकार-पुचकार कर सदैव अपनी कविताका शृङ्गार करता रहा,—जिसके साथ बिताये गये कतिपय दिवसोंकी पावन गाथा जीवनके इन अमंगलमय अभिशापित दिवसोंमें गाता रहा, वहीं आज मेरे इन हाथोंके द्वारा .. .. उफ!" कहता कहता रैमोना अशेष अन्त-र्ज्वालासे जल उठा और छटपटाने लगा!

'देर न करो रैमोना। पश्चिमी क्षितिजमें पर्वत-श्रेणियोंपर अन्तिम आलोक फेंकता हुआ दिवाकर अस्त हो रहा है। मैं चाहती हूं कि उसके साथ ही साथ मैं भी अस्त हो जाऊँ।"

'यही होगा लौरेटा। उसके साथ ही साथ तुम भी अस्त हो जाओगी। ...लेकिन अरे, यह क्या? रैमोना कहाँ चला गया। मेरे हाथ पैर सबके सब मुझे तुम्हारी तरह मालूम हो रहे हैं। मैं स्वयं लौरेटा हुआ जा रहा हूं। मेरी बोली भी मुझे तुमसी ही प्रतीत हो रही है। मेरा हृदय और मेरा मस्तिष्क सब कुछ तुमसा हुआ जा रहा है।...मैं स्वयं लौरेटा हूं। और रैमोना? अरे यह क्या? दोनों मज़ारोंके बीचमें रैमोना बैठा है और मेरी ओर देख रहा है। लौरेटा! मुझे तुम्हारे अंग-प्रत्यंग अपनी तरह मालूम हो रहे हैं। लौरेटा! तुम रैमोना हो। और मैं लौरेटा हूं। रैमोना! मेरे रैमोना! प्यारे रैमोना!······

रैमोना उन्मादकी तूफानी लहरोंमें डूब-उतरा रहा था। विचित्र अन्धड़से उसका अन्तस्तल आलोड़ित-विलोड़ित हो रहा था। लौरेटाने बड़ी ही करुणाभरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा। एकाएक वह चीख उठी, किन्तु रैमोनाके पास पहुंचकर उसके हाथोंसे पिस्तौल छीने, इसके पहले ही रैमोनाने अपने आपको गोली मार ली थी।···भाग्यवश या दुर्भाग्यवश गोली छातीमें न लगकर कंधोंको छेदती हुई निकल गयी। वह छटपटाकर गिर पड़ा।

'तुमने यह क्या किया रैमोना?' लौरेटा रो उठी।

मैंने तुम्हारी आज्ञाका पालन किया है। मैंने लौरेटाका खून कर दिया है रैमोना दर्दसे कराहता हुआ बोला।

लौरेटाने एक बार चारों ओर देखा। कहीं कुछ भी नहीं। प्रतीची-क्षितिजमें दिवाकर आत्म-विसर्जन कर रहा था और चतु-

दिक अन्धकार प्रसृत होता जा रहा था। पर्वतश्रेणियोंके शिखरोंपर एक व्याकुलतामयी सन-सनकी आवाज छा रही थी। चारों ओर एक विचित्र उदासी—घनीभूत उदासीकी एक विचित्र, मौन चीत्कारमयी भावना बिखर चली थी।

लौरेटाने रैमोनाको, आहत रैमोनाको अपने कंधोंपर उठा लिया और जल्दी-जल्दी एक कन्दराकी ओर जाने लगी। रैमोनाके कंधोंसे रक्त निकल-निकल कर लौरेटाके केशोंको सींच रहा था, मानो प्रणयकी सुकुमार स्वर्ण-वल्लरियां अरमानोंके रक्तसे सींची जा रही हों।

रैमोनाने कराहते हुए कहा—लौरेटा क्या तुम्हें मेरा भार असह्य नहीं हो रहा है ?

लौरेटा कुछ नहीं बोली। चुपचाप बढ़ती ही गयी। कुछ ही मिनटोंमें वह कन्दरामें पहुंच गयी। वहां उसने रैमोनाको एक शिला पर-बिठा दिया और व्योमयानको--दो आदमियोंके बैठने योग्य उस छोटेसे सुन्दर व्योमयानको कन्दरासे बाहर निकाल लायी। वैज्ञानिकके बूढ़े नौकर द्वारा उसे व्योमयानकके स्थानका पता लग गया था। यह वही व्योमयान था जिसपर बैठकर वैज्ञानिक और जेली वहां आये थे और जिसे कन्दरामें रखनेके कुछ ही क्षणोंके बाद उन्मादनाके अन्ध आघातोंसे तड़प कर वैज्ञानिकने अपनी प्रयोगशालामें आग लगा दी था।

लौरेटाने वैज्ञानिकसे इस विचित्र व्योमयानको चलानेका तरीका ही नहीं सीख लिया था, बल्कि इसके निर्माणसे सम्बन्ध

रखनेवाली भी बहुत-सी बातें जान ली थीं। उसने रैमोनाको उसपर बिठा दिया और स्वयं बैठकर परिचालक यंत्रको धीरेसे घुमा दिया कुछ क्षणों तक यन्त्रसे बहुत ही धीमी सन-सनकी आवाज सी निकलती रही, उसके बाद व्योमयान ऊपर उठने लगा। कुछ ही क्षणोंमें वे दोनों धरातलसे दो मीलकी ऊँचाईपर पहुँच गये।

निशाकी अलकावलियोंमें तारककुसुम गूँथे जाने लगे थे और अन्धकार भी धीरे-धीरे घनीभूत हो चला था।

रैमोनाने कराहते हुए कहा,—'लौरेटा, कहाँ जा रही हो?'

लौरेटाने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने परिचालक यंत्रको एक बार फिर धीरेसे घुमा दिया। व्योमयानकी गति बहुत बढ़ गयी। वायु-पथको चीरता हुआ वह अत्यन्त वेगके साथ चलने लगा।

'रैमोना!' उसने आकाशके नक्षत्रोंकी ओर देखते हुए कहा—'अब इस पृथ्वीपर हम दोनोंको वापस नहीं लौटना है।

'लौरेटा।' तुम यह क्या कर रही हो? संसारको तुम्हारी जरूरत है! मानव-जातिकी व्यथित पुकारें तुम्हें पृथ्वी पर बुला रही हैं। तुम्हें संसारमें क्रान्तिका सूत्रपात करके मानवजातिके दुःखोंको दूर करना होगा। संसाको सुखी बनानेके लिये अहर्निश परिश्रम करनेवाले शारीरिक और मानसिक श्रमजीवी अपनी आशाको अब किसपर केन्द्रित कर सकेंगे? मानवी सभ्यताके पथको प्रशस्त करनेवाला,—अन्धकारको दूर करके आलोक-रश्मियाँ विकीर्ण करनेवाला देवता पूँजीवाद और साम्राज्यवाद

नामक दो दानवोंके द्वारा जंजीरोंसे जकड़ दिया गया है। उसे बन्धन-विमुक्त करके इस वसुन्धरा पर स्वगिक श्री-सुषमाका प्रसार तुम्हें ही करना होगा, लौरेटा !'

लौरेटाने व्योमयानकी गति और भी तीव्र करते हुए कहा,—रैमोना। अब मुझसे कुछ भी नहीं होगा। प्रखर निराशा धीरे-धीरे मेरे हृदयको अभिभूत करती जा रही है। जंजीरे तो टूटेंगी ही और देवता बन्धन-विमुक्त होगा ही। अब वे दिन चले गये हैं, जब श्रमजीवी अपने जीवन-पथमें बिखरे हुए राशि-राशि क्लेशोंके लिये—प्रतिदिन विवर्धित होनेवाली निदारुण यंत्रणाओंके लिये अदृष्टको दोष दिया करते थे ! वे अपना रक्त सोखने वाले पैरा-साइटको पहचान गये हैं और उसे उखाड़ फेंकनेमें ज्यादा देर नहीं करेंगे। पृथ्वीके करीब-करीब समस्त देशोंमें समाजवादी क्रान्तिके लिये चेष्टाएँ हो रही हैं। कमी केवल इसी बातकी है कि उन्हें वैसा सबल और तेजोमय रूप नहीं प्रदान किया जा रहा है जैसा कि होना चाहिये।......लेकिन नवयुगका देदीप्यमान आग-मन अवश्य होगा और देवताके शरीरमें जकड़ी हुई जंजीरें अवश्य टूटेंगी।···तरुणोंकी शिराएँ क्रान्तिके तेजदीप्त आह्वनसे झनझना उठी हैं। उनके रक्तलोड़ित हृदयके एक-एक स्पन्दनसे विप्लवकी भेरी बज रही है। मैं साफ देख रही हूं कि देवताकी जंजीरें टूट रही हैं, वह बन्धन-विमुक्त हो रहा है, अन्धकारके अन्तरालको चीरती हुई प्रकाशकी स्वर्णाभकिरणें आ रही हैं ! रैमोना ! क्या

तुम्हें उन टूटती हुई जंजीरोंकी आवाज़ नहीं सुनायी देती !......

लौरेटाने परिचालक यन्त्रको एक बार फिर धीरेसे घुमा दिया। कुछ क्षणोंतक सन-सनकी धीमी आवाज़ होती रही। व्योमयानकी गति इस बार पहलेसे दुगुनी हो गयी।

'रैमोना ! अब कोई आशा नहीं रही। अपनी गलतियोंपर अब हृदय रो रहा है, मैंने तुम्हारे प्रति जो अन्याय किया है, वह तो मेरे अन्तर्तमको और भी विकल कर रहा है। तुम कवि थे ! मैं यदि चाहती तो तुम्हें भी क्रान्तिकारी बना कर तुम्हारे द्वारा मानव-जातिका प्रभूत उपकार-साधन करा सकती थी ! श्रमजीवी वर्गकी कारुणिक अवस्थाका चित्र तुम्हारी आँखोंके सामने खींचकर यदि तुम्हें भी अपने साथ रहनेका और विप्लव-पथगामी बननेका अनुरोध करती तो क्या कल्पनाके रेशमी अंचल-छोरको पकड़ कर रूपनगरकी सैर करनेवाला तुम्हारा कविहृदय मानव-जातिके कारूणिक क्रन्दनको सुन कर नहीं काँप उठता — तुम्हारा रोम-रोम श्रमजीवियोंके सन्तप्त हाहाकारको सुन कर व्याकुल नहीं हो उठता और तुम्हारी कविताओंमें ज्वालामुखियोंका विस्फोट नहीं होने लगता ! संसारकी हाहाकारमयी अवस्था देखकर तुम्हारा कवि विद्रोही हो उठता ! उसकी शिरा-शिरा क्रान्तिके तूफानी आवेगसे झनझनाने लगी ! तुम्हारा कवि अपनी कविताओंकी एक-एक पंक्तिमें क्रान्तिकी लपटोंका सन्निवेश करने लगता ! तुम्हारी विचार-धारामें विप्लवकी किरणों अपना प्रकाश बिखेरने लगती ! तम्हारा कवि तब सौन्दर्य-सरसीके शतदलोंका गुञ्जन-गान नहीं

गा पाता !—आकाशमें विकीरित नक्षत्रोंकी अरुण वर्ण रूपराशिको चूमती हुई तुम्हारी कल्पना नृत्य नहीं कर पाती !—तुम्हारी भावनाओंके विहग दूरदेशस्थ प्रियतमकी मीठी-मीठी यादमें तब चीत्कार नहीं कर पाते !......

बोलती-बोलती लौरेटा रुक गयी। भाववेगसे उसके ओठ फड़फड़ाने लगे। उसने रेमोनाकी ओर अश्रु-आविल चक्षुओंसे देखा। उसके कंधेसे रक्त निकलता जा रहा था और दोनोंके वस्त्र सिञ्चित हो रहे थे। लौरेटाने परिचालक यंत्रको एक बार फिर घुमा दिया और बोलने लगी,—तुम्हारी कविताएँ पढ़ कर तेजस्वी तरुणोंका रक्त खौल उठता उनको पंक्तियां उनके हृदयोंपर अंकित हो जातीं। वे उसे सदैव गुनगुनाते फिरते खेतोंमें, खलिहानोंमें, मिलोंमें, दूकानोंमें, श्रमजीवी तुम्हारी विद्रोहमयी कविताओंको गा-गाकर समीरणकी छातीपर हड़कम्प मचाते फिरते ! उनका वक्षःस्थल उन्हें गुनगुनाते उफनने लगता ! विप्लवकी वीणा उनके प्राणोंमें बजने लगती ! वे उसे पढ़ते-पढ़ते अपरिसीम उत्साहसे पूरित होकर महलोंमें आग लगा देनेके लिये,—पूँजीवादपर टिकी हुई समाजिक व्यवस्था सर्वनाश कर डालनेके लिये मचल उठते। निर्धनोंकी,—सताये हुए शोषित श्रमजीवियोंकी तुम्हारे द्वारा वर्णित कारुणिक अवस्था पढ़ते-पढ़ते वे क्रोधसे काँप उठते और उनकी आँखें तप्त अंगारोंकी भाँति जलने लगतीं। रैमोना ! तुम अपनी कविताओंकी धाराको क्रान्तिकी ओर मोड़कर कमाल कर देते। सारा देश विद्रोहात्मक

विचारों से भर जाता। तुम्हारी कविताएं तरुणियों के हृदयको हिला देतीं। उन्हें पढ़नेसे उनकी अन्तरात्मामें महाविप्लवकी आगमनी बजने लगती। वासना-मालञ्चपर आधारित मिथ्या प्रणय-लतिकाको कुचलकर वे क्रान्तिमयी बन उठतीं और अपने प्रेमिकोंसे प्रणय-भिक्षा माँगनेके बदले वे उनसे कहती—प्रियतम आओ! श्रमजीवियोंके आर्त्तनादसे आज सारी दुनियाँ नारकीय हो रही है। अपनी समस्त शक्तियोंको पूँजीवादके विनाश-साधन के लिये नियोजित कर दो। आज पृथ्वी उष्णरक्तकी प्यासी है। पूँजीपतियों और पापपरायण शासकोंके रक्तसे उसकी पिपासा प्रशमित करो। ...रैमोना सचमुच गजब हो जाता। विप्लवकारियों को तुम्हारे द्वारा जो सहायता मिलती, वह अतुलनीय होती। तुम्हारी कविताएं बौद्धिक श्रमजीवियों के टूटे-फूटे मकानों में गूँजती रहतीं। नैराश्यकी तमोमयी यामिनीमें प्राणोंका टिमटिमाता हुआ दीपक बाल कर चलनेवाले बौद्धिक श्रमजीवी तुम्हारी विप्लवात्मक कविताएं पढ़ कर उज्वल भविष्यकी प्राणप्रद कल्पनामें तल्लीन हो जाते और आज जहाँ आलस्य और अकर्मण्यता छायी हुई है, वहाँ अनुपम कर्मोन्मादनका प्रसार हो जाता।...लेकिन रैमोना! सारा दोष मेरा है। मैंने तुम्हारी अवहेलना की,—तुम्हें ठुकराया, तुम्हारे कवि-हृदयको निर्ममता-पूर्वक कुचल डाला। रैमोना। मुझे माफ करो।...

रैमोना विकल होकर बोला—बीती हुई बातोंकी स्मृतिसे अपने कोमल हृदयको पीड़ित क्यों करती हो, लौरेटा! जो चला गया वह

वापस तो लौटेगा नहीं! फिर क्यों तरह-तरकी उन्मादमयी भावनाओंकी पश्चातापमयी अग्निमें घृताहुति डाल रही हो?

रैमोनाको अत्यन्त दुर्बलता मालूम होरही थी। रुधिर निकल-निकलकर उसके और लौरेटाके कपड़ोंको अनुरञ्जित कर रहा था। कुछ देर मौन रहनेके बाद उसने पूछा—'लौरेटा, आखिर तुम्हारा इरादा क्या है? व्योमयानकी गतिको इतना बढ़ा क्यों रही हो? कहाँ जानेका निश्चय किया है?'

'मेरा न तो कोई इरादा ही है और न मैंने कहीं जानेका निश्चय ही किया है, केवल इतना ही जानती हूँ कि अब उस पृथ्वी-पर हम दोनोंको नहीं लौटना है!... . दूर · बहुत दूर जहाँ तक यह व्योमयान ले जा सकेगा, हमलोग चलेंगे। पृथ्वीपर लौटकर अब करना ही क्या है।

रैमोनाने करुणा भरी दृष्टिसे लौरेटाकी ओर देखा और बोला-लौरेटा! अब भी वायुयानको पृथ्वीकी ओर ले चलो वहाँ हम लोगोंके लिये क्या नहीं है! सरिताकी लहरोंको चूम-चूमकर उन्माद बिखेरनेवाली चन्द्रकिरणें हम दोनोंको बुला रहीं हैं। वह सरिता, जिसके तटपर हम दोनों एक समय रात-रात भर सौन्दर्य और सुषमाके गीत गाया करते थे, अपनी मौन भाषामें हम दोनोंको पुकार रही है। वे शैलमालाएँ, जहाँ एक समय में तुम्हारी खोजमें भटका करता था और तुम किसी विशाल शिला-खण्डके पीछे छिपकर मुसकराती थीं, आज इस विषादग्रस्त यामनीसे हम दोनोंको लौटा देनेका पीड़ाकुल अनुरोध कर रही

हैं। ...लौरेटा! उन्मादनाकी किस तूफानी लहरमें बही जा रही हो! पृथ्वी पर तुम लौट चलो। यदि किसियोपिकसकी मृत्यु होगयी, तो क्या हुआ! आर्थस और वह वैज्ञानिक दोनों ही चल बसे तो इसकी क्या चिन्ता है? तुम्हारा यह कवि तो जीवित है। अब तुम अपने रैमोनाको प्रेम और सौन्दर्यकी उन्मादक कविताओंके स्रष्टाके रूपमें नहीं देख सकोगी। अपने रैमोनाको अब तुम विद्रोही कविके रूपमें देखोगी। मेरे एक हाथमें पिस्तौल होगी और दूसरेमें अग्निकणोंकी वर्षा करनेवाली लेखनी!.. लौरेटा! मुझे कोई विशेष चोट नहीं लगी है। साधारणसे उपचारसे ही मैं अच्छा हो जाऊँगा। तुम वायुयानकी गति परिवर्तित कर दो!'

लौरेटाने रैमोनाकी ओर देखा और बोली--'नहीं रैमोना! अब लौटना नहीं हो सकता है! चुपचाप बैठे रहो यह व्योमयान जहाँ ले जाये, वहीं ले जाने दो! मुझे ऐसा मालूम हो रहा है, मानों कोई शक्ति मुझे अपनी ओर खींच रही है। ऐसा प्रतीत हो रहा है, मानों बहुत दूरसे कोई मुझे अपने पास बुला रहा है!...

रैमोनाने अश्रु-आविल नेत्रोंसे लौरेटाकी ओर देखा और बोला--'लौरेटा! क्या अवसानका तिमिस्राञ्चल ही अब तुम्हें अधिक प्रिय मालूम हो रहा है? संसारमें रहकर संघर्षोंमें जूझनेकी समस्त प्रवृत्तियाँ नष्ट हो गयीं?'

रैमोना! तुम कवि हो। तुम्हें दूरके सपने बहुत प्यारे लगा

करते हैं ! सुदूर क्षितिजके उस पारसे तुम्हारे पास सदैव अविदित आह्वान आया करते थे। चाँदनी रातमें तुम मुझसे अक्सर कहा करते थे कि रह-रह कर इच्छा होने लगती है कि तुम्हारे साथ इतनी दूर उड़कर चला जाऊँ कि फिर वापस लौटना ही नहीं हो। वहाँ मेरे और तुम्हारे सिवा और कोई भी नहीं हो ! ...चलो, आज मैं तुम्हें वहीं ले चलती हूं। कवि, आज तुम्हारी क्रान्तिकारिणी लौरेटा तुम्हारी कल्पनाको कार्यरूपमें परिणित कर रही है ! तुम्हें तो प्रसन्नता होनी चाहिये ! तुम विकल क्यों हो रहे हो ?"

और वायुयान उड़ा चला जा रहा था, इस पृथ्वीसे दूर बहुत दूर न जाने किस लोककी ओर।